ekuorkokn ,oa johUnzukFk VSxksj % ,d fo'ys"k.k

MkW0 vEcjh"k jk;[1]

भारतीय दार्शनिक परम्परा में टैगोर जी ने अपने विचारों द्वारा महत्वपूर्ण योगदान किया है उनके विचार भविष्य की पीढ़ी के लिए न केवल उपयोगी है अपितु मार्गदर्शक भी है, उनके दर्शन का केन्द्र बिन्दु मनुष्य था, ईश्वर नहीं। स्वयं ईश्वर के प्रति रवीन्द्रनाथ ठाकुर की अवधारणा उनके दृष्टिकोण में सतत् वर्ममान मानवतावाद से प्रभावित थी। उनके लिए ईश्वर, मानव एकता और मनुष्य के व्यक्तित्व की पूर्णता का प्रतीक मात्र था। उन्होंने घोषणा की थी ''वह जिसे परम् और पूर्ण कहते हैं, सर्वोच्य मनुष्य है, मानवीकृत ईश्वर है।'' इस प्रकार सर्वोच्य व्यक्तित्व मूलतः मानवोचित था और रवीन्द्रनाथ ठाकुर के अनुसार उसे मानव प्रेम के द्वारा पाया जा सकता था। इस तरह, ईश्वर के प्रति प्रेम को मानव के प्रति में रूपान्तरित कर दिया गया। रवीन्द्रनाथ ठाकुर मानव की पूर्णता मानव व्यक्तित्व के विकास के लिए प्रयत्नशील थे। ईश्वर 'पूर्णता का अपरिमित आदर्श' था और मनुष्य 'उस आदर्श की पूर्ति की शाश्वत प्रक्रिया था। उनके अनुसार इस विकास के माध्यम से ही अपरिमित, स्वयं को मनुष्य में अभिव्यक्त करता है। वह कहते हैं; ज्ञान प्रेम और कर्म में मेरा विकास, अपरिति को प्रकट करेगा। इसमें ही मेरी पूर्णता निहित है। अपूर्णता का आवरण हमारे मन, इच्छाशक्ति और कर्म से दूर हट जायगा और इस प्रकार हम अपरिमित से अपना नैकट् सिद्ध कर देंगे। यही मनुष्य का धर्म है।'' वह आगे कहते हैं; 'अतः मनुष्य का सबसे बड़ा दुर्भाग्य तब प्रकट होता है, जब वह उस महानता को नहीं प्रकट कर पाता जो स्वयं उसमेंअन्तर्निहित है, तब बाधाएँ उसके लिए अत्यन्त बलवती सिद्ध होती है।'' किन्तु इसका संकीर्ण और स्वार्थपूर्ण व्यक्तिवाद से कोई सम्बन्ध नहीं था। वह यह जानते थे कि मनुष्य

1- lgk;d vkpk;Z] n'kZu'kkL=] txn~xq# vk| jkekuUnkpk;Z 'kkL/k ihB] tx0vkj0,p0 fo'ofo|ky;] fp=dwV m0iz0

की पूर्णता की अभिलाषा के दो पक्ष है– व्यक्तिगत और सामाजिक। वैयक्तिक पूर्णता सामाजिक पूर्णता से अभिन्न रूप से सम्बद्ध होती है। उन्होंने कहा था, ''वैयक्तिक सफलता कभी पूर्ण और निरपेक्ष नहीं हो सकती। उन लोगों की शक्ति जिन्होंने मनुष्यों के बीच उच्चतम पद प्राप्त किए हैं समष्टि की शक्ति से अभिव्यक्त होती है; वह समष्टि की शक्ति से भिन्न और अलग नहीं है जहाँ एक व्यक्ति के रूप में अलगाव पैदा होता है, जहाँ पारस्परिक सहयोग घनिष्ठ नहीं होता वहाँ निस्संदेह बर्बरता का साम्राज्य होता है।''

रवीन्द्रनाथ ठाकुर के रहस्यवाद और आदर्शवाद ने उन्हें परित्याग के मार्ग और मनोगत एकांतिकता के मार्ग का समर्थक नहीं बनाया। भारत के कितने ही महान् आदर्शवादी दार्शनिकों ने ठीक इन्हीं मार्गों की वकालत की थी। रवीन्द्रनाथ ठाकुर अपने समय की सामाजिक और राजनैतिक वास्तविकताओं के प्रति इतने सचेत थे कि वह ऐसे मार्गों की ओर इंगित नहीं कर सकते है। उन्होंने लिखा था ''इस सुन्दर संसार से तुरन्त मुक्ति पा लेने की मेरी कोई अभिलाषा नहीं है। नीले आकाश क्षितिज और सागरों से सुशोभित इस जगत् में अपने मानव बन्धुओं के साथ उनके बीच रहने में मुझे कहीं अधिक रुचि है।'' टैगोर का दर्शन गम्भीर आध्यात्मिक मानवतावाद से प्रसूत है। वह इन्द्रियातीतवाद, कान्ट के नियम–निष्ठावाद और बुद्धिवाद के स्थान पर मानव प्राणी के, जो परम् शाश्वत् सृजनात्मकता की प्रतिकृति है, सृजनात्मक प्रयोगों और कलात्मक आह्वाद को अधिक महत्व देता है। उन्होंने शक्ति की भर्त्सना की, राष्ट्रवाद का खण्डन किया और सहयोग तथा भ्रातृत्व पर आधारित अवयवी सामाजिक जीवन पर बल दिया, इस सबका स्तोत्र आधारभूत मानवतावाद ही है। सब प्रकार के तनावों और द्वन्द्वों से विक्षिप्त और परितप्त जगत् को टैगोर ने मानव प्रेम का सन्देश दिया है।

टैगोर यह मानते हैं कि ईश्वर को मानव के समीप लाना होगा। मनुष्य अपनी धार्मिक आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए ऐसे ईश्वर की कामना करता है जो व्यक्तित्वपूर्ण हो। अद्वैत वेदान्त तथा उपनिषद् की यह युक्ति 'तत्वमसि अथवा 'अहं ब्रह्मामास्मि' का कोई अर्थ नहीं है जब तक मनुष्य ब्रह्म या ईश्वर को अपने हृदय में अनुभूत न करे। टैगोर चरमसत्ता को व्यक्तित्वपूर्ण बतलाने में नहीं हिचकते। यही कारण है कि जब मानव हताश हो जाता है, जब वह जीवन से निराश हो जाता है तो ईश्वर की शरण में जाता है। ईश्वर ही उसके लिए अन्तिम आशा रह जाती है और यही उसके जीवन को बचा लेता है, शक्ति प्रदान करता है। इस तरह टैगोर ने संवेदनापूर्ण ईश्वर की कल्पना की है जिसके साथ भावनात्म समबन्ध स्थापित किया जा सकता है। इस व्यक्तित्वपूर्ण सत्ता को जिसे टैगोर ने जीवन

देवता कहा है, यह एक तरफ तत्वमीमांसा की मांग और दूसरी तरफ धर्म की मांग को पूरी करता है। यह वेदान्त के ब्रह्म तथा ईश्वरवाद के ईश्वर दोनों में समन्वय स्थापित करता है। जीवन–देवता को टैगोर ने प्रेम का अधिष्ठाता माना है। उनके अनुसार प्रेम में सभी प्रकार की भिन्नताएँ समाप्त हो जाती हैं।

टैगोर के जीवन–देवता के स्वरूप का चित्र मानव के स्वरूप पर विचार करने से स्पष्ट होता है। मानव को देवता का अंश माना है और सर्वोच्च सत्ता से तादात्म्य को मानव का आदर्श माना है। ऐसा आदर्श व्यक्तित्व रहित चरमसत्ता नहीं हो सकता बल्कि ऐसा ईश्वर हो सकता है जो सदा हम लोगों के साथ हो। टैगोर का ईश्वर व्यक्तित्वपूर्ण है, व्यक्तित्व रहित नहीं है। गीतांजलि में टैगोर ईश्वर को व्यक्तित्वपूर्ण मानते हैं। उनके अनुसार जिस तरह मानव में भावना बुद्धि और संकल्प तीन पहलू होते हैं, उसी तरह से ईश्वर में चरम सत्य यानि ज्ञानात्मक पक्ष, चरम् शुभ यानि संकल्पात्मक पक्ष तथा चरम सौन्दर्य यानि भावनात्मक पक्ष का एकीकरण है। टैगोर ईश्वर को जगत् से परे आकाश में रहनेवाली कोई अमूर्त सत्ता के रूप में नहीं मानते वरन् वे धार्मिक दृष्टिकोण से ईश्वर की समस्या को समझना चाहते हैं।

रवीन्द्रनाथ टैगोर मानवतावादी दार्शनिक है मानवतावादी धर्म मानव को ही अपने अध्ययन का केन्द्रबिन्दु मानता है। मानव जाति भी ऐसे ईश्वर के प्रति श्रद्धा और भक्ति की भावना रखना चाहती है जिसमें मानवीय गुणों का पुट हो। ऐसे ईश्वर में बुद्धि, विवके, करुणा, क्षमा, सहनशीलता इत्यादि हो। इसे ही मानवीय धर्म कहा जाता है। मानवीय धर्म जैसा कि इसके नाम से ही स्पष्ट है, मानव की आराधना में विश्वास करना है। हमारी नैतिकता मानव को केन्द्र मानकर दृढ़ होती है। हमारी संस्कृति धर्म सभी का केन्द्र बिन्दु मानव ही है। इस प्रकार मानवतावाद में मानव को ईश्वर का गौरव प्रदान किया जाता है। मानवतावाद यह विश्वास करता है कि पूजा एक आदर्श की होनी चाहिए। मानवता भी एक आदर्श है। इसलिए पूजा मानवता की ही की जानी चाहिए। इसके अलावा मानववाद एक नैतिकता पूर्ण ईश्वर की पूजा करता है। इसलिए इसकी संगति आचारशास्त्र से भी हो जाती है।

टैगोर का मानवतावादी विचार उनके पूरे दर्शन में व्याप्त है। उन्होंने ईश्वर तथा प्रकृति दोनों को मानवीय रूप देने का प्रयत्न किया है। टैगोर ने कभी मानव को ईश्वर के स्तर तक पहुँचा दिया है और कभी ईश्वर को मानव के स्तर। इस तरह टैगोर का ईश्वर एक अर्थ में ईश्वर है और दूसरे अर्थ में वह परमपुरुष है। वास्तव में टैगोर का मानवतावादी धर्म इस बात की ओर इंगित करता है कि किसी भी धर्म का सार मानव कल्याण है। धर्म का तात्पर्य मात्र पूजा–पाठ या ब्रह्म के

साथ तादात्म्य स्थापित करना नहीं है। टैगोर किसी भी ऐसे धर्म को स्वीकार नहीं करते जो मात्र वाह्य आडम्बर पर आधारित हो। उनके अनुसार उनका धर्म वास्तव में एक कवि का धर्म है। एक कवि हृदय की संवेदनाओं को, अन्तः अनुभूति को, अपनी कविता का स्तोत्र मानता है। उसी तरह टैगोर धर्म के क्षेत्र में भी हृदय की अनुभूति को ही आधार मानते हैं। इन्द्रिय या विवके धर्म के सही आधार नहीं हो सकते। धर्म वस्तुतः हृदय से सम्बन्धित है और एक कवि का धर्म मुख्यतः आन्तरिक अनुभूति पर ही आधारित होगा। ईश्वर के सान्निध्य के लिए विवके अनुपयुक्त है। अन्तः अनुभूति के द्वारा ही ईश्वर के साथ सान्निध्य स्थापित हो सकता है।

टैगोर का धर्म कोई साम्प्रदायिक धर्म नहीं है। साम्प्रदायिक धर्म की सीमा होती है। वह किसी सम्प्रदाय विशेष तक ही सीमित रहता है। लेकिन टैगोर सभी धर्मों को समान रूप से देखते है। टैगोर का धर्म अध्यात्म पर आधारित है तथा प्रेम इसका मूल मन्त्र है। प्रेम का तात्पर्य मानव का ईश्वर से प्रेम व मानव का मानव से प्रेम। इसीलिए टैगोर के धर्म को 'मानव–धर्म' भी कहा जाता है। टैगोर के अनुसार हिन्दूधर्म की दो विशेषताएँ हैं। पहली बात है कि हिन्दुधर्म में अनुभव पर बल दिया गया है, ईश्वर की अनुभूति या ईश्वर के प्रति प्रेम धर्म की एक विशिष्ट मान्यता है दूसरी बात मानव से प्रेम आवश्यक है। इस तरह टैगोर ने धर्म का केन्द्र बिन्दु मानव को माना है। संन्यासवाद को मानव–धर्म ने नकार दिया है। ईश्वर को टैगोर ने 'सुप्रीम मैन' तक पहुचना। यह तभी सम्भव है जब हम मानव समुदाय की सेवा करें। धर्म के शाब्दिक अर्थ की विवेचना करते हुए टैगोर ने यह बतलाया है कि धर्म मानव के आपसी सम्बन्ध को तथा समाज को धारण करता है, मानव की सेवा करने वाला सबसे बड़ा धर्मात्मा है। टैगोर का अध्यात्मवादी दर्शन मानवतावादी दर्शन है। मानव का यह प्रयास रहा है किवह जिस भी चीज के सम्पर्क में आता है उसको मानव कल्याण के साथ जोड़ देता है। टैगोर का कहना है कि सभ्यता से मानव के धर्म का परिचय होता है न कि उसकी शक्ति एवम् धन से। टैगोर के अनुसार ईश्वर को प्राप्त करने के लिए सारी मानव जाति के साथ प्रेम करना होगा। मानव का धर्म मानव के साथ प्रेम करना है। टैगोर के अनुसार प्रकृति को मानव के सन्दर्भ में ही अर्थपूर्ण माना जा सकता है। उसी तरह मानव के जीवन के जीवन को भी मान के साथ प्रेम करने में ही सार्थक माना जा सकता है। टैगोर के अनुसार मानव के अन्दर मानवता की जो भावना है वह उसके आध्यात्मिक स्वरूप का द्योतक है। मानव की मानव के साथ एकता और मानव का एक दूसरे से प्रेम करना आध्यात्मिकता का द्योतक है।

lxhr e xhr d vFk ,o mld idkjk dk v/;;u

xkiky dekj feJ[1]

'गीत' साहित्य का शब्द है। गीत का पर्याय है –1. गान, गाना, तराना, नगमा, 2. लोकगीत, 3. गद्य गीत, 4. बड़ाई, यश। संस्कृत साहित्य में गीत का अर्थ है गाया हुआ या अलापा हुआ। सांगीतिक परिपेक्ष्य में यदि हम गीत को देखें तो संगीत की व्याख्या ही है 'सम्यक गीत'। साम संहिता भाष्य के अनुसार आभ्यन्तर प्रयत्न से स्वर ग्राम की अभिव्यक्ति गीत है। साहित्य जगत में तो प्रत्येक वह रचना जो छन्द बद्ध हो गीत कही जा सकती है चाहे वह गद्य ही क्यों न हो। सम्भवतः इसीलिए 'गद्य गीत' 'गीत' का पर्याय भी है। किंतु संगीत जगत में गीत का अर्थ इससे कुछ अलग ही है। 'गीतं वाद्यं तथा नृत्यं त्रयं संगीत मुच्यते' इस कथन में संगीत के तीन घटकों में गीत शब्द आया है जहाँ वह गान अर्थात कण्ठ संगीत का सूचक समझा जाता है। गान शब्द पूरे स्वर पक्ष यानी गायन के साथ स्वरोत्पादक तत् और सुषिर वाद्य का भी अर्न्तभाव करता है। अर्थात संगीत में गीत का अर्थ केवल काव्य का गायन नहीं है अपितु स्वरों का गायन है। अब प्रश्न यह भी आता है कि क्या केवल स्वरों का गायन ही गीत है या उसमें भी कुछ नियम हैं ? इसके उत्तर में इस श्लोक का उद्धरण उचित प्रतीत होता है।

^^jtd% Loj lUnHkk xhrfeR;kfHk/kh;rA**[1]

रंजक स्वर सन्दर्भ को ही गीत कहा जाता है। स्वर सन्दर्भ में सन्दर्भ को 'गुम्फ' कहा जाता है जिसका अर्थ है 'रचना'। अर्थात स्वर सन्दर्भ का अर्थ हुआ 'स्वरों की रचना विशेष'। केवल स्वरों की रचना विशेष ही गीत नहीं हो सकता अपितु एक ऐसा स्वर सन्दर्भ जो रंजक हो उसे गीत कहते हैं। इसलिए शारंगदेव ने संगीत रत्नाकर के चौथे अध्याय के प्रथम चरण में स्पष्ट लिखा है कि रंजक स्वर सन्दर्भ या स्वरों की रंजक रचना ही गीत है, कोई भी स्वर सन्दर्भ गीत नहीं कहा जा सकता। इसलिए गीत के लक्षण में रंजक विशेषण रखा है। यहा

1- lgk;d vkpk;] lxhr foHkkx] t0vkj0,p0 fo'ofo|ky;] fp=dV m0i0

पर एक सन्देह भी उत्पन्न होता है कि स्वर का अर्थ है जो स्वतः श्रोता के चित्त का रंजन करे। इस निरुक्ति में स्वर में रंजकता अन्वित ही है इसलिए केवल स्वर सन्दर्भ कहने से गीत में भी तो रंजकता सिद्ध हो जाती है फिर रंजक विशेषण की क्या आवश्यकता है? विचार के उपरान्त यह स्पष्ट होता है कि स्वर रंजक होते हुए भी उनका सन्दर्भ कभी अरंजक हो सकता है। जैसे कभी प्रयोज्य राग के नियमों के अनुसार प्रवेश निग्रह आदि क्रियाओं का ध्यान न रखे जाने पर राग की स्थापना से पहले ही विवादी स्वर का प्रयोग हो जाने से राग की हानि होती है तब वहाँ सन्दर्भ अरंजक हो जाता है। इस प्रकार सन्दर्भ हेतु विशेषण के रूप में रंजक शब्द का प्रयोग किया जाना उचित है। ''स्वर ताल–बद्ध शब्द रचना जो मधुर हो, जिसे सुनने वालों का चित्त प्रसन्न हो गीत कहलाता है।''[2]

xhr d: Hkn& यद्यपि सामवेद सहस्त्र प्रकार के गीतों का साधन है। गायक इच्छानुसार किसी एक का अवलम्बन कर सकता है किन्तु शास्त्रों के अनुसार गीत के मुख्य दो भेद कहे गये हैं– वैदिक और लौकिक। वैदिक गीतों की चर्चा गेय पद के अन्तर्गत हुई है। शास्त्रीयता के आधार पर लौकिक गीतों के भी दो विभेद कहे गये हैं– मार्गी और देशी। संगीत रत्नाकर में भी ग्रन्थकार ने गीत के दो भेद कहे– गान्धर्व और गान।

^^xkU/koZ xkufeR;L; Hkn};eqnhfjreA**[3]

अर्थात गान्धर्व और गान ये दो भेद गीत के कहे गये हैं।

xkU/koZ– जिस संगीत का प्रयोग गान्धर्व लोग किया करते थे गान्धर्व गीत कहलाता था। गान्धर्व को वेदों के समान अपौरुषेय अर्थात जो मनुष्य द्वारा निर्मित न हो ऐसा कहा गया है। ये शब्द प्रधान होते थे। इनमें कठोर नियमों का पालन आवश्यक था। इस गान को मोक्ष प्राप्ति का साधन (मार्ग) माना जाता है इसी कारण इसे मार्ग या मार्गी भी कहा जाता है। प्राचीन ग्रन्थों में गान्धर्व शब्द संगीत का सूचक है। गान्धर्व और गान का जोड़ा नाट्यशास्त्र से आया है जहाँ गीत (गीत, वाद्य) के सामान्य अर्थ में इन शब्दों का प्रयोग हुआ है। अभिनव ने नाट्यशास्त्र की टीका में 33 वें अध्याय में कहा है कि दोनो के घटक स्वर, ताल और पद ही हैं लेकिन तीनों का स्वरूप गान्धर्व और गान में भिन्न बताया है। इनकी व्याख्या के आधार पर संक्षेप में हम कह सकते हैं कि गान्धर्व के स्वर पक्ष में दो ग्रामों का भेद, जाति और अंश का भेद, स्वर की लोपविधि, एक स्थान में कम से कम पाँच स्वरों का प्रयोग, नियत अलंकारों का ही प्रयोग,14 मूर्छना और 84 शुद्ध तानों की मर्यादा का नियम अनिवार्य एवं अपरिवर्तनीय था। गान में रक्ति के अनुसार इन सब नियमो में ढील दी जा सकती थी। गान्धर्व में स्वर प्रधान और

पद गौड़ है और स्वर ताल वाहक के रूप में पद रहता है इसलिए गान्धर्व में पद सार्थक या निरर्थक कोई भी हो सकता है। गान में अर्थ बोध की दृष्टि से पद प्रधान और स्वर उसका उपरंजक होने से गौड़ है। ताल पक्ष में हाथ की क्रियाओं पर आधारित ताल का प्रयोग और यति, लय, ग्रह, मार्ग आदि का नियत ढंग से प्रयोग का नियम अनुल्लंघनीय माना गया लेकिन गान में विभिन्न प्रकृति के पात्रों की गति के अनुरूप ताल–प्रयोग किया जा सकता था। पद विधि भी दोनो की भिन्न है। गान्धर्व का फल प्रधानतः अदृष्ट और प्रयोक्ता को होता है तथा गान का दृष्ट फल सामाजिक का यानि उसके चित्त का रंजन है जो तत्काल प्राप्त हो जाता है। गीत के गान्धर्व लक्षण के सन्दर्भ में नाट्यशास्त्र एवं संगीत रत्नाकर की व्याख्या एक जैसी ही है–

^^vukfnlEinik; ;nxU/koS% lais;rs A
fu;rs J;ls gsrLrnxkU/koZ txqcZ/kkAA**4

जो वेदों की तरह अपौरुषेय हैं अर्थात मनुष्य के द्वारा नहीं बनाया गया । जो अनादिकाल से गुरु शिष्य परम्परा से जाना गया है। उसके अनुसार ग्रह, अंश, मूर्छना इत्यादि के नियमों से युक्त होने से नियत है और श्रेयस अर्थात लौकिक सुख, स्वर्ग और मोक्ष देने वाला है वह गान्धर्व है। इसकी उत्पत्ति सामवेद से हुई है यह गन्धर्वों को अति प्रिय है।

निषकर्षतः हम कह सकते हैं कि गान्धर्व गीत मार्गी है। यह अपौरुषेय है। इसके नियमों में लेश मात्र शिथिलता की कोई गुंजाइश नहीं है। सामवेद से उत्पन्न मोक्ष प्रदान करने वाला यह गीत गन्धर्वों को अति प्रिय होने के कारण गान्धर्व कहलाया। इस गीत का प्रचलन अब बन्द हो गया है।

गान– गीत का दूसरा प्रमुख प्रकार है, गान। ''गान्धर्व के अपौरुषेयत्व के विपरीत गान पौरुषेय (मनुष्य द्वारा निर्मित) है क्योंकि वह वाग्गेयकार के द्वारा बनाया गया है।''[5] अर्थात जिस संगीत की रचना हमारे संगीतकार करते आये हैं और जिसका प्रयोग समाज में मनोरंजन हेतु हुआ करता है, वह गान कहलाता है। गान नियत नहीं अपितु केवल लक्षणों से युक्त हुआ करता है। इसमें कड़े नियम नहीं हैं बल्कि सामान्य लक्षण या विशेषतायें कही गई हैं जिनके अनुसार नई रचना की जा सकती है।

^^;=q okXxs;dkjs.k jfpra y{k.kkfUorEA
^^ns'kh jkxkfn"kq iksDra rnxkua tujTtueAA**6

vFkk& जो वाग्येयकार के द्वारा लक्षणों से अन्वित देशी राग आदि में बनाया गया और लोगों का रंजन करने वाला है उसे गान कहा गया।

शारंगदेव के अनुसार गान की रचना देशी रागों और देशी तालों में होती है जो ग्राम रागों और मार्ग तालों की तरह है अपरिवर्तनीय नहीं हैं बल्कि उनमें परिवतर्न की छूट है। वास्तव में गान का उद्देश्य श्रोता के मन का रंजन करना ही है।

नाट्यशास्त्र के अनुसार गान्धर्व का प्रयोग नाट्य के पूर्वरंग में और गान का प्रयोग नाट्य के अन्तर्गत प्रयुक्त होने वाली गीत विधाओं के लिए किया गया है।

प्रस्तुत शोध पत्र में गान्धर्व और गान के लक्षण को मार्ग और देशी से मिलाकर देखने पर यह स्पष्ट होता है कि मार्ग की गान्धर्व से और देशी की गान से बहुत समानता हैं यद्यपि नाट्यशास्त्र में मार्ग और देशी जैसे किन्ही दो प्रकारों की चर्चा नहीं प्राप्त होती। ये शब्द सर्वप्रथम बृहद्देशी में प्रयुक्त हुए। इसी आधार पर नाट्यशास्त्र के टीकाकार अभिनव ने भी गान्धर्व और गान की व्याख्या मतंग के मार्ग और देशी से प्रभावित है एसा हम कह सकते हैं। शारंगदेव के मार्ग–देशी के स्वरूप और भेद के निरुपण में भरत, मतंग और अभिनव के दृष्टिकोंण का समन्वय दिखाई देता है। सबसे पहले कल्लिनाथ ने स्पष्टतः गान्धर्व को मार्ग और गान को देशी कहा। इस प्रकार हम गान को देशी भी कह सकते हैं। देशी संगीत के मुख्य दो भेद कहे गये हैं– निबद्ध और अनिबद्ध। शारंगदेव ने भी इन्हे ही गान के भेद कहा है–

^^fuc)efuc)| rn` }/kk fuxfnr| c/k%A**[7]

1. fuc) xku %& निबद्ध का सामान्य अर्थ है बँधा हुआं नाट्यशास्त्र के ध्रुवा अध्याय में पद की चर्चा में निबद्ध और अनिबद्ध शब्द आये हैं। इसके अनुसार अर्थ युक्त सताल (ताल–बद्ध), छन्द–बद्ध ,नियत संख्या और स्वरूप वाले अक्षरों से युक्त पद ही निबद्ध है।

संगीत रत्नाकर के अनुसार–

^^c)| /kkrfHkjx'p fuc)efHk/kh;r|A**[8]

धातु अर्थात प्रबन्ध के अवयव या खण्ड और अंग अर्थात पद, विरुद, पाट आदि से जो बँधा हुआ है उसकी संज्ञा निबद्ध है।

'' जो संगीत सामग्री ताल बद्ध होती है उसे निबद्ध गान कहते हैं।''[9]

अब हम निबद्ध के प्राचीन एवं आधुनिक प्रकारों का अध्ययन करेंगे। निबद्ध के प्राचीन प्रकारों में तीन संज्ञायें दी गयी हैं–

^^ l|Kk=;| fuc)L; i|cU/kk oLr| #ideA**[10]

प्रबन्ध, वस्तु और रुपक ये निबद्ध की तीन संज्ञायें हैं।

i|cU/k& चार धातुओं और छहो अंगों से प्रत्यय लगाने पर प्रबन्ध शब्द बनता है जिसका सामान्य अर्थ है प्रकृष्ट रुप से बद्ध। वर्तमान का बन्दिश प्रबन्ध का

समकक्ष शब्द है। चीज और गत भी इसकी परिधि में आते हैं। उदग्राह, मेलापक, ध्रव और आभोग चार धातुओं से प्रबन्ध बनता है। इनमें प्रबन्ध का पहला खण्ड उद्ग्राह है। इसी से गीत का आरम्भ होता है। मेलापक, उद्ग्राह और ध्रुव को मिलाने वाली संज्ञा है। ध्रुव को कभी भी किसी भी प्रबन्ध में छोड़ा नही जा सकता इसलिए इसका नियत्व है अर्थात ध्रुव अनिवार्य है। ध्रुव को उद्ग्राह और आभोग के बाद भी गाया जाता है। गीत की समाप्ति अन्तिम खण्ड आभोग से नही बल्कि ध्रुव से होती है। आभोग प्रबन्ध की रचना में अन्तिम खण्ड है जो गीत में पूर्णता लाता है। इसी धातु में वाग्येयकार का नाम अंकित होता है। इस प्रकार प्राचीन गीतों के पांच खण्ड माने गए– उद्ग्राह, ध्रुव, मेलापक, अन्तरा और आभोग। आधुनिक गीत के केवल दो खण्ड ही माने गए हैं– 1.स्थाई और अन्तरा।

i:pfyr fuc) xku& प्राचीन काल में प्रबन्ध, वस्तु और रूपक ये निबद्ध गान के अन्तर्गत आते थे। आधुनिक काल में प्रचलित निबद्ध गान के अन्तर्गत ध्रुपद, धमार, ख्याल, टप्पा, ठुमरी, तराना, होली, चतुरंग, भजन, गजल, दादरा, चैती, कजली, सोहर–बन्ना, श्रम गीत, राग माला, स्वर–सागर, ताल–माला, तिरवट इत्यादि आते हैं।

vfuc) xku& अनिबद्ध का अर्थ प्रायः लोग बन्धन मुक्त से करते हैं किन्तु ऐसा नहीं है, बन्धन तो उसमें भी होता ही है राग के नियमों से वह भी मुक्त नहीं है। बन्धन मुक्त का अर्थ राग और ताल के नियमों से मुक्त नहीं समझना चाहिये। अनिबद्ध का अर्थ हम कह सकते हैं कि ऐसी प्रस्तुति जिसको स्वर–बद्ध और ताल–बद्ध पूर्व से न किया गया हो अपितु प्रयोक्ता को उसका बन्ध अपने ढंग से बनाने की स्वतंत्रता है किन्तु रागों और तालों की परिधि से बाहर जाने की स्वतंत्रता नही है। ''जो सामग्री ताल में न बँधी हो केवल स्वर–बद्ध हो उसे अनिबद्ध गान कहते हैं जैसे आलाप।''[11] आलाप अक्षरों से वर्जित गमक वाली ध्वनि होती है। अक्षर का अर्थ केवल सार्थक अक्षरों से नहीं है अपितु सम्पूर्ण व्यंजन ध्वनि से है। व्यंजन ध्वनि के बिना केवल स्वर ध्वनि (अ,इ,उ इत्यादि) से ध्वनि का मुख से उच्चारण सम्भव है, इनके प्रयोग के बिना व्यंजन व्यक्त ही नहीं हो सकते।

^^vkyki xedkyflrj{kjoftrk erk A**[12]

आलाप का प्रयोग मुख्यतः गत अथवा गीत के पूर्व में होता है। संगीत में आलाप भी गीत का एक प्रकार है। प्राचीन काल में आलाप के चार प्रकार माने जाते थे– रागालाप, रुपकालाप, आलप्तिगान और स्वस्थान नियम का आलाप।

jkxkyki& राग के स्वरों का विस्तार जिसमें ग्रह, अंश, मन्द्र, तार, न्यास, अपन्यास, अल्पत्व, बहुत्व, षाड़तत्व और औडवत्व राग के इन दस लक्षणों का पालन होता था, रागालाप कहलाता था।

: idkyki– इसमें रागालाप के सभी लक्षणों का पालन तो होता था, किन्तु प्रबन्ध की धातुओं के समान रूपकालाप के खण्ड करने पड़ते थे जो रागालाप में नहीं होता था। रूपकालाप में रागालाप के समान राग की व्याख्या नहीं करनी पड़ती क्योंकि वह स्वयं शब्द व ताल रहित प्रबन्ध के समान स्पष्ट तथा विस्तृत होता था।

vkyfIrxku& रूपकालानप के बाद आलप्तिगान का स्थान आता है। इसमें राग के सभ्झी नियमों का पालन तो करते ही थे, साथ ही साथ तिरोभाव–अविर्भाव भी दिखाया करते थे।

LoLFkku fu;e dk vkyki& प्राचीन काल में आलाप के एक विशेष नियम को स्वस्थान नियम कहते थे। इसमें राग के लक्षणों का पालन करते हुए आलाप को मुख्य 4 हिस्सों में विभाजित कर दिया जाता था जिसे स्वस्थान नियम कहते थे। आधुनिक संगीत में इसका प्रचार नही है।

निष्कर्षतः यह स्पष्ट है कि संगीत में गीत का अर्थ साहित्य के गीत की अपेक्षा भिन्न है। सांगीतिक गीत का सम्बन्ध शब्दों की अपेक्षा स्वरों पर अधिक आश्रित है, केवल स्वरों पर ही नहीं अपितु रंजक स्वर सन्दर्भ से सांगीतिक गीत का अवतरण होता है। सांगीतिक गीत के दो मुख्य प्रकार वैदिक और लौकिक कहे गये हैं। लौकिक के दो विभेद गान्धर्व और गान हैं जिन्हे क्रमशः मार्गी एवं देशी गीत भी कहते हैं। देशी गीत के दो विभेद अनिबद्ध एवं निबद्ध हैं इनके प्रकारों में शास्त्रीय, उप शास्त्रीय, लोक इत्यादि विधाएं आती हैं।

lUnHk xUFk lph

1- शारंगदेव, संगीत रत्नाकर अध्याय 4 श्लोक1।
2- हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव, राग परिचय भाग 2 पृष्ठ 145।
3- शारंगदेव, संगीत रत्नाकर अध्याय 4 श्लोक 1।
4- शारंगदेव, संगीत रत्नाकर अध्याय 4 श्लोक 2।
5- शारंगदेव, संगीत रत्नाकर अध्याय 4 सरस्वती टीका पृष्ठ 203।
6- शारंगदेव, संगीत रत्नाकर अध्याय 4 श्लोक 3।
7- शारंगदेव, संगीत रत्नाकर अध्याय 4 श्लोक 4।
8- शारंगदेव, संगीत रत्नाकर अध्याय 4 श्लोक 5।
9- हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव, राग परिचय भाग 3 पृष्ठ 146।
10- शारंगदेव, संगीत रत्नाकर अध्याय 4 श्लोक 6।
11- हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव, राग परिचय भाग 2 पृष्ठ 146
12- शारंगदेव, संगीत रत्नाकर अध्याय 4 श्लोक 360।

lkSUn;Z dk ik'pkR; n'kZu

MkW- nsoUnz dqekj f=ikBh[1]

सौन्दर्य भाास्त्र के सच्चे स्वरूप काव्य, कला, में पाये जाते हैं। 'एस्थेटिक्स' भाब्द ग्रीक भाशा से लिया गया है। जिसका मूलरूप Atoqntikosi जिसका अर्थ ऐन्द्रिक सुख की चेतना से है। पा चात्य धारणा के सम्वेदन भील अर्थ में सौन्दर्य भाास्त्र को लिया गया। loiiFke ckmexkVZu ने इसका सम्वेदन भील ऐन्द्रिय बोध के भाास्त्र के अर्थ में किया है। हीगेल ने इसका प्रयोग ललित कला के द र्न में दिया है। सामान्य प्रयोग का सन्दर्भ, वि लेशणात्मक निरूपण में होने लगा। सुनि चत अर्थ के प्रयोग ललित कला में कलाकृतियों का मूल्यांकन प्रत्यक्षों का ज्ञान माध्यम की दृश्टि, उस भाासन को माना गया। जिसमें ऐन्द्रिय बोध से सौन्दर्य बोध के भावन मनोमय आनन्द का वि लेशण है'।[प] सौन्दर्यानुभूति के सम्पूर्ण क्षेत्र उचित अर्थ का रूप है।[ii] अर्थ व्याप्ति का द र्न और मनोविज्ञान में स्वतन्त्र चेश्टा, सौन्दर्य का खगोल है। दा र्निक विवेचन में यह व्यक्ति दृश्टि का गुण है। काल की दृश्टि में क्रोचे के सौन्दर्य भाास्त्र को 'प्राचीन नहीं नवीन माना गया है[iii], कारण क्रोचे ने 'द साइन्स आफ एक्सप्रेसन' की आस्था देकर स्थापित किया है।

अत्याधुनिक विचार है कि–लैंगर ने सौन्दर्य विस्तार पर मौलिक ढंग से विचार किया है। विकेलमान और हैर्दर के काल से अब तक कलाओं को प्रवृत्ति और अर्थवत्ता पर चिन्तन मनन किया जाता रहा है,जिसे चिन्तन मनन के संग्रह स्वरूप 'एस्थोटिक' के नाम से द र्न भाास्त्र का एक अलग निकाय ही बन गया है। इस निकाय (अर्थात सौन्दर्य भाास्त्र) से भिन्न ढंग से परिभाशित करने की चेश्टा की गयी है। इसे सुन्दर का विज्ञान, आस्वादन का द र्न, ललित कलाओं, का विज्ञान या अभिव्यक्ति का विज्ञान कहकर उपदे ात किया गया है। सौन्दर्य भाास्त्र ललित कलाओं का विज्ञान (क्रोचे का मत) और द र्न हीगेल का मत है।[पअ] इन दोनों भाास्त्रों का मार्गद र्न विचारकों ने भिन्न माना है।– जैसे सान्तायन की दृश्टि का सम्बन्ध मूल्य बोध के साथ है।[v]

1- lgk;d vkpk;Z] yfyr dyk foHkkx] t0vkj0,p0 fo'ofo|ky;] fp=dwV m0iz0

^lkUn;l eY; dk ,d gh idkj gA मान्यता का मूल द नि (एक्यिोलाजी) जो द नि चिन्तन को कला भाास्त्र का मान है।’’[vi] ललित कलाओं की सैद्धान्तिक पीठिका में सौन्दर्य को चित्रात्मक रूप देने का प्रयत्न किया गया है। लोक जीवन के अंग ने साहित्य और कला को एक साथ ही जन्म दिया, उसके समग्र रूप का परिच कला के अध्ययन पर निर्भर है। ललित कलाओं के पारस्परिक अन्त सम्बन्ध पर सौन्दर्य, आस्वाद, संवेग पुनः प्रत्यक्ष इत्यादि से हो सम्बद्ध रहती है’।

विचारकों के तत्व द नि में मानवीकी विशयों का विज्ञान को लेकर काव्येत्तर कलाओं–स्थापत्य, मूर्ति, चित्र, और संगीत तक फैली हुई है। सौन्दर्य भाास्त्र ने सर्वमान्य एवं प्रधान्य तत्वों का वि लेशण प्रस्तुत करता है। सौन्दर्य की सूक्ष्मता प्रसंगों की कल्पना है। यद्यपि रूप भौली और अभिव्यक्ति गुणावगुणों का समग्र कसौटी है। विविध कलाओं के क्षेत्र में चाक्षुश सौन्दर्य मूर्ति, स्थूल रूप साधन की अधिकता है। ललित कलाओं के अन्तः सम्बन्ध को प्रस्तुत करने वाली।

कल्पना–विधान, बिम्ब और प्रतीक की वि ाश्टताओं की खोज मात्र अप्रस्तुतों एवं उपमानों की गवेषणा मानी जाती है। दृश्टि चेतना में रंगों का प्रका ा बहुत व्यापक होता है, चित्रकला–वि ाारदों का कहना है कि वे सुगन्ध और दुर्गन्ध को भी रंगों में व्यक्त कर सकते हैं। इस प्रकार भाव की दृश्टि से घोला रंग प्रका ा और प्रसन्नता को द्योतक है। इतना ही नहीं, भवेत रंग से सात्विक, नीले रंग से प्रतिश्ठा तथा कुलीनता का और लाल रंग से युयुत्सा, मन्यु तथा खतरे का व्यंजना होता है। रंगों के द्वारा व्यक्त होने वाली हमारी संवेदना निर्भर भारीर विज्ञान पुतलियों के प्रका ा द्वारा हमारे आंखों में प्रवे ा करता है। यह प्रवे ा तीन प्रकार से सम्पन्न होता है– लाल और हरे रंग, जिन पर नीले और पीले रंग का प्रभाव पडता है, वे जो काले और भवेत रंग की चेतना का प्रभाव डालते हैं। चित्रकला भौली में राग–रागिनी के वातावरण, दृ य, विशय, इस काल, तथा भाव का पूर्ण ज्ञान ि ाल्प पक्ष का तन्त्र विधान है। कलाओं की सम्यता मनुश्य की विकल भावभूमि को अविकल भाव से व्यक्त करता है। कला का सृजन चित्रकलावत् मूर्त्तता सिद्ध करने के लिए प्रमाण स्वरूप है। कला इतिहास के उदाहरण है– चित्र और चित्र के विशय ने चित्रकारों की चित्रकृतियों का रूप वैभव। विशयों को प्रस्तुत करने की रूप–कला का अद्वितीय रूप है।

कलासूक्ति में विशय का रसोदय, भाब्द चित्र, संगीत वाच्य चित्र, कविता, दृश्य चित्र, पट और मूर्ति आदि का स्वभाविक अनुसरण है। उदय और समाप्ति की भाुभ दृश्टि से कला का सम्वेदन एक नि चत अर्थवत्ता अर्जित कर लेता है।[vii]

चित्र जगत में लालित्य सृश्टि अनिवार्य है। संयोजन का सिद्धान्त, अनुपात सन्तुलन, सम्प्रवाह अथवा छन्दगति का संयोग रस विविध्य का संचार है। रागमाला चित्र पारस्परिकता के द्योतक जिसमें रंग और स्वर राजस्थानी शैली में भरे पड़े हैं। पा चात्य संगीत में वर्ण बोध पर कलात्मक महत्व का व्यावहारिक धरातल सौन्दर्य के तात्विक सम्बन्ध का सिद्ध कर देता है। चित्रकला आधार और माध्यम की दृश्टि से दृ य कलाओं के बीच सर्वाधिक सूक्ष्म है चित्रात्मकता की निकटता ^okn* के आगे का समावे ा है। इस प्रकार 1917 ई0 पा चात त्रिपा र्ववाद फ्यूजियम (धनवाद) को अपूर्ण मानकर, यथार्थवाद, आद र्िवाद, अभिव्यजनावाद, का प्रवर्तन चित्रकला के तत्वों का प्रमाण है।[viii] अंग्रेजी में एक कहावत है जाँ गोर्दा ने धनवाद के पेण्टर इक्विलेण्ट टू आर्किटोक्चर' कहा है। वानगॉग, गॉगीन, और रोनियर ने कृतियों को दृश्टिगत रखते हुए, घनवाद के दो नूतन भेद प्रस्तुत कियें हैं– ^QyV iVu D;fcTe vkj ekm.Vu vkQ fcDl D;fcTe*A[ix] प्रथम चित्रकार चपटी सतह पर ^fp=kRed irhdk* के सहारे विशय को उपस्थित कर रहा है। वास्तु चित्रकार– (आर्किटेक्चर, पेण्टर) की धारणा अनेक प्रकार की अनुभूतियां और अर्थ छवियां अंकित कलाओं की निकटता का स्प ्ट पृथक अस्तित्व का निर्माण करता है। प्रेशणीयता का स्वभाव सौन्दर्य, भाव प्रका ा, अर्थ वैभव, अन्तःसम्बन्ध का निर्दे ा करते हैं। ललित कलाओं में लय संयोजन के अन्तर्भूत तत्व अच्छुश्ण रहते हैं। कलाओं के मध्य सर्व समादृत लय कला निबद्ध की इकाई है। प्रत्येक कला अपने रोमाण्टिक युग से प्रभावित रहती है। प्राच्य धारणा में प्रभाववादी स्वप्न वृत्तो का किरण खण्ड प्रभान्वित का ही सृजन है। इस ^lEink dh uohu miyfC/k ikphu dk fojk/k*। प्रत्येक कला अपने चरम विकास के क्षणों में, अन्य सम्बन्धी कला का साथ लेती है। कलाकार की चेतना के सहारे ललित कला सम्पन्न होती है। आत्मानुभूति का आन्तरिक अंश अमूर्तकला का प्रत्यक्षीकरण है। मूर्त बनने के उपादान शिल्प रूचि का प्रयोग है।

सौन्दर्य दृष्टि के विराट् में एक चयनिका की आवश्यकता है, जिस तरह नायिका की भूमिका सापेक्ष दृष्टि से सौन्दर्यात्मक है। कला में प्रस्तुत सौन्दर्य के आलम्बन विधान में क्रमशः सस्ता और सहृदय के स्वाद रुचि का रुचि भेद संकेतित है। कलानुचिन्तन से प्लेटो ने पूर्व स्वीकृत चयन भाव को आवश्यक माना।

चित्त की एकाग्रता ही सौन्दर्य दृष्टि है। सौन्दर्य भावन में ^vkbfM;k* और ^bet* में एकत्व अथवा सन्तुलन ^^bet bt n fj;ykbt'ku vkQ ,u vkbfM;k bu , flxy vkCtDV**[x] किन्तु विचारकों ने कला चिन्तन को अतिवादी स्वरूप दे दिया। एक ओर चेर्नी शोवस्की ने ^^C;Vh bt ykbQ** तो इफेक्टबरी ने ''ब्यूटी एण्ड गाड आर वन एण्ड द सेम''। इस तरह ^lkUn;

fcUnqvksa dh /kkj.kk* को सरलता पूर्वक पाश्चात्य चिन्तन विकास का देशाधार है।

d½& ;wuku

1. lqdjkr& सुन्दर और शिव एक हैं, अतः सुन्दर जेनोफेन रचित 'मेमोरेबिलिया' नामक ग्रन्थ के आधार पर (सुकरात का सौन्दर्य सिद्धान्त का यही निष्कर्ष है।)
2. IysVks& सुन्दर, शिव और सत्य एक हैं। सुन्दर परम है, और पूर्ण है तथा सुन्दर के लिए भौतिक होना आवश्यक है।
3. lkSUn;Z vkdka{kk& वासना और उपयोगिता से ऊपर की वस्तु है। सार यह है कि सुन्दर शिव एक है। शिव की गति अवस्था में है।

राष्ट्रीय विचार चेतना में दार्शनिकों की दृष्टि–

[k- jkse

1. IysVksd& सौन्दर्य एक प्रकार की कलात्मक कुशलता है।
2. IykfVful& ऊँची धारणा और तर्क का सम्मिश्रण सौन्दर्य है। भावगत अल्पांश में वस्तुगत नहीं हैं इसलिए सौन्दर्य एक रहस्यात्मक सहजानुभूति है।

x- teZuh

1. ckmexkVZu& प्रकृति सौन्दर्य का चरम प्रतिमान है। वस्तुतः प्रकृति का अनुसरण ही सौन्दर्य सृजन है।
2. dk.V& सौन्दर्य चिन्तन शील धारणा का आनन्द है। इसका नैतिक उद्‌देश्य शिवत्व का स्थापन है।
3. ghxsy& सौन्दर्य सृजन ही माध्यम एवं अनुकरण है।
4. 'kksiu gkoj& इच्छाओं अथवा ''प्लैटोनिक'' ''आडियॉज'' का सम्मूर्त्तन ही सौन्दर्य है।
5. ysflax& सौन्दर्य अभिव्यक्ति के विधान और पद्धति में है। चित्रकला और कविता के दृष्टिपथ में विचार करने की चेष्टा है।

?k- bXySaM&

सौन्दर्य के मनोविश्लेषण में दो निकाय हैं–

^^oLrq dk [k.M x.k] oLrq dk v[k.M x.k**

1. 'kk¶Vcjh& सौन्दर्य और परम विभु एक हैं।
2. Vkel jhM& सौन्दर्य आध्यात्मिक चैतन्य है।
3. jfLdu& सौन्दर्य ईश्वर की विभूति है।

सहज और काल्पनिक वृत्ति से परिवेश और संगति का फल जैविक सम्बन्धी है। विचारों के प्रवाह में सौन्दर्य जीवन का संवेग है।

p- :l&

puk'kDldh& सौन्दर्य ही जीवन है।

cfyULdh& सौन्दर्य जीवन सामाजिक यथार्थ का प्रतिबिम्ब है।

आनन्द की दिशा में प्रगतिशील की प्रेरणा है। सौन्दर्य सम्बन्ध की धारणा चिन्तन का विकास है।[xi]

सिद्धान्त की तालिका में सौन्दर्यानुप्राणित कला सृजन सहज ज्ञान की प्राथमिकता है।– dkUp

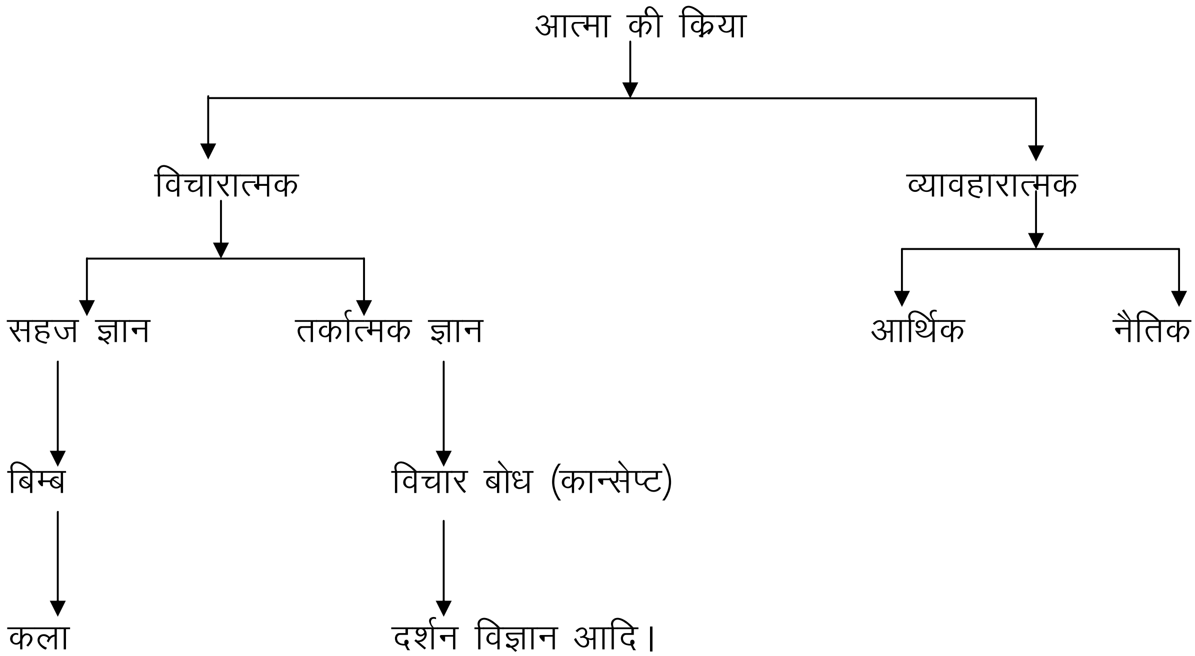

"अभिव्यक्तियां सुन्दर तथा कलात्मक ही होती हैं। कलात्मक अभिव्यंजना विचार बोध का दर्पण है।"[xii]

ik;kfxd lkUn;'kkL=

1. सौन्दर्य का अपने आप में पृथक अस्तित्व नहीं है।
2. सौन्दर्य सत्य सम्बन्ध रखता है।
3. सुन्दर प्राकृतिक सत्य है।
4. कोई भी रूप सर्वत्र सर्वदा सुन्दर प्रतीत हो यह संभव नहीं।
5. सन्तुलन सौन्दर्य का महत्वपूर्ण तत्व है।

सौन्दर्य विधान में रंग परिज्ञान का महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि रंग का प्रभाव परिस्थिति भेद और व्यक्ति भेद वर्ण बोध का प्रकाश है। मानवचित्त का विभाजक गुण उपयोगिता के मूल्य में बंधता है। कलादृष्टि का उदात्त पक्ष कलाकार की शैली में विद्यमान रहता है। वास्तविकता यह है कि मानव मन संवेदनशील और सक्रिय रहता है। बदलती अनुभूति की एक संकुल श्रृंखला है। परिवर्तन की परिस्थिति में देशकाल एक संघात की बहुवर्णी मनोदशा का उच्चीकृत रूप है। त्वक चेतना के साधन ही चयनशील वृत्ति का सम्बन्ध है। हमारे जीवन का प्रथम सम्बन्ध एपिक्रिटिक प्रश्न का लक्षण है। विचारकों ने सर्वदा आनन्दोन्मुख आर्विभाव का वर्तमान सम्बन्ध कालानुभूति की सुखद अनुभूति सत्य, मिथ्या से किंचित ऊपर है। वस्तु विशेष के संवेद्य समीपी मूल्य का विशिष्ट सुख है। अभिज्ञान की दृष्टि से सत्तद्रिक उत्पन्न करती है। काल की दृष्टि कलानुभूति के क्षणिक होती है। परिपक्व बुद्धि की क्रिया ही विवेचन का निष्कर्ष है।

क– सौन्दर्य कलाओं का अपरिहार्य अंग है।

ख– सौन्दर्य सृजन भावन में सहृदय का सापेक्षिक महत्व है। कलाकार की रुचि का बोध है।

ग– सौन्दर्य वस्तुनिष्ठ एवं आत्मनिष्ठ है। इसे निर्विवाद मान लेना चाहिए।

घ– सौन्दर्य ग्रहण अन्तःकरण का योग है।

च– प्रायोगिक सौन्दर्यशास्त्र विवेचना का ललित रूप है।

छ– प्राणियों की चेतना शरीर रचना का नियंन्त्रित रू॰ है।

ज– कला चिन्तन की दृष्टि में सौन्दर्य के प्रति भारतीय दृष्टिकोण ही प्रकृति प्रेम का मूल है।

झ– 'उदात्त' सौन्दर्य का चरम रूप है।

ट– सौन्दर्यानुभूति का आनन्द अनिवार्य सम्बन्ध है।

ठ– सृजन की सहृदयता कलानुभूति बन जाती है।

dYiuk

रचना की दृष्टि से कल्पना कलाकार की शक्ति है। जिससे नवीन विधान का व्यापार होता है। नटास्ल्स स्टैंडर्ड डिक्शनरी में इमॉजिनेशन की परिभाषा प्रयुक्त कल्पना का प्रारूप है। इस अर्थापन में मनोविज्ञान की कल्पना कला और साहित्य से भिन्न है। पात्र स्थान और आसंग से स्वर्ण लुब्ध विवेच्य दृष्टिकल्पना, ध्वनिकल्पना, स्पर्श कल्पना, घ्राण कल्पना, क्रिया कल्पना और रस कल्पना। क्रियात्मक कल्पना कला एवं सौन्दर्य की सहायता से संयोजन की मनोदशा का चित्रण करती है। lk= ने अपने विवेच्य खण्ड में 'इमेज', 'पोट्रेट', 'साइज', 'सिम्बल' इत्यादि गम्भीर विमेश प्रतिपादित हैं। कल्पना और चैतन्य का बोध

अविनाभाव सम्बन्ध है। चैतन्य बोध के बिना कल्पना आविर्भूत नहीं होती। हो सकता है चैतन्य या बोध ही पूर्व स्थिति का अनिवार्य पक्ष है।

Sartre the psychology of imagination, London, p. 211.

सौन्दर्य शक्ति की कल्पना अनुभूतियों का आलम्बन है। चित्र, साहित्य, संगीत नाटक, में कल्पना के सहारे ही महत्वपूर्ण घटना का जन्म होता है। यह पाश्चात्य दर्शन का शास्त्र मौलिक उद्भावना को जन्म देता है।

प्रतिभाओं का विभाव मानस लोक का ज्ञान है। यह कहें कि रचना का ^i ; l o pd ;* एक चिन्तन दूसरे चिन्तन को टटोलता है। वर्ण्य विषय को अप्रस्तुत रूप से प्रस्तुति देने में मूर्त अमूर्त की विधा ही कला की कल्पना है। प्रतीकों के प्रयोग सौन्दर्य और कल्पना का संयोग ही विचारों की दृष्टि है।

अनुभूतियों की विशिष्टता के अनुरूप अन्वेषण और निर्धारण अर्थवृत्ती होते हैं। सारांश यह है कि कलात्मक प्रेषण का चित्रात्मक दर्शन सौन्दर्य की पाश्चात्य धारण है।

l UnHk

[i] Encyclopaedia britaniea, eleventh edition, 1910,p.216.

[ii] Aesthetics is the science the expressive (representative of imaginative) activity, Bendetto croce Aesthetic; transla-4ed by pouglas ainstic, vision tress, petes owen, london, 1953, p.155.

[iii] ogh i`0 & 212.

[iv] George samtayana the sense of beauty, dover publication line, Newyourk .1955,p,16

[v] .... Aesthetics .is concerned with perception values........ lbid.p.16

[vi] Willard E Arnett santayena and the sense of Beauty Indiana university, press,Bloomington, 1937.p.135

[vii] Shelley, a defence of poetry, collected in english Article Essays(19th century) edited by Edmund D.jones london, 1950,P,106

[viii] Jangrden , modern french painters 13 4-a cubism is the painters, eduivelent to Archi tecture, or we may say architecture is a variety of cubist sculpture;

[ix] R .H wilenshi , the modern movement in art,london, 1956 .pp.165

[x] S.Alecxander, beauty and oth exforms of value , london , 1933,p.p.179-780

[xi] yDPk l vku vkV] tku jfLdu] tkt , yu] 1904

[xii] Aesthetic, cross, translated by anslic dougles, p.13

i:d"V i:cU/ku

Mk0 i:Kk feJk[1]

किसी भी क्षेत्र में कुशल प्रबन्धन के लिए प्रशिक्षित और संयमित व्यक्तियों की आवश्यकता अनुभव की जा रही है। क्योंकि प्रत्येक प्रबन्धकीय कार्य उसको करने वाले व्यक्तियों पर निर्भर होता है, अतः सफल प्रबन्धन हेतु यह आवश्यक है कि प्रबन्धन को सम्पादित करने वाला व्यक्ति प्रशिक्षित होने के साथ–साथ आत्मसंयम से युक्त भी हो। प्रस्तुत शोधपत्र में व्यावसायिक एवं प्रशासनिक प्रबन्धन में आत्मसंयम की आवश्यकता और महत्त्व को प्रतिपादित करने का प्रयत्न किया गया है।

सभी प्रकार के व्यावसायिक प्रबन्धन में कुछ सामान्य कुशलताओं की आवश्यकता होती है। एक कुशल प्रबन्धक और प्रशासक में निम्नलिखित गुणों का होना आवश्यक है।

1. योजना बनाना (Planning)।
2. संगठन करना (Organizing)।
3. नेतृत्व करना (Leading)।
4. नियन्त्रण करना (Controlling)।

अपने निश्चित लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आवश्यक कार्य को पूरा करने की योजना बनाना प्रबन्धक का प्रथम कर्तव्य है।

कार्य को पूरा करने के लिए आवश्यक व्यक्तियों को एकत्र करना प्रबन्धक का दूसरा कर्तव्य है।

एकत्रित व्यक्तियों का नेतृत्व करना, उन्हें अपने–अपने कार्य में नियोजित करना प्रबन्धक का तीसरा कर्तव्य है।

1- v/;{k] I:Ld`r foHkkx] e-xk-fp-xkekn; fo'ofo|ky;] fp=dV] I ruk] e0i0

कार्य कर रहे व्यक्तियों पर नियन्त्रण रखना, जिससे वे अपने कार्य से विचलित न हों, पूर्ण एकाग्रता एवं तत्परता से अपने कार्य को करते रहें। कार्य करते समय प्रत्येक व्यक्ति विधि–निषेध का पालन करे। यह सुनिश्चित करना प्रबन्धक का चौथा कर्तव्य है।

यथा–

A manager's primary challenge is to solve problems creatively, and you should view management as "the art of getting things done through the effort of other people." The principles of management then, are the means by which you actually manage, that is, get things done through others--- individually, in groups or in organizations. Formerly defined, the principles of management are the activities that plan, organize, and control the operations of basic elements of people, materials, machines, methods, money and markets, providing direction and co-ordination and giving leadership to human efforts, so as to achieve the sought objectives of the enterprise. For this reason, principles of management are often discussed or learned using a framework called P-O-L-C which stands for planning, organizing, leading and controlling.[1]

एक कुशल प्रबन्धक में निम्नलिखित कुशलताओं का होना आवश्यक है।

1. अवधारणात्मक कुशलताएँ (Conceptual skills)।
2. तकनीकी दक्षताएँ (Technical skills)।
3. मानवीय दक्षताएँ (Human skills)।1

किसी भी स्थिति का बृहद् एवं स्पष्ट चित्र अपने मस्तिष्क में रखना तथा स्थिति के अनुसार मन में एक दृष्टिकोण को विकसित करना तथा निश्चित विचारों को अपनाते हुए ऐसी योजना बनाना जो भविष्य में सफल हो। किसी कार्य को करने के लिए या लक्ष्य को पूरा करने के लिए कितने एवं किस प्रकार के व्यक्ति अपेक्षित हैं? इसकी स्पष्ट कल्पना रखते हुए उनको एकत्रित या संगठित करना। कौन क्या करेगा? इसका निश्चय करके उन व्यक्तियों को उनके निश्चित दायित्व का बोध कराना। विधि एवं निषेध– Dos and don'ts का भी ज्ञान कराना।

एक अच्छे प्रबन्धक में पर्यवेक्षण, प्रोत्साहन, प्रशिक्षण, व्यक्तिगत प्रशिक्षण, पारिश्रमिक देकर काम कराना तथा कर्मचारियों की क्षमताओं का सही आकलन करना आदि गुण होने चाहिए। साथ उसे अपने कार्य की तकनीकी जानकारी होनी चाहिए।

कुशल प्रबन्धक में व्यक्तिगतरूप से कार्य कराने तथा सामूहिकरूप से कार्य करने एवं कराने की क्षमता का होना भी आवश्यक है।

उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि प्रबन्धक को अनेक प्रकार के दायित्वों का निर्वहन करना होता है। कई बार कार्य को पूरा करते समय अचानक एक साथ, एक समय अनेक समस्याएँ खड़ी हो जाती हैं। ऐसी स्थिति में यदि प्रशासनिक अधिकारी या प्रबन्धक अपना संयम खो देता है तो निश्चय ही कार्यपूर्ति में बाधा हो सकती है अथवा विलम्ब हो सकता है। अतः प्रबन्धक को अपना धैर्य बनाए रखते हुए शान्त एवं सजग चित्त से अपने कार्य को पूरा करना चाहिए। क्योंकि धैर्यपूर्वक किया गया प्रयत्न निष्फल नहीं होता है। महाभारत के अंश श्रीमद्भगवद्गीता में कहा गया है–

;rks ;rks fu'pjfr eu'pParís eu'pkpyefLFkjeA
rrLrrks fu;E;Srn] vkReU;so o'ka u;srAA [2]

अर्थात् यह मन जहाँ–जहाँ भी जाए वहाँ–वहाँ से नियन्त्रित करके इसे बार–बार अपने (आत्मा) में ही लगावे। यहाँ 'अपने' शब्द का विस्तार अपने लक्ष्य के रूप में करके हम उपर्युक्त श्लोक के मर्म को समझ सकते हैं। इसमें योगेश्वर कृष्ण यह सन्देश देना चाहते हैं कि अपने मन को विचलित होने से बार–बार रोकना तथा अपने लक्ष्य में ही लगाना चाहिए। यह लक्ष्यप्राप्ति हेतु आवश्यक है। यह आत्मसंयम का ही एक रूप है।

कुछ लोगों की धारणा है कि आत्मसंयम एक निश्चित आयुवर्ग के लोगों का विषय है। यह मिथ्या धारणा है। आत्मसंयम जहाँ बच्चों के सर्वांगीण विकास–आत्मिक, बौद्धिक, मानसिक तथा शारीरिक विकास हेतु आवश्यक है, वहीं युवा, प्रौढ तथा वृद्धों के लिए भी यह उतना ही आवश्यक है। असंयमित युवा ही प्रायः दुर्व्यसन, नशाखोरी, हत्या, चारित्रिक पतन आदि के शिकार होते हैं। प्रौढ भी आत्मसंयम के अभाव में बहक जाते हैं तथा अविवेकपूर्ण निर्णय ले लेते हैं, जिससे वे उपहास और अपयश के पात्र बनते हैं। वृद्ध भी आत्मसंयम से युक्त होने पर सम्मान और प्रशंसा प्राप्त करते हैं, किन्तु असंयमी होने पर वे उपेक्षा, अवमानना तथा उपहास के पात्र बनते हैं। आत्मसंयम का उपदेश सभी महापुरुषों, अवतारों, तीर्थंकरों, बुद्धपुरुषों ने किसी न किसी रूप में अवश्य किया है।

आत्मसंयम का प्रारम्भ मनोनिगग्रह से ही होता है। मनोनिग्रह से हम अपने काम,
क्रोध और लोभ जैसे मानसिक आवेगों को रोक सकते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता में कहा गया है कि देहत्याग से पूर्व जिसने काम और क्रोध के वेग को रोकने का सामर्थ्य प्राप्त किया है, वही योगयुक्त तथा सुखी है।

'kDukrhgSo ;% lks<q izkD'kjhjfoeks{k.kkr~A
Dkedzks/kksn~Hkoa oxa l ;qDr% l lq[kh uj%AA [3]

इसी प्रकार माण्ड्यूक्योपनिषद् के अनुसार–

eulk fuxgk;RreHk; lo;kfxukeA
n%[k{k;% ick/k'pkl;{k;k 'kkfUrjo pAA [4]

अर्थात् सभी योगियों के अभय, दुःखक्षय और अक्षयशान्ति उनके मनोनिग्रह के अधीन है। अतः प्रत्येक योगी को प्रयत्नपूर्वक मनोनिग्रह के उपाय करने चाहिए।

ठीक इसी प्रकार एक कुशल व्यावसायिक प्रबन्धक को अन्य सहयोगी कर्मचारियों से सम्पर्क करते समय अपने ध्यान और बातचीत या सम्प्रेषण को लक्ष्य–केन्द्रित रखना चाहिए। और निरन्तर लक्ष्य–केन्द्रित रहने के लिए मनोनिग्रह या आत्मसंयम आवश्यक है। क्योंकि प्रबन्धकों का कार्य बहुआयामी होता है, अतः उन्हें अधिक सजग तथा आत्मसंयमयुक्त होना आवश्यक है।

जिस प्रकार उद्विग्नतारहित होकर कुशा के अग्रभाग से एक–एक बूँद द्वारा समुद्र को उलीचा जा सकता है, उसी प्रकार सब प्रकार की खिन्नता का त्याग करने से मनोनिग्रह हो सकता है–

mRld mn/k;nor d'kkx.kd fcUnqukA
eulk fuxgLrnonHkonifj[knr%AA [5]

अर्थात् कुशा के अग्रभाग से एक–एक बूँद के द्वारा समुद्र के उत्सेचन अर्थात् सुखाने के प्रयत्न के समान अखिन्नचित्त और उद्यमशील रहने वाले उन योगियों के मन का निग्रह भी खेदशून्य रहने से ही होता है, यह इसका तात्पर्य है। श्रीमद्भगवद्गीता में कहा गया है–

vl'k; egkckgk euk nfuxg pyeA
vH;klu r dkUr; ojkX;.k p x`árAA
vl;rkReuk ;kxk n"iki bfr e efr%A
o';kReuk r ;rrk 'kD;k·okIre;kxr%AA [6]

अर्थात् श्रीकृष्ण कहते हैं– हे महाबाहो! निःसन्देह मन बड़ा चंचल और कठिनाई से वश में होने वाला है, परन्तु हे कुन्ती पुत्र अर्जुन! यह vH;kl और ojkX; से वश में होता है। जिसका मन वश में किया हुआ नहीं है, ऐसे पुरुष द्वारा योग दुष्प्राप्य है, किन्तु वश में किए हुए मन वाले प्रयत्नशील पुरुष द्वारा साधन से उसका (योग का) प्राप्त होना सहज है, ऐसा मेरा (श्रीकृष्ण का) मत है। उपर्युक्त अभ्यास और वैराग्य में अभ्यास ही मुख्य है, क्योंकि वैराग्य सांसारिक जीवन के अनेक यथार्थ एवं कटु अनुभवों के बाद ईश्वर कृपा से आता है। परन्तु अभ्यास का प्रारम्भ कोई भी अपनी इच्छा से, कभी भी कर सकता है। निरन्तर योग का अभ्यास करना, प्रत्येक मानव के वश में है। और योग के निरन्तर अभ्यास से सांसारिक पदार्थों के प्रति आसक्ति का अभाव, समत्वभाव तथा सब प्राणियों के

प्रति दया जैसे गुण आते हैं, जिससे वैराग्य भी आता है। अतः योगाभ्यास सबको नित्य करणीय है। आत्मसंयम का महत्त्व मनोवैज्ञानिक भी स्वीकार करते हैं–

According to psychologists, teaching children self-control is the key to success in life and physical and mental wellbeing. Studies show that self-control is a far better predictor of academic performance than IQ and that children with low self-control are more likely to become criminals.[7]

अर्थात् बच्चों के अच्छे स्वास्थ्य एवं मानसिक स्थिति के लिए आत्मसंयम एक कुंजी है। यह शैक्षणिक योग्यता को बढ़ाने में बौद्धिक दक्षता से श्रेष्ठतर भविष्यवक्ता है। आत्मसंयम से हीन बच्चों के अपराधी बन जाने की सम्भावना अधिक होती है।

i’kklfud icU/ku e vkRel;e

आचार्य चाणक्य ने भी राजधर्म के निर्वाह के लिए राजा में जितेन्द्रियत्व का होना आवश्यक बताया है, जो कि आत्मसंयम का ही एक रूप है। यथा–

rnfo#)ofRrjo’;fUn;’pkrjUrk·fi jktk l|k fou’;frAA [8]

rLeknfj"kMoxR;kxufUn;t; dohr] o)l;kxu iKke] pkj.k

p{k%] mRFkkuu ;kx{kelk/kue] dk;ku’kkluu Lo/kelk/kue]

fou; fo|kin’ku] ykdfi;RoeFkl;kxu] fgru ofRRkeAA [9]

,o o’;fUn;% ijL=hn0;fglk’p otl;r] Lolu

ykY;eureu)ro"kRoeuFkl;kxe/kel;Dr p 0;ogkjeAA [10]

अर्थात् शास्त्रों के विरुद्ध अजितेन्द्रिय राजा चारो सागरों के अन्त तक पृथ्वी का शासक होते हुए भी यथाशीघ्र विनष्ट हो जाता है।

अतः कामादि छः शत्रुओं का परित्याग कर इन्द्रियजय एवं विद्यावृद्धों की संगति द्वारा प्रज्ञा वृद्धि करे, चारचक्षुष हो, उत्थान अर्थात् कायोद्योग एवं अप्रमाद से योगक्षेम साधन करे, कर्तव्य के प्रति अनुशासन कर प्रजा को स्वधर्मस्थ बनावे, विद्या के उपदेश (प्रसार) द्वारा (प्रजा को) विनीत करे, समुचित अर्थ प्रदान कर लोकप्रिय बने, लोकहितपूर्वक व्यवहार करे।

इसी प्रकार इन्द्रियों को वश में करके (राजा) परस्त्री, पदद्रव्य एवं हिंसा का त्याग करे। अतिनिद्रा, चापल्य, मिथ्याभाषण, उद्धतवेष एवं अनर्थकारी लोगों का संयोग, अधर्म तथा अनर्थ से युक्त व्यवहार का सर्वथा त्याग करे।

आचार्य चाणक्य ने राजा को, जो कि प्रशासनिक प्रबन्धन का सबसे बड़ा अधिकारी होता था, उसे भी आत्मसंयम से युक्त होना आवश्यक बताया है। साथ ही मन्त्री आदि अन्य प्रबन्ध करने वाले सहयोगियों में भी उक्त गुणों का होना आवश्यक बताया है। मन्त्रियों की नियुक्ति में भी उनके जितेन्द्रियत्व आदि की परीक्षा का उल्लेख कौटिलीय अर्थशास्त्र में मिलता है। आजकल के मन्त्री,

अधिकारी, कर्मचारी आदि में आत्मसंयम न होने से ही भ्रष्टाचार की समस्या इतना विकराल रूप धारण कर चुकी है कि सरकार का कोई भी विभाग इससे अछूता नहीं है। भ्रष्टाचार ही वर्तमान समय की अन्य अनेक समस्याओं जैसे बेरोजगारी, आतंकवाद तथा चारित्रिक पतन आदि का मुख्य कारण है।

अतः प्रबन्धकीय कार्य में लगे हुए प्रत्येक व्यक्ति के लिए आत्मसंयम समान रूप से आवश्यक है। एक कुशल प्रबन्धक के गुणों में आत्मसंयम का प्रमुख स्थान हैं। क्योंकि एक प्रबन्धक अपने साथ–साथ अन्यों को प्रेरित करता है तथा उन पर नियन्त्रण भी रखता है। अतः विना आत्मसंयम के वह अपने मनोवेगों का नियन्त्रण नहीं कर सकेगा, परिणामस्वरूप अन्य लोगों का सफल नियन्त्रण भी उसके द्वारा नहीं हो सकेगा। इससे आत्मसंयम की व्यावसायिक तथा प्रशासनिक प्रबन्धकीय कार्यो में महत्ता और उपयोगिता के साथ–साथ अनिवार्य आवश्यकता भी सिद्ध होती है। तभी प्रकृष्ट प्रबन्धन सम्भव है।

lUnHk& lph

1. The Principles of Management: on Saylor URL:http//www.Saylor.org/books ---- page1
2. श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय 6, श्लोक संख्या 26, पृष्ठसंख्या 91 गीताप्रेस गोरखपुर।
3. श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय 5, श्लोक संख्या 23, पृष्ठसंख्या 81 गीताप्रेस गोरखपुर।
4. माण्डूक्योपनिषद्, गौडपाद कारिका 40/3, पृष्ठसंख्या 690 गीताप्रेस गोरखपुर।
5. माण्डूक्योपनिषद्, गौडपाद कारिका 41/3, पृष्ठसंख्या 690 गीताप्रेस गोरखपुर।
6. श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय 6, श्लोक संख्या 35 एवं 36, पृष्ठसंख्या 94 गीताप्रस गोरखपुर।
7. Psychology for Parants: birth to teens---- by Faye Carlisle
8. कौटिलीय अर्थशास्त्र 1/6/3, पृष्ठसंख्या 67 –– टीकाकार डा. रघुनाथ सिंह, चौखम्भा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी।
9. कौटिलीय अर्थशास्त्र 1/7/1, पृष्ठसंख्या 77 –– टीकाकार डा. रघुनाथ सिंह, चौखम्भा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी।
10. कौटिलीय अर्थशास्त्र 1/7/2, पृष्ठसंख्या 77 –– टीकाकार डा. रघुनाथ सिंह, चौखम्भा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी।

ek/;fed Lrj ij LofoRrik'kh f'k{k.k lLFkkvk e v/;;ujr Nk= Nk=kvk d ekuoh; eY; ,o lkekftd eY;k dk rqYkukRed v/;;u

MkO fiz;k xqIrk[1] MkO mikluk ik.Ms;[2] ,o Jherh lq/kk xks;y[3]

izLrkouk

वर्तमान युग भौतिकवादी सांस्कृतिक की ओर उन्मुख है जहॉ एक ओर दे ों में भारतीय संस्कृति के उच्च कोटि के ज्ञान एवं द नि को अपनाने की होड़ लगी हुई है वहॉ हमारी पीढ़ी स्वयं को सभ्यता के अन्धानुसार करने में श्रेश्ठता का अनुभव कर रही है। सभ्यता का अन्धानुकरण हमें अपनी संस्कृति से जुड़े मूल्यों से निरन्तर दूर कर रहा है भारत वर्श को प्राचीन काल से ही वि व में जगत गुरू माना जाता रहा है प्राचीन भारतीय संस्कृति मानवीय मूल्यों एवं आद ों का स्त्रोत कर रही है। वेद पुराण, रामायण, महाभारत, श्रीमदभागवत गीता तथा प्रचतित अन्य धर्मो के अत्कृश्ट गन्थ हमें मूल्यों की ि ाक्षा प्रदान करते हैं जीवन में हम जिन बातों को अच्छा एवं कल्यांणकारी समझतें हैं वे हमारे मूल्य होते हैं प्राचीन काल में जहॉ ि ाक्षा मानवीय मूल्यों एवं आद ों पर आधारित थी यह सर्वथा अनिवार्य है कि हमारे विद्यार्थी जीवन मूल्यों के प्रति स्पश्ट समझदारी और भावानात्मक लगाव प्राप्त करें।

1]2]3&izoDrk c'kh/kj egkfo|ky;] mjbZ

1– वर्तमान में ि ाक्षण संस्थायें भाासकीय अ ाासकीय सहायता प्राप्त व स्ववित्त पो ाी ि ाक्षण संस्थाओं विद्यालय की तीन श्रेणियॉ विभक्त है। ि ाक्षा के महत्व को देखते हुये सरकार नें सभी को अनिवार्य ि ाक्षा उपलब्ध कराने के उद्दे य को ध्यान में रखते हुये भविश्य में ि ाक्षा के पूरी तरह निजीकरण हो जाने की प्रबल संभावना है। वर्तमान में ि ाक्षण संस्थाओं में माध्यमिक स्तर पर मानवीय ि ाक्षा या भाारीरिक ि ाक्षा से सम्बन्धित पाठ्यक्रम में सम्मिलत तो किये है कि क्या स्ववित्त पोशी संस्थायें छात्र एवं छात्राओं के ि ाक्षा में निहित मूल्यों को निर्वहन कर सकेगें क्या से संस्थायें केवल दिखावा ही रह जायेंगी और आगे चलकर भावी पीढ़ियों की गुणवत्ता पूर्ण ि ाक्षा देने सफल हो सकेंगी। उपरोक्त स्थितियों में भाोधकत्री नें मूल्य परक ि ाक्षा की आव यकता पर चिन्तन सफल हो सकेंगी। उपरोक्त स्थितियों में भाोधकत्री नें मूल्य परक ि ाक्षा की आव यकता पर चिन्तन किया है।

2– ि ाक्षण क्रियाओं का वह समूह है जो अधिगम उत्पन्न करने के लिये प्रेरित होती है।

¼y[kd& ch0vk0 fLeFk ½

वर्तमान में माध्यमिक ि ाक्षा का संख्यात्मक विकास तो हो रहा है लेकिन जुड़ातमक व व्यवसायिक विकास उद्दे यानुसार नहीं हो रहा है।

leL;kk dFku&

माध्यमिक स्तर पर स्ववित्त पोशी ि ाक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत छात्र/छात्राओं के मानवीय मूल्य एवं सामाजिक मूल्यों का तुल्नात्मक अध्ययन

v/;;u dh vok';drk ,oa egRo&

वर्तमान समय में आव यकता निरन्तर अनुभव की जा रही है कि क्या ि ाक्षा के बिभिन्न स्तरों पर विद्यमान ि ाक्षण संस्थायें मूल्य परक ि ाक्षा में प्रसार में संलग्न है अथवा इनका उद्दे य धर्नाजन मात्र रह गया है। उक्त परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुये भाोधकत्री नें स्ववित्तीपोशी ि ाक्षण संस्थाओं में विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं में मानवीय एवं सामाजिक मूल्यों के तुल्नात्मक अध्ययन का प्रयास किया है वर्तमान मूल्य में मूल्यविहीन ि ाक्षा की समस्या भाोधकत्री की अनुसंधान का आधार इसी उद्दे य के कारण बनी है।

v/;;u ds mn~ns';&

1- स्ववित्त पोशी ि ाक्षण संस्थाओं में माध्यमिक स्तरीय छात्रों के मानवीय मूल्यों का अध्ययन करना।
2- स्ववित्तपोशी ि ाक्षण संस्थाओं में माध्यमिक स्तरीय छात्राओं के मानवीय मूल्यों का अध्ययन करना।

3- स्ववित्त पोशी ि ाक्षण संस्थाओं में माध्यमिक स्तरीय छात्रों के सामाजिक मूल्यों का अध्ययन करना स्ववित्तपोशी ि ाक्षण संस्थाओं में छात्राओं के सामाजिक मूल्यों का अध्ययन करना।

4- स्ववित्त पोशी ि ाक्षण संस्थाओं में माध्यमिक स्तरीय छात्र एवं छात्राओं के मानवीय मूल्यों
 का अध्ययन करना।

5- स्ववित्त पोशी ि ाक्षण संस्थाओं में माध्यमिक स्तरीय छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक मूल्यों का अध्ययन करना।

ifjdYiuk;s&

1. स्ववित्तपोशी ि ाक्षण संस्थाओं में माध्यमिक स्तरीय छात्रों में मानवीय मूल्य विद्यमान होते हैं।
2. स्ववित्तपोशी ि ाक्षण संस्थाओं मं माध्यमिक स्तरीय छात्राओं में मानवीय मूल्य विद्यमान होते हैं।
3. स्ववित्तपोशी ि ाक्षण संस्थाओं मं माध्यमिक स्तरीय छात्रों में सामाजिक मूल्य विद्यमान होते हैं।
4. स्ववित्तपोशी ि ाक्षण संस्थाओं मं माध्यमिक स्तरीय छात्राओं में सामाजिक मूल्य विद्यमान होते हैं।
5. स्ववित्तपोशी ि ाक्षण संस्थाओं में माध्यमिक स्तरीय छात्र एवं छात्राओं के मानवीय मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नही है।
6. स्ववित्त पोशी ि ाक्षण संस्थाओं में माध्यमिक स्तरीय छात्रों में समाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नही है।

'kks/k midj.k&

भाोधकत्री द्वारा समस्या के चयन के उपरान्त उपकरणों से सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण किया गया है एवं भाोधकत्री नें अपनी समस्या से सम्बन्धित तथा परिकल्पनाओं की प्रकृति के अनुरूप उपकरण परिकल्पनाओं की प्रकृति के अनुरूप उपकरण निर्मित कर उसका प्रयोग किया योजनानुसार उपकरणों द्वारा माध्यमिक स्तरों के छात्रों के मानवीय एवं सामाजिक मूल्यों के तुल्नात्क अध्ययन के लिये भाोधकत्री नें स्वमिर्तित प्र नावल का प्रयोग किया जिनमें मानवीय व समाजिक मूल्यों से सम्बन्धित कुछ प्र न/कुछ कथन लिये गये जिनमें दो– दो विकल्प थे उनमें सेसमाजिक मूल्यों से सम्बन्धित कुछ प्र न/कुछ कथन लिये गये जिनमें दो– दो विकल्प थे उनमें से सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प को चुनने के लिये छात्रों को निर्दे ा दिये गये।

’kks/kd=h }kjk p;fur U;kn”k&

लघु भाोध का उद्दे य माध्यमिक स्तर के छात्रों एवं छात्राओं में मानवीय एवं सामाजिक मूल्यों का तुल्नात्क अध्ययन करना है मैने न्याद र्ा के रूप में कानपुर देहात में स्थित सभी में से केवल चार स्ववित्तपोशी ि ाक्षण संस्थाओं में माध्यमिक स्तर 2013–14 के 100 छात्रों एवं 100 छात्राओं का चयन किया गया जिनमें प्रत्येक विद्यालय में 25 छात्र एवं 25 छात्राओं को कुल मिलकार 5–50 के समूह में एकत्र किये गये लघु भाोध कार्य 200 छात्र एवं छात्राओं से सम्पन्न किया गया।

p;fur U;kn’k dk fooj.k&

Øl0	fo|ky; dk uke	Nk= l0	Nk=k l0
1–	विवेकानन्द इण्टर कॉलेज, पुखरायॉ	25	25
2–	नेहरू इण्टर कालेज भााहजहॉपुर	25	25
3–	नोनापुर इण्टर कालेज, नोनापुर	25	25
4–	भारतीय विद्यापीठ, राजपुर	25	25

v/;;u esa iz;qDr pj&

1- Lora= pj & लघु ाोध कार्य के अर्न्तगत स्ववित्तपोशी विद्यालय स्वतंत्र चर के रूप में प्रयुक्त किये गये है।

2- vfJr pj & लघु ाोध कार्य में मानवीय एवं सामाजिक मूल्य अि वत चर के रूप में प्रयुक्त है।

lkaf[;dh; fof/k;kA –भाोध उपकरण से प्राप्त प्रदत्तों का मध्यमान माध्यमिक मध्यांक बहुलक विशमता व मानक विचलन मान ज्ञात किया गया, भाून्य परिकल्पनाओं का परीक्षण करने के लिये टी परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

O;k[;k ,oa fu’d’k &उपयुक्त प्रथम चार निशप र्ाों के आधार पर कहा जा सकता है कि स्ववित्तपोशी ि ाक्षण संस्थाओं में माध्यमिक स्तरीय छात्रों एवं छात्राओं में मानवीय व सामाजिक मूल्य विद्यमान है।

fu’d’k पॉचवें तथा छठे के आधार पर भाोध में निर्मित दोनो भाूल्य परिकल्पनाओं को निरस्त करने के बाद यह स्पश्ट हो जाता है कि छात्र छात्राओं में विद्यमान मानवीय मूल्य सामाजिक मूल्यों में मध्य सार्थक अन्तरहै। माध्यमिक स्तर पर स्ववित्तपोशी सामाजिक मूल्य छात्रों की तुलना में मध्यमान 12.14 माध्यमिक प्राप्त मध्यमानों के अन्तर के आधार पर कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर पर स्ववित्तपोशी ि ाक्षण संस्थाओं में छात्रों के सामाजिक मूल्य माध्यमिक स्तर पर स्ववित्तपोशीि ाक्षण संस्थाओं में है।

lUnHkZ xzUFk lwph&

1– प्रोफेसर अ ोक सिडाना (1) माध्यमिक ि ाक्षा एवं प्रबन्धन डा0 मन्जू भार्मा प्रका ान 2005 पेज नं0 8

2– डा0 आर0एम0 मिश्रा (2) ि ाक्षण तकनीक एवं मूल्यांकन पेज नं0 10

Garrett, H.E - Statics in psychology and Education 10th Indian Reprint, Vokils] Feffer and Simons Ltd. Bombay 1981

N.C.E.R.T - Jourhal of Value education Vol 2 N0 1 Publication, Division

Buch M.B - A Survey of Research in education N.C.E.R.T New Delhi(2nd, 4th, 5th and 6th) Survey

L=h l'kfDrdj.k ,d lkekftd igy ¼tk ckr efgykvk e g½

Mk- jkt'k f=ikBh[1] ,o oUnuk d'kokgk[2]

परिवर्तनशील सामाजिक संरचना ने नारी जगत को भी प्रभावित किया है, जिससे उनकी परम्परागत स्थिति एवं भूमिकाओं में भी परिवर्तन आ रहा है। आज स्त्री स्वयं अपनी आत्मनिर्भरता के बारे में सोचने लगी है। अब नारी यह बात समझने लगी है कि उनकी दुर्गति हेतु अशिक्षा, अन्धविश्वास, रूढ़िवादिता, परम्परागत मान्यता तथा समाज का पुरुष प्रधान होना ही जिम्मेदार है।

महिलाओं के सशक्तिकरण से तात्पर्य, उन्हें अधिक शक्ति या सत्ता दिया जाना है। अर्थात् महिला को अधिक सुविधाजनक कार्य करने देने हेतु उनमें चेतना एवं उन क्षमताओं का विकास किया जाना, ताकि वे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी सहभागिता निभा सके।

मानव सभ्यता और स्वतन्त्रता का प्रश्न सदा से ही उलझन पूर्ण रहा है। इस सोच के लिये हमारी सामाजिक व्यवस्था उत्तरदायी है। ''आज महिलाएँ राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य में व्यवसाय के प्रत्येक कार्यक्षेत्र में अपनी पहचान बना रही है। इतना ही नहीं बल्कि समान पद पर आसीन एक महिला की पुरुष की कार्य प्रणाली के साथ तुलना की जाये तो महिला पुरुष से एक कदम आगे ही

1- lg vkpk;Z] e-xk-fp-xzkeksn; fo'ofo|ky;] fp=dwV] lruk] e0iz0
2. 'kks/k Nk=k] e-xk-fp-xzkeksn; fo'ofo|ky;] fp=dwV] lruk] e0iz0

है। यही सब देखकर नारी को पूर्णतः स्वाधीन स्वाभिमानी और आत्मनिर्भर मान लिया गया है। कहीं यह हमारा भ्रम तो नहीं है। क्या वास्तव में नारी अपने आपको स्वतन्त्र व सुरक्षित महसूस करती है।

कुछ समय पहले जब ओबामा भारत आये थे, उनके गार्ड ऑफ ऑनर में एक महिला विंग कमांडर ''पूजा ठाकुर'' शामिल हुई। किसी अन्तर्राष्ट्रीय राजनेता के गार्ड आफ ऑनर को लीड करने वाली वो पहली महिला ऑफीसर थी। उन्होंने ये साबित कर दिया कि महिलाओं को अपने में विश्वास होना चाहिये। लेकिन शायद ही कभी ऐसा होता है, कि कोई नया निर्णय लेने पर महिला का पूरा परिवार प्रश्नों के कटघरे में खड़ा न करता हो। हम महिलायें कब कहां कितनी पढ़ाई करेंगे, बाहर घूमने कैसे जायेंगे, घर की व्यवस्था कैसे चलेगी, घर में किसी के प्रेम विवाह पर सबकी क्या प्रतिक्रिया होनी चाहिये, बंटवारे की डिमाण्ड को कैसे सुलझाया जाये इन सब पर छोटी चर्चाओं में महिलाओं की भागीदारी कितनी होती है?

महिला सशक्तिकरण के इस दौर में हमें उस आजादी का इन्तजार है जहाँ हमें सबके साथ मामलों के निपटारे थे, अपनी राय बेधडक रखने और उसके लिये बहस करने लायक समझा जाये।'' पिछले कुछ वर्षों में महिलाओं ने ज्ञान, विज्ञान के हर क्षेत्र में अपनी सफलता के झण्डे विज्ञान के हर क्षेत्र में अपनी सफलता के झण्डे गाडे है आज देश व दुनियाँ का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है जहाँ महिलाओं ने अपनी उपस्थिति दर्ज न कराई हो आज उसी क्षण परिणाम है कि अब सरकार अन्तिम पायदान पर खड़ी महिलाओं के लिये भी अपने विकास के मापदण्डों में बदलाव ला रही है। पहले महिलाओं के लिये सरकार के पास केवल कल्याणोन्मुखी योजनाएँ ही थी, बाद में विकास कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया गया।

हमारा समाज किसी भी रूप में स्त्रियों की निर्णय प्रमुखता को सहज स्वीकार नहीं करता। परिवार में स्त्रियों की भूमिका होती है सेवा व्यवस्था को बनाये रखना। इन भूमिकाओं से इतर जाने की कोशिश करने वाली स्त्रियों के लिये दण्ड या सजा देने का पूरा हक हमारा समाज पुरुषों को देता है।

परिवार में सबसे बड़ी महिला सदस्य होने के बावजूद परिवार की व्यवस्था पर पूरा नियंत्रण पुरुष सदस्य का ही होता है। परिवार के सामाजिक व्यवहारों, लेन–देन से जुड़े निर्णय पुरुष ही करते हैं। स्त्रियों पर नियंत्रण के लिये पुरुषों द्वारा की जाने वाली हिंसा को भी हमारा समाज कहीं न कहीं जायज करार देता है।

नारियाँ बचपन से खुद से पहले दूसरों का ख्याल रखती है। दूसरों को प्राथमिकता देना शायद हमें अपनी संस्कृति और समाज से ही मिलती है। इन

सबके बीच हम कई बार खुद को भूल जाती है लेकिन हमें अपनी कीमत जानना बेहद जरूरी है ताकि हम खुद के साथ न्याय कर सकें।

भारत में स्त्री सम्बंधी आंकड़ो में सर्वाधिक गड़बड़ी आर्थिक क्षेत्र में भूमिका सम्बध है। रतना कपूर का मत है कि 'पिछले 50 सालों में लिंग भिन्नता के संदर्भ में तीन दृष्टिकोण विकसित हुये हैं, इनमें से एक रक्षावादी है जिसमें स्त्रियों को पुरुषों से भिन्न कमजोर पुरुषों पर आश्रित तथा सुरक्षा की आकांक्षी माना जाता है। दूसरा दृष्टिकोण समानता या एकरूपता का समर्थक है। तीसरा दृष्टिकोण स्त्रियों को सदियों से दमित या शोषित मानता है। स्त्री–सुरक्षा के प्रावधानों की आवधारणा अकसर पारिवारिक अवधारणा से प्रभावित होती है।

लिंगों को कुदरती, भिन्नता को कानूनी सुरक्षा में जामा पहनाया जाता है। अकसर इसमें स्त्रियों के समानता के अधिकार का हनन होता है।[गपपप] हमारे समाज की एक सबसे बड़ी विडम्बना यह भी है कि महिलाओं के लिये अनगिनत कानून व अधिकार बनाए गये हैं पर जिनके लिये वो बनाये गये हैं। उन्हें उनकी जानकारी ही नहीं है और यदि है भी तो वो उनका उपयोग कम ही करती है या करती ही नहीं है।

हिन्दू विवाह विधि के अन्तर्गत सात वचनों में या किसी भी कानून में यह नहीं लिखा है, कि घरवाली होने का धर्म यह है कि वह अपने पति से मार खाये 21वीं सदी में अशिक्षा और रूढि के इस स्वरूप के जिम्मेदार आज की जागृत महिलायें ही है। 'मधु किश्वर जो भारत की एक प्रमुख आदर्श है, लिखती है भारत में स्त्रीत्व का जो व्यापक लोकप्रिय सांस्कृतिक आदर्श है वह हम लोगों में से ज्यादातर के लिये फांसी का फन्दा बन गया है।

जाने कब से औरतों पर लादे जा रहे ये आदर्श, नैतिकता और सदाचार के सिद्धांत रूपी गहने दम घोटू है, जान लेने वाले लग रहे हैं। हमारी तारीफ में हमारा शोषण छुपा हुआ होता है। महिलाओं को प्रेममयी कहकर उन्हें संस्कृति के बन्द कमरे में कैद कर दिया है। नाजुक कहकर बेबसी के आइने के सामने खड़ा कर देते हैं। दयामयी कहकर कायरता में बांध दिया गया है, शील के नाम पर हमारे हांथों में बेडियां डाल दी गयी है और निष्ठा या बफादारी की जंजीर हमारे पावों के डाले हुये है जिससे दौडना तो दूर हम चल फिर भी न पाये। अब हमें सील बनने से इनकार कर देना चाहिये।

जहाँ एक ओर महिलाएँ विश्व की लगभग आधी जनसंख्या व एक तिहाई श्रम शक्ति का प्रतिनिधित्व करती है 30 प्रतिशत से अधिक खाद्य उत्पादन 60.80 प्रतिशत पशु पालन 100 प्रतिशत खाद्य सामग्री की प्रक्रिया के सम्पादन में संलग्न हाती है वही वे विश्व की आय का केवल दशवां भाग तथा विश्व समाहित का एक

प्रतिशत से भी कम प्राप्त कर पाती है। औद्योगिक क्षेत्र में उन्हें पुरुषों के समान कार्यों के लिए उनकी आय का मात्र 3/8 भाग ही प्राप्त होता है।

मध्यवर्गीय और उच्चवर्गीय परिवारों की महिलाओं का काम की दुनिया में प्रवेश एक उल्लेखनीय परिवर्तन है। शुरुआत से ही पुरुष सम्पत्ति के उत्तराधिकारी होते हैं। परम्परागत कानूनी रिवाज के अनुसार बेटियों को केवल भरण पोषण और विवाह का ही अधिकार है। केवल पुत्र को ही जन्म से सम्पत्ति पर अधिकार प्राप्त होता है।

सांस्कृतिक मूल्यों के आधिपत्य के अनुसार बेटियाँ, पैतृक सम्पत्ति पर कोई कानूनी दावा नहीं कर सकती है। पितृसत्तात्मक समाज की यह विशेषता कई परेशानियों को खड़ी करती है। जिसका सामना महिलायें करती है।[गपअ] यकीनन महिलाओं की दुनियाँ ने बहुत विस्तार किया है। कई हक उन्हें मिले हैं। अब उनके हिस्से में खुला आसमान भी है लेकिन आज भी वह इस खुले आसमान की हर सीमा नाप तौल कर अपने कदम बढ़ा रही है।

''लिंग सम्बन्धित पक्षपात भूमि में असमान पहुँच, उत्पादन संसाधन संचार कौशल और शिक्षा के रूप में अनिरन्तरता इसके अतिरिक्त श्रम बाजार में विद्यमान पक्षपात और काम में उत्पीडन ने लाखों महिलाओं को प्रतिकूल स्थिति में रखा और अर्थव्यवस्था में परिवर्तन ने उन्हें असुरक्षित बनाया।

सर्वहारा के साथ महिलाओं की स्थिति की तुलना करते हुये समाजवादी नारीवादियों को इस बात का एहसास हुआ कि पतियों की आधीनता की हकीकत के जरिये मजदूरों के साथ हो रहे अन्यायपूर्ण व्यवहार पर रोशनी डाली जा सकती है। जब कोई लड़की पत्नी बनती है तो वह अपने समूचे व्यक्तित्व और सेवायें पति को अर्पण करती है। पति की सत्ता इसी बात में अन्तर्निहित होती है कि वह पत्नी के व्यक्तित्व और उसके हर एक काम पर नियंत्रण रखता है।

''यूनाइटेड नेशन्स डेवलपमेंट असिस्टेंट फ्रेमवर्क'' की रिपोर्ट के मुताबिक स्त्रियों को संवैधानिक स्वतन्त्रता अभी तक नहीं मिली है। प्रतिदिन लगभग तीन सौ महिलाएँ प्रसव के दौरान या गर्भावस्था से जुड़े कारणों से मरती है मतलब हर पाँच मिनट में एक मृत्यु/उसकी औसत आयु 58 से भी कम है ''महिला आयोग की रिपोर्ट'' के अनुसार हर 101 मिनट पर 1 दहेज मृत्यु होती है। हर 54 मिनट पर दो लड़कियों पर बलात्कार होता है वह व्यक्तिगत जीवन में यह तय नहीं कर सकती कि विवाह कब और किससे करे। स्त्री को स्वारक्षित बनना पड़ेगा।

आज के स्त्री सहानुभूति, दया, दक्षिणा, मेहरबानी या सिर्फ सहूलियत नहीं अधिकार चाहती है और अधिकार हम महिलाओं को संविधान ने प्रदान किया है जिनका आदर होना चाहिये। स्त्री को कभी अवसर ही नहीं दिया गया और न ही

देना चाहते हैं इसलिये आरक्षण जरूरी है जिससे महिलाओं को मौका तो मिले। पुरुष की दृष्टि और प्रवृत्ति में अमूलचूक परिवर्तन की जरूरत है।

भारत में जात–पाँत की व्यवस्था हो या पुरुष की प्रधानता की व्यवस्था दोनों ही व्यवस्थाएं दलितों और स्त्रियों के शोषण को जारी रखने और जायज ठहराने के लिए बनायी गयी हो। जीवन के कई ऐसे क्षेत्र है जिनमें स्त्रियों की राय नहीं ली जाती चाहे घर हो या बाहर और काम ऐसे किये जाते हैं स्त्रियों पर ही नहीं पुरुषों पर भी बल्कि समूचे समाज और देश दुनियाँ के भविष्य पर भी बुरा असर पड़ता है। मसलन, शिक्षा कैसी हो फिल्म कैसी बने, टी.वी. पर क्या दिखाया जाये, अखबारों में क्या छापा जाये, विज्ञापन किस तरह के बनाये जाये। इन सब बातों का फैसला पुरुष करते है और इन कामों में महिलाओं को सिर्फ इस्तेमाल करते हैं।

स्त्रियों को शिक्षित, स्वावलम्बी और आधुनिक बनाने की बाते होती है लेकिन फिल्मों में जो शादियां दिखाई जाती है और करवा चौथ के वृत जैसी चीजों को भारतीय संस्कृति की बड़ी अच्छी चीजों के रूप में पेश किया जाता है। भारतीय स्त्री की जो छवि बनायी जाती है, चाहे वह देवी की है। वैश्या की हो, उसमें स्त्रियों से पूछता कोई नहीं है कि इन चीजों के बारे में उनका दृष्टिकोण क्या है।

जिस स्त्री को अपने आस्तित्व का भान हो गया है, उसका आस्तित्व उसके आत्मबल से सुशोभित है कोई भी दूसरा व्यक्ति स्त्री की रक्षा नहीं कर सकता स्त्री अपनी रक्षा खुद कर सकती है। स्त्रियों को क्या करना है इसका विचार स्त्रियों को ही करना चाहिये। सत्ता या शक्ति के केन्द्र में आने वाली महिलाओं को दूसरों की जरूरतों के लिये भी उतना ही संवेदनशील रहना होगा। उन्हें अपने कनिष्ठों को वही देना होगा जो वे उनसे चाहती है।

हर चित्रकार अपनी बनाई तस्वीर के नीचे अपना नाम जरूर लिखता है। एक औरतें हैं जो अपनी कोख से जन्म लेने वाले बच्चे को भी पिता का नाम दे देती है। इस व्यवस्था से इस आचरण से बाहर निकलना है या ऊपर उठना है, तो खुद की कद्र करने की शुरुआत करनी होगी। स्त्री को स्वयंसिद्ध और स्वरक्षित तथा स्वतन्त्र होना होगा। उसे पुरुष निर्भरता त्यागनी होगी। महिलाओं को अनुगामिनी नहीं बल्कि सह नागरिक बनकर पुरुष के साथ–साथ कदम उठाना होगा। क्योंकि स्त्रियाँ अपना सशक्तिकरण खुद करती हैं।

I nHk %

1 वर्मा सवालिया बिहारी, ग्रामीण महिलाओं की स्थिति, 2011, पृ.25।

2 वही, पृ.सं.29

3 ठाकुर सुनीता, नारीवादी काउंसलिंग (सिद्धांत और व्यवहार), 2010, पृ.56
4 जोशी गोपाल, भारत में स्त्री असमानता, 2006, पृ.236
5 वही, पृ.52
6 सिंह अमिता, लिंग एवं समाज, 2015, पृ.52
7 रानी आशु, महिला विकास कार्यक्रम, 1999, पृ.8
8 देसाई नीरा, ठक्कर ऊषा, भारतीय समाज में महिलायें, 2009, पृ.63
9 वही, पृ.64
10 आर्य साधना, मेनन निवेदिता, लोकनीता निजी नारीवादी राजनीति, 2013, पृ.33
11 धर्माधिकारी चन्द्रशेखर, स्त्री शक्ति विमर्श, 2013, पृ.25
12 वही, पृ28
13 उपाध्याय रमेश, उपाध्याय संज्ञा, आज का स्त्री आंदोलन, 2011, पृ.36
14 वही, पृ.सं.44
15 सुजाता, बापू और स्त्री, 2013, पृ.30
16 बेदी किरण, स्त्री शक्ति (जैसा मैने देखा) 2013, पृ.85

STUDY OF EMOTIONAL INTELLIGENCE OF STUDENT TEACHERS (PRE-SERVICE) AT PRIMARY LEVEL IN BUNDELKHAND REGION

Himanshu Gupta[1]

Emotions are personal experiences that arise from complex interplay among physiological, cognitive and situational variables. Emotions if properly used are an essential tool for successful and fulfilling life. But if emotions are out of control, it can result in disaster. In day-to-day life, they affect our relations with other people, our self-identity and our ability to complete a task. Emotional process is not an isolated phenomenon but component of general experience, constantly influencing and influenced by other processes going on at the same time. Emotions are personal experiences that arise from complex interplay among physiological, cognitive and situational variables. To be effective, the cognitive processes must be in control of the emotions, so that they work for rather than against. Here comes the importance of emotional intelligence. The famous psychologist E.L. Thorndike, through his concept of social intelligence, laid down a solid foundation of the essence of emotional intelligence in 1920. He used the term social intelligence to describe the skill of understanding and managing other people. Gardner introduced the idea of multiple intelligences, which included both interpersonal intelligence and intrapersonal intelligence. Sternberg referred to the concept of social intelligence in the name of contextual intelligence through his triarchic theory of intelligence. This component of one's intelligence (other components being componential and experimental) relates with one's capacity of making adjustment to various contexts with a proper selection of contexts so that one can improve one's environment in a proper way. The term emotional intelligence appears to have originated with Charles Darwin in 1872, who theorized about a broader emotional social intelligence necessary for human survival and adaptation. In modern times, the term EI was popularized by Goleman.

1. Research Scholar, J R H University, Chitrakoot, UP

Emotional intelligence refers to the capacity for recognising our own feelings and those of others, for motivating ourselves and for motivating emotions well in us and in our relationships. It is the ability to perceive accurately, appraise and express emotions, generate feelings that facilitate thoughts and an ability to regulate emotions to promote growth. It is also defined as an array of non-cognitive capabilities competencies and skills that influence one's ability to succeed in coping with environmental demands and pressure. According to Goleman, emotional intelligence has five elements: self-awareness, self-regulation, motivation, empathy, and social skills.

THE ROLE OF TEACHERS IN EMOTIONAL INTELLIGENCE IN EDUCATION

The role of teachers in the development of emotional intelligence skill in students especially at the tertiary education (i.e. faculties of education and colleges of education) cannot be over-emphasized. Teachers should first acquire a skill to exploit the advantages of each dimension of students' emotional intelligence. Teachers should have knowledge of emotional intelligence so that they can help to develop the emotional intelligence amongst their students. Students should be taught on the strategy to handle the problem of emotion and the ways to cooperate with others by their teachers. It is when the students are able to control their emotion that they will be able to concentrate on their studies and profit credibility from the opportunities the school offers. Teachers equipped with adequate emotional intelligence skills would be able to generate a pleasurable classroom by having a dynamic group

SOME BENEFITS OF EMOTIONAL INTELLIGENCE

There are four basic areas where the benefit of emotional intelligence skills can facilitate problem solving capacity in students :

a) Emotional Intelligence and Interpersonal Relationship: One of the most important objectives for any person is to maintain the best possible relations with people around him or her. Strong emotional intelligence offer adequate information about the psychological state of the immediate neighbours. The efficient and effective management of one's own emotional state is a pre-requisite to manage other's emotional state. Emotionally intelligent people also are able to extrapolate these skills to the emotions of others.

Emotional intelligence skills arc basic factors in establishing, maintaining and having interpersonal relations. Research evidences have established strong positive relationship between emotional intelligence and interpersonal relationships.

b) Emotional Intelligence and Psychological :

Well-being: Mayer and Salovey's studies in USA have shown that University students with higher emotional intelligence report fewer physical symptoms, less

social anxiety, depression, greater use of active coping strategic for problem solving, and has nomination.

Furthermore, when these students are exposed to stressful laboratory tasks, they perceive stressors as lesson threatening, and their levels cortisol and blood pressure are lower. Research carried out with Spanish adolescents shows that when they are divided into groups according to their level of depressive symptomatology, student with a normal state differ from those classified as depressive by greater clarity about their feelings and greater ability to regulate their emotions (Fcrnadez — Berrocal & Extremera; 2007).

c) Emotional Intelligence and Academic Performance: Emotional Intelligence may act as a moderator of the effects of cognitive skills on academic performance Persons with limited emotional skills are more likely to experience stress and emotional difficulties during their studies.

d) Emotional Intelligence and the Appearance of Disruptive Behaviours: Students with low level of emotional intelligence show greater levels of impulsiveness and poorer interpersonal and social skills, all of which encourage the development of various antisocial behaviours. Research evidences abound that people with lower emotional intelligence are more involved in self-destructive behaviours such as tobacco consumption. (Trinidad, Unger, Chou, & Johnson; 2005). Adolescents with a greater ability to manage their emotions are more able to cope with them in their daily life, facilitating psychological adjustment and so they present less risk for substance abuse.

RATIONALE OF THE STUDY

McDowelle and Bell (1997) found that lack of emotional intelligence skills lowered team effectiveness and created dysfunctional team interactions and most effective performers lost the best networking skills. Tapia and Marsh (2001) found an overall significant main effect of gender and two-way interaction of gender - GPA on emotional intelligence. Annaraja and Jose (2005) found that rural and urban B.Ed., trainees did not differ in their self-awareness, self-control, social skills and emotional intelligence. Devi and Uma (2005) found that the parental education, occupation had significant and positive relationship with dimensions of emotional intelligence like social regard, social responsibility, impulse control and optimism. Harrods and Scheer (2005) found that emotional intelligence levels were positively related to females, parents' education and household income. Amirtha and Kadhiravan (2006) found that gender, age and qualification influenced the emotional intelligence of school teachers. The main aim of education is the all round holistic development of the students. In the pursuit of this goal, teachers play a significant role. Emotionally Intelligent teachers help students with improved motivation, enhanced innovation, increased performance, effective use of time and resources, improved leadership qualities and improved team work. Hence, it is essential to develop the emotional intelligence of student teachers during pre-service. The

present study aims at studying the level of emotional intelligence of the student teachers at primary level in Bundelkhand region.

OBJECTIVES

1. To find out the level of emotional intelligence of student teachers (pre-service) at primary Level.
2. To study the differences in the level of Emotional intelligence between the groups Regarding sex, locality and marital status.

HYPOTHESES

1. Emotional intelligence of Student Teachers (pre-service) is high.
2. There is no significant difference between the means scores of emotional intelligence regarding sex, locality and marital status.

METHOD

Sample-

The sample for the study consisted of 80 Student Teachers selected randomly from the of Teacher Training Institutes of Bundelkhand region.

MALE	FEMALE
40	40

Tool-

Scale of emotional intelligence, developed and standardised by Balasubramanium (2003) was used that consisted of 50 objective type questions of multiple choice type.

Procedure-

Scale of emotional intelligence was administered to the student teachers of teacher training institutes in the Bundelkhand region. The data collected were analysed with the help of suitable statistical techniques - Mean, Standard deviation and T-test .

RESULTS AND DISCUSSION

Emotional intelligence of student teachers in Bundelkhand region was above average as the mean and standard deviation were found to be 33.45 and 9.45, respectively. It was observed that 65% of the student teachers had above average level of emotional intelligence. No significant difference was observed in emotional intelligence between men and women student teachers as the calculated‘t’ value 0.84 was not significant at both levels of significance. Therefore, null hypothesis formulated for this purpose was accepted. Hence, men and women student teachers have same level of emotional intelligence. Significant difference was observed in emotional intelligence between the groups regarding locality of the residence of student teachers as the calculated‘t’ value 3.41 was found to be significant at both levels of significance. Therefore, the null hypothesis formulated for this purpose was rejected. Hence, locality of residence has a significant effect on emotional intelligence of student teachers. Significant difference was observed in emotional intelligence between the groups regarding marital status, as the calculated‘t’ value 2.87 was found to be significant at both levels of significance. Therefore, the null hypothesis

formulated for this purpose was rejected. Hence, marital status has a significant effect on emotional intelligence of student teachers.

CONCLUSION

It is concluded from the findings that the emotional intelligence of student teachers (pre-service) at primary level in Bundelkhand is high. There is necessity to develop the emotional competencies of the student teachers, which in turn helps them to develop the same among their students. Inspirational subjects like art, literature, poetry and music help in developing an appreciation of the beautiful and sublime emotions in life. They should be included in the teacher education curriculum. Religious beliefs and an abiding faith in God help in tolerance and stability of emotions. There should be no suppression of emotions. They should be sublimated through constructive activities. Sports, games, dramatics, and other co-curricular activities are of great value. Skill, confidence and involvement in work as well as a healthy sense of humour are basic to emotional intelligence. Therefore, work ethics and balanced work and healthy living must be stressed in the curriculum. Emotions should be concentrated or directed towards some good object or healthy idea. Such a direction and concentration can lead to development like justice, patriotism and other moral qualities. Strategic competency in teaching can be developed in teachers by means of emotional intelligence. The concept of emotional intelligence may be incorporated in the teacher education curriculum to revitalize teacher education programme.

REFERENCES

Amirtha, M. and Kadheravan, S. (2006) Influence of personality on the emotional intelligence of teachers. *Edu Tracks* 5, 12, 25-29.

Peace & Wisdom (2007), Definition of Emotional intelligence (EOI) Home.

Annaraja, P. and Jose, S. (2005) Emotional intelligence of B.Ed. trainees. *Research and Reflections in Education* 2, 8-16.

Culver, D. (1998) *A Review of Emotional Intelligence by Daniel Goleman: Implications for Technical Education*. Retrieved from http://fie.engrng.pitt.edu/fie98/papers/1105.pdef

Devi, U.L. and Uma, M. (2005) Relationship between the dimensions of emotional intelligence of adolescents and certain personal social variables. *Indian Psychological Review* 64, 01, 11-20.

Dhull, I. and Mangal, S. (2005) Emotional intelligence its significance for school teachers. *Edu Tracks* 4, 11, 14-16.

Integrity Verification In Multi-Cloud Storage By Efficient Cooperative Provable Data Possession

Dr. Rajeev Pandey[1], Dr. Uday Chourasia[2]& Trilok Singh Pardhi[3]

Abstract- *Provable data possession (PDP) is one of the procedure to make sure the integrity of data in storage outsourcing. Here in this paper, we talk to the creation of an efficient PDP method for distributed cloud storage to preserve the scalability of service and data migration. On the origin on homomorphic verifiable response and hash index hierarchy we anticipated a efficient cooperative PDP (ECPDP) method. We verify the security of our method founded on multi-prover zero-knowledge proof method, which can satisfy knowledge accuracy, fullness, and zero-knowledge assets. As well, we expressive performance optimization apparatus for our method, and in particular present an capable method for selecting finest parameter values to reduce the addition expenses of storage service bringers and client. Our experiment shows that our solution pioneers communication overheads and lower addition in evaluation with non-cooperative approachs.*

Keywords **– Scalability, Data Migration, Homomorphic, Multi-Prover.**

INTERODUCTION :

Cloud computing has become a more rapidly yield enlargement point in recent year by providing a comparabaly low-cast , scable , position-independent plateform for client's data. Although commercial cloud server have revolved approximately public clouds,the rising interest of edifice around private cloud on open-source cloud computing tools forces local user to have a flexible and agile private infra structure to run service workload within the administrative domain. Private cloud are not exclusive for being public cloud , and they can also support a multi cloud (Hybrid cloud) model by complementing a local transportation with computing capacity

1&2. Asst. Professor, DoCSE, UIT-RGPV, Bhopal MP
3. PG Scholar DoCSE, UIT-RGPV, Bhopal MP

from an external public cloud. By using virtual infrastructure mamagement (VIM)[1] a multi cloud can allow remote access to its resource over the Internet via remote interface, such as the Web services interface that Amazon EC2 uses.

MODULE DESCRIPTION:

Multi cloud storage:

Multi cloud storage refer to any large cooperation in which many small cloud storage used to store large amount of data . In our system the each cloud server have data blocks. Data uploaded into multi cloud by cloud user. Cloud computing surroundings is constructed based on open architectures interfaces, that have the ability to add in multiple internal and/or external cloud services mutually to afford elevated interoperability. We call such a distributed cloud surroundings as a multi-Cloud . A multi-cloud permits clients to fluently access his/her possessions remotely throughout interfaces.

Efficient Cooperative PDP:

Cooperative PDP (CPDP) method is an efficient PDP method to verifying the availability and integrity in multi cloud storage. It contains three-layered index hierarchy and zero-knowledge property. Through this method computation cost of client and storage service providers would be reduced. This method based on modern cryptographic techniques without compromising data privacy. In this method us are using efficient RSA algorithum for key generation and MD5 algorithum for tag generation that is to be used forb integrity verification .

Data integrity:

Data Integrity is very key feature of cloud computing. The data should not obtain customized without intentionally. The data should remain intect unless it is customized by authorized person.

Third party auditor:

The Trusted Third Party (TTP) is an organization that's authorized by an another organization to manage or process identifiable data for a specific purpose . Trusted Third Party provide interaction between two parties and both trust the third party. In our system stored verification parameters and for these parameters provide public query services. The Trusted Third Party, observe the cloud user data and uploaded in the distributed cloud. In multi-cloud surroundings each cloud server have user data blocks. If any edition tried by cloud user a alert is sent to the Trusted Third Party.

***Cloud user*:**

In multiple cloud ,cloud user store a bulky amount of data and they have permissions to operate and access stored data. The User's data is rehabilitated into data blocks. In cloud server this data blocks are uploaded . The TPA examines the cloud data blocks and Uploaded in multi cloud. Only user can update the uploaded data. The data's in multi cloud is incorporated and downloaded by user's.

LITERATURE SURVEY

1) Ensuring Data Storage Security In Cloud Computing Environment

Cloud Computing has been predict as the next creation construction in IT Enterprise. In contrast to predictable solutions, where the IT services are in correct logical , physical and personnel controls, Cloud Computing moves on application software and databases to access the large data centers, where the managing of the services and data may not be entirely reliable. This single attributes, on the other hand, posses many new security confronts that have not been well implied. In this article, we limelight on cloud data storage security, that has always been an vital facet of quality of service. To guarantee the correctness of cloud users' data in the cloud, we recommend an effective and flexible distributed method have two features, opposing to its ancestor. By utilizing the features, opposing to its predecessors. To obtain erasure-coded data we use of homomorphism token with distributed verification, our method achieves the combination of storage correctness, assurance and data error localization, i.e., the recognition of unruly server(s). Dissimilar most previous works, the new method further supports efficient dynamic operations safe and secure on data blocks, including: such operation like that data modification ,append and delete. Proposed method is vastly efficient supple against malicious data alteration attack, Byzantine collapse ,and even server colluding attacks prove based on general security and performance analysis.

Disadvantages:-

1. This method doesn't allow to automatic blocking the cloud server .
2. Less Security – None of the cryptographic techniques is used on the cloud data

2) **Privacy-Preserving Audit And Extraction Of Digital Contents**

A growing number of online services providers, such as Google, Yahoo!, and Amazon, are suppose to charge users for their storage. With the help of these service cloud user store our important data such as video, emails , document and file backups. On the day, a cloud user must totally trust such external services to preserve the integrity of data and return it undamaged. Unluckily, there are no service is to keep on the trust. To build storage services responsible for data failure, we proposed protocols that permit a third-party auditor to sporadically confirm the data stored by a assist and service in returning the same as usual data to the customer. That used protocols are privacy-preserving, in that they not at all divulge the data contents to the assessor. This solution eliminates the burden of verification from the customer, improves both the storage service's and customer's data dread of data leakage, and offers a method for free arbitration of data preservation contracts.

Disadvantages:-

1. There are no features to prove integrity based on public key or any other key while based on file name.

2. The details of attackers are not dynamic store but use the log file to store details and used data mining concepts to viewing it, that is time consuming job and less security.

3) Provable Data Possession At Untrusted Stores

Some method to provide data availability and integrity that follow traditional cryptographic technologies based on signature scheme and hash function. It cannot work on outsourced data. And did not suitable for a large size file. So Provable Data Possession method come on picture , to ensuring the integrity and availability of file and based on RSA scheme and reduced the communication cost. But PDP method are suitable only for single cloud storage not for multi cloud storage. The cloud user maintains a invariable quantity of metadata to confirm the proof. We have two provably-secure PDP mrthods that are further competent than earlier solutions, when compared with methods that get weaker guarantees.

Disadvantages:-

1. PDP method doesn't allow to automatic blocking the cloud server .
2. Owner's data will be stored in untrusted cloud servers.

4) Scalable and Efficient Provable Data Possession

To overcome the problem of Provable data Possession At Untrusted Store method they present the efficient new PDP method called The Scalable and Efficient Provable Data Possession . Which act as a powerfull deterrent to corrupt thus growing trust in the system . Recently proposed method are not capable for the large amount of data for that we use Scalable and Efficient Provable Data possession method . That method are based on an symmetric key cryptosystem and support to secure and efficient dynamic operation such as modification ,deletion ,append etc. That method gives probabilistic declaration of the untampered data which store in the server .That method are used for outsourcing of personal digital contact as a MAC, GMAIL, PICASA and OFOTO .

Disadvantages:-

1. By using the previous metadata orb response due to lack of randomness in the challenge server can deceive
   the owner .
2. The no of updates and challenges are limited .
3. Limitation of block insertion anywhere.

EXISTING SYSTEM

There survive different technologies and tools for multi cloud, like that Overt, VM Orchestrator and VMware vSphere. To create a distributed cloud storage podium for managing clients' data these tools provide help to cloud provider. However, if such a significant platform is helpless to security attacks, it would bring irreversible wounded to the clients. For example, the private data in any venture may be illegitimately accessed during a remote interface which supplied by a multi-cloud, or annals and relevant data and possibly will be vanished or tampered with when

they are store into an doubtful storage pool exterior the venture. Therefore, it is requisite for cloud service providers. To present security techniques to handle their storage services. In the exixting system to generate keys for encryption and decription usein RSA public key scheme is based on the intractability of factoring the integer modulues which is the product of two large prime number.

RSA Scheme

The RSA relies on the fact that it is easy to multiply two large prime number together but extremely hard to factor them back from the result. RSA is a block cipher in which the plain text and cipher text are integer between 0 ang n-1 . The RSA is public key cryptosystem that is based on the intricacy of integer factoring . The RSA public key encryption method is the first instance of a provably secure public key encryption method against preferred massege attecks. Assuming that the factoring trouble is computationally obstinate and it is rigid to uncover the prime factor of n = p * q. The RSA method is describe as:

Key generation algorithum :

To generate the key entity A have to do the following :

1. by chance and seceratly choose two large prime number p and q .
2. Compute the modulus p*q.
3. Compute ø(n) = (p-1) * (q-1).
4. Select chance integer e, 1 <e <n where gcd(e, ø) = 1.
5. Baghdad method[14] used to calculate the single decryption key d, 1<d< ø(n) where e*d = 1mod ø(n)
6. Determine public key and private key for entity A , the pair (e,n) as a public key (d,n) as private key .

Public key encryption algorithm

Message m encrypt by entity B for entity A which entity A decrypts to it.

Encryption : entity B should do following :

1. Obtain entity A public key (e,n).
2. Message m as an integer in the interval {0….n-1}.
3. Calculate $c = m^e \bmod n$.
4. Send the encrypted message c to A.

Decryption : To recover the message m fron the cipher text c. Entity A must do the following :

1. Get the cipher text c from entity B
2. Convalesce the message $m = c^d \bmod n$

Disadvantages:-

1. This algorithm has some limitation alongside certain attacks (i.e. Brute force , Mathematical attack ,Timing attacks and Chiper-text attacks) .
2. In existing system doesn't have feature of automatic blocking the cloud server.

3. Existing system are less secure because of no modern cryptographic technique are used.
4. There are no feature to prove integrity based on public key or any other key while based on file name..
5. The details of attackers are not dynamic store but use the log file to store details and used data mining concepts to viewing it, that is time consuming job and less security.
6. Cloud user data store in untrusted cloud servers.

PROPOSED SYSTEM

To reduce these problem many algorithm have been designed and based on original RSA. Efficient RSA are the popular algorithm identified forb improving the main algorithm. To verify the integrity an d availability of outsourced data in cloud storage we have two basic method that's called Provable data Possession method and Proof of Irretrievability. PDP method are used for a static case and based on RSA scheme .But in this method owner or any one can challenge for possession. And no of updates are fixed previously and cloud user cannot insert block anywhere. So now we proposed a lightweight PDP for ensuring the availability and integrity of data in cloud server on the basis on homomorphic verifiable response and hash index hierarchy we projected a Efficient cooperative PDP (ECPDP) method. In these approach we use to Efficient RSA algorithm for key generation.

The RSA scheme to a scheme employs the general linear group of order of h*h matrix. The key range of efficient RSA is considerably momentous and can actually be used with hill cipher process . The difference of original RSA and efficient RSA is how to calculate ø(n) in key generation process . In Efficient RSA ø(n) was defined as

Assume that n= p * q is the product of two large prime number and suppose g is the general linear group of h*h matrices then g :

$$g = (ph - p0)*(ph - p1) \ldots (ph - ph - 1) + (qh - q0)*(qh - q1) \ldots (qh - qh - 1)$$

here g(n,h) determine as a ø(n,h) wher h is the rank of linear matices.

Key generation algorithm :

To gernerat the keys entity A have to do the following :

1. Randomly chose two large prime number p and q .
2. Compute the modulus n = p * q.
3. Compute g = (n , h).
4. Chose the random integer e where gcd(e , g)= 1
5. Compute the inverse d where ed = 1mod g
6. Determine the entity A private key and public key . The pair (d , g) is private key while the pair (e , n) is the public key

Public key encryption algorithm

Entity B encrypt a message m for entity A which entity A decrypts.

Encryption : entity B should do following :

1. Obtain entity A public key (n,e).
2. The message m as a h*h matrix X
3. Compute h*h matrix $c = m^e \bmod n$.
4. Send the encrypted message c to A.

Decryption : To recover the message m fron the cipher text c. Entity A must do the following :

1. Get the cipher text c from entity B
2. Convalesce the message $m = c^d \bmod n$

Advantage of the proposed scheme

1. The key range of the proposed scheme is considerable. It means that it can be large enough to use by matices of high level of ranks. The key range of RSA algotithm is ø(n) = (p-1)(q-1). But in the suggested scheme the key range is length g(n).
2. The intractability of the integer factoring of the modulus n in the propose scheme stay as same as a in RSA scheme .
3. The proposed scheme can be used as a digital signature by inserted in the marix x as an item

ANALYSIS AND RESULT :

The result of proposed method and existing method was implemented in java and according to 2.40 Ghz Intel Core i3 CPU and 2.00 gb ram . The compare result between the existing scheme and proposed scheme were carrid out according to the different size of file and execution thie in m/s .

The total execution time compare of efficient RSA and original RSA was increased means to creak encrypted massage are difficult as compare then original RSA algorithm . Now the second approach to finding the tag we use to MD5 algorithm that's generate hash value for specific data of file block . This is unique value and generate one time another time it will be change ,so compare to old and new generated tag , if both tag are same so no modification in to the stored data of server .

CONCLUSION :

In this paper we proposed the construction of an efficient PDP method for distributed cloud storage. On the basis on hash index hierarchy and homomorphic verifiable response we projected a Efficient cooperative PDP (ECPDP) method, that's support to dynamic query such as insertion ,deletion append and modification etc on multiple storage servers. We also explained that our method offer all security assets follow to zero knowledge interactive proof system, therefore that it can resist different attacks which deployed in cloud as a public audit service. Moreover, we optimized the probabilistic uncertainty and intervallic verification to recover the audit performance. These experiments clearly established that our approaches only introduce a less amount of communication and computation outlay. These method are more suitable for storing the large amount of data in multi cloud server .

REFERENCE

1 G. Joon Ahn, Y.Zun, H. Hu, "Cooprative provable data possession for Intrigrity verification in multi cloud storage," IEEE Transaction on parallel and distributed system , vol: PP, issue 99, 14-02-2012.

2 I. M. Llorente, I. T. Foster, R. S. Montero, B. Sotomayor, "Virtual infrastructure management in private and hybrid clouds," IEEE Internet Computing, vol.13, no. 5, pp. 14-22- 2009.

3 J. Herring, L. Kissner, Z. N. J. Peterson, G. Ateniese, R. C. Burns, R. Curtmola, and D. X. Song, "Provable data possession at untrusted stores," ACM Conference on Computer and Communications Security, P. Ning, S.D.C. di Vimercati, and P. F. Syverson, Eds. ACM, 2007, pp. 598-609.

4 P. Ning, S. D. C. di Vimercati, A. Juels and B. S. K. Jr., "Proofs of retrievability for large files," ACMConference on Computer and Communications Security P. F. Syverson, Eds. ACM, 2007, pp. 584-597.

5 R. D. Pietro and G. Tsudik, G. Ateniese, L. V. Mancini, "Scalable and efficient provable data possession," Proceedings of the 4th international conference on Security and privacy in communication netowrks, SecureComm, 2008, pp. 1-10.

6 C. Papamanthou ,A. K¨upc¸ ¨u , C. C. Erway and R. Tamassia, "Dynamic provable data possession," in ACM Conference on Computer and

Communications Security, E. Al-Shaer, S. Jha, and A. D. Keromytis, Eds. ACM, 2009, pp. 213-222.

7 B. Waters, H. Shacham "Compact proofs of retrievability," ASIACRYPT, ser. Lecture Notes in Computer Science, J. Pieprzyk, Ed., vol. 5350. Springer, 2008, pp. 90-107.

8 C.Wang and W. Lou, Q. Wang, J. Li, K. Ren, "Enabling public verifiability and data dynamics for storage security in cloud computing," ESORICS, ser. Lecture Notes in Computer Science, M. Backes and P. Ning, Eds., vol. 5789. Springer, 2009, pp. 355-370.

9 H. Hu, and S. S. Yau, Y. Zhu, H. Wang, Z. Hu, G.-J. Ahn, "Dynamic audit services for integrity verification of outsourced storages in clouds," SAC, W. C. Chu, W. E. Wong, M. J. Palakal, and C.-C. Hung, Eds. ACM, 2011, pp. 1550-1557.

10 A. Oprea and A. Juels, K. D. Bowers, "Hail: a high-availability and integrity layer for cloud storage," ACM Conference on Computer and Communications Security. ACM, 2009, pp. 187-198.

11 S. P. Vadhan, and D. Wichs, Y. Dodis, "Proofs of retrievability via hardness amplification," TCC, ser. Lecture Notes in Computer Science, O. Reingold, Ed., vol. 5444. Springer, 2009, pp. 109-127.

12 L. Fortnow, M. Sipser and J. Rompel "On the power of multiprover interactive protocols," Theoretical Computer Science, 1988, pp. 156-161.

13 G.-J. Ahn, Y. Zhu, H. Hu, Y. Han, and S. Chen, "Collaborative integrity verification in hybrid clouds," in IEEE Conference on the 7th International Conference on Collaborative Computing*: October 15-18*, 2011, pp. 197-206.

14 Sattar Aboud, "Baghdad Method for Calculating Multiplicative Inverse", International Conference on Information Technology, Las Vegas, Nevada, USA. Pp: 816-819, 2004

15 A. Fox, R. Griffith,M. Armbrust ,A. D. Joseph, R. H. Katz, G. Lee, A. Konwinski, D. A. Patterson, A. Rabkin, I. Stoica, and M. Zaharia, "Above the clouds: A berkeley view of cloud computing," EECS Department, University of California, Berkeley, Tech. Rep., Feb 2009.

16 M. Franklin D. Boneh, "Identity-based encryption from the weil pairing," in *Advances in Cryptology (CRYPTO'2001)*, vol. 2139 of LNCS, 2001, pp. 213-229.

17 O. Goldreich, *Foundations of Cryptography: Basic Tools*. Cambridge University Press, 2001.

or!eku Hkkjrh; dyk dh n'kk & ,d v/;;u

vkfcn gknh [1]

भारतीय कला के अध्ययन से हमें यह ज्ञात होता है कि इसका उद्भव और विकास काफी प्राचीन है। मानव जीवन के अभ्युदय के साथ उसका जन्म हुआ और मानवता के विकास के साथ वह आगे बढ़ी। अतीत के सभी युगों पर उसके अस्तित्व की छाप विभिन्न रूपों में बनी रही है। साहित्य में, समाज में तथा राजनीति में जिस प्रकार विगत की अपेक्षा वर्तमान भिन्न होता है और उस भिन्नता के ही आधार पर उनकी अपनी वास्तविकताऐं पहचानी जाती है उसी प्रकार कला, जो कि मानव की सौन्दर्यानुभूति का मापदण्ड है, अपने विगत की अपेक्षा अपने वर्तमान में सर्वथा भिन्न है।

कला की परिदृश्य में जब हम देखने का प्रयास करते हैं तो कही पर यह काफी परिपक्व दिखती है, लेकिन किसी समय एवं स्थान पर परिपक्व होते हुए भी काफी निष्ठुर और निर्बल दिखती है। जब इसके परिदृश्य में सिंधु घाटी की सभ्यता का अध्ययन करते हैं तो यह काफी परिपक्व और मजबूत स्थिति में दिखती है, जहां पर यह पूर्ण समाज की एक बेहतर छवि प्रस्तुत करती है, लेकिन जब इसे समाज के बंधन में बंधे हुए कुछ लोगों के ही बीच देखतें हैं ऐसा प्रतीत होता है कि यह कला दास्ता के द्वार पर खड़ी होकर अपनी स्वतंत्रता के लिए समाज की तरफ व्याकुल होकर देख रही है कि कब उसे इस बंधन एवं दास्ता से स्वतंत्रता प्राप्त होगी और वह समाज के प्रत्येक अंग में समाकर भावविहोर होगी।

1. yoyh ikQ'kuy ;fuofl Vh] i tkc

भारतीय कला हर युग में धीरे–धीरे आगे की ओर बढ़ती हुई अपनी अमिट छाप छोड़ती चली जाती रही है। आज की वर्तमान परिस्थितियों पर विश्व की कला शैलियों पर इसका प्रभाव स्पष्ट दिखता है, इसलिए अपने देश की आधुनिक एवं समसामायिक चित्र शैलियों का अध्ययन करने के लिए उन परिस्थितियों पर दृष्टिपात करना भी अपेक्षित है, जिनसे विश्व का कला धरातल प्रभावित रहा है।

भारतीय चित्रकला के आधुनिक युग का सूत्रपात लगभग बीसवीं शताब्दी के आगमन के साथ ही आरंभ हुई एवं इतने कम समय में उसने जो प्रगति की है उसका श्रेय वर्तमान पीढ़ी के उन सभी कलाकारों को प्राप्त होता है, जिन्होंने परिस्थितियों की चिन्ता कियं बिना अपनी साधना को आविरत रूप में बनाये रखा।

भारत में राष्ट्रीय और सांस्कृतिक इतिहास के अभ्युत्थान में कला का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। समय–समय पर राजनीतिक कारणों से सामाजिक जीवन के क्षेत्र में जो परिवर्तन हुए हैं और सत्ता के कारण इस देश की संस्कृति में जिन नये तत्त्वों का समावेश हुआ है उनका क्रम बद्ध इतिहास उस समय की कलाकृतियों में देखने को मिलता है। 19वीं शताब्दी के बाद ब्रिटिश साम्राज्य का पूर्ण अधिपत्य होने पर भारत के विभिन्न अंचलों में विदेशी सत्ता के विरोध में जो राष्ट्रव्यापी आंदोलन हुए उनमें देश की कला भी अछूती नहीं रह सकी। इस राष्ट्रीय चेतना ने यहा के कलाकारों, कवियों और राजनीतिक नेताओं को एक सर्वथा नयी दिशा में मोड़ने के लिए मजबूर किया। इन आरंभिक कलाकृतियों में जो दुख, उत्पीड़न, घृणा, निराशा और विरोधी भावनाओं का समावेश दिखायी देता है।

स्वतंत्रता के पूर्व एवं पश्चात समय के उतार चढ़ाव में भारतीय कला एवं कलाकारों में काफी महत्त्वपूर्ण परिवर्तन आये एवं एक नया आयाम नजर आया। स्वतंत्रता के पूर्व कलाकरों में वह भावना देखने को नहीं मिलती थी जो कि स्वतंत्रता के पश्चात् स्पष्ट दिखती है। कलाकार स्वयं को पूर्व में बंधन में बंधा हुआ महसूस करता था, उनकी कलाओं में स्वतंत्रता नहीं दिखाई पढ़ती थी, वे राजदरबार से निकलकर नवाबों और नवाबों के महलो से निकलकर ब्रिटिश साम्राज्य की गुलामी के बंधन में बंध कर कार्यरत थे। परंतु स्वतंत्रता के पश्चात् जो कलाकारों में भावना जगी उसका फल आज हमें स्पष्ट दिखाई देता है। कलाकार बंधन से स्वतंत्र होकर स्वतंत्र रूप से चित्रकारी करने लगे, उनके चित्रों में स्वतंत्रता के भाव स्पष्ट प्रदार्शित होने लगे। परंतु यह स्वतंत्रता ने आगे जो उन्हें मार्ग दिखाया उसमें इन कलाकारों में काफी भटकाव भी आया।

आज की आधुनिक कला, कला प्रयोगवादी और व्यक्ति परक है। यह कहना कि इसकी परम्परा से कोई संबंध नहीं और इसका राष्ट्रीय चरित्र नहीं है यह पूर्णरूप से गलत है। कलाकार का व्यक्तित्व उसकी कला में प्रकट होता है और व्यक्तित्व की परम्परा, परिस्थितियों, अनुभवों और आदर्शों से इतना निकट रहता है कि किसी भी व्यक्ति के लिए इन चीजों से अपने को पूर्ण रूप से अलग कर सकना कठिन है। भारतीय मान्यता के अनुसार व्यक्तिवाद तटस्थता या अलगाव नहीं है, बल्कि यह जीवन और समाज के अनुभव की स्वतंत्र अभिव्यक्ति है। इसलिए वास्तविक अर्थ में कलाकार वही है, जो प्राचीन उपलब्धियों को नयी वाणी दे एवं उनसे प्रेरणा प्राप्तकर सृजन को नई दिशाओं को आलोकित करे।

आज का युग पूर्ण रूप से विज्ञान का युग है, इस युग में प्रत्येक बातें वैज्ञानिक ढंग से सोची जा रही है, परंतु कलाकारों का मत है कि कला और विज्ञान में क्या मेल है तो यह स्पष्ट करना चाहता हूं कि विज्ञान दूसरी चीज है और वैज्ञानिक सोच दूसरी बात है। आज के युग में कला एवं कलाकारों की सोच भी वैज्ञानिक हानी चाहिए तभी हम अपने कला को विभिन्न आयाम दे पायेंगे।

इन सभी बातों के बावजूद आधुनिक शैली का भारतीय चित्रकार अमूर्तवादी शैली की ओर उन्मुख है, दुनियां के चित्रकारों के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने के लिए वह यत्नशील है। यह बात समय–समय पर देश के विभिन्न प्रांतों में आयोजित होने वाली चित्रकला प्रदर्शनियों से स्पष्ट सिद्ध हो रही है। आज के भारतीय चित्रकार नये कथ्यों, नये परिवेशों, नई कल्पनाओं और नये प्रतिमानों के अनुसंधान में व्यस्त है। कला के क्षेत्र में इधर के दशकों में जो विश्वव्यापी परिवर्तन हुए हैं, उनके प्रभाव से भारतीय कलाकार भी प्रभावित हैं। जिस प्रकार आज का साहित्यकार साहित्य के लिए जीवनदायी और समाज के लिए उपयोगी वस्तु देने की दिशा में व्यस्त है, ठीक उसी प्रकार आज भारतीय कलाकार पाश्चात्य के उन्नत कला धरातल की परिक्रमा करके यह चाहता है कि वह जो कुछ दे वह नवीन तो हो ही, साथ ही उसमें कुछ स्थायित्व भी हो।

मैं इस बात से बिल्कुल सहमत हूं कि स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय कला में महत्त्वपूर्ण उत्थान आया है और कला एवं कलाकारों में काफी बदलाव आया परंतु यह युग भौतिकवाद की ओर अग्रसर है, कलाकार स्वयं को इससे परे नहीं रख सका है। आज हम जिस समाज में रह रहे हैं वह ग्लोबलाइज़्ड हो गया है, हम क्षणभर में ही विश्व के किसी क्षेत्र या प्रांत में क्या हो रहा है उसकी सारी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं, इसका कुछ लाभ तो हमें प्राप्त हुआ परंतु मैं जहां तक सोचता हूं कि इसमें हमें लाभ तो कम हुआ है, हानि अधिक हुई है। भारतीय समाज प्राचीन युग से समस्त विश्व में अपनी अमिट छाप छोड़ रखी थी, चाहे वह

सिंधु घाटी की कला हो, या गुप्त और मौर्यकला हो, इन सारे युगों में समस्त विश्व हमें अपना आदर्श मानता था, परंतु जैसे–जैसे हम उन्नति की ओर अग्रसर होते गये हमने अपने धरातल को खो दिया। आज हम जिस स्थान पर खड़े हैं वहां पर ऐसा प्रतीत होता है कि हमारा अब कुछ भी नही बचा है। हम दूसरे के बनाये मार्ग का मार्गदर्शन करते हुए आगे की ओर धीरे–धीरे बढ़ने का प्रयास कर रहे हैं।

भारतीय कला के अंदर नवीनता, मौलिकता और उपयोगिता के नाम पर आज ऐसी कलाकृतियों की बाढ़ सी आ गयी है, जिनको देखकर यह सोचने के लिए विवश होना पड़ता है कि उनका कलात्मक अभिप्राय क्या है। सामाजिक अभिप्रायों के कुछ आधुनिकतावादी कलाकारों ने वादों के मोह में आकर या प्रतीकों के पीछे पड़कर अपनी कृतियों में मौलिकता या नवीनता लाने की अपेक्षा अनको कृत्रिम बना दिया है। कला का अर्थ आज या तो विचित्रता के प्रकट करना हो रहा है या उसको आज नितांत व्यक्तिगत बना दिया है, जिसके कारण समाज भी कलाकारों को संदेह की दृष्टि से देखने लगी है।

भारतीय अर्थव्यवस्था ने जब से विश्व के सामने उदारीकरण दिखलाई है तब से ऐसा हुआ है कि विदेशी पूंजी का काफी निवेश भारतीय बाजारों में हुआ है इसका प्रभाव भारतीय कला एवं कलाकारों पर भी पड़ा है। भारतीय बाजार में एक ऐसा धनी वर्ग उठ खड़ा हुआ जिनके अन्दर क्रय शक्ति काफी थी, इससे कला का बाजार भी अछूता नहीं रहा। सन् 2002 से 2008 तक तब कला के क्षेत्र में हम दृष्टि डालते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है कि भारतीय बाजार में कला के क्रयता हमें हर मोड़ पर नजर आने लगे और भारतीय कलाकृतियां का क्रय का ग्राफ काफी उपर चला गया, बहुत सारे कला दीर्घायें स्थापित हो गयी, बहुत सारे नीलामी घर स्थापित हो गये इसके साथ–साथ कुछ वैसे भी लोग इस क्षेत्र में आगे आ गये जो कलाकृतियों पर भविष्य के लिए पूंजी निवेश करने को तैयार थे, एवं इसके लिए विभिन्न विधियां बनाने लगे। चित्रकारों ने नये बाजारों का स्वागत किया एवं कलाकृतियों में नये–नये आयाम दिये जाने लगे, चित्रकारों के लिए देसी एवं विदेशी बाजार से बहुत सारे रास्ते खुल गये। परंतु एक बात हमेशा ध्यान में रखनी चाहिए नियति में अच्छे परिणाम तो आते ही हैं किंतु साथ ही साथ दुष्परिणाम भी आते है, हम नियति के अच्छे परिणाम में इतना ज्यादा डूब चुके रहते हैं कि कब दुष्परिणाम हमारे बीच में आकर जगह बना लेते हैं हमें इसका कोई पता भी नही चलता है, जब तक ज्ञात होता है काफी देरी हो चुकी होती है, हम सिर्फ मन मसोस कर रह जाते हैं।

इसी तरह सन् 2002 से 2008 के बीच का जो समय था वह एक मिला–जुला चित्रकारों एवं कलाकृतियों के लिए आर्शीवाद था। कला के स्कूलों में

धीरे–धीरे बदलाव देखने को मिल रहे थे, कुछ कला स्कूलों में बदलाव को मन से स्वीकार किया तो कुछ ने मतबूरीवश स्वीकार किया। कला के इतिहास में हमें हमेशा देखने को यह मिलता है कि बदलाव जल्दी मन से स्वीकार नहीं होता है परंतु जिन लोगों ने समय को पहचान कर समय के साथ बदलाव स्वीकार किया वह हमेशा कामयाब रहे। इसके साथ–साथ जो महत्वपूर्ण बातें मैं बांटना चाहता हूं वह उपर दिये गये समय के अन्तराल में जो कला एवं कलाकृतियों में दुष्परिणाम हमें देखने को मिला वह था चित्रकारों एवं कलाकृतियों की होड़, हम क्या कर रहे है और किसके लिए कर रहे यह सारी बातें दब गई एवं सबसे उपर हो गया पूंजीवादी व्यवस्था, जिसने की कला के बाजारों को पूंजीवादी अर्थ व्यवस्था में जकड़ कर रख दिया था।

कला के नाम वह सारी सामग्री बाजारों में बिकने लगी जिसका कला के साथ कभी संबंध भी नहीं दिख रहा था, पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में उन लोगों ने प्रधानता बना ली थी जिनका कला एवं सौंदर्य से कोई संबंध नहीं था। इस समय जो कला बाजार में बिक रही थी या तो बाजारू कला कह दे या फिर उसके लिए जो शब्द मुझे नजर आ रहे हैं वह है 'कला के नाम पर कलंक'। इससे एक बात तो स्पष्ट हो गयी थी कलाकार का महत्व घटने लगा था एवं वैसी कलाओं की बाढ़ सी आ गयी थी जो पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के द्वारा बाजारों में परोसी जा रही है।

भारतीय कला का एक युग हुआ करता था जिसका मैंने आगे उल्लेख किया है, जहां पर कलाकार अपनी तृष्टि के लिए कला की साधना करते थे उनको भौतिकवादी समाज से कोई लेना देना नहीं था, चाहे बंगाल स्कूल के कलाकार नंदलाल बोस हो या रामकिंकर हो, वह जब कला की साधना करते थे तो ऐसा प्रतीत होता था कि वह सिर्फ कला की साधना के लिए इस पृथ्वी पर आये हो, परंतु आज के कलाकार चाहे समाज में कितना बड़ा ही अपना कद बना ले वे सिर्फ स्वयं की उन्नति के लिए कला को अपना सहारा बनाये हुए है, समाज में उनका कोई महत्त्वपूर्ण योगदान देखने को नहीं मिलता है।

आज हम चाहे कितना भी अपने को प्रगतिशील माने, हम अपनी कला को पाश्चात्य कला से चाहे क्यों न तुलना करे, फिर भी हम यह महसूस करते हैं कि हम आज जहां खड़े है वहां पर न तो वह हमारा धरातल है और न ही हम मजबूती के साथ अपने कदमों को जमा सके हैं। हमें तो यह महसूस होता है कि हमने अपनी मौलिकता को नष्ट कर दिया है, हम सिर्फ भौतिकवादी होकर दूसरे के पदचिन्हों पर चल रहे हैं।

अंत में मैं यह स्पष्ट करना चाहूंगा कि आजादी के पश्चात भारतीय चित्रकला ने एक नई दिशा की ओर अपने पग बढ़ाये है, जहां पर यह किसी भी प्रकार के बंधन में नहीं दिखती है, परंतु इसमें भारतीयता की छाप कहीं पर भी स्पष्ट रूप से नजर नहीं आती है, हम अंधाधुंध पाश्चात्य कला एवं वादो के बंधन में बंध कर कार्यरत हैं जहां पर हमारी कहीं से भी मौलिकता नहीं दिखती है। अमूर्त के नाम पर हम कलाकार समाज को क्या परोस रहे हैं हमे चित्रकार भी उसकी सही व्याख्या नहीं कर सकते हैं। सिर्फ कला के नाम पर कुछ नया करने की होड़ में हमने इसकी दिशा इस तरह बदल दी है कि आज भारतीय कला की जो दशा है वह किसी से छुपी नहीं है।

I nHk xUFk I ph

वाचस्पति गैरोला, (1976) भारतीय चित्रकला का इतिहास, पृष्ठ संख्याँ 243, प्रकाशन विभाग, न्यू दिल्ली

The Visual Art: A world survey from prehistoric to present by M.K. Symonds, C. portly & R.E. Phillips, Page no. 46 Publication; Evam Brothers Ltd., London-1980

Prihistoric and Primitive man by Andreas Lommel, publication: Paul Hamlyn, London-1966

Art of th 20th Century, Volume-I, by Karl Ruhrberg, Manfred Schneckenburger, Christiane Fricke, Klaus Honnef and Ingo F. Walther, Publication: Taschem-London-1998

A History of Fine Arts in India and the West by Edith Tomory, Publication: Orient Black Swan, India-2007

BRAND PROMOTION IN RURAL INDIA

Pradeep Kumar Mishra [1]

Abstract

In country like India, where the 70% of the people live in rural area, the rural market holds a lot of marketing potential. There is a wide spread difference in the standard of living between urban and rural India. In order to launch Products and develop advertising for rural market there is a need to understand both the rural context and also the consumer very well. Promotion of brands in rural markets requires the special measures. Due to the social and backward condition the personal selling efforts have a challenging role to play in this regard. The word of mouth is an important message carrier in rural areas. In fact the opinion leaders are the most influencing part of promotion strategy of rural promotion efforts. The experience of agricultural input industry can act as a guideline for the marketing efforts of consumer durable and non-durable companies. Relevance of Mass Media is also a very important factor.

Rural India is going to become a biggest market of the world in the near future and it is transforming like anything. Rural marketing as an emerging trend is about to explore possibilities in the rural India. It is a process to hunt a treasure Iceland yet to be hunted by the adventurous explorers. It is not simply a marketing to just sell and deliver-consumers satisfaction but something else certainly. It is a visit to the 75 crores people residing in the villages of India where they have hope, aspirations, needs and potential. They too have money and will to spend the same, which is more important. Because of change in the rural market environment, its market profile is changing and people are changing themselves.

1. Research Schalor, Ph.D.(Management) , M.G.C.G.V. Chitrakoot, Satna, M.P.

Ultimately, their needs and requirements are also changing. The companies are applying several models and strategies to be winner in the rural market. It is also great fallacy that those who have not seen rural India they are making and shaping rural strategy to win the hearts of rural India.

Realities of the Rural Market:

70% of India's population lives in 627000 villages in rural areas. 90% of the rural population us concentrated in villages with a population of less than 2000, with agriculture being the main business. This simply shows the great potentiality rural India has to bring the much-needed volume-driven growth. This brings a boon indisguise for the FMCG Company who has already reached the plateau of their business urban India. As per the National Council for Applied Economic Research (NCAER) study, there are as many 'middle income and above' households in the rural areas as there are in the urban areas. There are almost twice as many' lower middle income'households in rural areas as in the urban areas. At the highest income level there are 2.3 million urban households as against 1.6 million households in rural areas.

1. Of the 20 million who have signed up for Rediffmail, 60 % are from small towns.
2. Of the 1,00,000 souls that have transacted on Rediff's shopping site, 50 %are from small towns.
3. The 30 million Kisan Credit Cards (KCC) issued so far exceed the 25 million credit-plus-debit cards issued in urban. A whopping Rs. 65, 000 crore has been sanctioned under the KCC scheme.
4. Hindustan Unilever, the largest FMCG Company in the country. More than half of its annual sales of Rs.11, 700/- crore come from the rural market.
5. The proposed agricultural reforms in the tenth plan, the easy availability of agriculture credit Rs 60,000/- Crore Village road programme introduced recently to connect 1,90,000/- village and the improved communication network Mobile.

What rural market buys? Rural India buys small packs, as they are perceived as value for money. There is brand stickiness, where a consumer buys a brand out of habit and not really by choice. Brands rarely fight for market share; they just have to be visible in the right place. Even expensive brands, such as Close-Up, Marie biscuits and Clinic shampoo are doing well because of deep distribution, many brands are doing well without much advertising support.

India’s USP

India is shining then! India is Unique in many ways. India has a population that is large and heterogeneous, largely English speaking and a cultural heritage that runs back to thousands of years. The major segmentation of mass population is located in rural area. So, the market potential is large in number. So we can expect the market strength in rural area. Now, the educational Institutions are also concentrating on

rural marketing and doing market research in rural places. Rural markets are rapidly growing in India but have often been ignored by marketers. Most of them are remote-fully ignorant due to the reason of diversification of products produced thereby slitting into disposable income. This is about presenting a theme with the product to attract the consumers to buy that particular product. For example, some of famous Indian Farm equipment manufacturers have adapted catchy themes, which they display along with the products, to attract the target consumers that are the farmers. English version of some of such themes would read like:

A. The heartbeats of rural India
B. With new technique for a life time of company
C. For the sake of progress and prosperity.

Statistical Glance

A glance at the following statistics will help to get a fair idea of the consumers in Rural India:

1. 46 percent of soft drinks.
2. 49 percent of motorcycles.
3. 59 percent of cigarettes.
4. 18 million TV Sets.
5. 50 percent of 2 million BSNL mobile connections.
6. 53 percent of FMCG products .
7. 59 percent of consumer durables are sold in rural India.

Reasons for Improvement of Business in Rural Area

- Socio-economic changes (lifestyle, habits and tastes, economic status)
- Literacy level (25% before independence – more than 65% in 2011)
- Infrastructure facilities (roads, electricity, media)
- Increase in income
- Increase in expectations

Consumption Pattern and Behaviors of Rural People

The consumption pattern of rural people is completely different from urban people because the income level, taste and preference are different.

- They purchase products very frequently (mostly weekly)-because most of them work on wages, they don’t have enough money to purchase the products on the large scale.
- Buys small packs, low unit price more important –consumers are very much price sensitive in rural areas, they are not brand freaks rather they go for the product which cost them less amount.
- In rural India, brands rarely fight with each other; they just have to be present at the right place because the number of brands in rural areas is less. So the small brands can also generate enough revenue from rural areas.
- Many brands are building strong rural base without much advertising support.

- Chik shampoo, second largest shampoo brand.
- Parle-G is most preferable biscuit brand.
- Ghadi detergent, third largest brand

The rural people are not much conscious about brands. They are satisfied with fewer brand choices. The numbers of FMCG brands in rural areas are half than that of urban areas.

Marketers can make effective use of the large available infrastructure.

- Post Offices 1,38,000
- Haats (periodic markets) 42,000
- Melas (exhibitions) 25,000
- Mandis (agri markets) 7,000
- Public Distribution Shops 3,80,000
- Public Distribution Shops 3,80,000
- Proliferation of large format Rural Retail Stores, which have been successful also
- M & M Shubh Labh Stores
- TATA / Rallis Kisan Kendras
- Escorts Rural Stores
- Warnabazaar,Maharashtra (Annual Sale Rs. 40 crore)

Promotional Strategy

Firms must be very careful in choosing the vehicle to be used for communication. Only 16% of the rural population has access to a vernacular newspaper. So, the audio visuals must be planned to convey a right message to the rural folk. The rich, traditional media forms like folk dances, puppet shows, etc., with which the rural consumers are familiar and comfortable, can be used for high impact product campaigns.

Prof. Ramaswamy says consumers are no longer passive beings that who will accept what is doled out to them as a product and service. Consumers today are seeking to "co-create" their experience of a product or service with a company. This puts traditional business models in a bind and also has implications for companies' brands. The next decade is expected to be quite cataclysmic for brands and an article by D. Shivakumar, ED of Philips India, captures the essence of the changes that are being wrought. But the refrain is the same. To manage and succeed in tomorrow's Brand world, marketing teams would need to be far more right brained than left brained they need to be more consumer connected and responsive than ever before. Speed, smart thinking and sensitivity will be the skill set of the marketer. An office desk will be a bad place from which to manage the future brand, says a clairvoyant Shivakumar.

Need of Branding

a) Separate a brand from other competitors in a unique way.

b) Relevant and motivating to a target group of customers.
c) Prospects and channels-it gives a value and make the product special.
d) Enhance the perceived value, there by supporting premium pricing, sheltering the product from low price competition.
e) Contributing to share holder value. (Companies like Monsanto, HUL look to evidence of brand strength in setting buy ratings).
f) Provide resilience in times of negative press.
g) Enables to launch new products more quickly and cost effectively

Rural Branding: Rural branding bear's quite different stand from urban branding. The first step towards rural branding is to research and gain insight into the working of rural markets. Based on this communication campaigns have to be developed with a lot of rural sensitivity. Rural branding is attained by way of opting to a greater percentage of local media and a smaller percentage of the mass media. Rural gatherings like temple festivals, melas, cinema halls and so on can be used as venues to promote brands. Direct Marketing and events like road shows; film shows, melas, street theatre can also be used to promote brands. A well-planned rural branding campaign cannot just create brand awareness but help your target relevant to your brand and promote sales. A long-term campaign will keep your brand at the top-of-the-mind and build brand loyalty. So the brands are in safe hands.

Promotion of Brands

The rural brand promotion is very different from the urban brand promotion. The direct contact and visual aids play a very important medium of promotion. The most important medium is the campaigns and the public meetings; the purchase behavior is finalized only when any influence leader proposes for it. Most of the promotions are done via jeep campaigns and meetings. The communication used for the local promotion uses local language and dialect.

Strategies for Successful Marketing in Rural Areas

Branding Promotional Strategy

Branding is the creation of an image of the product which personifies the characteristics and the value deliverables of the particular product being delivered at a particular time and place. The Firms must be very careful in choosing the vehicle to be used for communication. Only 16% of the rural population has access to a vernacular newspaper. So, the audio visuals must be planned to convey a right message to the rural folk. The rich, traditional media forms like folk dances, puppet shows, etc., with which the rural consumers are familiar and comfortable, can beused for high impact product campaigns.

Dynamics of rural markets, purchasing capacities of customers, preferences and of course needs differ from urban markets, and similarly rural marketing strategies are also significantly different from the marketing strategies of urban or industrial

markets. Rural markets and rural marketing involve a number of strategies, which include:

- Client and location specific promotion
- Joint or cooperative promotion..
- Bundling of inputs
- Management of demand
- Developmental marketing
- Unique selling proposition (USP)
- Business ethics
- Partnership for sustainability

Client and Location specific promotion –formulating strategies suitable to the location and the clients.

Joint or co-operative promotion: strategy involves participation between the marketing agencies and the client.

Bundling of inputs denote a marketing strategy, in which many related items are sold to the target client,they are related to each other like including arrangements of credit, after-sale service, and so on.

Management of demand: it is about conducting exhaustive market research of the needs and references so that continuous up gradation and innovations can be done to increase the consumption and goodwill of product in the market.

Developmental marketing the prime objective of marketing strategies should be development and we should use all managerial competencies and other inputs of marketing to achieve these objectives.

Media plays very significant role in the promotion of products, both traditional as well as the modern media is used extensively to make your strategies known to the public.

Marketing Strategy

Marketers need to understand the psyche of the rural consumers and then act accordingly. Rural marketing involves more intensive personal selling efforts compared to urban marketing. The goods designed on same pattern as in urban areas would not succeed in rural areas. To effectively tap the rural market, a brand must associate it with the same things the rural folks do. This can be done by utilizing the various rural folk media to reach them in their own language and in large numbers so that the brand can be associated with the myriad rituals, language and in large numbers so that the brand can be associated with the myriad rituals.

Distribution Strategies

One of the ways could be using company delivery van which can serve two purposes - it can take the products to the customers in every nook and corner of the market, and it also enables the firm to establish direct contact with them, and thereby facilitate sales promotion. However, only the bigwigs can adopt this channel. The companies with relatively fewer resources can go in for syndicated distribution where

a tie-up between non-competitive marketers can be established to facilitate distribution. Annual "melas" organized are quite popular and provide a very good platform for distribution because people visit them to make several purchases.

According to the Indian Market Research Bureau, around 8000 such melas are held in rural India every year. Rural markets have the practice of fixing specific days in a week as Market Days (often called "Haats') when exchange of goods and services are carried out. This is another potential low cost distribution channel available to the marketers. Also, every region consisting of several villages is generally served by one satellite town (termed as "Mandis" or Agri-markets) where people prefer to go to buy their durable commodities. If marketing managers use these feeder towns, they will easily be able to cover a large section of the rural population.

CONCLUSION

The rural India harbors 70% of the total population. This vast population has now a high propensity to consume and they have much more per-capita income than earlier. With higher education and better sense of things they can rule the world in a much better way. The various local languages and the dialects make the promotion in far interiors very difficult but these are the most potent areas that are still untapped, so it is a daunting but rewarding task for the companies to make a move and to understand the needs and the requirements of the rural people. The companies have started to follow this track and exploit the market.

In most of the rural areas in different parts of the country, there is considerable awareness on various latest products that are available in the market. This has been possible due to the penetration of cable and satellite channels that have brought down the world at the finger tips of the common man. The media influenced the mindset of the rural consumer to such an extent that people who had money started purchasing the products unmindful of the costs, just to satisfy their needs as well as their ego. But, the growth of rural market could be attributed to many other reasons that in one way increased the sales as well as the profits of the companies. Some of the important causes for the growth of rural markets are –

- The rise in disposable income of the rural families
- The economic boom
- Timely rains
- Rural population involved themselves in business other than agriculture
- Increase white-collar jobs in nearby towns
- Commercialization of agriculture
- Saturation of the urban markets
- Media penetration in rural areas (particularly satellite channels)

Globalization

- Economic liberalization
- Revolution in the Information Technology

- Women empowerment
- Improving infrastructure

However, there was a significant role of the corporate enterprises simultaneously in the development of rural market. Their timely intervention into the rural areas, their appropriate planning, their perception and identification about the growth of rural markets and the use of marketing strategies all have equally contributed for the progress of rural markets. Even though corporate houses were hedged with so many problems in the rural areas, they saw a galore of opportunities in the rural market and converted all the pessimistic characteristics of the rural market into affirmative attributes. They satisfied themselves with the availability of limited infrastructure; saw a sign of prosperity rather than fear during the entry of competitors into the rural markets, showed excitement at the availability of satellite channels in the rural households, visualized their cash bells ringing with the increase in purchasing power of the rural masses that came equivalent to their urban counterparts. They traced a constant rise in the demand for those products that were once confined mostly to the urban houses. But, blame it on the kind of awareness created by the companies– people started using the products for other purposes as seen earlier.

All companies usually claim that they provide the right product at the right place at right price with right kind of promotion. Yet there are differences in the opinions and beliefs of rural people. There was something missing in the marketing strategies of the companies while serving the rural markets. Otherwise, the results should have been more astonishing where the sales turnover or the balance sheet would have shown much more than what is presently achieved.

REFERENCES

Bhatia, Tej K. (2003). "Advertising In Rural India: Language, Marketing Communication, and Consumerism". Tokyo, Japan Tokyo Press.

V. Badi Ravindranath and V. Badi Naranyansa, Rural Marketing (New Delhi: Himalaya Publishing, 2004),

Ruchika Ramakrishnan, Rural Marketing in India: Strategies and Challenges (New Delhi: New Century Publications, 2006)

Philip Kotler, Marketing Management (New Delhi: Pearson Education Pvt. Ltd., 2003)

Dogra, Rural Marketing (New Delhi: Tata McGraw-Hill Education, 2007)

Krishnamachary, Rural Marketing: Text & Cases (New Delhi: Pearson Education India, 2011)

Rajendhiran N., Saiganesh S., Rural Marketing - A Critical Review, viewed on Aug. 10, 2012

Sehrawet. M, & Kundu S.C. (2007), Buying behaviour of rural and urban consumers in India: The impact of packaging. International Journal of Consumer Studies, Vol. 31, pp. 630-638.

www.indianmba.com

www.scribd.com

www.en.wikipedia.com

www.encyclopedia.brittanica.com

i;kZoj.k laj{k.k ds izfr lgHkkfxrk

vuhrk oekZ [1]

शिक्षा प्रकाश का ऐसा जटिल स्रोत है जो व्यक्ति को सुखमय जीवन प्रदान करके नियमित सच्चा मार्ग प्रदान करता है, उसमें मनुष्य के मन जागृत कर उसके जीवन को दिव्य से दिव्यतर बनाता है। शिक्षा आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। इसे विद्यालय की चहारदीवारी और पुस्तकों के रखे पृष्ठों में बन्द नहीं किया जा सकता है। यह व्यक्ति की क्षमताओं को प्रकाशित करने का कार्य करती है, उसे अपने वातावरणीय परिस्थितियों पर विजय प्राप्त करने की योग्यता प्रदान करती है।

शिक्षा बालक को सांस्कारिक कर उसे नया जीवन देती है, उसका रूपान्तरण करती है शिक्षा बालक का संस्कार कर उसे पवित्र तथा शुद्ध बनाती है। जॉन लॉक ने कहा है कि– ''शिक्षा ही जीवन है और जीवन ही शिक्षा है।'' चूंकि शिक्षा बालक के पालने से शुरु होती है और मृत्यु तक चलती रहती है, इसलिए जीवन के समस्त अनुभव इसके क्षेत्र में समाहित हो जाते हैं। जीवन पर्यन्त चलने वाली शिक्षा प्रक्रिया अपने वास्तविक अर्थ में सीखना से जुड़ी है। शिक्षा मनुष्य द्वारा अपने आन्तरिक और वाह्य परिवेश के साथ समायोजित होने की कला है। शिक्षा वह आज्ञा है जिसमें मनुष्य अपनी योग्यताओं और क्षमताओं को प्रतिबिम्ब के रूप में देखता है। ये प्रतिबिम्ब ही संसाधन बनकर मानव व्यक्तित्व के विकास का मार्ग प्रशस्त करते हैं। मनुष्य को वातावरण में सामन्जस्यपूर्ण समायोजन करने, विकास करने, सम्मानपूर्वक जीवन निर्वाह करने तथा जीवन की सुरक्षा एवं

1. 'kks/k Nk=k] f'k{kk ladk;] t0 jk0 fo0 fo'ofo|ky;] fp=dwV m0iz0

संरक्षा करने के लिए रोटी, कपड़ा और मकान जैसी मूलभूत आवश्यकताओं को पूर्ण करना आवश्यक है।

मूलभूत आवश्यकताओं से मनुष्य की शारीरिक सुरक्षा एवं विकास तो संभव है परन्तु मनुष्य के समुचित जीवन संचालन में शारीरिक विकास के साथ–साथ मानसिक, सामाजिक, सवेंगात्मक एवं नैतिक विकास आवश्यक है जो कि केवल शिक्षा के माध्यम से ही संभव हैं शिक्षा की प्रकृति सरल, सहस्त्र, व्यापक और बहुअर्थी है।

vko';drk ,o egRo

इस बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से ही पर्यावरण प्रबन्धन तथा नियोजन में पर्यावरण अवबोध की भूमिका रहती है वस्तुतः यह ऐसा तथ्य है जो मानक व्यवहार को नियन्त्रित रखने की क्षमता रखता है तथा अवबोध मानव की मानसिक अनुभूति है वह स्थायीन होकर परिवर्तित होती रहती है।

पर्यावरण प्रदूषण में सुधार के लिए सतत् अनुसंधान एक महती आवश्यकता है कि हम पर्यावरण संरक्षण के प्रति कितने सहभागी हैं, आज का मानव पर्यावरण के प्रति सचेत है या उदासीन है, क्योंकि जब तक इसके संरक्षण के बारे में ज्ञान नहीं होगा, मानव उसका सदुपयोग करता ही रहेगा। इस अवबोध से पर्यावरण निर्णय प्रक्रिया में सहायता मिलती है।

v/;;u d mnns';

प्रत्येक शोधकार्य के निश्चित उद्देश्य होते है बिना उद्देश्य होते हैं बिना उद्देश्य के किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति नहीं की जा सकती है अतः उद्देश्यों का निर्धारण प्रत्येक कार्य के लिए अनिवार्य होता है।

शोधकार्य के लिए शोधकर्त्री ने निम्न उद्देश्यों का निर्धारण किया।

- शहरी विद्यार्थियों तथा ग्रामीण विद्यार्थियों का पर्यावरण संरक्षण के प्रति सहभागिता को जानना।
- शहरी छात्र एवं छात्राओं का पर्यावरण संरक्षण के प्रति सहभागिता को जानना।
- ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं का पर्यावरण संरक्षण के प्रति सहभागिता को जानना।
- शहरी छात्र एवं ग्रामीण छात्राओं का पर्यावरण संरक्षण के प्रति सहभागिता को जानने का अध्ययन।
- ग्रामीण छात्राओं एवं शहरी छात्राओं का पर्यावरण संरक्षण के प्रति सहभागिता को जानने का अध्ययन।

- ग्रामीण छात्र एवं शहरी छात्र का पर्यावरण संरक्षण के प्रति सहभागिता को जानने का अध्ययन।

ifjdYiuk

- पर्यावरण संरक्षण के प्रति सहभागिता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- माध्यमिक स्तर के शहरी छात्र तथा छात्राओं का पर्यावरण संरक्षण के प्रति सहभागिता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्र तथा छात्राओं का पर्यावरण संरक्षण के प्रति सहभागिता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- माध्यमिक स्तर के शहरी छात्राओं एवं ग्रामीण छात्राओं का पर्यावरण संरक्षण के प्रति सहभागिता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- माध्यमिक स्तर के शहरी छात्र एवं ग्रामीण छात्र का पर्यावरण संरक्षण के प्रति सहभागिता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

ifj lheu&

प्रस्तुत शोध में सीमाएँ निम्नलिखित हैं–

1. ग्रामीण तथा शहरी माध्यमिक स्तर के विद्यालयों तक ही सीमित हैं।
2. इस अध्ययन में उपरोक्त विद्यालयों के केवल कक्षा 9 तथा 10 के विद्यार्थियों का न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया गया हैं।
3. इस अध्ययन में तीन शहरी तथा दो ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों को सम्मिलित किया गया है।
4. इस अध्ययन में ग्रामीण तथा शहरी विद्यालयों से 50–50 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया गया है।
5. इस अध्ययन में छात्र एवं छात्राओं दोनों को ही सम्मिलित किया गया है।
6. इस अध्ययन में कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग दोनों के विषय के विद्यार्थियों को ही सम्मिलित किया गया है।

'kks/k fof/k

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री द्वारा वर्णनात्मक विधि का प्रयोग किया गया है।

tul[;k

इस अध्ययन में शोधकर्त्री द्वारा जनसंख्या के अन्तर्गत शहरी तथा ग्रामीण विद्यालयों को प्रस्तुत शोध की जनसंख्या के रूप में किया गया है।

i nÙkk dk l xg.k vkj fo'y"k.k

विश्लेषण के लिए शोधकर्त्री ने इस शोध में मध्यमान, मानक विचलन, टी–परीक्षण का प्रयोग किया।

v/; ;u d e[; fu"d"k

ऑकड़ों के विश्लेषण के पश्चात् निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए–

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में उच्च सहभागिता का स्तर पाया गया।
2. शहरी तथा ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का पर्यावरण संरक्षण के प्रति सहभागिता में अन्तर पाया गया जिसमें ग्रामीण विद्यार्थियों एवं शहरी विद्यार्थियों की तुलना में अधिक पर्यावरण संरक्षण के प्रति सजग पाए गए।
3. ग्रामीण क्षेत्र के छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरण संरक्षण के प्रति सहभागिता में अन्तर पाया गया। जिसमें ज्ञात हुआ कि ग्रामीण छात्राओं की तुलना में छात्र अधिक सजग हैं। अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों में अन्तर लिंग भेद के कारण और व्यक्तियों की रुचि एवं अभिरुचि का प्रभाव पर्यावरण संरक्षण के प्रति प्रभाव पड़ सकता है।
4. ग्रामीण छात्र एवं शहरी छात्रों का पर्यावरण संरक्षण के प्रति सहभागिता में कोई अन्तर नहीं पाया गया। अतः स्पष्ट है कि शहरी छात्र और ग्रामीण छात्र का पर्यावरण के मुद्दे पर एकमत पाया गया है।
5. ग्रामीण छात्राओं और शहरी छात्राओं का पर्यावरण संरक्षण के प्रति सहभागिता में अन्तर पाया गया, अतः पाया गया कि ग्रामीण छात्राओं एवं शहरी छात्राओं की तुलना में पर्यावरण संरक्षण के प्रति अधिक सहभागी है।

i ;koj.k lj{k.k d ifr lgHkkfxrk dk c<ku gr l>ko&

- प्रत्येक ग्रामीण तथा शहरी विद्यालय में पर्यावरण विशेषज्ञों को नियुक्त करना चाहिए। जिससे पर्यावरण संरक्षण के प्रति सहभागिता को बढ़ाया जा सके।
- पर्यावरण शिक्षा को अनिवार्य विषय के रूप में सम्मिलित करना चाहिए। जिससे पर्यावरण संरक्षण के प्रति सहभागिता को बढ़ाया जा सके।
- प्राकृतिक पर्यावरण संयुक्त स्थानों पर भ्रमण हेतु ले जाना चाहिए, जिससे पर्यावरण संरक्षण के प्रति सहभागिता को बढ़ाया जा सके।
- विद्यार्थियों को डिस्कवरी, नेशनल जियोग्राफिक तथा पर्यावरण से सम्बन्धित अन्य कार्यक्रमों को टी0वी0 प्रसारण को देखने के लिए प्रेरित करना चाहिए जिससे पर्यावरण संरक्षण के प्रति सहभागिता को बढ़ाया जा सके।
- पौधे लगाओं, वातावरण बचाओं जैसे प्रायोगिक कार्यक्रमों का आयोजन कर विद्यार्थियों का पर्यावरण संरक्षण के प्रति सहभागिता को बढ़ाया जा सके।

- पर्यावरण से सम्बन्धित निबन्ध, वाद–विवाद व संगोष्ठियों का आयोजन करना चाहिए, जिससे पर्यावरण संरक्षण के प्रति सहभागिता को बढ़ाया जा सके।
- विद्यालय में पर्यावरण से सम्बन्धित पत्रिकाओं, मैगजीन, जर्नल्स, पढ़ने के लिए प्रेरित करना चाहिए।
- शिक्षक को पर्यावरण के प्रति स्वयं सजग रहना चाहिए, जिससे विद्यार्थी शिक्षकों को देखकर पर्यावरण संरक्षण सहभागिता के लिए प्रेरित हो सके।

lUnHkZ xzUFk lwph

गोयल डॉ0 एम0 के0 (2001) ''पर्यावरण शिक्षा'', विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।

शर्मा डॉ0 वी0 (2001) ''पर्यावरण और मानव मूल्यों के लिए शिक्षा''

पाण्डेय प्रो0 रामशकल (2003) उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक

एस0 पी0 गुप्ता (2005) भारतीय शिक्षा का इतिहास विकास एवं समस्या शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद।

ijEijkxr vkSj vk/kqfud Hkkjrh; lekt esa efgykvksa dh fLFkfr

Áfeyk feJk [1]

lkj

प्रस्तुत शोध पत्र में नारी की प्राचीन तथा वर्तमान स्थिति से संबंधित महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं पर प्रकाश डाला गया है। भारतीय संस्कृति और समाज में नारी का आदरणीय, विशिष्ट तथा गौरवपूर्ण स्थान है। वह इस देश की पावन परंपराओं से प्रतिबद्ध, श्रेष्ठतम संस्कारों से परिष्कृत तथा अपने कर्त्तव्यों के प्रति संवेदनशील, सतत् जागृत् और सहज समर्पित है इसीलिए भारत की नारी को 'गृहस्वामिनी' तथा गृहलक्ष्मी' की गौरवमयी पदवी स्वतः प्राप्त है समाज का आधार नारी है। ukjh ls uj mitS /kzqo iqgykn lekuA *हमें अपनी नारी जाति का उत्कर्ष, अभ्युदय और कल्याण चाहना है तो सबसे प्रथम हमारा यह कर्त्तव्य है कि हम संसार का इतिहास देखकर उस पर भली भांति विचारकर निर्णय करें कि हमारे नारी समाज के लिए ऐसा कौन आदर्श सर्वोत्तम होगा, जिसको नारी समाज अपना लक्ष्य बनाकर संसार में अपना गौरव अपना धर्म तथा अपना अस्तित्व कायम रख सका है।*

भारतीय समाज में नारी एक विशिष्ट गौरवपूर्ण स्थान पर प्रतिष्ठित है आर्य पुरुषों ने सदा ही उसे अपनी अर्द्धांगिनी माना है। इतना ही नहीं व्यवहार में पुरुष मर्यादा से नारी मर्यादा सदा ही उत्कृष्ट मानी गयी है। हिन्दू संस्कृति इस भावना से परिपूर्ण है–

;= uk;ZLrq iwT;Urs jeUrs r= nsorkA ;=SrkLrq u iwT;Urs lokZLr=kQyk%
fØ;k%AA

जिस कुल में स्त्रियों का आदर होता है वहाँ देवता प्रसन्न रहते हैं और जहाँ सम्मान नहीं है उस परिवार में समस्त क्रियायें विफल हो जाती हैं। आर्य संस्कृति में नारी के प्रति यह केवल शाब्दिक सदभावना का प्रदर्शन ही नहीं है, भारतीय गृहस्थ जीवन में पग–पग पर इसकी व्यवहारिक सार्थकता सिद्ध होती है। भले ही भौतिकवादी पाश्चात्य मस्तिष्क को इसमें कोई तथ्य न दिखाई दे और नारी गौरव रक्षण के साथ दैवीय प्रसन्नता की संगति भले ही उनकी समझ में न आये किन्तु स्थूल जगत का सूक्ष्म जगत से संबन्ध और उसका रहस्य समझने वालों तथा भारतीय सामाजिक व्यवस्था विशेषज्ञों, धर्ममर्मज्ञों के निकट इसका रहस्य तिरोहित नहीं है। यह कहना

1. f'k{kk ladk;] txnxq# jkeHknzkpk;Z fodykax fo'ofo|ky; fp=dwV

उचित नहीं है कि भारतीय गृहस्थ घर में कन्या का जन्म नहीं चाहता।

vFk ; bPNknfgrk e% if.Mrk tk;r% lo%ek;%fj;kr A

तब तक किसी भारतीय को कन्या जन्म सुनकर दुःखित नहीं होना चाहिए। वैदिक सभ्यता जब अपने विकास पर थी, तब यहाँ के लोग इच्छानुसार पुत्र पुत्री प्राप्त कर सकते थे। संतान के अभिलाषी वैवस्वतमनु महाराज की पत्नी ने पुत्रेष्टि यज्ञ के अवसर पर होता से कन्या के लिए याचना की थी–

r= J)k euk% iRuh gk%rkj% le;kprA nfg=FkikxE; if.ki= Ik;ko%r%AA

इला इसी यज्ञ का प्रसाद थी। किन्तु पुत्रेष्टि आदि यज्ञों में अरुचि प्रवृत्ति कारणों से भारतीय दम्पति इच्छानुसार सन्तति लाभ में असफल हो रहे हैं। एक ओर अपने प्रमाद और आलस्य से अमोघ वैदिक उपायों का अवलम्बन छूट गया, दूसरी ओर पाश्चात्य विद्वानों के बताये हुए अनिश्चित उपाय असफल ही रहे। नारी का सर्वप्रथम रूप वह है जबकि वह नवजात पुत्री के रूप में भूमिष्ट होती है, आदर्श घरों में वह माता–पिता के वात्सल्य को प्राप्त करके बड़ी होती है। अपने कार्य और बाल–सुलभ क्रीड़ाओं से वह परिवार के आमोद–प्रमोद में उतनी ही सहायक होती है जितनी कि उसकी अग्रज और अनुज। कुछ बड़ी होने पर जब वह खेलने लगती है, तब चतुर माता उसको घरुयें के खेल द्वारा अनायास ही गृह निर्माण कला और गृह व्यवस्था की शिक्षा देती है, गुड्डे गुड़िया के खेल द्वारा खिलौने बनाने एवं कपड़ों की सिलाई बुनाई आदि का पाठ पढ़ाती हैं और सीता की रसोई द्वारा पाक–शास्त्र का परिचय कराती है। भाई बहनों के साथ प्रेम पूर्वक सम्भाषण और व्यवहार सिखाती है।

ek Hkkrj% f}{kUek Lolkjer LolkAA

नारी माता के तौर पर संतान को उत्पन्न करती है, उनका पालन–पोषण करती है तथा उनके प्रति जीवनभर अपार एवं निःस्वार्थ प्रेम करती है। गृहणी के तौर पर नारी पुरुष की सखा है, मन्त्री है, उसके घर की व्यवस्था करती हैं तथा धर्म का भी साधन कराती है। वह पितृकुल और पतिकुल दोनों को आनन्द देने वाली है। वह प्रेम, दया, धैर्य, परिश्रम एवं स्वार्थ त्याग की प्रतिमा है, तथा पुरुष वर्ग उससे भाक्ति, उत्साह एवं हर कार्य में सहायता प्राप्त करता है। परंतु साथ ही उसके शरीर के प्रति पुरुष का कामवासना संबन्धी आकर्षण भी होता है, जिसे समाज हित के लिए संयमित करने की तथा मोक्ष (यानी स्वाधीनता, पूर्ण उन्नति एवं विष्व–प्रेम) के लिए नश्ट करने की आवष्यकता होती है। नहीं तो अनेक सामाजिक, कौटुम्बिक, वंश संबन्धी और आध्यात्मिक अनर्थ हो सकते हैं। इसीलिए भाास्त्रों में जहाँ नारी के कन्यापन की, मातृत्व की तथा गृहिणीत्व की पूजा की गई हैं। माता के तौर से उसे शिक्षक (उपाध्याय) से भी दस लाख गुना तथा पिता से हजार गुना गौरव शाली बताया गया है। जननी के तौर पर स्वर्ग से भी अधिक महिमाशाली कहा गया है, गृहिणी के तौर

पर उसे लक्ष्मी, सखा, सहधर्मिणी, धर्म एवं स्वर्ग का साधन तथा पुरुष की भाक्ति बताया गया है। वहाँ उसके प्रति कामवासना मन्द या नष्ट करने के प्रयोजन से उसकी निन्दा भी की गयी है। असल में तो कामवासना के आधार पर नारी की निन्दा नारी के गौरव के लिए ही है, क्योंकि इसके द्वारा पुरुष तथा नारी दोनों को बताया गया है कि नारी कामवाासना की तृप्ति के लिए नहीं है। यह तो उसका अधोगत स्वरूप है, लेकिन असल में वह माता, लक्ष्मी और सखा तथा धर्म एवं अर्थ में सहायक है और इन्हीं के रूप में उसे मानना चाहिए। हिंदू शास्त्रों में कामवासना संतानोत्पत्ति के कर्तव्य के लिए ही विहित मानी गई है।

स्त्री स्वयं एक आत्मा है। पुरुश की भाँति उसका भी गृहस्थाश्रम उसके अपने आत्मा की उन्नति तथा उसके अपने सद्गुणों के विकास के लिए साधनस्वरूप है जिसमें वह मातृत्व, गृहिणीत्व आदि के कर्तव्यों का पालन करती हुई तथा पति के सत्कार्यों में सहायता देती हुई उनके साथ तथा उनके द्वारा परोपकार, सेवा, संयम, त्याग, ज्ञानप्राप्ति, भक्ति आदि का साधन या अभ्यास करती हुई अपने आत्मिक उन्नति के लिए वैसी यथार्थ मानस स्थिति प्राप्त होने पर मीराबाई आदि की भाँति वह भी गृहस्थाश्रम का त्याग कर सकती है। पत्नी को अपने समान समझने के लिए हिंदू शास्त्रों में केवल उपदेश ही नहीं है, किंतु इसे व्यवहार में लाने के भी उपाय कर दिये गये हैं। धर्म–कर्म करने एवं दान देने में पत्नी की सम्मति एवं उसका सम्मिलित होना आवश्यक ठहराया गया है। रुपये–पैसे रखने, खर्च करने आदि का कार्य भी स्त्री को दिया गया है। मनु जी कहते हैं कि स्त्री–पुरुष मरणपर्यन्त धर्म, अर्थ आदि में परस्पर अभिन्न होकर रहें। यह स्त्री पुरुष का श्रेश्ठ धर्म संक्षेप से जानना चाहिए।

ऋग्वेद के अनुसार आर्यों में स्त्री शिक्षा का यथेष्ट प्रचार था। स्त्रियाँ वेदाध्ययन करतीं थीं। वे अपनी त्याग तपस्या से ऋषिभाव को भी प्राप्त होती थी, और मन्त्रों का साक्षात्कार करती थीं। आर्य लोग विवाह के समय वर और कन्या को विविध वस्त्राभूषणों से विभूषित करके बहुत सम्मान देते थे। लोग स्त्री की प्राण रक्षा और मर्यादा रक्षा के लिए भारी से भारी कष्ट सहन करने से भी पीछे नहीं हटते थे। स्त्रियाँ यज्ञ कार्य में नियुक्त होती थीं। समाज में उनको बहुत ही प्यार और दुलार से रखा जाता था। स्त्री अपने पति के अधीन रहती थी, परन्तु घर के अन्य सब पदार्थों पर उसी का प्रभुत्व रहता था। वर और वधू जब विवाह में एक साथ बैठते थे, उस समय गुरुजनों और देवताओं से वधू के सौभाग्य के लिये प्रार्थना की जाती थी। आज भी इस मन्त्र को पढ़कर सिन्दूर एवं सौभाग्यवर्धक आशीर्वाद दिया जाता है।

lqexyhfj;a o/kfjek ler i';rA lkSHkkX;eL;S nRok ;k;kLra fo ijsruAA

‘यह परम् कल्याणमयी वधू यहाँ बैठी है, गुरुजनों तथा देवताओं! आप सब लोग यहाँ आवें, इसे कृपा दृष्टि से देखें तथा इसको सौभाग्यसूचक आर्शीवाद देकर

अपने–अपने स्थान को पधारें।' उस समय स्त्रियाँ भी युद्ध में जाती थीं। विश्यला अपने पति के साथ युद्ध में गयी थी और वहाँ उसकी जाँघ टूट गयी थी, जिसे अश्विनी कुमारों ने ठीक किया था। नमुचि के पास भी स्त्रियों की सेना थी। वृत्रासुर के साथ उसकी माता दनु भी युद्ध में गयी थी जो इन्द्र के द्वारा मारी गयी। वैदिक साहित्य के अनुशीलन से यह भी सिद्ध होता है कि पहले की स्त्रियाँ वेद पढ़तीं और यज्ञोपवीत भी धारण करती थीं। सुलभा, मैत्रेयी और गार्गी आदि की विद्वता प्रसिद्ध है। वाल्मीकि रामायण के अनुसार सीता जी वैदिक प्रार्थना करती थीं। कौसल्या जी के विषय में भी ऐसा आया है कि वे मन्त्रपाठ पूर्वक अग्निहोत्र करती थीं।

उपनिषदों में नारी को अग्रस्वरूप भी कहा है, नारी नर के लिए अनुपम सहकारिणी है क्योंकि यदि नर जीव रूप से विचरण करता है तो नारी बुद्धि बनकर सहयोग देती है। यदि नर दिन बनकर श्रम द्वारा तपता है तो नारी रात्रि बनकर उसके श्रम को हरती है, यदि नर मन बनकर संकल्प करता है तो नर वाणी बनकर उसका समाधान करती है। यदि नर इन्द्र बनकर जल वृष्टि करता है तो नारी पृथ्वी बनकर उस जल से प्राणियों का पोषण करती है। नर यदि दाता है तो नारी पालिका है, नर यदि नारायण बनकर अगाध जलराशि में भयंकर शेष शैय्या पर पौढ़ना चाहते है तो नारी महालक्ष्मी बन अपने अद्भुत वैभव द्वारा उसी को सुख शैय्या बना चरण चापती है। नर यदि राम बनकर रावण से युद्ध करते हैं तो नारी जनकनन्दिनी बन अपने पातिव्रतरूपी तप से उनकी सहायता करती है। नर यदि क्रोध है तो नारी शांति है। नर यदि नद है तो नारी नदी है। नर यदि भर्ता है तो नारी भार्या है। नर यदि गृहपति है तो नारी गृहलक्ष्मी है। नर यदि वेत्ता है तो नारी विद्या है। नर यदि बंधक है तो नारी श्रृंखला है। नर यदि कर्ता है तो नारी क्रिया है।

मनुस्मृति में नारी के संबंध में बहुत कुछ कहा गया है– नारी की रक्षा करने के लिए धर्मयुद्ध में किसी को मारना पड़े तो भी दोष नहीं होता है। नारी के सम्बन्ध में अन्य स्मृतियों के विचार भी माननीय और पठनीय हैं। ''स्त्री की अनुकूलता ही स्वर्ग है और उसका प्रतिकूल होना नरक से भी भयंकर है।'' नारी के समान कोई औषधि नहीं है। समस्त दुःखों को दूर करने की दवा नारी है। घर को घर नहीं कहते, नारी ही घर है। भार्या से रहित गृह जंगल से भी बढ़कर है। भार्या देवताओं द्वारा दिया हुआ सखा है। यदि पत्नी कभी अप्रिय वचन भी बोल दे तो स्वयं उसे अप्रिय वचन न कहें, क्योंकि रति, प्रीति और धर्म सब स्त्री के ही अधीन हैं। पुरुष भरण करने के कारण ही भर्ता और पालन करने के कारण पति नाम धारण करता है। इसके विपरीत चलने से न वह भरता है और न पति है। नारी जाति में असाधारण पवित्रता है, वह कभी भी पूर्णतया अपवित्र नहीं होती। नारी का सारा शरीर ही पवित्र है। पुरुष ही सौर है, नारी ही सौन्दर्य है। पुरुष की विशेषता उसकी विचार भाक्ति है। उसी के द्वारा वह समस्त

कर्मों का संपादन करता है। और नारी की विशेषता उसकी प्रज्ञा है, जिसके द्वारा वह सभी विषयों में सामंजस्य करती है, और पुरुष की विचार–बुद्धि को नियमित करती है, जो लोग नारी जाति से घृणा करते हैं उन्हें समझना चाहिए कि वह अपनी माता का ही अपमान करते हैं। जिस पर नारी की कोप दृष्टि है उस पर भगवान का भी अभिशाप लगा हुआ है। जिस दुष्ट के व्यवहार से नारी के आँखों से आंसू बहते हैं वह देवता के क्रोधानल से भस्म हो जाता है। जो व्यक्ति नारी के दुःख–दर्द में उसकी हँसी उड़ाता है, उसका अकल्याण होता है, ईश्वर भी उसकी प्रार्थना नहीं सुनते। नारी के कण्ठ से निकला हुआ धर्म संगीत ईश्वर के कानों को बहुत ही सुःख देने वाला होता है। ईश्वर की प्रीति के लिए नारी के साथ–साथ ही पुरुष को भी प्रार्थना करनी चाहिए। नारी को असहाय समझकर उसको सताने और उसके पितृधन का अपहरण करने से बढ़कर नीचतर पाप और नहीं है। नारी गृहलक्ष्मी है, उसके सानिध्य से गृहदेवता प्रसन्न होते हैं। खेती आदि कठोर परिश्रम मूलक कर्म नारी को नहीं करने देना चाहिए। जो आत्मीयसृजन बुरी नियत से असहाय नारी की धन सम्पत्ति, गहने कपड़ों का हरण कर लेते हैं, वे निश्चय ही नरक में जाते हैं उनका कल्याण कहीं भी नहीं होता है। ''हिंदू धर्म शास्त्रों में सती नारी की बड़ी महिमा गायी गयी है।" ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनुसार –

i`fFkO;k ;kfu rhFkkfu lrhikn'k rkU;fiA r_t'p loZnsokuka equhuka p lrhl_oA

lrhuka iknjtlk l|% ir_ olU/kjkAA

'पृथ्वी पर जितने तीर्थ हैं वे सभी सती–साध्वी स्त्री के चरणों में निवास करते हैं। सम्पूर्ण देवताओं और मुनियों का तेज भी सती स्त्रियों में स्वभावतः रहता है। सती नारियों की चरण रज से पृथ्वी तत्काल पवित्र हो जाती है।' भारतीय संस्कृति और समाज में नारी का आदरणीय, विशिष्ट तथा गौरवपूर्ण स्थान है। वह इस देश की पावन परंपराओं से प्रतिबद्ध, श्रेष्ठतम संस्कारों से परिष्कृत तथा अपने कर्त्तव्यों के प्रति संवेदनशील, सतत् जागृत् और सहज समर्पित है। इसीलिए भारत की नारी को 'गृहस्वामिनी' तथा 'गृहलक्ष्मी' की गौरवमयी पदवी स्वतः प्राप्त है।

यद्यपि कहने सुनने के लिए अंग्रेज इस देश को छोड़ गये, तथापि अंग्रेजियत से हमारा पिण्ड अभी नहीं छूटा, इस अंग्रेजियत का प्रभाव इतनी गहराई पर है कि इससे कदाचित ही कोई बचा हो। पिछले दिनों हमारे घर की लड़कियाँ पढ़ायी के साथ–साथ गुनाई अधिक जाती थीं गुनने से उनकी स्मृति शक्ति का अद्भुत विकास होता है ये उत्तम श्रेणी की गृहस्वामिनी बनती थीं। पुरुष का काम धनोपार्जन करना मात्र था और घर का सारा प्रबन्ध और दायित्व उनके ऊपर रहता था। वह समय था, जब इस देश के गृहस्थों के घर भरे पूरे और सुख भाान्ति के निकेतन थे। उस समय की स्त्रियों की रहन सहन, आचार विचार तथा घर के छोटे बड़ों के प्रति उनका कर्तव्य पालन उनको

सुगृहिणी की उपाधि देने के हेतु सर्वथा उपर्युक्त था। घर के छोटों के प्रति (वे भले ही उनके जेठ एवं देवर की संतान ही क्यों न हों) उनका अकृत्रिम स्नेह और वात्सल्यभाव तथा घर के बड़ों के प्रति उनका आदर का भाव घर में सुख– शान्ति बढ़ानेवाला होता था। घर की स्त्रियाँ घर में रहने वाले भाइयों में सद्भाव बनायें रखने को सदा प्रयत्नशील रहती थी और ^tgk¡ lqefr rg¡ lEifr ukuk* वाली गोस्वामी जी की उक्त चौपाई अक्षरशः चरितार्थ होती थी। वह काल था जब गृहस्थ आश्रम सचमुच सर्वश्रेष्ठ आश्रम बना हुआ था।

किंतु खेद का विषय है कि वर्तमान में पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित वातावरण, अत्याधुनिक रहन सहन तथा फैशन के प्रति बढ़ते मिथ्या मोहाकर्षण एवं अन्धानुकरण के कारण आज हमारी बहुत सी बहनें दिग्भ्रमित हैं। वे अज्ञानतावश अभारतीय संस्कारों को अपनाकर अधःपतन की ओर उनके कदम बढ़ रहें हैं। यह दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति मात्र नारी जगत् के लिए ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण भारतीय समाज और हमारी आदर्श संस्कृति के लिए भी घातक और अमंगलकारी संकेत है। अतैव नारी मंगल के लिए भारतीय देवियों को अपने देश की गौरवमयी सांस्कृतिक परंपरा, सुसंस्कारों और आदर्शों से जुड़ना तथा जोड़ना परमावश्यक है। पुरुष की अपेक्षा नारी का विशेष महत्त्व है। नारियाँ पुरुषों की ही नहीं, अपितु देवताओं की भी जननी हैं। इसलिए भगवान की श्रृश्टि में वे आदरणीय हैं। उनका स्थान सबसे ऊँचा है। अतः उनके धर्म तथा आदर्श की रक्षा अत्यावश्यक है। प्राचीन इतिहास साक्षी हैं कि जननी जानकी का लंकाधिपति रावण द्वारा अपहरण नहीं होता और पांचालि कौरवराज दुर्योधन तथा दुःशासन से अपमानित नहीं होती तो रामायण और महाभारत जैसे आदर्श ग्रन्थों का निर्माण नहीं होता। परमआदर्श, संयम, नियम, व्रत, उपवास तथा समस्त पुण्य धर्म में हमारी तपोमयी देवियाँ प्राचीन काल से लेकर आज तक हमसे आगे ही रही हैं। किंतु खेद है कि आधुनिक सुधारवाद के प्रबल झंझावात से वे अपनी रक्षा नहीं कर पा रही हैं। आज भी भारतीय स्त्री की अवस्था अन्य देशों और जातियों की तुलना में कहीं अच्छी है। समाज में एवं घर में उनका ज्यादा सम्मान तथा उनके अधिकार अधिक एवं सुरक्षित हैं। फिर भी उनमें सुधार की आवश्यकता तो है ही उसकी जो दुर्दशा दृष्टिगोचर होती है उसका कारण अधिकांश में वह पाश्चात्य संस्कृति है जिसने जीवन को स्वार्थी तथा विलासी बना दिया है, दरिद्रता तथा असंतोष को बढ़ा दिया है और सामाजिक शान्ति तथा व्यवस्था को विश्रृंखल कर दिया है। भारतीय नारियों की दशा को सुधारने के सुझाव निम्नलिखित हैं–

1. नारियाँ अपने आपको कामवासना की तृप्ति का साधन न बनने दें। माता, गृहिणी एवं पति के सखा के तौर पर अपने गौरव की रक्षा करें। कामोत्तेजक एवं विलासमय रहन–सहन छोडकर, सादा परिश्रमी जीवन बितायें।

2. संतान के पालन–पोषण तथा घर के काम–काज को परिवार की सेवा एवं मानव सेवा का महत्त्वपूर्ण अंग समझकर प्रेम तथा हर्ष से करें। बाइबिल में भी कुटुम्ब सेवा को ही सद्गुणी स्त्री का लक्षण बताया गया है।[10]
3. सिनेमा, पुस्तकों, चित्र आदि में नारी के शरीर एवं वेश–भूसा के सौन्दर्य की अवहेलना करके उसके परिश्रमी जीवन तथा नैतिक गुणों को दिखाया जाय तथा इन्हीं में उसका सौन्दर्य होना बताया जाय।
4. नारी की शिक्षा ऐसी हो जिससे वह अपने मातृत्व एवं गृहिणीत्व के कर्त्तव्यों का सुचारु रूप से पालन कर सके और अपने आपको पति की जीवन संगिनी एवं मित्र होने के योग्य बना सके।
5. धर्म–कर्म में तथा दान देने में पत्नी की सम्मति लेना आवश्यक समझा जाय और सम्पत्ति के प्रबंध में भी उसका सहयोग रहे ताकि पति के बाद भी वह सम्पत्ति का प्रबंध तथा संतान के हितों की रक्षा कर सकती है।
6. नारियों के साम्पत्तिक एवं अन्य अधिकारों की रक्षा करना, समाज एवं राज्य अपना एक मुख्य कर्त्तव्य समझे।
7. सदाचारिणी विधवाओं को सच्चे महात्मा साधुओं के समान पूज्य समझा जाये।
8. यदि कोई नारी किसी कारणवश पतित हो जाये तो यथा योग्य तथा उसकी भाक्ति के अनुसार प्रायश्चित देकर उसकी शुद्धि कर ली जाय और इस विषय में पुरुष एवं स्त्री में अंतर न किया जाय।

नर–नारी में भगवान ने भी कुछ भेद रखा है। इसलिए दोनों के कार्यों में समानता नहीं हो सकती। कोई कार्य पुरुष अच्छी तरह कर सकते हैं तो कोई स्त्री। एक दूसरे के स्वभाव के प्रतिकूल कार्य करने और कराने में व्यक्ति, समाज तथा देश की शक्ति का अपव्यय होगा। अतः हितकर सुधार में इस बात का ध्यान रखना अत्यन्त आवश्यक है कि हमारे भारतीय समाज की प्राचीन संस्कृति, सभ्यता और आदर्श अक्षुण्ण बने रहें। समाज का आधार नारी है। ukjh l: uj mi t: /ko igykn lekuA हमें अपनी नारी जाति का उत्कर्ष, अभ्युदय और कल्याण चाहना है तो सबसे प्रथम हमारा यह कर्तव्य है कि हम संसार का इतिहास देखकर उस पर भलीभाँति विचारकर निर्णय करें कि हमारे नारी समाज के लिए ऐसा कौन आदर्श सर्वोत्तम होगा, जिसको नारी समाज अपना लक्ष्य बनाकर संसार में अपना गौरव अपना धर्म तथा अपना अस्तित्व कायम रख सका है।

lUnHk xUFk lph

मनुस्मृति – 3/56
ब्रहदारण्यकोपनिषद – 6/4/17
श्रीमद्भागवत् पुराण – 9/1/14
अथर्ववेद – 3/30/3

मनुस्मृति – 9/5/7,9
मनुस्मृति –9/106/7
मनुस्मृति – 9/11
ऋग्वेद दशम मण्डल 39वां सूक्त
वाल्मीकी रामायण – 5/15/48
बाइबल प्रॉवर्ब्स – 3/10/31

noh Hkkxor i|jk.k e o.kl O;oLFkk % ,d v/;;u

noukjk;.k ikBd [1]

समाज के चतुर्दिक विकास को ध्यान में रखते हुए प्राच्य मनीषियों ने आश्रम व्यवस्था के साथ–साथ वर्ण व्यवस्था को भी स्वीकार किया है। अमरकोश में वर्ण के तीन अर्थ बताए गये हैं – ब्राह्मण आदि चार वर्ण, शुक्लादि रंग तथा स्तुति।

o.kk f} tknk 'kDyknk Lr|rk o.k r| pk{kj bR;ej%A

व्यवस्था के रूप में वर्ण शब्द का प्रयोग निश्चय ही ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य तथा शूद्र इन चारों के लिए प्रयुक्त हुआ है। ऋग्वेद में 'वर्ण' शब्द का प्रयोग रंग या आलोक अर्थ में हुआ है। शरीर की त्वचा के रंग के आधार पर तत्कालीन समाज आर्य और अनार्य वर्ग में विभक्त था। यद्यपि 'ब्राह्मण' शब्द ऋग्वेद में बहुधा प्रयुक्त हुए है। किन्तु वर्ण शब्द का उनसे कोई सम्बंध नही था। यहॉ तक कि पुरुष सूक्त में भी जहॉ ब्राह्मण, राजन्य वैश्य तथा शूद्र का उल्लेख हुआ है वहॉ भी वर्ण शब्द का प्रयोग नही हुआ है।

ckã.kks·L; e|[kekl hnokgjktU;% d'rA
m:% rnL;;no'’;% inH;k 'knks·tk;rA

उत्तर वैदिक काल के प्रारम्भ में त्वचा के रंग में अल्पाधिक विभिन्नता के कारण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र चार वर्णो की गणना की गयी। ब्राह्मण शुक्ल या श्वेत, क्षत्रिय कम श्वेत, वैश्य रक्त पर आधारित, शूद्र काला या श्याम वर्ण। किन्तु जाति मिश्रण के कारण उत्तरवैदिक काल में केवल शरीर की त्वचा के रंग के आधार पर कार्य विभाजन संभव नहीं हुआ। अब वर्ण गुण वर्ग पर आधारित चार भिन्न–भिन्न वृहद वर्गो का द्योतक बन गया। व्यावहारिक दृष्टिकोण से इस युग में भी समाज के एक व्यक्ति का निर्धारण एक विशेष वर्ण में उसके जन्म के आधार पर होता था। किन्तु सिद्धान्त की दृष्टि से उसका वास्तविक वर्ण गुण–कर्म के आधार पर निर्धारित किया जाता था। इस प्रकार ब्राह्मण कुल में पैदा होने पर भी यदि कर्म क्षत्रिय हो गया तो उसको क्षत्रिय मान लिया जाता था। इसी प्रकार क्षत्रिय वर्णोद्भूत कोई पौरोहित्य कर्म करके ब्राह्मण बन जाता था।

---

1. u|g# x|ke Hkkjrh fo'ofo|ky;] dkVok& teuh i|j&n|ckoy] bykgkckn

पौराणिक काल में आते–जाते चातुर्वर्ण्य का सिद्धान्त बिल्कुल निश्चित हो गया, लेकिन इस युग में भी सिद्धान्त रूप में यह विभाजन गुण कर्म पर आधारित था। देवीभागवत काल में यह शब्द जाति परक न होकर चतुर्वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र का बोधक है।

cKã.kk|k’p ;s o.kk% fL=;’pkJfe.kLr;kA
ldk;k’pkfi fu"dkek ikr0;k rk dFkkeresAA

कालान्तर में एक वर्ण से चरण, गोत्र शिल्प उद्योग–धन्धे, व्यवसाय और देश के आधार पर अनेक जातियों का विकास हुआ और क्रमेण सह यह शब्द भारतीय बाड़्मय में व्यावहारिक दृष्टि से जाति परक हो गया।

pkrqo.;Z

श्रीमद्देवीभागवत युग में वैदिक युग की चातुर्वर्ण्य व्यवस्था समाज में पूर्णरूपेण स्थापित हो गयी। समाज में प्रत्येक वर्ण अपने–अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए सम्मान के पात्र माने जाते थे, विशेष रूप से यज्ञशाला में सभी को समान रूप से सम्मान करने का निर्देश दिया जाता था। इस युग में ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य तथा शूद्रों के अधिकार एवं कर्त्तव्य पूर्ण रूपेण निश्चित हो गये।

cKã.k

¼cã v/khrs ons ok bR;.k cge.;s·iR;s iqeku bR;.k ok] cã.;s·;s cKã.k½

ऋग्वेद में 'ब्रह्म' शब्द का अर्थ है प्रार्थना या स्तुति। अथर्ववेद (211514) में ब्राह्म शब्द 'ब्राह्मण' वर्ग के अर्थ में आया है। 'ब्रह्म' शब्द का क्रमशः ब्राह्मणों के लिए प्रयुक्त हो जाना स्वाभाविक है क्योंकि ब्राह्मण ही स्तुतियों एवं प्रार्थनाओं के प्रणेता होते थे। कहीं–कहीं यह शब्द ब्राह्मणों के लिए प्रयुक्त हो गया है – 'ब्रह्म वै ब्राह्मण' (तै0ब्रा0319114) ऋग्वेद के पुरूष सूक्त में यह जातियों के चतुर्वर्गीय विभाजन में आता है। इसी सूक्त में इसकी उत्पत्ति ब्रह्मा के मुख से मानी गयी है। इस प्रकार वैदिक युग में इन्हें क्षत्रिय आदि तीनों वर्गो में श्रेष्ठ बताया गया है।

उत्तरवैदिक काल में चातुर्वर्ण्य व्यवस्था के अन्तर्गत ब्राह्मण को सर्वप्रथम स्थान दिया गया। श्रीमद्देवीभागवत में भी ब्राह्मण चातुर्वर्ण्य में प्रथम माना गया है। यह एक वर्ग का बोधक अवश्य है किन्तु जाति का नहीं। इस युग में इसके प्रायः वहीं कार्य थे, जो वैदिक युग में निर्धारित किये गये थे।

वैदिक युग में निर्धारित ब्राह्मणों के षड़्कर्म श्रीमद्देवी भागवत युग में भी सुस्थिर रहे। ये षड़्कर्म – दान लेना, दान देना, पढ़ना, पढ़ाना और यज्ञकरना तथा यज्ञ कराना। दानादि लेने का कार्य ब्राह्मण वर्ग ही करता था। महाराज

ऋत्वाक् लोमश ऋषि से अपनी पत्नी के साथ श्रीमद्देवी भागवत पुराण का श्रवण करने के पश्चात् ब्राह्मणों को दक्षिणा से सन्तुष्ट करते है।

श्रीमद्देवी पुराण में ब्राह्मणो के लिए उपर्युक्त कर्म के अतिरिक्त तीनों सन्ध्याओं में गायत्री जप तथा अर्घ्यदान की अनिवार्यता का प्रतिपादन किया गया है और बताया गया है कि जो ब्राह्मण नित्य गायत्री का ध्यान करता है वह देवताओं के समान पूजित हो जाता है।

श्रीमद्देवीभागवत कालीन समाज में ब्राह्मणों को सर्वोच्च स्थान प्राप्त था। वेद वेदौं ये निष्णात् एवं कुशल विद्वान् थे। इस कारणसमाज के प्रत्येक वर्ग के लोग ब्राह्मणों को प्रणाम करते थे। एक समय प्राणियों के कर्मवश पन्द्रह वर्ष तक वृष्टि नहीं हुई। अनावृष्टि के कारण घोर दुर्भिक्ष हुआ। जनता क्षुधा से व्याकुल होकर अश्व वराह आदि के मांस खाने लगी। उस समय बहुत से ब्राह्मण इस समस्या का समाधान करने के लिए गौतम ऋषि के पास गये। गौतम ऋषि पश्चिम, पूर्व, उत्तर दक्षिण अनेक दिशाओं से आने वाले ब्राह्मणों के समाज को प्रणाम किया और सबका पूजन करके उनकी समस्याओं का समाधान किया। राजसभा में पदार्पण करने पर राजा अत्यन्त विनम्र होकर अर्ध्यपाद्यादि से इनका सत्कार करके कुशलक्षेम पूछते थे। जो इनका तिरस्कार एवं अपमान करता था, वह निम्नगति को प्राप्त करता था। महाराजपरीक्षित ने ब्राह्मण का अपमान किया था जिसके कारण सर्प काटने से दुर्मरण प्राप्त हुआ। समारोहों में एवं विशेष अवसरों पर ब्राह्मणों को सर्वप्रथम भोजन कराया जाता था एवं दान दिया जाता था। ये राजा के लिए स्वस्तिवाचन भी करते थे।

ब्राह्मण लोगों का आहार प्रायः सामान्य था। विशेष यज्ञादि को करते समय अथवा किसी विशिष्ट पद की प्राप्ति के लिए उग्र तपस्या करते समय कभी–कभी भोजनादि का परित्याग कर देते थे। तथा केवल वायु, सलिल सूर्य की विशेष आदि का ही भक्षण करते रहते थे। भिक्षा वृत्ति के द्वारा जीवन यापन करने वाले ब्राह्मणों को उच्च्य वृत्ति को 'साधुवृत्ति' कहा गया है। ब्राह्मण लोग मद्यपान नहीं करते थे। अन्य वर्गो में तो सुरापान सर्व प्रचलित था किन्तु किसी भी ब्राह्मण या ब्राह्मणी के मदिरापान का स्पष्ट उल्लेख देवी भागवत पुराण में नही मिलता है। ऐसा प्रतीत होता है कि देवी भागवत युगीन समाज में ब्राह्मण के लिए सुरा वर्जित था। जो ब्राह्मण सुरापान करते थे उनके इस कर्म को गर्हित एवं निन्दित समझा जाता था। जो ब्राह्मण मूर्ख होता था उसे समाज में सम्मान नहीं प्राप्त होता था। देवी भागवत पुराण में देवदत्त नामक ब्राह्मण का पुत्र मूर्ख था, इस कारण देवदत्त चिन्तित रहता था।

{kf=;

क्षद्र संवरणे–क्षदति इतिष्ट्रन (उणादि) क्षत्रस्यापत्यम्। क्षत्त्राद्वः। ऋग्वेद में 'क्षत्र' शब्द 'शक्ति' के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। कहीं–कहीं यह शब्द क्षत्रियों के लिए भी प्रयुक्त हुआ है – 'क्षत्रं राजन्यः' राजन्य शब्द केवल पुरुष सूक्त में ही आता है। वैदिक काल में क्षत्रिय जन्म से क्षत्रिय थे कि नहीं, इसका स्पष्ट उत्तर देना सम्भव नहीं है। ऋग्वेद में 'क्षत्रिय' का प्रारम्भिक प्रयोग सर्वथा राजकीय सत्ता अथवा अलौकिक सत्ता से ही सम्बंधित है।

अथर्ववेद की संहिताओं और ब्राह्मणों में 'क्षत्रिय' एक निश्चित सामाजिक समूह का द्योतक है। जो पुरोहितों, प्रजाजनों, दासों से स्पष्टः पृथक था। जातकों के अनुसार 'क्षत्रिय' शब्द एक तो पुरानी आर्य जाति के उन कुलीन या विशिष्ट सदस्यों का द्योतक है, जो इस जाति के विजय अभियानों का नेतृत्व करते थे और उन आदिवासी परिवारों का, जो इस विजय के विपरीत भी अपना राजकीय स्तर सुरक्षित रखने में सफल रहे। देवी भागवत में भी क्षत्रिय वर्ग द्वितीय वर्ग का बोधक है समाज में इसकी स्थिति, ब्राह्मण के उपरान्त थी। इनका मुख्य कार्य देश रक्षण था। बाहुबली होने के कारण ये राज्य कार्य के सर्वथा योग्य थे। युद्ध करना क्षत्रियों का धर्म था।

आनुपूर्व्य क्रम से ब्राह्मण के पश्चात क्षत्रिय का स्थान था। ब्राह्मण अपना प्रत्येक धार्मिक कृत्य क्षत्रिय राजाओं की सहायता से ही सम्पन्न करते थे और क्षत्रिय नृपों के सभी धार्मिक कृत्य ब्राह्मण सम्पन्न करते थे। ऐसा अनुमान होता है कि इन दोनों वर्णो में परस्पर आदर का व्यवहार था। कर्म अवश्य दोनों के पृथक्–पृथक् थे। वैदिक काल में वर्ण विभाजन प्रथमतः गुण कर्म पर आधारित था। एक वर्ग में जन्म लने पर भी कर्म बदलने से वर्ण बदल सकता था क्रमशः देवी भागवत युग में यह वर्ण व्यवस्था प्रधानतः गुण कर्म पर अंशतः जाति या जन्म पर आधारित होने लगी।

देवी भागवत में क्षत्रियों को ब्राह्मण का अनुयायी कहा गया है क्योंकि क्षत्रिय प्रत्येक कार्य में ब्राह्मण से परामर्श लेते थे। ये दोनों उस युग के विशिष्ट वर्ण थे। ये समस्त राजनीतिक और सामाजिक अधिकार इन्हीं के हाथों में केन्द्रित थे। यदि ब्राह्मण प्राचीन आर्य राष्ट्र के मुख्य थे तो क्षत्रिय उनके बाहु थे। गर्ग जैसे ब्राह्मण जहाँ महान् तत्त्व वेत्ता एवं विचारक थे वहाँ काशीराज जैसे क्षत्रिय अप्रतिम् शासक एवं योद्धा थे। नैतिक एवं राजनीतिक उत्कर्ष में उनकी साझेदारी थी।

देवी भागवत कालीन समाज में क्षत्रियों का प्रधान कर्म शासन करना था। प्रजा पालन क्षत्रियों का मुख्य कर्म था। प्रजा के समस्त दुःखों का निवारण उनके योगक्षेम, भोजन आदि की उचित व्यवस्था का भार क्षत्रियों पर था साथ ही अधर्म

का नाश और धर्म की रक्षा तथा ब्राह्मणों को दानादि देने का भार भी क्षत्रियों पर था। धर्मार्थ काम का समुचित पालन करना क्षत्रिय राजाओं का कर्म था। इस प्रकार राजा बनने का अधिकार एकमात्र क्षत्रियों का था।

देवी भागवत कालीन समाज में शत्रुओं से देश एवं प्रजा की रक्षा करना, क्षत्रियों का प्रमुख कार्य था। अतः वे बड़े वीर, पराक्रमी, शत्तिशाली, निर्भीक एवं दृढ़ होते थे। अपने इन्हीं ओजस्वी गुणों के कारण ही ये शासन कार्य में पूर्ण सक्षम थे। शरणागत को अभयदान देना इनका धर्म था। ब्राह्मणों के समान इनका वर्ण अधिकांशतः गौरांग था। ये शरीर से लम्बे–चौड़े एवं बलिष्ठ कन्धे, चौड़ी छाती एवं हृष्ट–पुष्ट थे।

क्षत्रियों का आचार–व्यवहार प्रायः ब्राह्मणों से मिलता – जुलता था। ये निरामिष और अमिष, मदिरा, फल, इत्यादि सभी प्रकार के भोज्य सामग्रियों का भोजन करते थे। क्षत्रिय राजाओं के विधि पूर्वक बने हुए उत्तम कोटि के भोजन का परिचय देवी भागवत में अनेकशः प्राप्त होता है। शान्ति के समय ये बड़ा ही वैभवपूर्ण जीवन व्यतीत करते थे। क्षत्रिय बहुमूल्य रेशमी वस्त्र धारण करते थे। ये कला प्रेमी भी थे। नृत्य, गीत, वाद्य तीनों में पर्याप्त रूचि थी। दया, अनुकम्पा, शरणागत, वत्सलता, पराक्रमशीलता, विनम्रता उनके उदात्त चरित्र के प्रधान गुण थे। महाराज विक्रमशील, महाराज दुर्मद, महाराज परीक्षित महाराज जनमेजय इत्यादि क्षत्रिय राजाओं के चरित्र इन्हीं गुणों के उपेत है।

O’ ;

(विश्प्रवेशने+क्विन् ततः स्वार्थेष्यश्) विशोऽपत्यं जातिवैश्यः गर्गादिभ्योयश् ।

‘वैश्य’ शब्द ऋग्वेद के पुरुष में केवल प्रयुक्त हुआ है। विशः शब्द का कई बार प्रयोग हुआ है, किन्तु ऋग्वेद की सभी स्तुतियों में ‘विश’ शब्द वैश्य का द्योतक नहीं है प्रत्युत जन था आर्यजन का द्योतक है। ऐतरेय ब्राह्मण (1126) के अनुसार ‘विशः’ का अर्थ राष्ट्रणी है।

देवी भागवत में ‘वैश्य’ शब्द तृतीय वर्ण का बोधक है जो कृषि व्यापारादि के द्वारा धनोपार्जन करता था। और देश की आर्थिक स्थिति को सुव्यवस्थित करता था।

यदि ब्राह्मण देवीभागवत कालिक समाज के मस्तिष्क थे और क्षत्रिय उनकी भुजाएं तो वैश्यगण वर्णाश्रम व्यवस्था को आर्थिक संबल प्रदान करते थे। उनका मुख्य कार्य अर्थोपार्जन करना था। वैश्य व्यापार कार्य में निपुण थे। अतएव इन्हें ‘वर्णाजः’ कहकर सम्बोधित किया गया है।

द्विज होने के कारण वैश्यों के धार्मिक संस्कार और कृत्य ब्राह्मणों और क्षत्रियों के समान होते थे। इन्हें यज्ञों में उपस्थित होने और वेद पाठ करने का

अधिकार था। श्रीमद्देवी भागवत पुराण में पुराण माहात्म्य निरूपण के प्रसैं में कहा गया है कि देवी भागवत पुराण को पढने से ब्राह्मण वेदज्ञ हो जाता है, ‘क्षत्रिय बलवान्’ जो जाता है, वैश्य समृद्ध हो जाता है तथा शूद्र अपने कुल में श्रवण मात्र से कुलश्रेष्ठ हो जाता है।

’kn

वैदिक समाज के चतुर्थ वर्ण का नाम ‘शूद्र’ है। ऋग्वेद के पुरुष सूक्त में सर्व प्रथम शूद्र शब्द का प्रयोग मिलता है। बाद के ग्रन्थों का शूद्र वह आदिवासी था जो आर्यो द्वारा पराधीन बना लिया गया था। पुरुष सूक्त के अनुसार उसकी उत्पत्ति ब्रह्मा के पैर से मानी गयी है। जिससे यह अनुमानित होता है कि वैदिक युग में इसकी स्थिति निम्न थी। शूद्र सदैव आर्यो का विपरीत है। और शूद्रों की त्वचा के रंग आर्यो के साथ उसी प्रकार तुलना की गयी है, जिस प्रकार इनके रहन–सहन के बीच विभेद किया गया है। वैदिक युग में इन्हें किसी भी प्रकार के धार्मिक कृत्यों को करने का अधिकार नहीं था, ये आर्यो के दास थे।

देवी भागवत युग में भी शूद्रों की वही स्थिति थी जो वैदिक युगीन शूद्रों की थी। इस काल में ये प्रायः गृहकार्य और दासवृत्ति किया करते थे। शूद्रों को यज्ञ करने का अधिकार नही था। इसके बाद भी यदि कोई शूद्र अपने धर्म में विरत रहता है तो देहान्त में वैश्य के रूप में जन्म ग्रहण करता है। ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इन तीनों वर्णो की सेवा करना शूद्र का कर्तव्य था और यही उसका धर्म था। क्योंकि सेवा कार्य के द्वारा ही उसे स्वर्ग की प्राप्ति हो सकती थी। मनुस्मृति में कहा गया है कि–शूद्र चरित्र ब्राह्मण की सेवा करने वाला शूद्र उच्च गति को प्राप्त करता है।

शूद्रों के खान–पान, रहन–सहन, का विस्तृत उल्लेख देवी भागवत में नहीं मिलता, किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि इस समय तक इनकी स्थिति घृणास्पद नहीं हुई थी जितनी की बाद में हो गयी। सामाजिक स्तर से निम्नतम होने पर भी इस युग तक शूद्र अछूत नही माने जाते थे। क्योंकि शूद्र भी चातुर्वर्ण्य व्यवस्था के अभिन्न अंग थे। अंत में कहा जा सकता है कि देवीभागवत कालीन समाज में चातुर्वर्ण्य व्यवस्था थी और चारों वर्ण एक दूसरे के पूरक थे।

lUnHk xUFk lph

vFkoon श्रीराम शर्मा, औघनगर, शांतिकुंज, हरिद्वार, 1900ई0।
vfXuijk.k आनन्दाश्रम संस्कृत सीरीज, पूना, 1900 ई0
vej dk"k अमर सिंह, चौ0सु0सं0सी0, वाराणसी 1991 संस्करण।
,rj; ckã.k आनन्दाश्रम संस्कृत ग्रन्थावली, पूना।
_Xon आनन्दाश्रम संस्कृत ग्रन्थावली, पूना।
nohHkkxor ijk.k चौ0सु0सं0सी0 वाराणसी, 1980 ई0

ukjnh; iqjk.k   चौ0सु0सं0सी0 वाराणसी
ik'kqir lw=   कौण्डिन्य कृतभाष्य सहित, त्रिवेन्द्रम प्रकाशन 1940 ई0
cã iqjk.k   क्षेमराज श्रीकृष्णदास मुम्बई 1906।
cã.M iqjk.k   क्षेमराज श्रीकृष्णदास मुम्बई 1906।
cãoSorZ iqjk.k   क्षेमराज श्रीकृष्णदास मुम्बई 1906।
cã lw=   शंकरभाष्य सहित, एशि0 सो0 ऑफ बंगाल।
JhenHkkxorxhrk   तिलक रहस्य सहित, मोती0 बना0 नई दिल्ली।
शंकर भाष्य सहित गीताप्रेस, गोरखपुर।
Hkkxor iqjk.k   श्रीधर टीका सहित, चौख0सु0सं0सी0, वाराणसी।
eRL; iqjk.k   वेंकटेश्वर प्रेस, मुम्बई।
euqLe`fr   डॉफ0 बुहलर द्वारा सम्पादित, कलकत्ता।
ekdZ.Ms; iqjk.k   वेंकटेश्वर प्रेस, मुम्बई।
egkHkk";   पतंजलि, चौख0सु0सं0सी0, वाराणसी, 1987 संस्करण।
jkek;.k   बाल्मीकि, तिलक टीका सहित, वेंकटेश्वर प्रेस मुम्बई।
fyax iqjk.k   वेंकटेश्वर प्रेस, मुम्बई। गीता प्रेस गोरखपुर।
okeu iqjk.k   वेंकटेश्वर प्रेस, मुम्बई।
ok;q iqjk.k   क्षेमराज श्रीकृष्णदास मुम्बई 1906।
lriFk czkã.k   अच्युत ग्रन्थमाला वाराणसी।
f'ko iqjk.k   जे0एल0 शास्त्री 5 खण्डों में मोती बना0 नई दिल्ली
चौखम्बा संस्करण डॉ0 शिवानन्द त्रिपाठी द्वारा सम्पादित,1995।
संक्षिप्त हिन्दी संस्करण, गीताप्रेस, गोरखपुर।
पंचानन तर्करत्न बंगवासी प्रेस, कलकत्ता।
lqLdkj izdk'k   चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी।
Ldan iqjk.k   वेंकटेश्वर प्रेस, मुम्बई।
Le`fr pfUnzdk   श्रीनिवासाचार्य द्वारा सम्पादित मैसूर 1914–21 ई0।
vxzoky oklqnso.k   भारतीय कला, पृथ्वी प्रकाशन, वाराणसी 1911 ई0।
'kj.k   पाणिनिकालीन भारतवर्ष, वाराणसी, 1966 ई0।
प्राचीन भारतीय लोकधर्म, अहमदाबाद, 1964।
मार्कण्डेय पुराण : एक सांस्कृतिक अध्ययन, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, 1961।
कल्पद्रुम, सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन, नई दिल्ली।
हर्षचरितःएकसांस्कृतिकअध्ययन, वारा0 1958
कादम्बरीःएक सांस्कृतिकअध्ययन, वाराणसी 1962

orekuifjo'k xhrk'kkL=L; egRoe

lejUn ukjk;.k feJ [1]

द्वापरयुगस्य भिन्नेपरिवेशे वर्णितायाः श्रीमद्भगवद्गीतायाः पञ्चसहस्त्राधिकवर्शान्तरेपि आधुनिके वैज्ञानिके युगे यादृशी विश्वव्यापिनी लोकप्रियता दृश्यते सा तु सर्वथा आ चर्यमयी अलौकिकी च अनुभूयते। श्रीमद्भगवद्गीता एव एकमात्रं भाास्त्रं यस्य प्रशंसकाः देशेविदेशे, सर्वेशु सम्प्रदायेशु, सर्वासु भाशासु, सर्वेसु धर्मेशु च प्राप्यन्ते। यूरोपीयभाषासु अस्या अनुवादः सर्वत्र प्राप्यते। एडविन अर्नाल्ड–गेटे–इमर्सन–टालस्टाय–टी0एस0 ईलियट सदृ ाः पा चात्यगीताप्र ांसकायः सर्वज्ञाताः सन्ति। अनेनैव अस्याः प्रासंगिकता वर्तमानपरिवेशेपि अक्षुण्णा, प्रमाणिता च वर्तते।

महाभारत महासिन्धोः महीयसीमणिभूतायाः गीतायाः महत्वं तु तत्र भगवता वादरायणेन व्यासेन महाभारते, पुराणेशु च स्वयमेव वर्णितम् –

lo'kkL=e;hxhrk] lonoe;k gfj%A
lorhFkZe;h xxk] lonoe;k eu% AA
Hkkjrke`r lolo] xhrk;k% efFkrL; pA
Lkkjen/kR; —'.ku] vtqZuL; e[k grsAA

अनेनैव प्रकारेण स्कन्दपुराणे, श्रीकृ णार्जुन सम्बादे गीतायाः माहात्म्यवर्णने एतादृ ी महिमा वर्णिता–

v'Vkn'kiqjk.kkfu u0; 0;kdj.kkfu pA
fueF; prqjk onku efuuk Hkkjr—resAA
Hkkjrknf/kfueF; xhrkfuefFkrL; pA

1. lL—r jke th lgk;] ih0 th0 dky:t] :nzi|j] nofj;k

lkjen/kR;—".ku v tuL; e[k greAA
xhrk lxhrk drO;k fdeU;% "kkL=foLrj%A
;k Lo;a i|eukHkL; e[ki|ekr fofu lrkAA

सम्प्रति नास्तिके वैज्ञानिके युगे, धर्महीनतायाः स्वार्थान्धतायाः भौतिकतायाः च प्रभावः अनुदिनं दृ यते। भारतीया संस्कृतिस्तु आदिकालादेव अध्यात्मप्रधाना धर्मप्राणा चास्ति। वर्तमाने युगे समग्रः वै वकपरिवे ाः भृ ां प्रदूशितः वर्तते। श्रद्धा, दया, उपकरादि उदात्तानां गुणानां अभावः सर्वत्र अनुभूयते। अस्य प्रदूशितस्य परिवे ास्य परि ुद्धिः न तु साम्यवादेन सम्भवा वर्तते न च लोकतंत्रीय प्र ासन–विधानेन। एतादृ ास्य विकृतस्य परिवे ास्य सं ाोधनार्थं गीताज्ञानं अतीवाव यकं वर्तते। अतेव योग ाास्त्रस्य अस्य महत्वं अति ायेन स्पश्टम्। गीता ाास्त्रं धर्मप्रका ाकं, ज्ञानविस्तारकं, सर्वविध अनाचार, अत्याचार, आतंक, अन्धवि वास विना ाकं चास्ति। श्रीमद्भगवता स्वमेव स्पष्टीकृतम् –

;nk ;nk fg /keZL; XykfuHkZofr HkkjrA
vH;qRFkkue/keZL; rnkRekua l`tkE;geAA
ifj=k.kk; lk/kwuka fouk"kk; p nq'—rkeA
/keZ lLFkkiukFkkZ; lEHkokfe ;qxs ;qxsAA

अनेन स्पश्टं ज्ञायते यद क्रम ाः ह्रासमानस्य धर्मस्यरक्षणार्थं साधूनां सज्जनानं परित्राणार्थं च भगवतः अवतारः जायते। धर्मस्य संस्थापनार्थाय, दुराचारिणां अत्याचारिणां विना ााय एव गीताज्ञानं प्रका ातमासीत्। महाभारतयुद्धोत्तरं संस्थापितं यौधिश्ठरं राज्यं पूर्णतया धर्मराज्यमेवासीत्। कौरवादीनां अन्येशां च आतंकवादिनां समूलं विना ां कृत्वा अस्य धर्मराज्यस्य प्रतिश्ठा कृता। त्रेतायुगे यथा रामराज्यस्य प्र ास्तिः तथैव द्वापरयुगे धर्मराजस्य युधिश्ठिरस्य राज्यप्र ास्तिः श्रूयते। ^;= ;ksxs'oj% —".k% ;= ikFkksZ /kuq/kZj%A r= JhfoZt;ksHkwfr/kzqok uhfreZfreZe* इति गीतोक्त भविश्यवाण्याः प्रमाणः प्रस्तुतः आसीत्। अनेन प्रकारेण ^;rks/keZLrrks t;%* ^lR;eso t;rs uku`re* इति भाा वतस्य सिद्धान्तस्य सत्यापनपि जातम्। धर्मप्राणायाः भारतीयसंस्कृतेः विजयवैजयन्ती पुनरेकवारं वि वकल्याणार्थं वि व ाान्त्यर्थं च गगनमण्डले गति ाीला जाता।

गीतायां भगवतः कृ णस्य भाा वतः सन्दे ाः सर्वेभ्यः मानवेभ्यः अमरः सन्दे ाः अस्ति। कर्मयोगस्य, ज्ञानयोगस्य, भक्तियोगस्य च पृथक् पृथक् विवेचनं कृ त्वापि भक्तियोगस्यैव प्रमुखता प्रकृटीकृतास्ति। अनेन भक्तिः दृढ़ायते।

deZ.;sokf/kdkjLrs ek Qys'kq dnkpuA

ek deZQygrHkw ek r lxks·LRodeZf.kAA
;ksxLFk% d# dekZf.k lxa R;DRok /kuat ;A
fl);fl);ks% leks HkwRok leRoa ;ksx mP;rsAA

श्रीमद्भगवद्गीतायां प्रकाि ातं ज्ञानं सर्वेशां मानवानां कल्याणार्थं, प्रबोधनार्थं, उत्साहवर्धनार्थं, भाक्ति– ाान्ति–भक्तिप्रदानार्थं च विजयतेतराम्। वर्तमाने वैि वकपरिवे ोपि अत्याचारस्य, आतंकस्य, क्रूरतायाः हिंसायाः, अनास्थायाः, नास्तिकतायाः, साम्प्रदायिकविद्वेशभावनायाः च पराकाश्ठा सर्वत्र दृ यते। श्रद्धा–आस्था–करूणा–ममतादि गुणानां तु अभावः एवास्ति। टी0एस0 ईलियट महोदयानां भाब्दे तु वयम् सर्वे 'बन्ध्यायां पृथिव्यां' निवसामः। (All of us are living in the waste land)

गीता ाास्त्रं तु धर्म ाास्त्रं, ज्ञान ाास्त्रं, भक्ति ाास्त्रं चास्ति। अस्य अध्ययनं अनु ाीलनं, अनुकरणं, अनुपालनं च सर्वेशां मानवानां कल्याणाय, विकासाय, निःश्रेयसाय च अत्याव यकं वर्तते। अतेव उचितमेव उक्तम्–

lokZifu'knks xkoks nksX/kk xksikyuUnu%A
ikFkks oRl% l/khHkksDrk nqX/ka xhrke`ra egr~AA

गीताज्ञानोपदे ाकस्य श्रीभगवतः एशं अदे ाः सदैव स्मर्त्तव्यः, अनुपालनीय च। ^lo/kekZUifjR;T; ekesda "kj.ka oz t^A
eUeukHko enHkDrks e|kth eka ueLd#:A
ekeoSL;fl lR;a rs ifrtkus fiz;ks·fl esAA

श्रीमद्भगवद्गीता भारतीयस्वतंत्रतासंग्रामे बालगंगाधरतिलक–महात्मागाँधी–सन्तविनोबाभावे– बाबाराघवदास –चन्द्र ाेखर आजाद–रामप्रसादविस्मिल सदृ ाानां असंख्यकानां स्वातंत्र्यसेनानीनां, क्रान्तिकारिणां च प्रेरणादायिनी आसीत्। एते सर्वे गीताध्ययनेन स्वातंत्र्यसंघर्शाय अपूर्वां भाक्तिं, अजस्रां प्रेरणां च प्राप्नुवन्ति स्म्। मातृभूमेः स्वतंत्रतायै वलिदानस्य, त्यागस्य, संघर्श ाीलताया च उत्साहवर्द्धिनी प्रेरणा गीतानु ाीलनेनैव एभिर्प्राप्ता। अनेनैवप्रकारेण सर्वेभ्यः प्र ाासकेभ्यः सु ाासनस्यप्रेरणा राश्ट्रीयसेवायाः लोकसंग्रहभावनाया च निश्कामयोगयुक्ता प्रेरणा गीतानु ाीलनेन प्राप्यते। ^deZ.kSo fg lafl)ekfLFkrk tudkn;%*A इति उदाहरणवाक्येन कर्मनिश्ठायाः भाा वतःसन्दे ाः प्रस्तुतीकृतः वर्तते।

भक्तियोगानुमोदितेन कर्मयोगानुचरणेन च सर्वेशां जनानां समभावेन समुद्धारः जायते–'fL=;ks o'S;kLrFkk'knzkLrsfi ;kfUr ijka xfre~*A इति स्पश्टं आ वासनम् प्रदत्तम्। सर्वेशां उद्धारस्य प्रेरणां दत्वा श्रीमद्भगवद्गीता सर्वेभ्यः निश्कामकर्मयोगिभ्यः मनोवलवर्द्धिनीं उत्साहोत्पादिकां संजीवनीं च प्रददाति।

m)jsnkReukReku ukRekueolkn;sr~A

vkReso /;kRreuks oU/kqjkResofjiqjkReu%AA
oU/kqjkRekRreuLrL; ;sukRresokRreuk ftr%A
vukReuLrq 'k=qRos orsZrkReso "k=qor~AA

अतेव अस्माभिर्सर्वदैव स्मर्त्तव्यम्–

,da 'kkL=a nsodhiq=xhra
,dks nsoks nsodhiq= ,oAA
,dks e=LrL; ukekfu ;kfuA
deksZI;sda rL; nsoL; lsokA

lUnHkZ xzUFk lwph

महाभारत भीष्मपर्व–43/2,5
स्कन्दपुराण–कृष्णार्जुनसम्वाद–5,6,13
श्रीमद्भगवद्गीता–4/7,8
महाभारत–
मुण्डकोपनिशद्–3/1/6
श्रीमद्भगवद्गीता–2/47,48
T.S. Eliot-The waste land (the title of the long poem by T.S. Eliot)
श्रीमद्भगवद्गीतामहात्म्य
श्रीमद्भगवद्गीता–18/66
श्रीमद्भगवद्गीतामहात्म्य

fou; if=dk dk lkxhfrd ifjp;

Mk0 T;kfr fo'odek[1]

'संगीत साधना एक ऐसी साधना है जो नश्वर शरीर वाले जीव को भी स्वर के माध्यम से ईश्वर की सन्निधि प्राप्त करा देती है', क्योंकि ईश्वर प्राप्त होते हैं उपासना से और उपासना वासना को नष्ट कर देती है। जैसा कि रामचरित मानस के सुन्दर काण्ड के उन्चासवें दोहे की छठवीं पंक्ति में विभीषण जी कहते हैं–

** mj dN| iFke okluk jghA
iHk| in ihfr lfjr lk cghAA** [1]

यह निर्विवाद सत्य है कि संगीत एक उपासना है। इसमें स्वर की साधना होती है और वह रागानुगा भक्ति से बहुत निकट होती है।

विनय पत्रिका गोस्वामी तुलसीदास चरण की अंतिम रचना कही जाती है। जिसे उन्होने अपने जीवन के कदाचित 126 वें वर्ष में लिखी होगी। इसलिए यह गोस्वामी जी की अन्तरंग साधना का परिपाकस्वरूप ग्रन्थ रत्न कहा जा सकता है।

अतएव, विनय पत्रिका का संगीत से अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है। संगीत विनय पत्रिका पर आश्रित है और विनय पत्रिका संगीत पर। मेरे शोध निदेशक के अनुसार गोस्वामी जी की दृष्टि में मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्रीराम राजाधिराज महाराज हैं। श्रीराम को बार–बार गोस्वामी श्री तुलसीदास जी, महाराज ही कहते हैं–

egkjkt jkeknj·;k /kU; lkbA [2]

1- lgk;d vkpk;] laxhr foHkkx, t0vkj0fodykx fo'ofo|ky;] fp=dV] m0i0

महाराज राम पहिं जाउँगो, महाराज जहँ राजा।

अतः राजाओं को रिझाने के लिए प्राचीन समय में तीन प्रकार के काव्यों की सर्जना की जाती थी। क्योंकि राजाओं के यहाँ तीन प्रकार के ही गायक होते थे। वे होते थे – 1. सूत, 2. मागध और 3. बंदी। 'सूत, मागध बंदिनः।' और गोस्वामी तुलसीदास जी महाराज भी अपने को महाराज श्रीराम का गायक ही कहते हैं। जैसा कि श्रीरामचरितमानस के बालकाण्ड के 28वें दोहे की चौथी पंक्ति से अन्तिम पंक्ति पर्यन्त गोस्वामी जी ने अपने मन्तव्य को सजीव शब्दों में चित्राँकित किया है।

jke lLokfe d lod ek lkA fu t fnf'k nf[k n;kfuf/k ik lkAA [3]

अर्थात स्वामी की प्रशंसा में सबका अधिकार है। चाहे वह धनवान हो या निर्धन। चाहे वह ग्राम्य हो या चतुर नागरिक। चाहे वह पंडित हो या मूर्ख। चाहे वह मलीन हो या उजागर। चाहे वह सुकवि या कुकवि, सभी अपनी– अपनी बुद्धि के अनुसार राजा की प्रशंसा करते हैं।

lfu luekufg lcfg lckuhA
Hkfufr&Hkxfr efr] xfr] ifgpkuhAA [4]

राजा सबका सम्मान भी करते हैं। यह प्राकृत राजाओं का स्वभाव है। परन्तु कोसलराज भगवान श्रीराम तो सुजान शिरोमणि हैं।

गोस्वामी जी अपने राजाधिराज महाराज श्रीराम को अपने पद्यों के माध्यम से रिझाना चाह रहे हैं। अतएव वे संगीत का आश्रय लेना अनिवार्य मानते हैं। क्योंकि जहाँ–जहाँ पद्य होगा वहाँ–वहाँ संगीत होगा। यह व्याप्ति है। पद्य के बिना संगीत नहीं रह सकता और संगीत के बिना पद्य भी नहीं रह सकता। अतएव विनय पत्रिका के पदों से संगीत का संवाद होना कोई असमीचीन नहीं। वह सिर्फ पूर्णतः प्रासंगिक है। इसीलिए गोस्वामी जी ने विनय पत्रिका का मंगलाचरण करते हुए गायन की बात कही।

xkb; x.kifr tx cnuA ldj&lou Hkokuh unnuA1A [5]

अर्थात् गणपति को गाना चाहिए। और गणपति के गान का फल ये होगा कि श्रीराम और सीता जी हमारे ह्रदय में विराजमान होगें। अर्थात् गेयता का पूर्ण तात्पर्य भगवान श्रीराम में ही होगा और जब गोस्वामी जी ने गायन की बात कही तब तो सांगीतिकता वहाँ, सहजता से प्राप्त हो गई। संगीत को तीन धाराओं में बांटा गया है।

नृत्यं, गीतं च बाद्यं त्रयम संगीत मुच्यते।

नृत्य, गीत और वाद्य इन तीनों के मेल को संगीत कहते है। भले ही नृत्य का प्रत्येक संगीत के साथ सम्बन्ध न हो परन्तु गायन और वादन तो संगीत में होता ही है। स्वर और ताल का समन्वय तो संगीत का अनिवार्य अंग है ही।

इसीलिए विनय पत्रिका को बंदी काव्य की पंक्ति में बिठाने के लिए गोस्वामी जी ने इसे संगीत की परम्परा में ही ढाला। यहाँ यह विषय अत्यन्त ध्यातव्य है कि गोस्वामी श्रीतुलसीदास जी के आराध्य श्रीराम महाराज राजीव लोचन होते हुए भी आराधना के उनके सर्वस्व भी तो हैं। अतः मर्यादा उनका अंग है। किसी भी क्षेत्र में जब श्रीराम को स्मरण किया जायेगा वहाँ उस क्षेत्र की मर्यादा उनसे अवश्य संबद्ध होगी। अतः गोस्वामी जी विनय पत्रिका गेय काव्य के रूप में ही प्रस्तुत कर रहे हैं। वह मर्यादा तीन प्रकार से समझनी चाहिए।

1. कथ्य मर्यादा, 2. ध्येय मर्यादा और 3. गेय मर्यादा। कथ्य की मर्यादा है जो वह कहना चाहते हैं वह मर्यादापूर्ण कहेगें। ध्येय की मर्यादा है उनके ध्येय भगवान श्रीराम हैं। और गेय की मर्यादा है कि संगीत की जो विद्या संगीत शास्त्रियों ने स्वीकारी है उसी में गोस्वामी जी इस ग्रन्थ को प्रस्तुत करने का मन बना चुके हैं। इसलिए विनय पत्रिका के सम्पूर्ण पदों में वे कभी भी संगीत मर्यादा से डिगना नहीं स्वीकारते यद्यपि वो कभी भी किसी भी ग्रन्थ में ऐसा नहीं करते जैसा कि श्रीराम चरित्र मानस में भी लिखा है– डगहिं न ताल बंधान। परन्तु विनय–पत्रिका को तो विशेषकर राजदरबार में जाना है। महाराज के समक्ष इसे प्रस्तुत होना है। और प्रस्तुत करेगें साक्षात हनुमान जी महाराज और लक्ष्मण जी। संगति देंगें भरतराज और शत्रुघ्न लाल जी। अतः यहाँ तो प्रतिपल मर्यादा का ध्यान रखना ही होगा और मर्यादा का ध्यान रखने के कारण ही गोस्वामी जी ने संगीत की सारी विधाओं को इस ग्रन्थ में मर्यादित रूप में ही प्रस्तुत किया। इसलिए पदों को मात्रिक परिपाटी में कहीं पर ताल परिपाटी में कही पर त्रिताल में कहीं पर एकताल में कहीं पर चारताल में, कही पर झपताल में कहीं पर रूपक ताल में, कहीं पर दीपचन्दी में, कहीं पर दादरा में, और प्रायशः कहरवा में कहा। रागों की भी उन्होनें बहुत समुचित संगति स्वीकारी है। विनय पत्रिका में गोस्वामी तुलसीदास जी ने आज के संपादित प्रतियों के अनुसार लगभग बाईस–तेईस रागों में पद निबद्ध किया है। और यहाँ यदि ये कहें तो अत्यधिक समीचीन होगा कि तेईस रागों का निर्देश किया है शेष तो व्यक्ति स्वतंत्र है कि किसी भी रागों में गा सकता है। उन्होनें सर्वप्रथम प्रस्तुत किया विलावल राग।

जिसमें में वे गणपति का मंगलाचरण प्रस्तुत करते हैं। सोलह मात्रा में –

xkb;s x.kifr tx cnuA ldj&lqou Hkokuh&unuAA1AA[6]

इसीप्रकार गोस्वामी तुलसीदास जी ने विनय पत्रिका के परिदृष्य को संगीतमय ही रखा है। किं बहुना प्रत्येक पद किसी न किसी राग में निबद्ध है। प्रत्येक पद की कोई न कोई रागात्मकता और तालबद्धता सुनिश्चित है। यथा – रामकली जैसे राग को भी गोस्वामी जी ने अपने पदों में स्थान दिया।

वहाँ गोस्वामी जी ने मारू राग का प्रयोग किया। और मारू राग का प्रयोग करके यह स्पष्ट किया कि यह राग वीरों के लिए सुखप्रद होता है। जैसा कि श्रीरामचरित मानस में भी मारू राग की चर्चा की गई है।

Hkfj uQhfj ckft 'kgukbA ek: jkx lHkV l[knkbAA [7]

मारू राग के साथ–साथ उन्होनें कान्हरा जैसे दिव्य राग का प्रयोग किया है। जो बडा ही मंगलमय राग है। अपूर्व राग है और कान्हरा के पश्चात् गोस्वामी जी ने सारंग जैसे सुन्दरतम राग को भी अपने विनय पत्रिका के पदों में भी स्थान दिया है। और सारंग के पश्चात् एक ऐसा राग जो आज प्रचलन में नहीं है परन्तु पहले बहुसः प्रचलन में था। इसका नाम है गौरी। गौरी राग की चर्चा भक्त सूरदास जी ने ' सूरसागर ' में की है।

v/kj v: vui] ejfy Loj ifjr xkjh jkx vykfi ctkorA [8]

उसी गौरी राग की चर्चा गोस्वामी जी ने विनय पत्रिका में की है। और गौरी राग के पश्चात् उन्होने कुछ ऐसे रागों की भी चर्चा की है जो प्रायशः आज बहुत कम सुने जाते हैं। जैसे– बिहाग राग की भी चर्चा गोस्वामी जी ने बडे प्रेम से विनय पत्रिका में की है। मल्हार राग की भी चर्चा गोस्वामी जी ने की है और सूहो विलावल की चर्चा तो उन्होने बहुत उच्च ढंग से की है।

विनय पत्रिका में जो बड़ा ही प्यारा और प्रभात कालीन शुद्ध राग है और इसके पश्चात् जब करूण प्रसंग की चर्चा करनी हुई और भगवान के प्रति करूण निवेदन करना हुआ तब उन्होंने तोड़ी राग का प्रयोग किया है। जिसको गाने से सामान्य व्यक्ति के भी नेत्र में आंसू आ जाते हैं। किंबहुना जैसे–

r n;ky] nhu gk] r nkfu] gk fHk[kkjhA [9]

प्रायशः जो भी राग उस परिस्थिति के साथ जोड़ने का मन हुआ या अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए जो भी राग उन्हें अनुभूति हुई उनका प्रयोग किया। सोरठ, सूहो, विलावल जैसे भी दिव्य–दिव्य रागों को उन्होंने अपनी विनय पत्रिका में स्थान दिया। किं बहुना राग के साथ–साथ गोस्वामी जी ने ताल का भी उचित संयोग रखा। उस संयोग में ताल के संविधान के साथ–साथ एक ऐसी प्रयोग विधा अपनाई जोकि संगीत सिद्धान्त के अनुसार राग और ताल इसके दो मुख्य अभिव्यक्ति करने के माध्यम हैं। संगीत का सम्बंध सामवेद से है, और भगवान राजाधिराज हैं तो राजाधिराज को प्रसन्न करने के लिए सामवेद का प्रयोग गोस्वामी जी के लिये यथेष्ठ था।

रूपक ताल में भी उन्होंने बहुत गीत लिखे जैसे– 'ऐसी कौन प्रभु की रीति।' इसी प्रकार दीपचंदी, झपताल, चतुष्ताल, एकताल, दादरा, बड़ा प्रिय ताल हैं। जिसे उन्होंने विनय पत्रिका में बार–बार प्रयोग किया है। इस प्रकार से सम्पूर्ण

परिस्थिति का परिकलन करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि विनय पत्रिका एक संगीतशास्त्र का प्रायोगिक ग्रन्थ है क्योंकि उनकी प्रतिज्ञा है गाईए। जब गाएंगे तो गाने में राग और ताल का निर्वहन करना पड़ेगा। राग अन्तःकरण की अभिव्यक्ति है और ताल उस अभिव्यक्ति का वाह्य उपकरण है। दोनों का समन्वय होना चाहिए। गोस्वामी जी गाना चाहते थे वो भी अपने प्रभु को। क्योंकि उनके प्रभु स्वयं ही आनन्द सिंधु हैं।

tk vkun fl/k l[k jklhA lhdj r =ykd ljiklhAA [10]

वह सुखधाम राम भगवान राजाधिराज प्रभु स्वयं जब संगीत के प्रिय हैं तो उनको गाने के लिए गोस्वामी जी विनय पत्रिका में संगीत का उपयोग करेंगे ही। यह उनके लिए शोभा देता है। जैसा कि हम कह चुके हैं कि भक्त का गान से अटूट सम्बन्ध है। भक्त गाता है। ज्ञानी चुप रहता है। ज्ञानीं मौनं। ज्ञानी का स्वभाव है मौन रहना।

मानस जी ने भी कहा –

tk vkun fl/k l[kjk'khA jke lgt vkuUn fu/kkukA [11]

प्रभू स्वयं आनन्दकन्द हैं।

'k) lfPpnkuUne; jke Hkku&dYkdr]
t; lfPpnkuUn tx ikouA [12]

ब्रह्मसूत्र ने भी कहा कि 'आनन्दमयोभ्यासात्'। प्रभु आनन्दमय हैं। क्योंकि उनका महर्षिगण सतत् अभ्यास करते रहते है।

अतएव, भगवान आनन्दमय हैं इसलिए विनय पत्रिका के पैतालिसवें (45) पद के छठें अन्तरा में गोस्वामी जी ने कहा–

j?kun vkuUndn dk'kypUn n'kjFk unuAAA3AA [13]

विनय पत्रिका के ही 152 वें छन्द में गोस्वामी जी ने श्रीराम को आनन्द सुधा का चन्द्रमा कहा–

cºekfnd fourh djh dfg n[k ol/kk dkA [14]

जब यह बात स्पष्ट है कि भगवान राम आनन्दमय हैं तो आनन्द का सम्बन्ध संगीत से स्वाभाविक है। इसलिए वे संगीत से प्रसन्न होंगे ही। इसी दृष्टिकोण को मन में रखकर गोस्वामी जी ने श्रीराम को गाया। सर्वत्र तो भिन्न–भिन्न दृष्टियों से गाया। कहीं चौपाई में, कहीं सोरठे में, कहीं छन्द में, कहीं दोहे में, कहीं कविता में, कहीं घनाक्षरी में, कहीं छप्पय में। परन्तु विनय पत्रिका में तो गोस्वामी जी ने पदों में गाया। जब वे आनन्द से उद्धरित होते तो स्वाभाविक रूप से उनके मुख से विलावल, धनाश्री, रामकली, भैरव, बसंत, सारंग, गौरी, जयश्री, आसावरी, कल्याण, विहाग, विभास, सोरठ, नट, मारु जैसे दिव्य–दिव्य राग

स्वयं स्फुटित हो जाते हैं। और वे रघुनाथ जी को गाकर इतना रिझा लेते हैं कि विनय पत्रिका पर गोस्वामी तुलसीदास जी की प्रतिवेदना को पढ़कर स्वयं रघुनाथ जी हस्ताक्षर कर देते हैं।

efnr ekFkukor cu] r|y lh xjhc d|]
ij h j?kukFk gkFk lgh g|A [15]

यही है विनय पत्रिका का सांगितिक परिचय। जिसके अध्ययन से व्यक्ति सत्यम, शिवम्, सुन्दरम् के साथ–साथ आनन्दमय परमेश्वर, परब्रह्म परमात्मा सीतापति, पतित पावन भगवान श्रीराम को प्राप्त कर लेता है।

lUnHk| xUFk l|ph

1. रामचरितमानस सुन्दरकाण्ड 49／6
2. विनयपत्रिका 106
3. श्रीरामचरितमानस बालकाण्ड 28／4–11
4. रा0म0
5. विनय पत्रिका पद संख्या – 01
6. विनय पत्रिका
7. श्रीरामचरितमानस
8. सूरसागर
9. विनय पत्रिका
10. श्रीरामचरितमानस
11. रा0म0
12. विनयपत्रिका 45
13. विनय पत्रिका 152
14. विनय पत्रिका

f'k{k.k&if'k{k.k dk;Øe ds ldykx ,oa fodykx if'k{k.kkfFk;ksa ds 'kSf{kd fu"ifÙk dk rqyukRed v/;;u

Qwypan[1]

iLrkouk& शैक्षिक निष्पत्ति का तात्पर्य उस उपलब्धि से है, जो छात्र अपने शिक्षण कार्य के समय सीखकर ग्रहण करता है, जो ज्ञानार्जन करता है। अपने विद्यालय संस्थान में शैक्षिक उपलब्धि पर क्षमता और योग्यता के साथ–साथ शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थता का या प्रोढ़ता का बहुत प्रभाव पड़ता है। उपलब्धि के लिए।

शैक्षिक उपलब्धि का अर्थ है जो बच्चा वर्ष पर्यन्त प्राप्रक्रिया उसका मूल्यांकन करने से पता चलता है। इसलिए शैक्षिक उपलब्धि के ज्ञान के लिए ज्ञानार्जन के वास्तविकता की जानकारी के लिए परीक्षा ली जाती है। जिसमें छात्र अपने ज्ञान का प्रदर्शन करता है और उसी से पता चलता है कि छात्र की साल भर की उपलब्धि क्या है।

शैक्षिक उपलब्धि हर छात्र की अलग–अलग होती है। क्योंकि कोई भी व्यक्ति समान नहीं होता सभी का मानसिक लेवल अलग–अलग होता है और वह अपने मानसिक योग्यता के आधार पर ही ज्ञानार्जन करते है। प्राप्त ज्ञान का मापन एवं परीक्षण करने से शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त होती जिससे यह पता चलता है कि छात्र ने इतना ग्रहण किया।

ifjHkk"kk& इबेल के अनुसार, ''शैक्षिक उपलब्धि वह अभिकल्प है, जो विद्यार्थी द्वारा ग्रहण किये गये ज्ञान कुशलता या क्षमता का मापन करता है।''

1- 'kks/k Nk=] m0iz0 jktf"kZ V.Mu eqDr fo'ofo|ky;] bykgkckn] m0iz0

v/; ;u dk mnns’;& सकलांग व विकलांग शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति की तुलना करना।

ifjdYiuk& सकलांग व विकलांग शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।

v/; ;u dh lhek,&

1- वर्तमान अध्ययन में केवल शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम को लिया गया है।

2. केवल 200 शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों को शामिल किया गया है।

3. शोध कार्य केवल उत्तर प्रदेश तक सीमित है।

4. केवल उन्हीं संस्थाओं को लिया गया है। जो एनसीटीई से मान्यता प्राप्त हैं।

’kks/k fof/k& शोध कार्य में शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करने के लिए के पी कालेज इलाहाबाद एवं, जे आर एच यू चित्रकूट विश्वविद्यालय के छाों के परीक्षा परिणामों को आधार बनाया गया है। दोनों में 100–100 छात्रों के दो समूह बनाये गये है और प्रशिक्षण कार्यक्रम के पूर्व एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम के अन्त के परीक्षा परिणामों को लिया गया है।

fo’ys"k.k ,oa foospuk&

समूह	मध्यमान	मानक विचलन	T मान
सकलांग प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति	67.36	4.24	1-518
विकलांग प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति	64.07	2.347	

उक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि दोनों समूहों की शैक्षिक निष्पत्ति की तुलना करने पर T मान 1.518 है, जिसका मान स्वतंत्रता अंश 99 स्तर पर तथा 0.1 स्तर पर सारणी मान से कम है।

अतः दोनों प्रकार के प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति सार्थक नही है, इसलिए शून्य परिकल्पना स्वीकार कर ली जाती है।

fu"d"kZ& सकलांग एवं विकलांग प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति की तुलना करने से यह ज्ञात हुआ है कि दोनों प्रकार के प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति में सार्थकता नही है। इसलिए शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

lq>ko&

- इस प्रकार के शोध कार्य से बच्चों के उपलब्धि का पता चलता है।
- उनकी समस्याओं का पता चलता है। उपयुक्त माध्यमों की उपयोगिता तथा बच्चें की आई क्यू का पता चलता जिसमें परिवर्तन कर आगे बढ़ाया जा सकता है।

- अध्यापकों एवं अभिभावक को अपने बच्चों के बारे में प्राप्त जानकारी के आधार पर उसके लिए उचित माहौल तैयार करने में आसानी हो सकती है।

lUnHk xUFk&

1. मुखर्जी रवीन्द्र नाथ, सामाजिक शोध व सांख्यिकी विधियां।
2. सिंह अरूण कुमार (2006) मनोविज्ञान समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियां।
3. गुप्ता एस. पी., आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन।

vk/kfud Hkkjr d: fuek.k e: ,frgkfld ekM+ % iuk le>krk

Mk- vkjrh ik.Ms;[1] ,o ukt ijohu[2]

वास्तव में गांधी और अम्बेडकर के हाथों उस कार्य को पूर्ण किया गया, जिसे कई सदियों के दौरान पूर्ण नहीं किया जा सका। ऐसा नहीं कि अस्पृ यता के कलंक को दूर करने का प्रयास पहले नहीं किया गया। कई महात्मा आये और चले गये परन्तु अस्पृ य–अस्पृ य ही रहे, यह कथन इस विकराल समस्या पर सार्थक सिद्ध होता है। गांधी और अम्बेडकर विपरीत दि ाा के साथी रहे परन्तु उनकी मंजिल एक ही थी 'अस्पृ यता को पूर्णतः मिटाना'। दोनों के कार्यक्षेत्र, विचार, नेतृत्व ौली आदि में भिन्नता होते हुए भी अस्पृ यों के उत्थान में किया गया कार्य समान था। गांधी वि व के प्राचीनतम् हिन्दू धर्म को विपरीत होने से बचाना चाहते थे। वे हिन्दू धर्म में वर्णित वर्ण–व्यवस्था के समर्थक थे परन्तु उसमें व्याप्त छुआ–छूत व भेदभाव के घोर विरोधी थे। गांधी ने अस्पृ यता को हिन्दू धर्म पर कलंक माना और उसे दूर करने के लिए दे ाव्यापी आन्दोलन छेड़ रखा था। वहीं अम्बेडकर सदियों से भाोशित अस्पृ य समाज के मसीहा समझे जाते थे। उन्होंने अपना बचपन भाोशित समाज के बीच रहते हुए संघर्श एवं कटु अनुभवों के बीच व्यतीत किया। दोनों की पृश्ठभूमि अलग थी परन्तु लक्ष्य एक ही–अस्पृ यता से मुक्ति, जिसका व्यापक परिणाम दे ा के समक्ष पूना समझौता के रूप में आया। पूना करार गांधी–अम्बेडकर की सूझ–बूझ, विचार परिपक्वता के माध्यम से पूर्ण हो सका। अतएव् इतिहास में सदियों की दासता से मुक्ति का आधार बना। प्रस्तुत भाोध पत्र में गांधी–अम्बेडकर के इस ऐतिहासिक पहल के विशय में चर्चा की जाएगी।

1- foHkkxk/;{k] bfrgkl] i-t-,u-ih-th-dkyst ckank
2- 'kks/k Nk=k&bfrgkl] e-xk-fp-xk-fo-fo-]fp=dwV lruk ¼e-i-½

प्रायः यदि यह कहा जाए कि भारत का विभाजन करके पाकिस्तान का गठन मुस्लिम लीग एवं जिन्ना की सफलता एवं गांधी और कांग्रेस की विफलता का परिणाम था, तो भारत का पुनः विभाजन होकर दलिस्तान न बन पाना गांधी–अम्बेडकर की सफलता एवं सूझ–बूझ का परिणाम था तो कोई अति योति न होगी।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर का भारतीय राजनीतिक परिवे ा में आगमन उस समय हुआ जब गांधी भारत में अस्पृ यता विरोधी मुहिम को राश्ट्रव्यापी बनाने में लगे हुए थे। गांधी ने अस्पृ यता निवारण के कार्य का आरम्भ साबरमती आश्रम से प्रारम्भ करके एक राश्ट्रव्यापी मुदद्ा बना दिया। अम्बेडकर ने बचपन से अस्पृ यता को सहा, समझा, देखा था। वे इन कश्टों से भलिभाँति परिचित थे। उन्होंने अस्पृ यता का मुक्ति मार्ग 'महाड़ आन्दोलन' से आगे बढ़ाया और जल्द ही दलितों के जुझारू एवं लोकप्रिय नेत बन गये।

गांधी और अम्बेडकर का आमना–सामना 1931 में द्वितीय गोलमेज सम्मेलन के दौरान लंदन में हुआ। गांधी कांग्रेस के प्रतिनिधि के रूप में सम्मिलित हुए थे। इस सम्मेलन के माध्यम से पहली बार पृथक राजनीतिक अधिकार के प्र न पर गांधी और अम्बेडकर की असहमतियाँ खुलकर सामने आयीं।

वस्तुतः ब्रिटि ा गवर्नमेन्ट की 'फूट डालो राज करो' की नीति पुनः साम्प्रदायिक संगठनों को पृथक राजनीतिक अधिकार देने के रूप में प्रारम्भ की जा रही थी। जिसके फलस्वरूप 'मुस्लिम लीग' मुसलमानों के लिए, 'हिन्दू महासभा' हिन्दुओं के लिए, 'अकाली दल' सिखों के लिए अलग राजनीतिक अधिकार की माँग करने लगें। इसी बीच अम्बेडकर ने भी दलित मुक्ति का मार्ग पृथक राजनीतिक अधिकारों के माध्यम से रखा। ब्रिटि ा सरकार साम्प्रदायिकता के आधार पर जनता में मतभेद उत्पन्न करके भारत की एकता एवं अखण्डता को खण्डित करना चाहती थी। इस बात से गांधी पूर्णतः अवगत थे। इसलिए वे पृथक निर्वाचक मण्डल के विरोधी थे। इसी परिपेक्ष में एक 'संघ–संरचना समिति' गठित की गयी। समिति के समक्ष 17 सितम्बर 1931 को लंदन में गांधी ने कहा ''अब मैं वि ोश निर्वाचन–क्षेत्रों द्वारा वि ोश हितों के प्रतिनिधित्व के सवाल पर आता हूँ। यहाँ मैं जो कुछ कह रहा हूँ उसे कांग्रेस का विचार समझिए। कांग्रेस ने हिन्दू–मुस्लिम, सिख समस्याओं के सम्बन्ध में वि ोश रूप से विचार करने की बात किसी तरह स्वीकार कर ली है। इसके कुछ ऐतिहासिक कारण हैं। इसलिए मैं किसी और जन समुदाय के सम्बन्ध में वि ोशज्ञ प्रतिनिधित्व का सिद्धान्त लागू करने का तीव्र विरोध करूगाँ''।

अम्बेडकर के 29 जनवरी 1932 में लंदन से वापस आने के प चात् 114 संस्थाओं की ओर से 'मानपत्र' दिया गया जिसमें अस्पृ यों के माध्यम से समानता का दर्जा और अधिकारों के लिए किए गये अम्बेडकर के प्रयासों की अभिव्यक्ति की गई थी।[2] आधुनिक युग में अम्बेडकर दलितों के लिए उम्मीदों और आ ाओं के मसीहा बनकर उभरे। ऐसे में उनका अस्पृ यों के प्रति दायित्व भी बढ़ गया था।

यघपि अम्बेडकर को ब्रिटि ा सरकार द्वारा गोलमेज सम्मेलन में बुलाने का उददे य ही सम्भवतः कांग्रेस को झूठा साबित करना था ताकि वह भारतवर्श के सभी समुदायों का प्रतिनिधित्व करती है, यह सिद्ध कर सकें। अम्बेडकर अस्पृ यों को पृथक निर्वाचन अधिकार दिलवाने का पुरजोर प्रयास करके दलितों के एक मात्र प्रतिनिधि होनें का दावा पे ा कर रहे थे। इस पर गांधी का कहना था कि अम्बेडेकर दलितों के एक मात्र प्रतिनिधि नहीं हैं, बल्कि कांग्रेस के साथ दे ा के अधिकतर अछूत जुडे हुए हैं।

गांधी का मानना था कि यदि अम्बेडकर की पृथक प्रतिनिधित्व की माँग स्वीकार कर ली जाती है तो हिन्दू समाज दो स ास्त्र छावनियों में बटँ जाएगा। जिससे अनाव यक विरोध उत्पन्न हो जाएगा।[4] उन्होंने पृथक निर्वाचक मण्डल के विरोध में प्रतिज्ञा ली थी यदि अस्पृ यों को पृथक निर्वाचक मण्डल दिया गया तो वे अपने प्राणों की बाजी लगाकर इसका विरोध करेगें। यघपि गांधी गोलमेज सम्मेलन में जाने से पूर्व अस्पृ यता के प्र न पर पूरे दे ा को आन्दोलित कर चुके थे जिससे गांधी और कांग्रेस का अस्पृ यों के प्रति दे ा के अधिकतर भागों में आत्मीय लगाव हो चुका था। वे चाहते थे कि अम्बेडकर पृथक मण्डल की माँग त्यागकर कांग्रेस की मुख्य धारा में भामिल हो जाए। इसलिए उन्होंने 22 अक्टूबर 1931 को मिर्जा इस्माइल को लिखा था कि ''प्रिय सर मिर्जा, यदि आप डॉ. अम्बेडकर को मना सकें तो यह आपकी बड़ी भारी जीत होगी। दक्षिण अफ्रीका में मैंने खुद वह सब झेला था, जो वे झेल रहें हैं। इसलिए उनकी सब बातों के प्रति मेरी सहानुभूति है। उनके साथ मधुरतम व्यवहार करना चाहिए''।

गांधी अस्पृ यों को पृथक निर्वाचन मंडल देकर उनमें अन्तर्कलह उत्पन्न नहीं करना चाहते थे। वे इस व्यवस्था से हिन्दू धर्म को दो टुकड़ों में विभाजित होने से बचाना चाहते थे।

वस्तुतः अम्बेडकर 1929 तक मुस्लिमों को पृथक निर्वाचन क्षेत्र दिये जाने के विरोध में थे। परन्तु समय–परिस्थितियों के बदलने के साथ अम्बेडकर गोलमेज आन्दोलन के बाद पृथक निर्वाचक मण्डल के पक्ष में खड़े हो गये। गांधी अपने दृढ़ नि चय के साथ अपनी बात पर अड़िग थे। उन्होंने 31 अक्टूबर 1931 को लंदन में 'फ्रेडस हाउस' में क्वेकरों के साथ हुई बातचीत में पुनः स्पश्ट करते हुए कहा

कि ''पृथक निर्वाचन मण्डल स्वीकार करना कांग्रेस की दृश्टि में मुसलमानों, सिखों, हिन्दुओं और समूचे राश्ट्र के लिए बुरा है। लेकिन सबसे बुरा अस्पृ यों के लिए है। उन्हें पृथक निर्वाचक मण्डल देना उनको मार देने के समान होगा''।

वस्तुतः गोलमेज सम्मेलन में सरकार के कार्यों से जहाँ अम्बेडकर पृथक निर्वाचक मण्डल में अड़िग थे वहीं गांधी भी चैन से नहीं बैठे। अत्एव उन्होंने 11 मार्च 1932 को सर सैम्युअल होर (उस समय भारत मंत्री थे) को पत्र लिखकर कहा कि ''जहाँ तक हिन्दू समाज का सम्बन्ध है, पृथक निर्वाचन–मण्डलों का अर्थ उसे चीरकर दो टुकडे कर देने जैसा होगा।.इसलिए महामहिम की सरकार को मैं नम्रता पूर्वक जता देता हूँ कि अन्त्यजों के लिए अगर वह पृथक निर्वाचक मण्डल बनाने का निर्णय देगी, तो मुझे आमरण उपवास करना पडेगा''।

विडम्बना यह थी कि गांधी के इस कथन का ब्रिटि ा हुकूमत पर कोई असर न हुआ। तत्कालीन ब्रिटि ा सरकार के प्रधानमंत्री रेम्से मैकडोनल्ड ने अगस्त 1932 में साम्प्रदायिक निर्णय की घोशणा करके गांधी को अपने कथन को मूर्त रूप देने के लिए बाध्य कर दिया। यघपि इस समय गांधी यरवदा जेल में बन्द थे। अहिंसा के पुजारी को अपनी बात बहरी सरकार तक पहुँचाने के लिए हिंसक रूप से बम फोडने की आव यकता नहीं थी। इसलिए उन्होंने बाध्य होकर 20 सितम्बर से आमरण उपवास रखने की घोशणा कर दी। गांधी के इस निर्णय से पूरे दे ा में खलबली मच गई। दे ा में जगह–जगह मदन मोहन मालवीय की अगुवाई में सार्वदलीय नेताओं की बैठकें होने लगी। हर स्तर से गांधी का आमरन अन ान समाप्त करने हेतु उपाय खोजें जाने लगे। साथ ही अम्बेडकर को मनाने की निरन्तर कोि ा ों होने लगी। डॉ. अम्बेडकर को मनाने का प्रयास राजेन्द्र बाबू, तेजबहादुर सप्रू, मदन मोहन मालवीय इत्यादि नेताओं के माध्यम से किया जाने लगा ताकि गांधी के प्राण बचायें जा सकें।

अन्ततः अम्बेडकर गांधी के प्राण बचाने हेतु आगे आये और समझौता करने को तैयार हो गये। अतएव् साम्प्रदायिक निर्णय के स्थान पर 'पूना समझौता' सम्पन्न हुआ। जिसके तहत प्रादेि ाक विधानसभाओं में दलित वर्गों को 147 सीटें प्राप्त हुई। 25 सितम्बर को समझौते का अनुमोदन हुआ एवं 26 सितम्बर को लन्दन और दिल्ली में गांधी के आमरन अन ान समाप्त होने की खबर फैल गई।

वास्तव में यह गांधी का चमत्कारिक प्रभाव था जिसके माध्यम से दे ा एक बडे संकट से बच गया। वहीं इस अन ान में अम्बेडकर की सूझ–बूझ एवं निर्णय क्षमता का भी प्रद ान होता है। जिसके माध्यम से सही समय में उठाये गये कदम के द्वारा गांधी के प्राण और हिन्दू धर्म को विघटन से बचाया जा सका।

सन्दर्भ सूची

1. सं. गां. वां. खण्ड–48,पृ.38
2. कीर धनंजय : डॉ.बाबासाहब आंबेडकर : जीवन चरित, 1996, पृ.191
3. सिंह श्री भगवान : गांधी और दलित भारत–जागरण, 2010, पृ.60
4. सं.गां.वां. खण्ड–48, पृ.177
5. वहीं पृ.230
6. सिंह श्री भगवान : उपयुर्क्त पृ. 65
7. सं.गां. वां. खण्ड–49,पृ.182

cnyrh thou ’kSyh ij oS’ohdj.k dk izHkko

fueZyk nsoh[1]

वैश्वीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जा आज विश्व भर के सभी देशों में देखने को मिलती है। आज संचार और आवागमन के साधन इतनी तेजी से विकसित हो गये हैं कि संसार के विभिन्न देशों की दूरियाँ मिट गयी हैं तथा वे एक–दूसरे के काफी निकट आ गये हैं। एक देश में होने वाली किसी भी घटना, ज्ञान–विज्ञान, अनुसंधान का प्रभाव अन्य देशों पर पड़ता है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया का आर्थिक पक्ष विशेष शक्तिशाली दिखाई देता है। वैश्वीकरण से देशों की अर्थव्यवस्था में परिवर्तन आया है, आर्थिक नियोजन एवं नियंत्रण संकीर्णता की स्थिति से, अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति में विकसित होकर कार्य करते हैं। वैश्वीकरण का प्रभाव केवल व्यापार तक ही सीमित नहीं है वरन् यह उत्पादन व्यवस्थाओं, तकनीकि, राजनीति, आर्थिक बाजारों एवं सामाजिक जीवन के अनेक पहलुओं को प्रभावित करता है। एन्थोनी गिडेन्स के अनुसार ''आज सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक सम्बन्ध ऐसे हैं जो राष्ट्रीय सीमाओं को लांघकर देशों के बीच की दशाओं और भाग्य को निर्धारित करते हैं। दुनियाँ की इस बढ़ती हुई अन्तनिर्भरता को ही विश्व व्यापीकरण कहते हैं।'' इसने भौगोलिक और सामाजिक दूरियों को कम कर दिया है। उद्योगवाद और उत्तर–उद्योगवाद आज ऐसी वैश्वीय सामाजिक–आर्थिक और राजनीतिक बन गई है जो वैश्वीकरण का पोषण करती हैं।

1- ’kks/k Nk=k] lekt’kkL=] egkRek xka/kh fp=dwV xzkeksn; fo’ofo|ky;] fp=dwV lruk ¼e0iz0½

वैश्वीकरण ने पूरी जीवन शैली को ही प्रभावित किया है। आर्थिक स्तर पर देखें तो एक नई वर्ग व्यवस्था का उदय हुआ जिसमें एक राष्ट्र–राज्य के वर्ग दूसरे राष्ट्र–राज्य के जुड़ गये हैं। इस प्रक्रिया में व्यापार, निवेश, उत्पादन, वित्तीय विनियम, श्रमिक स्थानान्तरण, अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक सहयोग तथा संगठनात्मक व्यवहार की बहुत बड़ी भूमिका है। इसने वैश्वीय आर्थिक सम्बन्धों को स्थापित किया है। ब्लैकवेल डिक्शनरी ऑफ सोशियोलॉजी (1995) के अनुसार ''भूमण्डलीयकरण वह प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत विभिन्न समाजों का सामाजिक जीवन, राजनीति एवं व्यापारिक क्षेत्र से लेकर संगीत, वेशभूषा एवं जन मीडिया के क्षेत्रों तक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अत्यंत द्रुतगति से प्रभावित हुआ है।'' जहाँ व्यक्ति की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति एक सीमित दायरे में हो जाती थी। वहीं आज विभिन्न देशों की वस्तुएँ बाजार में उपलब्ध हैं फिर चाहे वह कृषि में प्रयुक्त किये जाने वाले उपकरण हो, व्यक्ति की दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के साधन हो या बड़े–बड़े उद्योगों में प्रयुक्त किये जाने वाली मशीनें हों। आज आर्थिक के साथ राजनीतिक दृष्टि से दुनियाँ के राष्ट्र एक–दूसरे से जुड़े हैं। एक राष्ट्र के निर्णय तथा गतिविधियाँ अन्य राष्ट्र को प्रभावित करती हैं। वैश्वीकरण का सामाजिक, सांस्कृतिक पक्ष काफी विस्तृत है, जिसने परिवार की संरचना, कार्यों एवं उत्तरदायित्वों के रूप को बदल दिया है जिस परिवार में तीन–चार पीढ़ी के लोग एक साथ रहते थे और परस्पर स्नेह और दायित्व सम्बन्धों की घनिष्ठता का आधार था वही आज तीन–चार सदस्यों तक परिवार की संकल्पना निहित हो गयी है और सम्बन्धों में व्यक्तिवादिता की भावना का प्रवेश हो गया है। विवाह जिसे सात जन्मों का अटूट बन्धन माना जाता है, जिसकी तैयारी पहले लोग महीनों से करते थे अब ऐसे संगठन विकसित हो गये हैं जो देश–विदेश कहीं पर भी कुछ ही दिन में विवाह समारोह के आयोजन का इन्तजाम कर देते हैं लेकिन वैवाहिक सम्बन्धों व आयोजनों का रूप वह नहीं रहा जो वैश्वीकरण के प्रभाव से पहले था। संचार, आवागमन, पर्यटन, स्थानान्तरण की प्रक्रियायें इतनी तीव्र हो गयी हैं कि तेजी के साथ दुनियाँ की विभिन्न संस्कृतियाँ एक–दूसरे के निकट आ रही हैं। खान–पान, रहन–सहन, तथा वेश–भूषा में वैश्वीविकता स्पष्ट परिलक्षित होती है।

भारत में महिलायें आर्थिक व सामाजिक रूप से वैश्वीकरण से प्रभावित हो रही हैं। भोजन व दूसरे अन्य आवश्यकताओं की कमी के कारण भारत में गरीब लोग कन्या शिशुओं को बालक शिशुओं की तुलना में कम खिलाते–पिलाते हैं। ऐसा करने के पीछे उनके आर्थिक कारण रहे हैं–बालकों को रोजी–रोटी अर्जित करने वाला माना जा रहा है। इसी मानसिकता ने लिंग अनुपात में बढ़ती खाई में महत्वपूर्ण भूमिका भी अदा की है। घटती हुई आर्थिक सहायता या सहायिका के

परिणामस्वरूप खाद्य सुरक्षा लगातार कम हुई है तथा गरीब महिलाओं को पहले से अधिक अर्थहीन व अनुत्पादक श्रम में और अधिक समय लगाना पड़ रहा है। अपने पुरुषों की बढ़ती हुई छटनी के कारण कामगार महिलायें, जो पहले खेतिहर मजदूर के रूप में जीविका कमाती थी, ऐसी नगरीय संगठित क्षेत्रों में जाने पर मजबूर हो रही हैं जहाँ उन्हें भुखमरी या अर्ध भुखमरी के स्तर पर मजदूरी मिलती है। इसके अतिरिक्त मालिकों को भी महिला कामगार को रखना अधिक सुविधाजनक लगता है—महिलायें आसानी से संगठित नहीं हो पाती और इसलिये उनका शोषण करना अधिक आसान होता है।

वैश्वीकरण लोगों को और अधिक लालची व भौतिकवादी बना रहा है और इसी के साथ दहेज की मांग भी तेजी के साथ बढ रही है जो गरीब अभिभावकों को पहले से अधिक आर्थिक समस्याओं व अपमानजनक परिस्थितियों में ढकेल रहा है। बढ़ते हुए वैश्वीकरण ने तथाकथित है। ''सौन्दर्य प्रतियोगिताओं'' को जुनूनी हद तक बढ़ावा दिया है। जैसा कि अरविन्द (2002) कहते हैं—''इस पागलपन का लाभ तो वे निगम व संस्थायें कमा रही हैं जो ऐसे कार्यक्रमों के द्वारा अपने उत्पादों का विज्ञापन करती हैं, लेकिन मानसिक स्तर पर इसका दुष्प्रभाव प्रमुख तौर पर शहरी मध्यम वर्ग की लड़कियों पर पड़ता है। 'सौन्दर्य ग्रहों', फेशियल क्रीम व दूसरे सौन्दर्य प्रसाधन जो 'गोरा' करने का दावा करते हैं, उस विचार को आगे बढ़ाने में भूमिका निभाते हैं जो लोग 'निहित स्वार्थ' फैलाना चाहते हैं। बाजारी अर्थव्यवस्था के तर्क से देखें तो देह व्यापार भी एक 'जायज' प्रणाली बन जाती है—'सेवा क्षेत्र' का एक और उद्योग। वैश्वीकरण के इस दौर में खाते पीते समृद्ध परिवारों की अनेक लड़कियाँ से वेश्यावृत्ति या कालगर्ल के धन्धे में जाने से भी नहीं हिचकती बाजारी अर्थ व्यवस्था से प्रत्येक वस्तु 'बिकाऊ' है सकती है।

lanHk%

1. दोषी, एम.एल., 2002, आधुनिकता उत्तर—आधुनिकता एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत, रावत पब्लिकेशन, जयपुर।
2. हसनैन, नदीम, 2004, समकालीन भारतीय समाज एक समाजशास्त्रीय परिदृश्य, शिवानी आर्ट प्रेस नवीन, शाह्दय दिल्ली
3. सिंह योगेन्द्र, 2000, कल्चर चेंज इन इण्डिया, रावत पब्लिकेशन, जयपुर।

dkfynkl d: lkfgR; e: efgyk f'k{kk dk vf/kdkj

iue nsoh[1]

हमारे भारत देश का संस्कृत साहित्य सर्वाङ्गीण है और धार्मिक दृष्टि से भी संस्कृत साहित्य विशेष गौरव रखता है। अतः महाकवि कालिदास का साहित्य विश्व बेजोड़ एवं अमूल्य है, क्योंकि कवि कालिदास का कृतित्त्व एवं व्यक्तित्त्व प्रेरणा स्रोत है और काव्यशास्त्र के द्वारा आलौकिक आनन्द देने वाला है। कविकुलगुरू कालिदास का साहित्य ऐसा सुन्दर समुद्र है जिसमें अमृत ही अमृत भरा है परन्तु उस ज्ञान रूपी अमृत एवं जल की परख करने वाले ज्ञानी एवं सूक्ष्मदर्शी मनीषीगण ही हैं जिनका भाग्य धन्य है कि वे कवि के चमत्कार रूपी ज्ञान को समझकर भाव विभोर हो जाते हैं और स्वयं को धन्य समझते हैं। कवि ने वीणापाणी की साधना करके जो वाक् सिद्धि एवं लेखनी का चमत्कार प्राप्त किया है उसे उन्होंने अपने साहित्य के द्वारा मानव जाति के समझ जीव और ब्रह्म के वास्तविक स्वरूप को पहचानने के लिए ही रखा है। अतः कवि के ग्रन्थों में अद्भुत चमत्कार है जो सदैव से ही सहृदयों को अपनी शब्द माधुरी एवं अर्थचातुरी से हठ्ात आकृष्ट करता आ रहा है, क्योंकि नवीन साहित्यिक परिस्थिति के उदय ने भी इस आकर्षण में किसी प्रकार की न्यूनता उत्पन्न नहीं की है इसलिए कवि कालिदास भारतवर्ष के महनीय राष्ट्रीय कवि हैं उनके काव्यों में देश प्रेम की भव्य भावना की सत्ता मिलने पर हमें आश्चर्य नहीं होता है। इस प्रकार कवि कालिदास ने अपने साहित्य में महिलाओं को सम्पूर्ण अधिकार प्रदान किये हैं जिनकी अधिकारिणी महिला जन्म से ही होती है। कवि ने अपने ग्रन्थों में महिला शिक्षा का वर्णन बड़ा ही हृदयग्राही किया है। अतः कवि ने अपने ग्रंथों में महिलाओं को जो सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान की है वह अन्यत्र दुर्लभ है उन्होंने महिला को शक्ति माना है। महिला का सम्मान करते हुए कहा है कि हमारी भारतीय नारी ने अपने

1- 'kks/k Nk=k& laLd`r] e-xk-fp-xzkeksn; fo'ofo|ky;] fp=dwV lruk ¼e-iz-½

सद्व्यवहार, त्याग, आचरण और निर्माण शक्ति से परिवार एवं समाज को प्रभावित कर सदैव सुगम मार्ग दिखलाया है। इसलिये भारतीय नारी की सादगी एवं सतीत्त्व से प्रभावित होकर भारत देश के भारतीय मनीषियों ने नारी को एक महत्त्वपूर्ण दृष्टि से देखा नारी की कोमलता और मधुरता में उन्होंने महाशक्ति का प्रकाश देखा। अतः नारी को उन्होंने शक्तिस्वरूपिणी बतलाया है, क्योंकि वीर्य एवं ऐश्वर्य का सौन्दर्य और माधुर्य रूप में प्रकाश ही नारीत्त्व है।

कवि कुलगुरू कालिदास ने अपनी प्रथम कृति ऋतुसंहार में महिला शिक्षा का वर्णन अत्यंत शोभनीय ढंग से किया है। कालिदास युग में महिलायें अत्यंत गुणवान, शीलवान एवं शिक्षा से सम्पन्न थीं। ऋतुसंहार युग में महिलायें पढ़ना–लिखना, संगीत, वादन, चित्रकारी, नृत्य एवं सम्पूर्ण शिक्षाओं में पारंगत थीं। कवि कालिदास ने ऋतुसंहार के चतुर्थ सर्ग हेमन्त ऋतु में महिलाओं की श्रृंगार रूपी शिक्षा का वर्णन करते हुए कहा है–

fuekY;nke ifjeäeukKx/k e/uk·iuh; /kuuhyf'kjk:gkUrk%A
ihukUurLru Hkjkurxk=;"V;% doifUr d'kjpukeijkLr:.;%AA

अर्थात् घने तथा काले बालों वाली वे तरुणियाँ जिन फूलों से गंध निकल चुकी है ऐसे फूलों की मालाओं को शिर से उतार कर अपने बालों को फिर से संवार रही हैं। अतः उस युग में महिलायें शिक्षा सम्पन्न होने के कारण ही अपने केशों को भली–भाँति सजाती तथा सँवारती थीं। क्योंकि जिस प्रकार वर्तमान युग में महिलायें सौन्दर्यता का विषय सीखकर सँजने सँवरने में निपुड़ हैं उसी प्रकार कालिदास युग मे महिलाएँ अपने केशों को मालती के पुष्पों से कालागुरू के धूप से सुगन्धित करके सजाती थीं।

अर्थात् जिस प्रकार कालिदासकृत ऋतुसंहार में महिलाओं को केश सज्जा एवं श्रृंगार रूपी शिक्षा प्राप्त थी, उसी प्रकार महाभारत युग में भी द्रोपदी को केश सज्जा एवं श्रृंगार रूपी शिक्षा प्राप्त थी क्योंकि जब पाण्डवों को बारह वर्ष का वनवास एवं एक वर्ष का अज्ञातवास मिला था तब एक वर्ष के अज्ञातवास में पाण्डव राजा विराट के यहाँ जाते हैं परन्तु पाण्डव द्रोपदी का परिचय किस रूप में करायेंगे यही विचार–विमर्श करते हैं। तब द्रोपदी कहती है कि आप मेरे परिचय के विषय में मत सोचिये मैं उन्हें अपना परिचय सैरन्ध्री के रूप में कराऊँगी–

ljU/;k jf{krk ykd Hkft";k% lfUr HkkjrA
uoeU;k% fL=;k ;kfUr bfr ykdL; fu'p;%AA
lkg cok.kk ljU/kh d'kyk d'kdef.kAA
;f/kf"BjL; xg o nki|k% ifjpkfjdk mf"krkLehfr
o{;kfe i"Vk jkKk p HkkjrAA

द्रोपदी ने कहा! भारत! इस जगत में बहुत सी ऐसी स्त्रियाँ हैं, जिनका दूसरों के घरों में पालन होता है और जो शिल्प कर्मों द्वारा जीवन निर्वाह करती हैं, वे अपने सदाचार से स्वतः सुरक्षित होती है ऐसी स्त्रियों को सैरन्ध्री कहते हैं। लोगों को अच्छी तरह मालूम है कि सैरन्ध्री की भाँति दूसरी स्त्रियाँ बाहर की यात्रा नहीं करती इसलिए मैं सैरन्ध्री कहकर अपना परिचय दूँगी।

बालकों को सँवारने और वेणी रचना आदि के कार्यों में मैं बहुत निपुड़ हूँ। यदि राजा मुझसे पूछेंगे तो कह दूँगी कि मैं महाराज युधिष्ठिर के महल में महरानी द्रोपदी की परिचारिका बनकर रही हूँ।

इस प्रकार महाभारत के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि महाभारत काल में महिलायें स्वयं का जीवन निर्वाह करने के लिए अनेक प्रकार के कार्यों में निपुड़ थी। ऋतुसंहार युग की महिलाओं की भाँति महाभारत युग की महिला द्रौपदी भी केश सज्जा एवं श्रृंगार रूपी शिक्षा में निपुड़ थी, जिससे यह ज्ञात होता है कि हर युग में महिलाओं को शिक्षा का अधिकार प्राप्त था, क्योंकि शिक्षित महिलायें अपनी जीविका का निर्वहन करना भली–भांति जानती हैं। अतः शिक्षा के माध्यम से महिलायें पुरुषों के समान उच्च पदों पर अलंकृत थीं वे अस्त्र शिक्षा, शस्त्र शिक्षा, वेद मंत्र, श्रृंगार रूपी शिक्षा इत्यादि में अत्यंत प्रवीण थी।

इस प्रकार हर युग में महिलायें शिक्षित थीं और उन्हें शिक्षा का अधिकार प्राप्त था। कवि कालिदास ने महिला शिक्षा का वर्णन कर जगत के प्राणियों को यह अवगत करने की चेष्टा की है कि युग चाहे जो भी रहा हो रामायण युग, महाभारत युग, कालिदास युग या भारवि युग हर युग में महिलायें शिक्षा में निपुड़ एवं महत्त्वशालिनी थीं। क्योकि भारत जैसे गौरवशाली देश में प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षा का अधिकार प्राप्त है। प्रत्येक व्यक्ति का जन्म से ही इस अधिकार को प्राप्त करने का पूर्ण अधिकारी माना गया है। इसलिए वर्तमान में ''भारतीय संविधान के नियमानुसार मौलिक अधिकारों के अंतर्गत अनुच्छेद 29, 30 में शिक्षा के अधिकार को स्वीकार किया गया है। इस अनुच्छेद के अन्तर्गत सभी व्यक्तियों को एक समान शिक्षा प्राप्त करने का पूर्ण अधिकार है।''[गअ] इसलिए कवि कालिदास अपने काव्यों में महिला शिक्षा को अत्यन्त महत्त्व प्रदान किया है, क्योंकि गुणवान और संस्कारी शिक्षा से ही व्यक्ति का व्यक्तित्त्व निखर उठता है, और वह अपने सुन्दर कार्यों को सदैव सद्मार्ग की गति को प्राप्त करता है। कवि के सम्पूर्ण ग्रंथ प्राचीन एवं वर्तमान की नवीनता को धारण किये हुये महिला शिक्षा सम्बंधी प्रत्येक अधिकार के लिए वर्तमान में भी उपादेय प्रतीत होते हैं; क्योंकि शिक्षा प्राचीन काल से लेकर वर्तमान काल तक व्यक्ति को बौद्धिक तौर पर सूझवान, व्यावसायिक तौर पर आत्मनिर्भर, सामाजिक तौर पर कुशल, नैतिक तौर पर बलवान, सांस्कृतिक तौर पर

सभ्य और आध्यात्मिक तौर पर विकसित करती है। इसलिए शिक्षा व्यक्ति के सम्पूर्ण विकास में सहायता प्रदान करती है ताकि व्यक्ति इस योग्य बन सके कि समाज को एक अच्छा स्वरूप प्रदान कर सके, अतः शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास करती है इसलिए शिक्षा संसार में सुख, समृद्धि और सुयश प्राप्त करने का साधन मानी जाती है और जीवन के कठिन समय में परम सहायक मानी गयी है। शिक्षा के महत्त्व को स्वीकारते हुए डॉ. ए.एस. अलतेकर ने कहा है कि ''वैदिक युग से लेकर आज तक भारत में शिक्षा का मूल तात्पर्य यह रहा है कि शिक्षा प्रकाश का वह स्रोत है, जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हमारा पथ प्रदर्शन करती है।''[गअप] इस प्रकार हर युग में शिक्षा का अपना महत्त्व रहा है, क्योंकि शिक्षा ही एक ऐसा तत्त्व है जो बिना कुछ कहे अपने आपसे परिस्थितिनुसार परिवर्तन लेती है और शिक्षा तथा मानवजाति का जन्मजन्मान्तर सम्बंध है।

महाकवि कालिदासकृत उत्तरमेघ में महिला शिक्षा का वर्णन अत्यंत सुन्दर ढंग से किया गया है। कवि कालिदास ने नारी की कार्यकुशलता, सुप्रबन्ध तथा चातुर्य के अनेक उदाहरण देकर नारी की भूरी–भूरी प्रशंसा की है। प्रायः कवि को नारी में अधिक से अधिक गुण ही दिखाई दिये हैं, क्योंकि नारी सदा से मनुष्य के लिए साधन रही है। कालिदास ने महिला शिक्षा का वर्णन करते हुए कहा है–

vkykds r fuirfr iqjk lk cfy0;kdqyk ok eRlkn`';fojgruq ok HkkoxE;a
fy[kfUrA
iNfUr ok e/kqjopuka lkfjdka itjLFkka dfPpHnrZ% Lejfl jfld Roa fg rL; fiz;frAA

अर्थात् यक्ष मेघ से अपनी भार्या यक्षणी के विषय में कहता है कि हे सखे! वहाँ तुम्हें या तो देवतओं की पूजा करती दिखेगीं या अपनी कल्पना द्वारा विरह से मेरे इस दुबले शरीर का चित्र बनाती मिलेगी। इस प्रकार कालिदास युग में महिला धार्मिक शिक्षा एवं चित्रकारी इत्यादि की शिक्षा में निपुड़ थी यक्षणी एक शिक्षित महिला थी, जो पतिव्रता के रूप में आदर की पात्र थीं। अतः यक्ष पत्नी पंजस्थ सारिका को भी पढ़ाने में कुशल है, जिससे यह ज्ञात होता है कि यक्षणी अत्यन्त कुशल एवं शिक्षा से सम्पन्न थी। कवि कालिदास ने अपने गीतिकाव्य मेघदूत में यक्षणी को अति शिक्षित महिला के रूप में प्रस्तुत किया है। क्योंकि वह संगीत शिक्षा, वादन, गायन, चित्रकारी इत्यादि की शिक्षा में निष्णात थी कवि कालिदास ने उसकी कुशलता का बड़ा ही मनोरम वर्णन किया है–

mRlaxs ok efyuolus lkE;! fuf{kI; oh.kk enxks=k³d
fojfprinxs;eqn~xkrqdkekA
rU=heknzk u;ulfyyS% lkjf;Rok dFkkf´pHn;k Hkwi% Lo;efi d`rk eqPNZuk foLejUrhAA

यक्ष पत्नी संगीत शिक्षा में निपुड़ है क्योंकि वह गोद में वीणा रखकर पति के नामांकित पद को गाने का प्रयास करती है। इसके अलावा वह चित्रकला में भी दक्ष है वह विरह में क्षीण पति की आकृति का अपने मनोभावों के अनुकूल चित्रांकन करती है वह विरह विधुरा रमणी अत्यन्त अल्पभाषिणी भी हो गयी है। इस प्रकार यक्ष प्रिया यक्षणी नृत्य, संगीत, चित्र आदि ललित कलाओं में सिद्धहस्त प्रतीत होती है और साथ ही वह मधुरभाषिणी एवं प्रकृति की अनुरागिणी भी है। उस युग में महिलायें श्रृंगार रूपी शिक्षा में भी सम्पन्न थीं क्योंकि यक्ष प्रिया यक्षणी पतिवियोग में सुखभोग के सम्पूर्ण प्रसाधन छोड़ देती है उसकी आँखे अंजन से शून्य हैं उसने केश बनाना भी समाप्त कर दिया है, जिससे उसके केश में लटे पड़ गयी हैं। इस प्रकार मेघदूत की नायिका यक्षणी सम्पूर्ण गुणों में दक्ष थी। अतः यहाँ महिला शिक्षा स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही है।

महाकविकालिदासकृत कुमार सम्भवम् महाकाव्य के प्रथम सर्ग में यह वर्णन प्राप्त होता है कि जब पार्वती जी शिक्षा ग्रहण करने योग्य हुई, तब उन्होंने स्वतः ही सम्पूर्ण विद्यायें सीख लीं मानो पूर्व जन्म की समस्त विद्यायें स्वतः ही उन्हें स्मरण हो आयीं हों। पार्वती जी बाल्यावस्था से ही सम्पूर्ण कलाओं एवं विद्यायें में कुशल एवं प्रवीण थीं और उन्हें घर पर ही विविध–विषयों के शिक्षक रखकर शिक्षा दी गई थी।

अतः कवि कालिदास के कहने का अर्थ है कि पार्वती जी सम्पूर्ण गुणों में इतनी अधिक चतुर एवं प्रवीण थीं कि उन्हें शिक्षा ग्रहण करने में जरा भी समय नहीं लगा क्योंकि वे स्वतः विश्व की कल्याणकारी देवी के रूप में कार्य करने वाली थीं–

rk g lekyk% 'kjnhox³xk egk"kf/k uäfeokReHkk l%A
fLFkjk in'kke in'kdky i ifnj ikäutUefo|k%AA

अत्यंत तीव्र बुद्धि वाली पार्वती जी ने पढ़ना प्रारम्भ किया तो पूर्वजन्म की सम्पूर्ण विद्यायें उन्हें वैसे ही स्मरण हो आयीं, जैसे शरदऋतु के आगमन पर गंगा जी में हंस स्वयं आ जाते हैं अथवा जैसे स्वतः चमकने वाली जड़ी–बूटियों में रात को चमक आ जाया करती है। अतः पार्वती जी स्वयं विश्व की सम्पूर्ण कलाओं, शिक्षा, वेद, वेदांग इत्यादि का उन्हें स्वतः ही ज्ञान हो गया। इस प्रकार उनकी कुशलता को देखकर देवता भी उनके गुण गाने लगे और अल्पआयु में ही अपार ज्ञान भण्डार वाली पार्वती को बड़े बड़े ऋषि मुनि भी प्रणाम करने लगे और उनकी गुणकारी एवं प्रशंसनीय शिक्षा सम्पूर्ण विश्व में चन्द्रमा एवं चाँदनी की भाँति फैल गयी, जिसकी चारों दिशाओं में प्रशंसा होने लगी। अतः कवि कालिदास ने पार्वती जी की तीव्र बुद्धि एवं उनकी गुणकारी शिक्षा का वर्णन करके परिवार, समाज एवं

विश्व को यह प्रेरणा प्रदान की है कि हर महिला को शिक्षा प्राप्त करने का पूर्ण अधिकार होता है। जब हमारे समाज एवं देश की महिला शिक्षित होंगी तभी विश्व का कल्याण सम्भव होगा विद्वानों ने भी शिक्षित महिला की प्रशंसा करते हुए कहा है–

पं. जवाहलाल नेहरू–''परिवार में लड़के की शिक्षा एक ही सदस्य की शिक्षा होती है, परन्तु परिवार में लड़की की शिक्षा सम्पूर्ण परिवार की शिक्षा होती है।[गअपप] इस प्रकार कालिदास ने पार्वती जी की शिक्षा का वर्णन करके हमारे देश एवं समाज की सम्पूर्ण महिलाओं को यह प्रेरणा प्रदान की है कि वे अपना कार्यक्षेत्र घर की चारदीवारी तक ही सीमित न रखकर पुरुष की भाँति हर क्षेत्र में अपनी सहभागिता अर्जित करें और धार्मिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक व शैक्षिक आदि सभी क्षेत्रों में समानरूप से स्वयं को विस्तृत करें तथा सम्पूर्ण कार्यों में सफलता प्राप्त करें।

महाकवि कालिदास कृत रघुवंशमहाकाव्य के अष्टम् सर्ग के 67वें श्लोक में महाराज अज ने अपनी पत्नी इन्दुमती को अपनी शिष्या कहा है। अतः राजा अज स्वयं इन्दुमती के गुरू बनकर और उसे अपनी शिष्या बनाकर ललित इत्यादि कलाओं में कुशल एवं प्रवीण कर दिया था। रघुवंशमहाकाव्य युग में अधिकांश जगह महिलाओं को विविध विषयों के शिक्षक रखकर उन्हें घर पर ही शिक्षा देकर प्रतिभाशाली, यशस्वी, श्रेष्ठ, संस्कारी एवं शिक्षा से सम्पन्न बनाया जाता था। राजा अज ने इन्दुमती को घर पर ही सम्पूर्ण विद्याओं एवं कलाओं का अध्ययन कराकर उसे इस योग्य बना दिया कि स्वयं राजा अज इन्दुमती से मंत्रणा लेने लगे। इसलिए राजा अज ने अपनी धर्मपत्नी इन्दुमती को मित्र एवं मंत्रणा देने वाली नारी के रूप में स्वीकार करते हुए कहते हैं–

xg.kh lfpo% l[khfeFk% fi;f'k";k yfyrs dykfo/kkSA
d#.kkfoe[kqu eR;quk Rok on fda u es âreAA

''अर्थात् हे प्रिये! तुम्ही मेरी धर्मपत्नी सम्मत्ति देने वाली मंत्री एकान्त की सखी गान आदि ललित कलाओं के प्रयोग में प्रिय शिष्या हो।'' इस प्रकार कालिदास युग में महिलाओं को शिक्षा में निपुड़ करने के लिए उनके माता–पिता, भाई–बहन यहाँ तक कि पति अपनी पत्नियों की शिक्षा ग्रहण कराने में सहयोग करते थे। जैसे इन्दुमती अपने पति अज की ललित कलाएँ सीखने वाली प्रिय शिष्या थी। इसी प्रकार कुमारसम्भवम् महाकाव्य में पार्वती जी को घर पर ही विविध विषयों के शिक्षक रखकर शिक्षा दी गई थी। इससे यह भली भांति अवगत होता है कि हर युग में महिलायें अपने परिवार के सहयोग से सभी प्रकार की शिक्षा प्राप्त कर सकती थीं। अतः कालिदास युग में महिलाओं को शिक्षा का

अधिकार प्राप्त था, क्योंकि जिस देश की नारी जितनी अधिक सक्षम सुसंस्कारित और चैतन्य होगी वह देश भी उतना ही सक्षम, उसकी सामाजिकता उतनी ही जागृत, उसका चरित्र चिन्तन और संकल्प उतना ही उच्च होगा। इसलिए वैदिक युग एवं संस्कृत साहित्य युग में महिलाओं की शिक्षा का अत्यधिक सम्मान किया जाता था, क्योंकि यदि महिला शिक्षित एवं संस्कारी होगी तो वह आने वाली पीढ़ी का उद्धार कर सकेगी। वशिष्ठ स्मृति में कहा गया है कि ''एक हजार पिताओं से माता प्रतिष्ठा में अधिक मानी जाती है।'' अतः मेरे विचार में माँ की ममता अतुलनीय एवं अमृत के समान होती है इस प्रकार यहाँ महिला शिक्षा स्पष्ट रूप से परिदृश्य हो रही है।

महाकवि कालिदासकृत मालविकाग्निमित्र नाटक के प्रथम अंक में मालविकाग्निमित्र की नायिका मालविका के नृत्य रूपी शिक्षा का वर्णन किया गया है। मालविका की शिक्षा के विषय में राजा अग्निमित्र की पत्नी महारानी धारिणी बकुलावलिका को आदेश देती है कि जाओ आचार्य गणदास से पूछो कि मालविका ने अब तक छलिक नामक नृत्य सीखने में कितनी प्रगति की है। तब आचार्य गणदास सर्वप्रथम नृत्य रूपी शिक्षा की प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि नृत्य तो प्रकृति का वरदान है क्योंकि स्वयं महादेव ने पार्वती से विवाह करके अपने अर्धनारीश्वर अंग में इसके दो भाग कर लिये एक ताण्डव दूसरा लास्य। इसमें सत्व, रज और तम तीनों गुण दिखलाई पड़ते हैं और उनके रसों से सम्पन्न मानवों के चरित्र भी दिखलाई पड़ते हैं। गुरू गणदास वकुलावलिका से कहते हैं कि महारानी धारिणी से कह देना कि मेरी शिष्या मालविका संगीत शिक्षा में बड़ी चतुर समझदार और शिक्षा ग्राहिका बुद्धि से सम्पन्न है और अधिक उसकी प्रशंसा कैसे करें क्योंकि

; |Ri ;kxfo"k; Hkkfode ifn'; r e;k rL;A
rÙk f}'k"kdj.kkRi R; ifn'krho e ckykAA

''मैं जो–जो भाव उसे सिखलाता हूँ उन्हें जब वह और भी सुन्दरता के साथ करके दिखलाने लगती है तब ऐसा जान पड़ता है मानो वह उल्टे मुझे ही सिखा रही है।'' अर्थात् मालविकाग्निमित्र युग में महिलाओं को शिक्षा का अधिकार प्राप्त था। उनको शिक्षा ग्रहण कराने के लिए घर पर ही अत्यंत गुणवान एवं योग्य शिक्षक रखे जाते थे, जिससे वे अपनी शिक्षा कुशलतापूर्वक सीख सकें। जैसे महारानी धारिणी ने अपनी परिचारिका मालविका को संगीत–शिक्षा ग्रहण कराने के लिए आचार्य गणदास को नियुक्त किया। कालिदास युग में महिलायें अत्यंत गुणवान तीव्रबुद्धि वाली एवं शिक्षा में निपुड़ थीं। क्योंकि शिक्षा चाहे जैसी हो संगीत हो या अन्य। वैदिक युग से लेकर वर्तमान युग में भी महिलायें सदैव से ही

शिक्षा ग्रहण करने में पुरुषों से आगे रही हैं। वे हर क्षेत्र में अपनी शिक्षा की कुशलता द्वारा प्रगति कर बड़े–बड़े पदों को अपनी प्रवीणता द्वारा सुशोभित एवं अंलकृत किया है। इसलिए यह आवश्यक है कि स्त्री जाति को उसके समस्त अधिकारों की प्राप्ति हो ताकि उसके व्यक्तित्त्व का विकास हो और समाज का संतुलित विकास सम्भव हो सके।

महाकवि कालिदासकृत विक्रमोर्वशीयम् नाटक के द्वितीय अंक में राजा पुरुरवा का मनोरंजन करने वाला विदूषक महारानी औसीनरी की दासी निपुड़िका से कहता है कि निपुडिकाजी। अपना (संगीत) गाना–बजाना छोड़कर किधर जा रही हो। (संगीत–व्यापार मुज्झित्वा कुत्र प्रस्थिताऽसि)[गअपपप] अर्थात् कालिदास युग में महिलायें संगीत एवं पढ़ने–लिखने में अत्यंत कुशाग्र एवं निपुड़ थीं। इस प्रकार हमारी भारतीय संस्कृति में नारी ने अपनी प्रतिष्ठा एवं महत्त्व को अत्यधिक गौरवान्वित किया है। शिक्षा के क्षेत्र में उसने सदैव से ही सफलता प्राप्त की है। वैदिक युग से लेकर वर्तमान तक महिलाओं ने शिक्षा के क्षेत्र को अपने गुणों एवं संस्कारों से प्रशंसनीय एवं सराहनीय बनाया है। उन्होंने हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करके समाज एवं परिवार में सम्मानीय स्थान प्राप्त किया है। इस प्रकार हर युग में महिलाओं का अत्यधिक सम्मान था, इसके अनेक दिव्य दृष्टान्त यत्र–तत्र देखने को मिलते हैं। कालिदास युग में महिलायें घर पर ही संगीत इत्यादि शिक्षा से अपनी जीविका चलाते हुए समाज एवं परिवार में सुख से रहती थीं। इस प्रकार उस युग में महिलाओं की शिक्षा का पर्याप्त विकास हो चुका था। मालविकाग्निमित्र युग की भाँति वैदिक युग में भी शिक्षा के क्षेत्र में महिलाओं की स्थिति अत्यंत सुदृढ़ थी। ''वैदिक वाङ्मय के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि उस युग में सद्योदवाहा छात्राओं को गृहकार्य, कटाई, बुनाई नाना प्रकार के व्यंजन बनाने की शिक्षा, ललित कलायें, काव्य कला, संगीत कला, नृत्य–कला, वाद्य–वृन्द तथा अभिनय आदि की शिक्षा दी जाती थी।''[गपग] इस प्रकार भारतीय संस्कृति में महिलाओं का स्थान सदैव सम्मानपूर्ण एवं महत्त्वपूर्ण रहा है और महिला को सदैव शुभ लक्षण एवं उत्तम यश वाली माना गया है।

महाकवि कालिदासकृत अभिज्ञानशाकुन्तलम् के तृतीय अंक में जब आश्रम में आये हुए अतिथि राजा दुष्यन्त से शकुन्तला को प्रेम हो जाता है, तब वह अत्यंत दुःखी रहने लगती है और मन ही मन सोचती है कि जितना अधिक प्रेम में राजा दुष्यन्त से करती हूँ क्या उतना ही अधिक प्रेम राजा भी मुझसे करते होंगे। तब इस दुविधा को दूर करने के लिए शकुन्तला की सखी प्रियवंदा सोचकर कहती है कि इस दुविधा का निदान राजा दुष्यन्त को शकुन्तला द्वारा प्रेम पत्र लिखकर उन्हें देने से ही दूर किया जा सकता है। प्रियवंदा शकुन्तला से एक पत्र कविता के रूप

में लिखकर देने को कहती है। शकुन्तला कहती है कि मैने कविता तो सोच ली है किन्तु लिखने की सामग्रियाँ यहाँ कुछ भी उपलब्ध नहीं हैं तब प्रियवंदा के कहने पर शकुन्तला कमलिनी के पत्ते पर अपने नखों से इस प्रकार लिखती हैं–

rc u tkus ân;a ee iqu% dkeks fnokfi jk=kofiA
fu?k`.k! rifr cyh;LRof; oÙkeukjFkkU;xkfuAA

''हे निर्दय! मैं तुम्हारे मन की बात तो नहीं जानती, किन्तु तुम्हारे प्रेमपाश में आबद्ध मेरे समस्त अंगों को बलवान कामदेव दिन–रात सन्तप्त करता है।'' अर्थात् अभिज्ञानशाकुन्तलम् युग में महिलायें शिक्षित गुणवान एवं प्रतिभाशाली थीं और शिक्षा के प्रति अत्यंत उत्सुक एवं कुशल होती थीं इसलिए वे अति सुन्दर–सुन्दर गीत एवं कविताओं की रचना करने में प्रवीण थीं। ऐसी ही सर्वगुण सम्पन्न एवं शिक्षित महिला शकुन्तला थी जो पढ़ने–लिखने एवं कविता करने मे विशेष रुचि रखती थी। कालिदास युग में महिलायें शिक्षा के महत्त्व को भली–भाँति जानती थीं, क्योंकि वास्तव में शिक्षा वह है, जिसे किसी एक सीमा या क्षेत्र में बाँधा नहीं जा सकता, वरन शिक्षा तो जन्म से मृत्यु पर्यन्त चलने वाली वह प्रक्रिया है जो हर महिला एवं पुरुष को सर्वांगीण विकास करने के साथ–साथ सामाजिक विकास का भी साधन बनाती है।

स्वामी विवेकानन्द ने भी शिक्षा के महत्त्व को स्वीकारते हुए कहा है–''मनुष्य की अर्न्तनिहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है।''

इस प्रकार प्रियवंदा शकुन्तला के अर्न्तमन को कविता बनाने के लिए प्रेरित करती है और शकुन्तला एक नई कविता का निर्माण करती है। अतः हमारे भारत देश की भारतीय महिलायें अपने मन में जो दृढ प्रतिज्ञा कर लेती हैं उसे पूरा करके ही मानती हैं। भारत देश में प्राचीन युग से लेकर वर्तमान में भी महिलायें शिक्षा के प्रति अत्यंत उत्सुक रही हैं जो उत्सुकता उनके ज्ञान, गुण एवं विचार को अवगत कराता है। इस प्रकार अभिज्ञान शाकुन्तलम् युग में महिलायें आश्रम में रहकर विद्याध्ययन करते हुए आश्रम के कार्यों को अत्यंत स्नेह एवं उत्सुकता पूर्वक करती थीं। अतः कवि कालिदास ने शकुन्तला को एक कवयित्री एवं लेखिका के रूप में समाज एवं देश के सामने प्रस्तुत किया है। इस प्रकार यहाँ महिला शिक्षा का अधिकार स्पष्ट रूप से परिदृश्य हो रहा है।

वैदिक युग से लेकर वर्तमान तक महिलाओं की शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है। महिलायें हर युग में शिक्षा के माध्यम से समाज में सम्मानीय स्थान प्राप्त किया है इसलिए हमें अन्त में कवि कालिदास के ग्रन्थों से यह शिक्षा मिलती है कि महिलायें सदैव अपनी शिक्षा के माध्यम से स्वयं एवं अपने परिवार का जीविकोपार्जन करने में कुशल रही हैं, क्योंकि शिक्षा से ही व्यक्ति को सदैव नये

विचार एवं नई सीख प्राप्त होती है। इसलिए हर व्यक्ति समाज एवं देश में अपनी सुन्दर शिक्षा, सर्वश्रेष्ठ गुणों एवं संस्कारों से सदैव आदर का पात्र रहा है। हमें कवि कालिदास के ग्रंथों से यही शिक्षा प्राप्त होती है कि शिक्षा चाहे जैसी भी हो उसका समुचित प्रयोग समाज में हमें करना चाहिए, जिससे व्यक्ति प्रेरणा लेकर अपने जीवन को सही मार्गदर्शन करने में सफल हो सके। उपर्युक्त उदाहरणों के माध्यम से यह ज्ञात होता है कि महिला को उस काल में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं शिक्षा सम्बंधी सभी अधिकार प्राप्त थे। उस काल में महिलाओं को पुरुषों की भांति शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार था और श्रेष्ठ एवं योग्य महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने में उनके माता–पिता और पति भी साथ देते थे। इस प्रकार आज महती आवश्यकता है कवि कालिदास जैसे ग्रंथों की जो वर्तमान में भी महिलाओं का मार्गदर्शन करने में सहायक सिद्ध हो सकें क्योंकि कवि कालिदास के ग्रंथ प्राचीन एवं वर्तमान की नवीनता को धारण किये हुए महिला शिक्षा सम्बंधी प्रत्येक अधिकार के लिए वर्तमान में उपादेय प्रतीत होंगे।

I nHk

1 ऋतुसंहार, कालिदास, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी, चतुर्थ सर्ग, पृ.131, श्लोक 16, सं. 2014.

2 महाभारत, गीता प्रेस गोरखपुर, विराट पर्व, अध्याय–3, द्वितीय खण्ड, श्लोक 18,19, पृ.सं.1008, सं.2067.

3 महिला कानून, सुरेश ओझा, सर्जना शिववाड़ी रोड़ बीकानेर, पृष्ठ 184, सं. 2011.

4 भारतीय शिक्षा का इतिहास, डॉ. मालती सारस्वत, प्रो. मदन मोहन, न्यू कैलाश प्रकाशन इलाहाबाद, पृ.6, सं.2010

5 मेघदूत, कालिदास, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, उत्तरमेघ, पृ.169, श्लोक 22, सं.2010

6 मेघदूत, कालिदास, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, उत्तरमेघ, पृ.180, श्लोक 23, सं.2010

7 कुमारसम्भवम्, कालिदास, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, प्रथम सर्ग, पृ. 35, श्लोक 30, सं. 2011.

8 महिलायें एवं मानवाधिकार, श्रीमती पूजा शर्मा, सागर पब्लिशर्स, जयपुर, पृ.स. 198, सं.2012.

9 रघुवंश महाकाव्य, कालिदास, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, अष्टम् सर्ग, पृ.263, श्लोक 66, सं.2011.

10 भारतीय संस्कृति में स्त्रियों की स्थिति, सोती वीरेन्द्र चन्द्र, डी.के.प्रिंट वर्ल्ड प्रा. लि., नई दिल्ली, पृ.3, सं.2009.

11 मालविकग्निमित्रम् कालिदास, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वारणसी, प्रथम अंक, पृ.13, श्लोक 5, सं.2010.
12 विक्रमोर्वशीयम कालिदास, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वारणसी, द्वितीय अंक, पृष्ठ41, सं. 2009.
13 इतिहास के आइने में महिला सशक्तिकरण, डॉ. ममता गंगवार, सरस्वती प्रकाशन कानपुर, पृ.20–21, सं.2009.
14 अभिज्ञानशाकुन्तलम्, कालिदास, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वारणसी, तृतीय अंक, पृष्ठ 146, श्लोक 13, सं. 2011.
15 मानवाधिकार एवं शिक्षा, डॉ. माता प्रसाद शर्मा, श्री कविता प्रकाशन, पृ.सं. 212, सं.2010

Skill Development Issues and Challenges in India

Er. Kumar Pradyot Dubey[1]

Abstract- *There is no doubt in the fact that modern age is full of technological innovations and researches. Every nation is approaching to adopt newer technologies and improving its engineering and research skills to fulfill the needs of its own society. Today it became the symbol of development and growth of any country. Hence, It is immensely essential for a country like India that every common people of it should have some special expertise in at least one of the various areas of technologies.*

This paper essentially is a survey paper which accommodates almost all the issues related to the 'skill development' and proposes possible solutions to improve it in context of Indian scenario.

Introduction- India and its manpower is again at the center stage of the world. This time though, it's not a predicament, but it is the source of hope to the so called 'aging' developed nations. With an expected population of 1.3 billion by 2020, 60% of which would be in the working age group (15-59 years). India is the powerhouse of the coming decade.

The term 'skill development' has came into limelight in the context of Indian development in just few months ago after the announcement of some national plans like 'Make in India', 'Digital India' etc. by the current Indian Prime Minister. According to the Oxford dictionary the term 'skill' refers to 'The ability to do something well'. So the skill development is an attempt to make people well versed in the profession they pursue or interested in.

1. Guest Faculty, Computer Sciece, M.G.C.G.V.,Chitrakoot,Satna (M.P.)

Skill Requirements- India's Population is huge at 1.21 billion. It is fast expanding at a rate of 17% and integrating rapidly into the global economy. India is among the 'young' countries in the world, with the proportion of the work force in the age group of 15-59 years, increasing steadily. However, presently only 2% of the total workforce in India have undergone skill training. India has a great opportunity to meet the future demands of the world, India can become the worldwide sourcing hub for skilled workforce. The challenges for India get magnified, as it needs to reach out to the million plus workforce ready population, while facing an ever increasing migration of labour from agriculture to manufacturing and services. With the government launching a number of schemes to empower the young workforce, the challenges magnify as there is a need for effective implementation of the scheme at the grass root level with equal participation from all the stakeholders concerned. FICCI is playing a pivotal role in this, as a 'Skill Development Aggregator.

Steps taken to Mitigate the Skill Gap-

1. The governmental Initiatives- The realization of this demographic dividend led to the formulation of the "National Skill Policy" in 2009 which set a target of imparting skills training to 500 million, by 2022. The Prime Minister's "National Council on Skill Development" is an apex institution for policy direction and review. The Council is at the apex of the three tier structure and would be concerned with vision setting and laying down core strategies. The council would be assisted by the National skill development coordination Board chaired by deputy chairman of The Planning Commission which will coordinate action for skill development both in the public and the private sector.

The national skill development Coordination Board was set up under the chairmanship of the Deputy Chairman of The Planning Commission, on the Public Private Partenership model (PPP). It performs the following functions:

Formulate Strategies to implement the decision of the Prime Minister's Council on National Skill Development.

Monitors and evaluates the outcomes of the schemes and programs for the Council.

Develops appropriate and practical solution and strategies to address regional and social imbalances.

Ensures quality control in Vocational Training and Education.

Monitors private participation strategies and helps put in place sectoral action plans.

It has planned to set up 1500 new ITIs 5000 skill development centers, across the country, as well as a National Vocational Education Qualifications Framework (NVEQF) for affiliations and accreditation of the vocational, educational and training systems.

The secretaries of Human Resource Development (MHRD) ,Ministry of Labour and Employment, Ministry of Rural Development, Ministry of Housing and Urban

Poverty Alleviation and Ministry of finance are members of The National Skill Development Coordination Board.

2. Industry Initiatives- The private sector has been taking various initiatives on its own and in collaboration with the government and international entities, to upgrade in-house training facilities and also to provide training to potential employees to make them job ready.

Many large corporation like Lersen & Toubro, Bharti Group, Hero Group, Maruti, ITC, Infrastructure Leasing & Finance Services Ltd. Etc., have established training facilities that offer world class training programs that create an environment of e-learning and innovation.

The Sector Skill Council (SSC) model, which is a National Partnership Organization that brings together academia, industry, labour and the government has been adopted from the UK, has proved useful in addressing human resource gaps in the country.

Challenges:

India's workforce, the second largest in the world after China, needs to be trained across four levels, from the ,'White Collar' workers to the 'Rust Collar' workers, linking them to job opportunities and market realities.

The skills challenges becomes acute for India considering that the country has a large portion of its population below 25 years of age. This young population can be transformed into a productive workforce giving the Indian Economy a 'Demographic Dividend' . Currently a major proportion of this population is not productively engaged in economic activities due to a skill v/s jobs requirement mismatch.

The skill v/s jobs mismatch often leads to economically inactive working age group people. This not only impacts the economy, it also has serious consequences for the society at large.

Proposed Possible Solutions-

To address the above challenges and reap the benefits of the demographic opportunity, skills initiatives in India need to focus on

(1) Quantity- Over 65% of India's large population is below 35 years of age; a robust skills training and certification system for these large number is a mammoth task. The current skill development capacity is 3.1 million persons per annum which have to be upgraded substantially to 12 million persons per annum.

(2) Quality- The National vocational Qualification Framework (NVQF) and National Vocational Education Qualification Framework (NVEQF) are Standards developed by the Sector Skill Councils (SSC's) can ensure clarity of career choices, options and acceptability of the qualifications.

(3) Access- India's large geographical territory, difficult terrain and varying social economic conditions make the implementation of standardized, skill-based instruction a huge challenge. Hence any skill based training program should be easy enough to avail the services to any common people.

Future Scenario and Conclusion-

India is emerging with one of the youngest populations in the world comprising of a highly mobile, English speaking population. India will have a 2 billion sized English speaking work force by the end of 2020. It is estimated that by 2022, India will face a demand of 500 million skilled workers.

India could look at preparing the workforce for global opportunities so that it can utilise its premium position as the human resource reservoir. Given the dynamic labour markets it also important the workforce learns and readies itself as quickly as possible.

References-

1. www. ficci.com, Federation of Indian Chambers of Commerce & Industry (FICCI) .
2. All India Coucil for Techical Education (AICTE).
3. Indian Education, Employment sector- A study in contrasts- Economic Times.

lpuk rduhdh dk LokLF; ,o i;koj.k ij iHkko

MkW0 fouksn dqekj feJ[1]

iLrkouk

सूचना तकनीकी एक ऐसी व्यवस्था है जो दुनियां के किसी भी व्यक्ति के साथ होने वाले घटना के बारे में जानकारी उपलब्ध कराती है। सूचना को समाज के विकास का स्रोत कहा जाता है। आरम्भिक दिनों में जब मनुष्य गुफा में रहकर जीवन के लिए संघर्ष कर रहा था तो उसने महसूस किया कि समुदाय में जीवन यापन करना अकेले रहने से कहीं अधिक बेहतर है। समुदाय में रहने से एक सदस्य से दूसरे सदस्य तक सूचना का आदान–प्रदान आसानी से हो जाता है। प्राचीन समय में यूनानी अगोरा सभा चौक या भारतीय पंचायतें थीं, जिनसे समाज के लोग मिलते एवं जानकारियों का आदान–प्रदान किया करते थे। आज भी यह स्थल सामुदायिक जीवन का महत्वपूर्ण अंग है। सूचना तकनीकी के कारण अतीत में कुछ ऐसे अभूतपूर्व एवं कल्पनातीत विकास हुये जो दुनिया में रह रहे लोगों को एक नेटवर्क से जोड़ना सम्भव कर दिया। आज के समाज को सूचना समाज कहा जाता है। सूचना महामार्ग के जरिए आम नागरिकों को एक दूसरे से जोड़ने का काम होता है। इन महामार्गों पर सूचना के प्रभाव में घनिष्ठ रूप से जुड़े हुये समाज की रचना की है।

1- lgk;d vkpk;Z] lekt'kkL= foHkkx] t0jk0fo0fo0] fp=dwV ¼m0iz0½

lpuk rdudh ,o i;koj.k dk lEcU/k

सूचना तकनीकी एवं पर्यावरण का गहन सम्बन्ध है। पर्यावरण के विभिन्न आयामों को सूचना तकनीकी द्वारा जनसाधारण तक पहुंचाया जा सकता है। पर्यावरण का अध्ययन, पर्यावरण पर शोध, सूचना एकत्रीकरण, पर्यावरण के विभिन्न घटकों की जानकारी सूचना तकनीकी का योगदान है। पर्यावरण पर कार्य करने वाले शोधार्थियों, शिक्षकों, जैववैज्ञानिकों, भू–वैज्ञानिकों आदि सभी लोगों को पर्यावरण सम्बन्धी प्रत्येक जानकारी सूचना तकनीकी द्वारा प्राप्त होती है। मौसम सम्बन्धी प्रत्येक जानकारी और विश्व में घटी किसी भी पर्यावरण सम्बन्धी घटना उपग्रहों के माध्यम से जमीनीं केन्द्रों तक ग्रहण की जाती है एवं उनका विश्लेषण कर बताया जाता है कि कौन सी घटना किस रूप में घटित होगी। 12 अक्टूबर 2014 को आन्ध्र प्रदेश एवं उड़ीसा में आये हुदहुद तूफान ज्वलन्त उदाहरण है। समय से जानकारी प्राप्त हो जाने का परिणाम था कि हजारों लोगों का जान बचाया जा सका। इसी प्रकार बड़े–बड़े कारखानों या संयत्रों में रेडियो उपकरण लगे रहते हैं जिनसे किसी घटना या आपातकालीन स्थिति की सूचना सम्बन्धित केन्द्रों को पहुंचाया जाता है। सिलिकॉन वैली के नाम से प्रसिद्ध कम्प्यूटर क्रान्ति में मक्का में सिलिकान वैली टाक्सिक्स कालेशन नामक संगठन का अनुमान है कि दुनिया भर में 1997 से 2007 के बीच 50 करोड़ कम्प्यूटर कचरे में परिवर्तित हो जायेंगे अर्थात् छह अरब पौंड प्लास्टिक के कबाड़ का पहाड़। वर्ल्ड वाच संगठन की वार्षिक रपट के अनुसार 1997 में 29 लाख टन ई–कचरा पैदा हुआ था जिसे विभिन्न तालाबों में दबाया गया। 1998 में दो करोड़ से ज्यादा कम्प्यूटर बेकार हो गए, जिसमें से केवल 13 प्रतिशत को दोबारा इस्तेमाल किया गया या कलपुर्जों को पुनर्संवर्धित किया गया। हर कम्प्यूटर और टीवी की स्क्रीन में चार से आठ पौंड तक लेड धातु का उपयोग होता है। कम्प्यूटर मॉनीटर के शीशे में कुल वजन का 20 प्रतिशत हिस्सा लेड का होता है। यह धातु दोबारा मिट्टी में मिल कर उसे संक्रमित करती है। आज हर नए कम्प्यूटर की खपत के पीछे एक कम्प्यूटर कचरे में परिवर्तित हो रहा है। अभी कम्प्यूटर की खपत सबसे ज्यादा अमरीका में होती है। इसलिए वहाँ इस ई–कचरे का साया सबसे भयावह तरीके से मंडरा रहा है। 1980 से अब तक लगभग 50 करोड़ कम्प्यूटर मॉनीटर बेचे जा चुके हैं जिनमें से खराब होने के बाद केवल 17 लाख मॉनीटर ही दोबारा इस्तेमाल किए गये इनमें से लगभग 10 लाख मानीटर चीन को निर्यात कर दिये गये। मोबाइल फोन भी ई–कचरे का बड़ा अंग बनते जा रहे हैं। इन्फोकॉम के अध्ययन के अनुसार अमरीका में अगले तीन वर्षों में 13 करोड़ सेलफोन हर साल कचरे के डिब्बों में फेंक दिये जायेंगे। इसका मतलब है कि हर वर्ष 65 हजार टन कचरा पैदा होगा,

जिसमें अत्यधिक खतरनाक और संक्रमण फैलाने वाले रसायन व धातु तत्व होंगे जिनका पुनः शोधन सम्भव नहीं है। भारत और अन्य विकासशील देशों में ऐसे कचरे के पुर्नशोधन की सुविधाएँ नगण्य हैं। यहाँ के पर्यावरण को और भी ज्यादा नुकसान पहुँच सकता है। संयुक्त राष्ट्र विश्वविद्यालय के अनुसार खतरा सिर्फ इस बात से ही नहीं है कि यह ई–कचरा पर्यावरण को तबाह करेगा बल्कि इन उपकरणों के निर्माण की प्रक्रिया भी प्राकृतिक संसाधनों के लिए संकट का पर्याय बन गयी है। एक अध्ययन के अनुसार एक डेस्कटाप कम्प्यूटर उसका मॉनीटर बनाने में उसके वजन से दस गुना ज्यादा प्राकृतिक ऊर्जा के स्त्रोंतों का इस्तेमाल होता है। अनुसंधानकर्ताओं ने इस अध्ययन के दौरान पाया कि 24 किलो कम्प्यूटर और 27 इंच के मॉनीटर के निर्माण में 240 किलो प्राकृतिक ईंधन के स्त्रोंत, 22 किलो रसायन तथा 1500 किलो पानी का इस्तेमाल होता है। सभी स्त्रोतों का कुल वजन है 118 टन। ऐसे में जब हर साल 13 करोड़ से ज्यादा कम्प्यूटर बाजार में बेचे जा रहे हैं, यह प्रश्न उठता है कि क्या सूचना क्रान्ति के लाभ उठाने के लिये मानव का अस्तित्व भी बचा रहेगा?

lpuk rduhdh dk LokLF; ij /kukRed iHkko

सूचना तकनीकी का स्वास्थ्य पर धनात्मक प्रभाव भी उल्लेखनीय है। आज सम्पूर्ण विश्व दृश्य व श्रव्य दोनों ही साधनों से एक इकाई से सम्बद्ध है। मनोरंजन में इनका उल्लेखनीय स्थान है। आपको टी.वी., फोन, मोबाइल, रेडियो से सूचना मिलते ही तनाव कम हो जाता है। स्वास्थ्य रक्षा सम्बन्धी गतिविधियों के विकास को सक्षम बनाने की दृष्टि से सूचना तकनीकी सशक्त साधन है। यह अस्पताल प्रबन्धन एवं रोगी परिचर्चा के लिए विभिन्न प्रणालियां उपलब्ध कराती है। यह किसी क्षेत्र समस्त अस्पतालों के लिए औषधियों की केन्द्रीय नियन्त्रण प्रणाली की सुविधा प्रदान करती है। यह उपयुक्त दवाओं का वितरण, जहां उपलब्ध है, वहां से जहां जरूरत है तेज गति और सहूलियत के साथ कराती है। एक आम व्यक्ति किसी भी क्षेत्र के डाक्टर या विशेषज्ञ से सम्पर्क कर सकता है एवं श्रृष्ठ परामर्श ले सकता है। मरीज के वीडियो चित्र, ई.सी.जी. व अन्य चिकित्सकीय रिपोर्ट आदि भी जांच के लिए डाक्टर के पास इसी माध्यम से भेजी जा सकती है एवं सलाह मशवरा लिया जा सकता है। विश्व के किसी कोने पर बैठा बड़ा चिकित्सक दूर देश में कार्यरत चिकित्सक को शल्य क्रिया के दौरान सलाह और दिशा–निर्देश दे सकता है।

lpuk rduhdh dk LokLF; ij _.kkRed iHkko

जो लोग घण्टों मोबाइल पर बातें करते हैं उन लोगों ने अनुभव किया है कि उनके कान व आँख के पास उनकी संवेदनशीलता बढ़ गयी है। वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध

कर दिया है कि मोबाइल में लगी बैटरी तथा उसकी ऊर्जा तंरगें हृदय और मस्तिष्क के सूक्ष्म तन्त्रिकाओं पर कुठाराघात करती है और उनकी कार्यक्षमता को कुप्रभावित करती है। जिन मकानों के ऊपर से उच्च विभव (भ्पही टवसजंहम) की विद्युत लाइनें गुजरती हैं अथवा जिन मकानों के पास ट्रांसफार्मर हैं वहाँ के निवासियों ने स्वास्थ्य सम्बन्धी गड़बड़ियों की शिकायत दर्ज की है। जो लोग घंटों कम्प्यूटर पर कार्य करते हैं वे लोग आँखों की समस्याओं से ग्रसित होते देखे गये हैं। महानगरों के बच्चे कस्बों व गाँवों के बच्चों से मोटे हैं जबकि उन्हें इस उम्र में मोटा नहीं होना चाहिए। पश्चिम के देशों में मोटापा एक स्वास्थ्य समस्या है। एक सर्वेक्षण के अनुसार यहाँ के 62 प्रतिशत मोटे लोग हैं। ये मोटा होने का कारण, कम्प्यूटर, टीवी, वीडियो गेम के सामने घण्टों बैठने का दुष्परिणाम है। वर्तमान में नई पीढ़ी के बच्चे मस्तिष्क की दृष्टि से या बुद्धि विकास की दृष्टि से ज्यादा विकसित हैं जबकि शारीरिक दृष्टि से उतने पुष्ट नहीं हैं।

वर्तमान समय प्रचार का युग है। हर घटना का चौबीसों घंटे चलने वाले चैनलों पर इतना अधिक प्रसारण किया जाता है कि समाज में उसका नकारात्मक प्रभाव भी दिखाई पड़ने लगता है। ऐसा ही नकारात्मक प्रभाव रामायण एवं शक्तिमान सीरियलों के प्रसारण के दौरान भी देखा गया जब बच्चों ने तीर कमान से खेल–खेल में अपने साथियों की आँखें फोड़ दीं एवं कई बच्चे शक्तिमान की तरह छतों से कूद कर मौत के मुँह में चले गए। मीडिया के प्रचार प्रसार का समाज पर नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए।

fu"d"k ,o l>ko

किसी भी व्यक्ति का स्वास्थ्य भोजन, व्यायाम और विश्राम का परिणाम है। निकटवर्ती प्रभावी पर्यावरण यदि इनमें सहायक है, तो स्वास्थ्य प्राप्ति होगी और यदि बाधक है तो अस्वास्थ्य की प्राप्ति होगी। शरीर पाँच तत्व 'fNfr] ty] ikod] xxu] lehj* से मिलकर बना है। इनके सन्तुलन एवं रूचिकारी प्राप्ति स्वास्थ्य देगा, असंतुलन अस्वस्थ करेगा। जीवन के संवाहक पर्यावरणीय कारक जल, वायु, वनस्पति और पशु उत्पाद यदि विषाक्त मिले तो स्वास्थ्य संकट खड़ा होगा। वर्तमान में वायु प्रदूषण–श्वसन तन्त्र, जल प्रदूषण–पाचन तन्त्र, शोर प्रदूषण–तान्त्रिक तन्त्र पर कुठाराघात कर रहा है। मानव देह अति संवेदनशील है। देह में कुछ भी क्षतियाँ अपूरणीय हैं। अतः पर्यावरण के प्रति जागरूकता अपरिहार्य है।

- सूचना प्रौद्योगिकी को समाज एवं पर्यावरण के विकास का स्रोत बनाना है;
- निरन्तर प्रदूषण की दशा का अध्ययन करना;
- पर्यावरण संरक्षण कानून के प्रचार–प्रसार में सहयोग;

- ऊर्जा के ऐसे स्रोत को बढ़ावा देना जिनसे पर्यावरण संतुलन बना रहे;
- जन चेतना द्वारा जागरूकता पैदा करना।

l UnHkZ%

1. अवस्थी, एन.एम.: पर्यावरणीय अध्ययन, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा 2006, पृ0366
2. पाण्डेय एस.एस. एवं दुबे, आर.के.: पर्यावरण अध्ययन, दिशा पब्लिकेशन, 10 सम्मलन मार्ग, इलाहाबाद 2008, पृ0 136
3. अग्रवाल, अनिलः हमारा पर्यावरण, पर्यावरण कक्ष, पर्यावरण मंत्रालय, नई दिल्ली 1994, पृ0 160
4. चाणक मासिक पत्रिका, वर्श 10 अंक 9, सितम्बर 2010 लेख निसस्तीकरण व भू–मण्डलीकरण, पृ0 32
5. पांडेय, महेन्द्र अविश्कार पत्रिका जुलाई 1964 विज्ञान एवं पर्यावरण विशेशांक, शीर्शक विश्व पर्यावरण संरक्षण में हमारी उपलब्लिधयां पृ0 42

fo'k'k ¼ch0,M0½ Jo.k ckf/krkFkh d s izf'k{k.kkfFkZ;ks dks vH;kl f'k{k.k esa gksus okyh leL;kvks dk v/;;u

e|dUn ekgu ik.M;[1]

iLrkouk

कोई भी राश्ट्र तभी भाक्ति ाली हो सकता है। जब उसके नागरिक समृद्ध ाली होगें। नागरिकों की समृद्धि के लिए यह आव यक है कि उसे ि ाक्षा का समुचित अवसर प्राप्त हो। यदि समाज का कोई वर्ग ि ाक्षा से वंचित रह जाता है, वह समाज में पिछड़ जाता है। जो राश्ट्र की उन्नति में बाधक होता है।

समाज में एक ऐसा भी वर्ग है जो सामान्य ि ाक्षण प्रि ाक्षण पद्धति से स्वयं को लाभान्वित नहीं कर पाता उसके लिए यह आव यक है कि उसकी समस्या को समझा जाये व उसके लिए वि ोश ि ाक्षा का प्रबन्ध सुनि चत किया जाये ताकि वह भी राश्ट्र के विकास में अपना योगदान सुनि चत कर सके। इसके लिए यह आव यक है कि उनके प्रि ाक्षकों, ि ाक्षकों (वि ोश बी0एड0एच0आई0) के अभ्यास ि ाक्षण में कौन–कौन सी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। उन समस्याओं का बेहतर समाधान क्या है? व उन कमियों को कैसे दूर किया जा सकता है। जिससे श्रवण बाधित विद्यार्थियों के प्रभावी ि ाक्षक बन सके। इन समस्याओं का समाधान करना आव यक है। तभी उन श्रवण बाधित विद्यार्थियों को राश्ट्र के लिए उपयोगी बना सकेगें।

mn~ns'; dFku

''विशेश (बी0एड0) श्रवणबाधितार्थ के प्रि ाक्षणार्थियों को अभ्यास ि ाक्षण में होने वाली समस्याओं का अध्ययन''।

1- lgk;d vkpk;Z] t0jk0fo0fo0] fp=dwV ¼m0iz0½

'kks/k mn~ns';

1. वि ोश बी0एड0 श्रवणबाधितार्थ प्रि ाक्षार्थियों को पाठ्य योजना के निर्माण में होने वाली समस्याओं का अध्ययन।
2. वि ोश बी0एड0 श्रवणबाधितार्थ प्रि ाक्षार्थियों को कक्षा समायोजन में होने वाली समस्याओं का अध्ययन।
3. वि ोश बी0एड0 श्रवणबाधितार्थ प्रि ाक्षार्थियों को श्रवणबाधित विद्यार्थियों से सम्प्रेशण स्थापित करने में होने वाली समस्याओं का अध्ययन।

'kks/k ifjdYiuk

वि ोश बी0एड0 श्रवणबाधितार्थ प्रि ाक्षार्थियों को अभ्यास ि ाक्षण में समस्याओं का सामाना करना पड़ता है।

'kks/k dk;Z dk ifjlheu

प्रस्तुत भाोध कार्य का अध्ययन क्षेत्र विस्तृत होने के कारण केवल उत्तर प्रदे ा में संचालित वि ोश बी0एड0 श्रवणबाधितार्थ प्रि ाक्षार्थियों तक सीमित किया गया है।

'kks/k dk;Z dh tula[;k

प्रस्तुत भाोध कार्य में चित्रकूट एवं इलाहाबाद जनपद में वि ोश बी0एड0 श्रवणबाधितार्थ का प्रि ाक्षण प्राप्त करने वाले वर्तमान में सभी प्रि ाक्षणार्थियों को भाोध कार्य की जनसंख्या के रूप में समाहित किया गया है।

'kks/k dk;Z dk U;kn'kZ

प्रस्तुत भाोध के प्रतिद ा के रूप में वि ोश बी0एड0 श्रवणबाधितार्थ में प्रि ाक्षण प्राप्त करने वाले कुल 50 प्रि ाक्षणार्थियों को उद्दे यपरक न्याद ा विधि से चयनित किया गया है।

ekiu d midj.k dk i'kklu ,oa vkdM+ksa dk ladyu

प्रस्तुत भाोध की उद्दे यों की पूर्ति हेतु भाोधकर्ता ने स्वनिर्मित वि ोश बी0एड0 श्रवणबाधितार्थ प्रि ाक्षार्थियों के अभ्यास ि ाक्षण में होने वाली समस्याओं से सम्बन्धित दृश्टिकोण मापनी का सृजन किया तथा दृश्टिकोण मापनी की वैधता एवं वि वसनीयता हेतु वि ोश ि ाक्षाविद् (श्रवणबाधितार्थ) के समक्ष प्रस्तुत किया। आव यक सुधार व परीक्षण के उपरान्त दृश्टिकोण मापनी को प्रयोग हेतु प्रस्तुत किया।

दृश्टिकोण मापनी में समस्या की प्रकृति को दृश्टिगत रखते हुए प्र नों को कुल तीन खण्डों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक खण्ड में 15–15 प्र नों का समावे ा किया गया है। आव यक उत्तर प्राप्त करने हेतु तीन विकल्प प्रस्तुत किये गये हैं।

क. सहमत ख. असहमत ग. अनिि चत

i;qDr lkf[;dh fof/k

प्रस्तुत ाोध कार्य में ाोधकर्ता प्राप्त आंकड़ों का वि लेशण करने हेतु प्रति ात विधि का प्रयोग किया गया है।

प्रति ात = कुल प्राप्तांक / कुल वि ोश बी0एड0 श्रवणबाधितार्थ प्रि ाक्षार्थियों की संख्या

Jo.kckf/krkFk i`f'k{k.kkfFk;k dk vfHker

Øl0	leL;k	lger	vlger	vfuf"pr
1	पाठयोजना निर्माण	60 %	22 %	08%
2	कक्षा में समायोजन	54%	18%	28%
3	विद्यार्थियों से सम्प्रेशण	76%	10%	14%

रेखाचित्र–प्रि ाक्षणार्थियों द्वारा प्राप्त आंकड़ों का विवरण

iq[k fu'd'k

1. प्रि ाक्षण प्राप्त करने वाले वि ोश बी0एड0 श्रवणबाधितार्थ के कुल प्रि ाक्षणार्थियों में से 30 प्रि ाक्षणार्थियों अर्थात् 60 प्रति ात ने यह स्वीकार किया कि उन्हें पाठयोजना निर्माण में समस्या होती है। जबकि 11 अर्थात् 22 प्रति ात प्रि ाक्षणार्थियों ने इसे अस्वीकार कर दिया व 04 अर्थात् 08 प्रति ात प्रि ाक्षणार्थियों ने अनिि चत में जवाब दिये।
2. कक्षा समायोजन के सम्बन्ध में जब प्रि ाक्षणार्थियों से यह जानने का प्रयास किया गया कि आपको कक्षा के विभिन्न क्रिया–कलापों के समायोजन में समस्या होती है तो 27 प्रि ाक्षणार्थियों अर्थात ् 54 प्रति ात ने अपनी सहमति व्यक्त की जबकि 09 अर्थात् 18 प्रति ात असहमत रहे व 14 प्रि ाक्षणार्थी अर्थात् 28 प्रति ात अनिि चत पाये गये।
3. प्रि ाक्षणार्थियों से सम्प्रेशण सम्बन्धी समस्या के सन्दर्भ में जब पूछा गया तो प्रि ाक्षणार्थियों का एक बहुत बड़ा वर्ग 38 प्रि ाक्षणार्थी अर्थात् 76 प्रति ात यह स्वीकार किया कि उन्हें सम्प्रेशण में समस्या होती है। जबकि 05 प्रि ाक्षणार्थी अर्थात् 10 प्रति ात इस जवाब से असहमत रहे व 07 प्रि ाक्षार्थी अर्थात् 14 प्रति ात का विचार अनिि चतता में पाया गया।

lUnHk xUFk lph&

1. लोके ा कौल (2004) '' ौक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली'' विकास पब्लि िंग हाऊस प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली–110014, पृ0सं0 25–65।
2. सिंह, मया ांकर (2004) ''मनोविज्ञान, समाज ाास्त्र तथा ि ाक्षा में ाोध विधियां'' मोतीलाल बनारसीदास, जवाहर नगर नई दिल्ली 11007 पृ0सं0 112, 117, 124–130
3. जे0सी0 अग्रवाल पी0डी0 पाठक (2012–2013) '' ौक्षिक दृश्टिकोण'' अग्रवाल पब्लिके ान 28/115 ज्योति ब्लाक, संजय प्लासी आगरा–2, पृ0सं0 97–111, 304, 311–325
4. आर0ऐ0 जो ाफ ''पुनर्वासा के आयाम''
5. सुमन भनोट ''श्रवण क्षतियुक्त बालक कारण, पहचान एवं उपचार''।
6. डी0एस0सी0 (एच0आई0) मैनुअल।

ikFkfed fo|ky;ksa esa eY; f'k{kk dk l{e v/;;u

vferk feJk[1]

iLrkouk

प्राथमिक ि ाक्षा का इतिहास उतना ही पुराना है। जितना मानव की सभ्यता का वैदिक काल, को इतिहास का प्राचीनतम काल माना जाता है। इस युग में वर्णाश्रम व्यवस्था का अभ्युदय इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि मानव आरम्भ से ही ि ाक्षा को जीवनीययोगी मानकर चलता रहा है। आरम्भिक ि ाक्षा के रूप का वर्णन गुरूकुलो के वर्णन से मिलता है विधारम्भ–संस्कार 'ओम नमः सिद्वम' से कराया जाता था। उपनयन संस्कार की उम्र 8, 11, 12 वर्श थी। वेद वेदांग व्याकरण, साहित्य, छन्द निरूक्ति कल्प–ज्योतिश, गणित, चिकित्सा आदि पाठयक्रम के विशय थे। अनु ाासन मनोवैज्ञानिक था भाुल्क दक्षिणा के रूप में लिया जाता था। ि ाक्षा भाास्त्रियों और वैज्ञानिको की यह पक्की राय है कि दो से छः साल तक के बच्चों को और अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए। बच्चो की यह आरम्भिक अवस्था अत्यधिक प्रभाव ााली और लचीली समझी जाती है। यह ठीक ही कहा गया है कि जीवन की अवस्था में मनचाही आदतों को बुनियाद रखी जा सकती है। प्राथमिक स्कूल में दोशपूर्ण व्यवस्था के कारण ही कि ाोर बालकों में कई समस्याएँ खड़ी हो जाती है। इसलिए एक मनो वैज्ञानिक ने ठीक ही कहा है।

''बच्चों के पहले पांच साल मुझे दे दो और भोश जीवन तुम ले लो'' गाँधी जी के भाब्दों में ''वास्तविक ि ाक्षा माँ के गर्भ से ही भाुरू होती है, जब वह बच्चे की जिम्मेदारी की सम्भावना आरम्भ होती है, असल में प्राइमरी ि ाक्षा बच्चे के

जन्म

1- lgk;d vkpk;Z] t0jk0fo0fo0] fp=dwV ¼m0iz0½

से सुनिि चत होती है, और उसके नियमित रूप से प्राइमरी स्कूल में दाखिल होने तक चलती है। यह केवल कुछ वर्शों करना होता है, और घर के वातावरण को इतना सुविधाजनक बनाना चाहिए, जिससे बच्चे में उचित आदतों का विकास हो सके।

iFkfed f'k{kk d mnn';

1- xklvkou d vulkj– मिसग्रास ओवन के भाब्दों में प्राइमरी ि ाक्षा का मुख्य उद्दे य निम्नलिखित है।

1. बच्चों के लिए स्वथ्य बाहरी वातावरण का प्रबन्ध करना, जैसे प्रका ा, धूप, खुला स्थान और भाुद्ध हवा आदि।
2. स्वस्थ्य प्रसन्न और नियमित जीवन की व्यवस्था करना तथा डाक्टरी परीक्षण का लागातार प्रबन्ध करना।
3. प्रत्येक बच्चें की अच्छी आदतें डालने में सहायता करना।
4. कल्पना के अभ्यास और विभिन्न रूचियों तथा कलाओं के विकास के अवसर प्रदान करना।
5. छोटे स्तर पर सामुदायिक जीवन का अनुभव प्रदान करना, जहाँ एक ही अवस्था के या विभिन्न अवस्थाओं के बच्चे एक दूसरे के साथ काम कर सकें और खेल सकें।
6. घरेलू जीवन के साथ वास्तविक साम्य स्थापित करना।

2- f'k{kk ¼dkBkjh½ vk;kx d vulkj– ि ाक्षा आयोग (1964–66) ने प्राइमरी ि ाक्षा के निम्नलिखित आठ उद्दे य बताये है–

1. बच्चें में अच्छे स्वास्थ्य और अच्छी आदतों का विकास करना, तथा उसकी व्यक्तिगत जरूरतों के लिए आव यक बुनियादी बातों का विकास करना जैसे कपड़े पहनना, भौचादि की आदतें, नहाना, धोना सफाई करना खाना आदि।
2. आव यक सामाजिक व्यवहार तथा सामाजिक आदतों का विकास करना। समुदाय में भाग लेने के लिए प्रोत्साहन देना तथा दूसरों के अधिकारों और वि ोश अधिकारों के प्रति बच्चे को सचेत करना।
3. बच्चे को अपनी अनुभूतियों और भावनाओं को समझने में सहयोग करना। प्रकट करना तथा उन पर नियंत्रण करना ताकि उनमें भावात्मक परिपक्वता का विकास हो।
4. सौन्दर्य प्र ांसा को प्रोत्साहन न देना।
5. वातावरण के सम्बन्ध में बच्चे की बौद्धिक जिज्ञासा को उत्तेजित करना और उसे इस दुनिया को समझने में सहायता देना, जहाँ वह रहता है। अनुसंधान, प्रयोग तथा खोज के अवसर प्रदान करके उनमें नई रूचियां पैदा करना।

6. बच्चे को आत्माभिव्यक्ति के लिए पर्याप्त अवसर देना उसमें स्वतंत्र तथा निर्माणात्मक वृत्ति को प्रोत्साहन देना।
7. अपने विचारों और भावनाओं को भ्ुद्ध स्पश्ट तथा धारा प्रवाह भाशा में प्रकट करने की योग्यता का विकास करना।
8. बच्चे में अच्छे स्वास्थ्य का विकास करना तथा बुनियादी कौ ाल और माँस पेि ायों में पर्याप्त सामंजस्य स्थापित करना। राश्ट्रीय भौक्षिक अनुसंधान एवं प्रि ाक्षण परिशद के द्वारा सन 1975 में तैयार किये गये दस्तावेज में प्राथमिक ि ाक्षा को इस प्रकार बताया गया है।

- अन्य व्यक्तियों से वार्तालाप के लिए प्रथम भाशा (मात्रृभाशा) का ज्ञान प्रदान करना।
- व्यावहारिक समस्याओं के समाधान के लिए जोड़, घटाव, गुणा व भाग की योग्यता प्रदान करना।
- वैज्ञानिक खोज विधि को सिखाना तथा विज्ञान व तकनीकी के महत्व को समझाना।
- राश्ट्रीय प्रतीकों (जैसे राश्ट्रध्वज, गाश्ट्रगान आदि) तथा प्रजातांत्रिक विधियों व संस्थाओं के प्रति आदर भाव उत्पन्न करना।
- भारत की मिली–जुली संस्कृति से परिचय करना तथा अस्पृ यता जातिवाद व साम्प्रदायिकता का विरोध करना या सिखाना।

ikFkfed f'k{kk dh vko';drk& ि ाक्षा आयोग 1964–66 ने निम्नलिखित भाब्दों में प्राइमरी ि ाक्षा की आव यकताओं पर बल दिया है। प्राइमरी ि ाक्षा बच्चों के वि ोशकर उन बच्चों के जिनका घरेलू वातावरण संतोश जनक न हो, भारीरकि, भावात्मक और बौद्धिक विकास के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। सभी मनो वैज्ञानिक और ि ाक्षा भास्त्री इस बात पर एकमत हैं, और प्राइमरी अवस्था में उचित आदतें पैदा करने की आव यकता पर बल देते हैं, मनोवैज्ञानिकों का यह वि वास है कि किसी भी व्यक्ति के कि ोर जीवन की ग्रन्थियों की जड़ें उसके भौ ाव और बालापन में होती है। स्कूल अवस्था में अपने आप को उचित तथा अनुकूल ढंग से न ढाल सकने के कारण ही कि ोर जीवन की अधिकां ा मानसिक और भावात्मक उत्तेजना पैदा हो जाती है।

स्कूल से पहले की अवस्था को अत्यन्त लचीला और ि ाक्षा की दृश्टि से प्रभाव ाली समझा जाता है। इस समय बनायी गयी आदतें मनुश्य के चरित्र और व्यक्तित्व का निर्माण करती है। इसलिए यह बहुत आव यक समझा जाता है कि बालापन में आदतों के निर्माण की ि ाक्षा दी जाए........ स्कूल अवस्था के

अधिका ाः बच्चों की घरेलू परिस्थितियां अनुकूल नही होती। अधिकां ा बच्चों का पालन पोशक गन्दे अन्धेरे और मैले घरों में होता है जहां उनको न तो अच्छी भोजन की खुराक मिलती है और न ही ठीक ढंग से उनकी देखभाल होती है। वि ोशकर गाँवो में तो हालत और भी बिगड़ी हुई है। बच्चों का भाारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा होना चाहिये पढ़ने के लिए, समाज और हित भी इस बात की जोरदार माँग करता है कि जल्दी ही ज्यादा से ज्यादा प्राइमरी स्कूल खोले जाए, हमारे दे ा के अधिकां ा बच्चों को संतोशजनक खुराक नहीं मिलती जिसके फलस्वरूप उनमें कई प्रकार की भाारीरिक अयोग्यताएं पैदा हो जाती है। यदि इनकी ओर समय पर ध्यान नहीं दिया गया तो उनके भविश्य के निर्माण में यह बाधक होगी।

कई घरानों में मातायें खेतों या कलकारखानों में काम करने के लिए बाहर जाती है। हो सकता है कि उनकी अनुप्रस्थिति में बच्चों की उचित देखभाल करने वाला कोई न हो ऐसे बच्चों के लिए प्राइमरी स्कूल का होना आव यक है। रूस में लगभग सभी माताएं किसी न किसी व्यवसाय में लगी रहती है वहाँ बच्चों की देखभाल नर्सरी और किंडर गार्डन स्कूलों में ही होती है। उस दे ा में स्कूल ि ाक्षा को सार्वजनिक ि ाक्षा प्रणाली का एक महत्वपूर्ण अंग समझा जाता है।

एक प्राइमरी स्कूल बच्चों को दाखिल होने के लिए तैयार करता है। बच्चे स्कूल के वातावरण में अपने आप को ढालना सीख जाते हैं। इस दृश्टिकोण से उनकी बहुत सी समस्याएं सुलझ जाती है और स्कूल के नाम से उनको डर नहीं लगता वे पढ़ने लिखने में आनन्द का अनुभव करने लगते हैं क्योंकि इसके लिए वे मानसिक रूप से तैयार होते हैं।

प्रेम सहानुभूति संरक्षण और खेल बच्चों के विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। यदि बच्चे की इन अनिवार्य आव यकताओं को घर पूरा नहीं करता है प्राइमरी स्कूल को ये आव यकताएं पूरी करनी चाहिए ऐसी हालत उन घरानों की होती हैं जहां माता–पिता, सौतेले हों या जहाँ आतंरिक झगड़ो के कारण असंतोश और अ ाान्ति हों भारत में प्रायः ऐसी ही हालत है।

यदि बच्चे को घर में सामाजिक जीवन न मिले अर्थात, यदि वह घर का इकलौता बच्चा हो तो एक और गम्भीर आव यकता खड़ी हो जाती है एक प्राइमरी स्कूल इस आव यकता को पूरा करता है और बडी आसानी से इस व्यवधान को भर देता है।

eY; f'k{kk

जीवन मूल्य मानवीय आचरण तथा व्यवहारों के मापदण्ड होते है जीवन मूल्यों का आधार मानवीय अनुभव सामाजिक, परम्परायें एवं विभिन्न संस्कृतियां होती हैं विविध जीवन मूल्यों के नियमन एवं विकास में आध्यात्मवाद, ई वरवाद,

नियतिवाद एवं परलोकवाद आदि धार्मिक एवं दा निक सिद्धान्तों का समुचित योगदान होता है। आज मूल्य परक अवधारणा में बदलावआ रहा है। आधुनिक भारतीय समाज का स्वरूप प्राचीन भारतीय समाज से कई अर्थों में भिन्न दिखाई पड़ता है। पुराने भारतीय मूल्य लुप्त हो रहे हैं। हमारी मान्यताएं परम्परायें और प्राथमिकताएं बदल रही हैं हमने आध्यात्मिकता के महत्व को नकारा है। और पा चात्य जगत के जीवन मूल्यों तथा उनकी भौतिकवादी सभ्यता को अपनाते जा रहे हैं, हमारे जीवन मूल्य का क्षरण हो रहा है। प्रसिद्ध अर्ध ास्त्री ग्रे ामक का नियम है कि ''खोटा सिक्का अच्छे सिक्के को चलन से बाहर कर देता है।'' हमारे मूल्यों पर ग्रे ाम का नियम पूरी तरह से लागू है। भारतीय समाज में एक आम आदमी की यही धारणा है कि हमारे जीवन मूल्यों में क्षरण हो रहा है।

ि ाक्षा विदों एवं समाज भाास्त्रियों ने मूल्यों के क्षरण के कई कारण भी बतायें हैं। जैसे– आधुनिकता का प्रभाव, पा चात्य सभ्यता का अन्धानुकरण, भौतिकवादी सभ्यता के प्रति अप्रत्याि ात मोह, अनी वरवादी प्रवृत्ति, तर्क प्रधान चिन्तन, वैज्ञानिक प्रवृत्ति का विकास फिर भी इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता कि मानवीय मूल्यों का ह्रास हुआ है।

आज भी भारतीय संस्कृति जीवित है यूनान मिस्त्र और रोम की संस्कृतियां विलुप्त हो गई परन्तु भारतीय सभ्यता अभी भी अपनी प्राचीन धरोहर को संचित किये हुए हैं।

fu'd'k& अन्तोगत्या यह कहा जा सकता है कि बालक की प्राथमिक ि ाक्षा जन्म से ही प्रारम्भ हो जाती है। परिवार तथा परिवार के सदस्यों का प्रभाव अमिट रूप से बालक पर पडता है। बाल्यावस्था में बालकों में जिन आदतों का निर्माण हो जाता है।

वह जीवन पर्यन्त चलता रहता है। इसलिए आव यक है कि परिवार का वातावरण अच्छा हो। क्योंकि परिवार बालक की प्रथम पाठ ाला है तथा माँ उसकी प्रथम ि ाक्षिका होती है। परिवार में ही रहकर एक बालक में मानवीय मूल्यों तथा उसकी अर्न्तनिहित भाक्तियों का विकास होता है। भारतवर्श में आज प्राथमिक ि ाक्षा में अपव्यय व अवरोधन की मात्रा काफी अधिक है भारत जैसे राश्ट्र के लिए तो प्राथमिक ि ाक्षा जो अनिवार्य व निः ाुल्क है। यह प्राथमिक ि ाक्षा के लक्ष्य को यथा ीघ्र प्राप्त करना चाह रहा है। यह स्थिति अत्यन्त चिंताजनक है। प्राथमिक स्तर के बालकों के लिए पाठ्यक्रम निर्माण और भी रूचिकर बनाया जाय, उनमें हस्त कौ ाल का विकास किया जाय तथा ि ाक्षा के प्रति बालकों तथा उनके अभिभावकों को और जाग्रत किया जाय ताकि समाज और राश्ट्र स ाक्त बन सके।

I inHk xUFk

1. डॉ0 वि0के0 कोहली (भारतीय ि ाक्षा की वर्तमान समस्यायें) पूर्वडीन ऑफ कालिज कुरूक्षेत्र वि ववविद्यालय तथा पूर्व प्राचार्य सोहन लाल डी0ए0वी0 कालेज ऑफ एजुके ान अम्बाला भाहर।
2. सुरे ा भटनागर (आधुनिक भारतीय ि ाक्षा अध्यक्ष) विभाग, डी0ए0वी0 कालेज देहरादून– सयोंजक पाठ्यक्रम परिशद सदस्य कला संकाय विद्या परिशद एवं कार्य परिशद गढवाल वि ववविद्यालय श्रीनगर गढवाल श्रीमति अनामिका सक्सेना, वी0एस0सी0, एम0एम0, एम0फिल
3. प्रो0 एस0पी0गुप्ता (आधुनिक भारतीय ि ाक्षा की समस्यायें) एम0ए0, एम0एस0सी0, एम0एड0, एम0फिल0 पी–एच0डी0, आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, ि ाक्षा भाास्त्र विभाग उ0प्र0 राजर्शि टण्डन मुक्त वि ववविद्यालय, डॉ0 अलखा गुप्ता, एम0एम0एम0एड0, डीफिल (इलाहाबाद वि ववविद्यालय) के0पी0 प्रि ाक्षण महाविद्यालय, इलाहाबाद
4. डॉ0 मालती सारस्वत (भारतीय ि ाक्षा का विकास एवं सामयिक समस्याऐं) एम0ए0, एम0एड0, डी0फिल0 पूर्व विभागाध्यक्ष ि ाक्षा भाास्त्र सी0एम0पी0 डिग्री कालेज इलाहाबाद प्रो0 एस0एल0 गौतम, एम0ए0एम0 एड0 वर्तमान ि ाक्षा संकाय रीडर, इलाहाबाद डिग्री कालेज इलाहाबाद।

ykdr= vkj lkekftd ifjorZu % vcMdj dh utj e

vf=efu f=ikBh[1]

iLrkouk %

लोकतंत्र के पक्के हिमायती होने के बावजूद अंबेडकर ने संविधान में पूंजीवादी विकास का रास्ता अपनाया और इसके लिए उन्होंने जनवरी 1944 में बंबई योजना का प्रतिपादन किया। इसके जरिये एक प्रकार से उन्होंने 15 वर्षों के लिए एक निवेश योजना प्रस्तुत की जो पहली तीन पंचवर्षीय योजनाओं की तरह हैं।

''मेरे विचार में लोकतंत्र शासन की वह विधा है जिसके जरिये बिना किसी खून–खराबे के सामाजिक जीवन में परिवर्तन लाए जा सकते हैं।''

बाबा साहब अंबेडकर (पूना जिला विधि पुस्तकालय में 22 दिसंबर 1952 को उनके संबोधन से) उक्त उद्धरण बाबा साहब अंबेडकर के लोकतंत्र के बारे में विचारों का गहन परिचय देता है और संकेत देता है कि वह इससे क्या उम्मीदें रखते थे। यह सामान्य विश्वास है कि क्रांति के जरिये क्रांतिकारी परिवर्तन लाए जा सकते हैं और क्रांति के साथ ही खून–खराबा भी जुड़ा होता है। निहित आशंका यह भी होती है कि क्रांति और लोकतंत्र एक होते दूसरे के अनुकूल नहीं हैं। क्रांति के बारे में सामान्य विचार भी ऐसे ही हैं। वह प्रतिनिधित्व वाली सरकार का ऐसा रूप होता है जिसमें नियमित रूप से निर्वाचन, बहुदलीय परंपराएं और इन सबके ऊपर एक संविधान होता है जो हर व्यक्ति को समान मानता है। हालांकि अंबेडकर को लोकतंत्र के शानदार ढांचे का प्रमुख वस्तुविद माना जाता

1- 'kks/k Nk=] e0xk0fp0xzk0fo0fo0] fp=dwV] lruk ¼e-iz-½

है, फिर भी लोकतंत्र के बारे में उनके विचार बहुत भिन्न थे। वह लोकतंत्र को समानता, स्वतंत्रता एवं भाईचारे के सिद्धांत के जरिये आदर्श समाज की स्थापना का साधन मानते थे जो उनके लिए काल्पनिक जगत से कम नहीं था। वह लोकतंत्र को सामाजिक परिवर्तन का एक कारगर साधन मानते थे। उनके आदर्श के लिए यह साध्य भी था और साधन भी।[1]

ykdr= d ckj e vcMdj d fopkj %

अंबेडकर के विचार में लोकतंत्र प्राचीन काल से आधुनिक समय तक विकासशील रहा है। आखिर में इसने सरकार का रूप लिया है लेकिन अंबेडकर के उक्त उद्धरण में वह बात नहीं आ पाई है जो वह सरकार के अंदर देखना चाहते थे। वह कहते हैं ''लोकतंत्र सिर्फ शासन की एक विधा ही नहीं है, मुख्य रूप से यह जीवन के साथ जुड़ने का एक तरीका है और अनुभव को संयुक्त रूप से प्रेषित करना है। यह वास्तव में अपने साथियों के प्रति सम्मान का भाव दिखाने और आदर प्रकट करने जैसा है।''[2] वह इसे भाईचारे के बराबर मानते हैं और कहते हैं कि ''भाईचारा लोकतंत्र का एक और नाम है।''[3] अन्यत्र उन्होंने इसे अपने तीन प्रिय सिद्धांत– स्वतंत्रता, समानता और भाईचारा''[4] कहा है।

अंबेडकर के अनुसार लोकतांत्रिक समाज का मतलब ही है लोकतंत्र। ''लोकतांत्रिक सरकार का रूप समाज में लोकतांत्रिक रूप की कल्पना करता है। लोकतंत्र का औपचारिक ढांचा कोई सिद्धांत नहीं और अगर सामाजिक लोकतंत्र न हुआ, तो वह वास्तव में सटीक नहीं रह पाएगा। राजनेता लोकतंत्र के इस रूप को कभी साकार नहीं कर पाएंगे। वास्तव में यह समाज का एक रूप है जिसमें दो चीजें होती हैं। पहला है दिमाग का रवैया जो अन्य साथियों के प्रति सम्मान और समानता का दृष्टिकोण जताता है। दूसरा है ऐसा सामाजिक संगठन जिसमें सामाजिक बंधन कठोर नहीं है। लोकतंत्र एकांतवास और वह अनूठापन नहीं है जो सुविधा प्राप्त और सुविधावंचितों के बीच भेदभाव करता है।''[5]

'सामाजिक लोकतंत्र' शब्द आमतौर पर आर्थिक स्थिति का संकेत देता है और पूंजीवाद के समाजवाद में क्रमशः तिरोहित होने के फेबियन विश्वास के अनुकूल पड़ता है लेकिन अंबेडकर के लिए इसका मतलब है समाज में न तो कोई ऊंच–नींच है, न कोई वंचना है और न ही कोई अलग–थलग। वास्तव में यह संकेत है भारतीय समाज और उसमें प्रचलित जाति प्रथा की ओर। इसका अर्थ है सहयोग और समुदाय (भाईचारे के विचार को महत्व देना), समानता (जोकि अवसर का परिणाम है) तथा स्वतंत्रता जो आर्थिक लोकतंत्र के लिए दूसरा शब्द है और संसाधनों के वितरण के लिए सब व्यक्तियों को समान मानता है। इस तरह से

अंबेडकर के लिए लोकतंत्र तीन भागों में बंटा है, औपचारिक लोकतंत्र जो राजनीतिक लोकतंत्र है, सामाजिक लोकतंत्र जो सामाजिक समानता के संदर्भ में है और आर्थिक लोकतंत्र जो ऐसी अर्थव्यवस्था का समाजवादी रूप है जो ''स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे'' के सिद्धांत में समाहित होता है और उनके आदर्श समाज का प्रतिबिंब है।[6]

l o/kkfud njnf"V %

संविधान किसी लोकतंत्र में राजनीतिक सुशासन की नियम–पुस्तिका होता है। अंबेडकर खुद संविधान की प्रारूप समिति के अध्यक्ष थे और अंततः भारतीय संविधान के प्रमुख वास्तुविद कहे गए। वह सिर्फ राजनीतिक लोकतंत्र से संतुष्ट नहीं थे क्योंकि उन्हें मालूम था आर्थिक लोकतंत्र के बिना यह नहीं चल पाएगा। इसलिए वह चाहते थे कि संविधान में आर्थिक ढांचे को शामिल कर लिया जाए ताकि अगर बहुमत समाज इसे परिवर्तित करना चाहे तो ऐसा न कर पाए। इस प्रकार की दूरदृष्टि उदारवादी समाज में सचमुच ही दुर्लभ है। इस प्रकार से अंबेडकर उदारवादी होते हुए भी उदारवाद की सीमाएं लांघ गए जो उनकी विशेषता है।

अंबेडकर के विचार ऐसी अर्थव्यवस्था के बारे में बिल्कुल स्पष्ट थे जो निजी उद्यमियों पर आधारित होती है, जो लोकतंत्र के सिद्धांत की अवहेलना करते हैं। निजी उद्यमी मूल रूप से पैसे बटोरने के चक्कर में रहते हैं जिससे धन–बल निजी व्यक्तियों के हाथों में इकट्ठा हो जाता है। इसके कारण उन लोगों के अधिकार वैसे लोगों द्वारा तय होते हैं जिन्हें जिंदा रहने के लिए काम करना होता है। कोई कर्मचारी अपने मालिक के खिलाफ सवाल नहीं उठा सकता। भले ही वह गलत कह रहा हो। ऐसा करने से उसकी नौकरी जा सकती है। वह लिखते हैं ''कोई भी व्यक्ति के निजी उद्यमियों पर आधारित अर्थव्यवस्था का अध्ययन करता है और निजी लाभ के लिए की जाने वाली कोशिशें करता है, महसूस करता है कि अगर किसी लोकतंत्र में निजी अधिकारों का उल्लंघन किया गया तो कैसे इसका असर व्यक्तिगत लाभ पर पड़ता है। किसी व्यक्ति की जीविका कमाने के लिए कितने लोगों के अधिकारों का हनन करना पड़ता है, कैसे लोगों को निजी मालिकों की गुलामी सहनी पड़ती है।''

इसीलिए लोकतंत्र का उद्देश्य पूरा हो, इसके लिए अंबेडकर चाहते थे कि उत्पादन के साधनों का स्वामित्व समाज के हाथों में हो। 17 दिसंबर 1946 को संविधान सभा को संबोधित करते हुए जवाहरलाल नेहरू ने सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक न्याय सुनिश्चित करने के लिए तथा अर्थव्यवस्था का समाजवादी रूप निर्धारित करने के लिए निम्नलिखित बात कही थीः ''जब तक कि अर्थव्यवस्था

समाजवादी किस्म की अर्थव्यवस्था न हो और सभी भविष्य की सरकारें सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तौर पर न्याय में विश्वासी नहीं होंगी, तब तक मेरी समझ में ऐसा नहीं हो सकता।''[8]

वास्तव में वह अपनी सरकारी समाजवादी नीति को स्पष्ट कर रहे थे। इसे उन्होंने अनुसूचित जाति परिसंघ की ओर से तब तैयार किया था जब उनको इस नीति की प्रविष्टि की कोई संभावना नहीं दिखाई दी। उन्होंने प्रस्ताव किया था कि अर्थव्यवस्था की समाजवादी रूपरेखा रखी जाए और इसे कानून बना कर संविधान का अंग बना दिया जाए। इसमें बुनियादी उद्योगों के स्वामित्व और उन्हें चलाने की जिम्मेदारी राज्य को दी जाए। बीमा करने को राज्य का एकाधिकार माना जाए और हर वयस्क नागरिक के लिए बीमा पॉलिसी लेना अनिवार्य बना दिया जाए ताकि वह अपने वेतन के अनुकूल पॉलिसी ले सके। कृषि को सरकारी उद्योग माना जाए और ऐसे उद्योग को चलाने का अधिकार राज्य का हो। बीमा पॉलिसी और खेती की जमीन के मालिक व्यक्तियों को उनकी संपत्ति के मूल्य के बराबर ऋण–पत्र दे दिए जाएं। प्रस्ताव किया गया कि खेती को सामूहिक आधार पर संगठित किया जाए। सारी जमीन राज्य के स्वामित्व में हो और उसे मानक आकार वाले फार्मों में बांट दिया जाए तथा ग्रामवासियों को पट्टे पर दे दिया जाए। ऐसा करते हुए जाति या वर्ण के आधार पर कोई भेदभाव न किया जाए। सारे ग्रामवासी मिल कर उस पर सामूहिक खेती करें और सरकार को जमीन का किराया प्राप्त हो। वही इस योजना को लागू करे, वित्त व्यवस्था करें और जरूरी निवेश जुटाये।[9]

अंबेडकर ने इस योजना के विवरण अपनी रचना स्टेट्स एंड माइनार्टीज में दिए हैं। दुर्भाग्य से इस विचार को संविधान सभा ने नहीं माना और सिर्फ इसके कुछ हिस्से संविधान के भाग–4 में संविधान के नीति निर्देशक सिद्धांत के रूप में शामिल कर लिए गए। इस तरह से ये विचार लागू करना या न करना शासकों की मर्जी पर छोड़ दिया गया। अगर हम संविधान पर अमल के 60 वर्षों की समीक्षा करें, तो पाएंगे कि इन नीति निर्देशक सिद्धांतों की नीतियां बनाते समय अवहेलना की गई। उदाहरण के लिये भूमंडलीकरण का पूरा पॉलिसी पैकेज नीति निर्देशक सिद्धांतों के विपरीत है।

Hkkjr dk ykdr= dk fu;fr ls feyu %

लोकतंत्र के पक्के हिमायती होने के बावजूद अंबेडकर ने संविधान में पूंजीवादी विकास का रास्ता अपनाया और इसके लिए उन्होंने जनवरी 1944 में बंबई योजना का प्रतिपादन किया। इसके जरिये एक प्रकार से उन्होंने 15 वर्षों के लिए एक निवेश योजना प्रस्तुत की जो पहली तीन पंचवर्षीय योजनाओं की तरह

है।[10] इनके द्वारा उन्होंने विशाल ग्रामीण भारत को पूंजीवाद की कर्मभूमि बना दिया और पूंजीवाद की नीतियों के अनुरूप हरित क्रांति को लागू करने की जमीन तैयार कर दी। उनका जोर समाज के निचली समझी जाने वाली जातियों के प्रति भेदभाव के लिए सकारात्मक भूमिका तैयार करने पर था। ये जातियां पूंजीवादी संबंधों के अंतर्गत कमजोर पड़ रही थीं। उन्हें अंबेडकर ने फिर से जीवनदान दिया और आधुनिक संस्थानों में एकीकृत किया। उन्होंने सामाजिक और आर्थिक लोकतंत्र की जगह राजनीतिक लोकतंत्र की पूर्व शर्त रखी और सिर्फ निर्वाचक के काम की गुंजाइश छोड़ी। इसे उन्होंने लोगों और सामाजिक तंत्र से छिपाया और इसके लिये उन्होंने लोकप्रिय नीतियों और नारों का इस्तेमाल किया। इनके परिणाम आज कोई भी देख सकता है।

छह दशक बीत जाने के बाद हम आज भी लोगों की भूख नहीं मिटा पाए। आज जब हम लोगों की निर्धनता के बारे में चर्चा करते हैं, हम भूल जाते हैं कि भारत अब भी दुनिया के बहुत भूखे देशों में गिना जाता है। उसकी गिनती सूडान जैसे अफ्रीकी देशों और पाकिस्तान तथा हमारे पड़ोसी नेपाल के साथ की जाती है। भारत की 21 प्रतिशत आबादी कुपोषणग्रस्त है और उसके 5 वर्ष से कम आयु वाले 44 प्रतिशत बच्चे कमजोर होते हैं तथा 7 प्रतिशत बच्चे 5 वर्ष की आयु के होते–होते मर जाते हैं। भारत दुनिया के सबसे अधिक कुपोषणग्रस्त बच्चों का घर है। विश्व भूख सूचकांक के अनुसार भारत उन 80 देशों में 67वें नंबर पर है जहां के बच्चे सबसे ज्यादा कुपोषणग्रस्त हैं। दुनिया के सबसे अधिक कुष्ठरोगी भारत में पाए जाते हैं और सबसे अधिक निरक्षर वयस्क भी भारत में रहते हैं। देश की 62 करोड़ 60 लाख से ज्यादा आबादी को साफ–सफाई की सुविधाएं उपलब्ध नहीं हैं और उन्हें खुले में शौच जाना पड़ता है। विश्व की सबसे बड़ी ऐसी जनसंख्या भारत में रहती है जिसे अच्छा पेयजल उपलब्ध नहीं है। कई मानकों पर यहां के लोगों को खरी सुविधाएं नहीं मिल पा रही हैं।

भारत में नियमित रूप से चुनाव होते हैं और यही बात उसके लोकतंत्रीय दावे के अनुकूल पड़ती है लेकिन अगर लोगों की असली आवाज को पैमाना बनाया जाए, तो भारत को दुनिया का सबसे ज्यादा अलोकतंत्रीय देश माना जाएगा। भारतीय मीडिया मध्यवर्गीय स्वतंत्रता और जीवंतता का प्रतिनिधित्व करता है लेकिन जो भी गिने–चुने पत्रकार आम लोगों का पक्ष लेते हुए दिखाई देते हैं, उनकी निंदा की जाती है। भारत में इस प्रकार से असहमति के लिये कोई स्थान नहीं है। यह भारत की उस लोकतंत्रीय व्यवस्था की हालत है जिसे अंबेडकर ने भारत के लिए संविधान में शामिल किया था। अन्य प्रकार की लोकतंत्रीय व्यवस्थाएं यानी सामाजिक और आर्थिक लोकतंत्रीय व्यवस्था के सपने बिलकुल

भुला दिए गए हैं। सामाजिक रूप से जाति व्यवस्था एक समस्या है जिसका मूल्यांकन इस बात से किया जा सकता है कि हर साल दलितों पर अत्याचार के करीब 30 हजार मामले दर्ज किए जाते हैं। यह हालत और भी खराब हो रही है। जहां तक आर्थिक लोकतंत्र की बात है, भारत में पिछले तीन दशकों के दौरान असमानता तेजी से बढ़ी है और भारत दुनिया का सबसे ज्यादा भेदभाव वाला समाज बन गया है।

पिछले तीन दशकों के दौरान प्रच्छन्न समाजवाद ने भूमंडलीकृत डॉर्विनवादी समाज के टुकड़े–टुकड़े कर दिए हैं, जो लोकतंत्र की धारणा के विपरीत हैं। इसने भारत को सामान्य गति से तेज आर्थिक विकास दर प्राप्त करने में सहायता दी है जिसे दुनिया वालों ने विकास की हिंदू दर कहकर आलोचना की है। इससे भारत की निश्चय प्रगति हुई है और परिवर्तन आए हैं। रईस और मध्य वर्ग के लोग बहुत बदले हैं जिससे सदियों पुराने अपने स्वरूप को त्यागने में मदद मिली है। उन्होंने उन परम्पराओं और रीति–रिवाजों को गर्व से अपनाया है जो निचले कहे जाने वाले वर्गों के लिए बाधक रहे हैं। इस परिणामी आपाधापी में उन्होंने अर्थव्यवस्था के अन्य मापदंडों की उपेक्षा की है जो विकास दर बनाए रखने के लिए जरूरी माने जाते हैं। अब यह खोखलापन जाहिर होने लगा है। उदाहरण के लिये बेरोजगारी दर और मुद्रास्फीतिदर के जोड़ से भारत ब्रिक्स देशों और चीन से भी पिछड़ गया है।

रोचक बात यह है कि जहां अंबेडकर की दूरदृष्टि को भुला दिया गया है, वहीं पहले से ही बड़े माने जाने वाले आदर्शों को बड़ा मानने की सरकारी नीति बनाई गई है। इन नीति निर्देशक सिद्धांतों को भारत की नीतियों का आधार होना चाहिये और भारत के संविधान का संचालन इनके आधार पर होना चाहिये लेकिन देश इन सिद्धांतों के उलट जा रहा है। देश के लिये उनकी निम्नलिखित चेतावनी को अब पहले के मुकाबले ज्यादा संगत समझा जाना चाहिये– ''26 जनवरी 1950 को हम एक अंतर्विरोधी जीवन में प्रवेश करने जा रहे हैं। राजनीति में हम समानता के रास्ते पर चलेंगे लेकिन सामाजिक और आर्थिक जीवन में हम गैर–बराबरी जीवन में चल रहे होंगे। हमें इस अंतर्विरोध को जल्दी से जल्दी दूर करना है वरना जो लोग असमानता से पीड़ित हो रहे हैं उन्हें इस लोकतंत्र के ढांचे को उड़ा देना पड़ेगा जिसे संविधान सभा ने बड़ी मेहनत से बनाया है।''[11] समय आ गया है जब भारत को इस बात पर गंभीरतापूर्वक विचार करना चाहिये।

lUnHk xzUFk lwph %

1. ज्यां द्रेज, डॉ. अंबेडकर एंड दि फ्यूचर ऑफ इंडियन डेमोक्रेसी, इंडियन जर्नल ऑफ ह्यूमन राईट्स, 2005।

2. अंबेडकर बी.आर. बाबा साहब अंबेडकर, राइटिंग एंड स्पीचेस (बाज) खंड–1
3. वही पृष्ठ 57
4. वही पृष्ठ 78
5. वही पृष्ठ 222–223
6. बाज खण्ड–1 पृष्ठ 57
7. बाज खण्ड–1 पृष्ठ 409
8. बाज खण्ड–13 पृष्ठ 09
9. बाज खण्ड–1 पृष्ठ 396–397
10. अमल शान्याल, बम्बई योजना का अनूठा मामला, समसामयिक और मुद्‌दे और विचार, जून 2010
11. बाज खण्ड–13 पृष्ठ 216

c|Uny[k.M {k= e pUnydkyhu lekt e 'knk dh fLFkfr dk leh{kkRed v/;;u

egUn f=ikBh[1]

समाज में उनका अधिक निम्न स्तर पूर्वक जीवन था।[1] समाज इनको हेय दृष्टि से देखता था इनका कार्य समाज दो प्रमुख वर्णों की सेना करना था सेवा के बदले मिलने वाले परितोषिभों से ये अपना जीवन व्यापन करते थे। धार्मिक क्रिया–कल्प पर भाग लेने का इन्हें अधिकार प्राप्त नहीं था। शुभ अवसरों पर इनकी उपस्थिति नहीं होती थी। वेदं मंत्र का उच्चारण करने का अधिक इनको अधिकार प्राप्त नहीं था। इसका कारण यह भी हो सकता है कि इनके कर्म इस प्रकार के नहीं थे, जिससे इनकी शुद्धता बनी रहे। मन्दिरों में इनके प्रवेश करने से अशुद्धता का भय बन रहता था। इनका जीवन शुद्ध एवं पवित्रता पूर्ण नहीं था ये निकृष्ट कार्य करते थे इस कारण से शुद्ध नहीं रहे थे। मन्दिर आदि में प्रवेश करने से मन्दिर के अशुद्ध हो जाने का भय बना रहता था इस कारण से भी इनका प्रवेश निषेध था यज्ञ करने कराने पर भी निषेध था वे पौराणिक यज्ञ भी नहीं कर सकते थे।[2]

लेकिन तत्कालीन धर्मशास्त्रों ने कुछ धनिक शुद्र जिनके वैवाहिक सम्बन्ध वैश्यों के यहाँ होते थे। वह ब्राह्मणों के माध्यम से एवं पौराणिक मंत्रों से श्राद्ध संस्कार तथा अन्य स्मृति अनुष्ठानों को करने का निदेश था।[3]

1- 'kk/kNk=] bfrgkl] e-xk-fp-xk-fo-fo-] fp=dwV lruk ¼e-i-½

वास्तव चारों वर्णों में सबसे दीनहीन दशा में शूद्र थे समाज ने इनके लिए कुछ नियम बन रखे थे जिनका पालन कठोरता के साथ कराया जाता था। शूद्र ब्राह्मण, क्षत्रिय के साथ भोजन करने की बात तो दूर की थी। उस समय शूद्र अगर किसी ब्राह्मण के छू ले या शूद्र की परिक्षायी भी ब्राह्मण के पड़ जाये तो ब्राह्मण अपनाने आपके। अपवित्र मान लेता था और पुनः स्नान करता था और अपने को शुद्ध करता था। भोजन के सम्बन्ध में अल्बरूनी का यह कथन है कि यदि कोई ब्राह्मण कुछ निश्चित दिनों तक शूद्र के घर भोजन करता था वह जाति से बहिष्कृत कर दिया जाता था।[4]

इस कथन से यह स्पष्ट हो जाता है कि शूद्र के यहाँ कोई ब्राह्मण भोजन नहीं करता था अगर कोई ब्राह्मण भोजन करते पकड़ जाता था तो उसे जाति से बहिष्कृत कर दिया जाता था।

इस प्रकार के शूद्र का जीवन बहुत ही कठोर था उनको समाज द्वारा बनाये गये नियमों का पालन करना पड़ता था धार्मिक क्रिया कल्पों के सम्बन्ध में जो नियम थे उनका बड़ी ही कठोरता के साथ पालन कराया जाता था उन्हें वेदाध्ययन का निषेध था और इसका कठोरता से पालन होता था वेदमंत्रोच्चारण के अपराध में वैश्य अथवा शूद्र का जिहवाच्छेद कर दिया जाता था।[5]

इस प्रकार बुन्देलखण्ड क्षेत्र में चन्देलकालीन शूद्रों का जीवन बहुत ही कठोर था, समाज के तीन प्रमुख वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) शूद्रों को अपने से पूर्णता अलग किये हुए था अपने किसी भी कार्यों में शूद्रों का सहभागी नहीं बनता था शूद्रों को गाँव में रहने की अनुमति नहीं थी इनके घर गाँव से बाहर होते थे। तीनों प्रमुख वर्ण के निवास–स्थान एक जगह हो सकते थे पर शूद्रों के निवास स्थान अलग होते थे इससे यह प्रतीत होता है इनको तीनों वर्णों के साथ रहने की अनुमति नहीं थी।

¼d½ cqUnsy[k.M {ks= esa pUnsydkyhu 'kwnzksa dk O;olk; ½

शूद्रों का कोई स्पष्ट व्यवसाय नहीं था बल्कि समाज के तीन वर्णों की सेवा करना इनका प्रमुख कार्य था। भूमिकर्षण अथवा द्विजातियों की सेवा करना इनका मुख्य उद्यम था।[6]

इस प्रकार से शूद्र साफ–सफाई का कार्य करते थे इनका कार्य था समाज के प्रमुख तीन वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य) की सेवाएँ करना उसके बदले मिलने वाले आनाज एवं धन से अपना मरण पोषण करना।

¼[k½ cqUnsy[k.M {ks= esa pUnsydkyhu 'kwnzksa dk [kku&iku ½

शूद्र उस समय सर्वहारी था वह शाकाहारी एवं मांसाहारी दोनों प्रकार से बने भोजनों का प्रयोग करता था। उस समय धार्मिक मान्यताओं के कारण लोग

अधिक शाकाहारी भोजनों को ग्रहण करते थे शूद्रों में भी कुछ लोग थे, जो मांस का स्पर्श तक न करते थे और मांस त्याग को धार्मिक विशेषता समझते थे।[7]

इस प्रकार से स्पष्ट होता है कि उस समय अधिकांशता शूद्रों के द्वारा मांसों का सेवन किया जाता था कुछ ही लोग थे जो मांस का सेवन नहीं करते थे। शूद्रों के द्वारा सूरापान किया जाता था।[8] शूद्र बहुत ही लगाव के साथ सूरापान का आनन्द लेते थे। शूद्रों के सूरापान करने की छूट थी तत्कालीन समाज में सूरापान करे को लेकर कोई नियम नहीं थे। शूद्रों के लिए ऐसा कोई प्रतिबन्ध न था।

cUny[k.M {k= e pUnydkyhu 'knk dh ookfgd fLFkfr %

शूद्रों की वैवाहिक स्थिति का जहाँ तक सम्बन्ध है। वह अपने ही वर्ण में अपना वैवाहिक कार्यक्रम सम्पन्न करते थे। उस समय अपने ही वर्णों की विवाह करने की प्रथा थी जिसके कारण शूद्र अपने ही वर्ण में विवाह करता था।

तत्कालीन स्थितियाँ कुछ शुद्रों के विवाह वैश्यों के साथ होते थे। जो शुद्र धनवान थे उनकी स्थिति कुछ अच्छी थी इस कारण से उनके विवाह वैश्यों से होते थे वैश्यों की लगभग वही स्थिति थी जो कि शूद्रों की।''[9] दोनों के परस्परिक वैवाहिक सम्बन्ध होते थे।[10]

इस कथन से स्पष्ट होता है कि जिन वैश्यों की स्थिति शूद्रों के समकक्ष थी उनमें परस्परिक वैवाहिक सम्बन्ध होते थे।

cUny[k.M {k= e pUnydkyhu 'kn dh vugrk,; %

तत्कालीन परिस्थितियों में राज्य की ओर शूद्रों को कोई विशेष सुविधाएँ प्राप्त न थी इनको किसी प्रकार को दण्ड में कोई छूट प्रदान न की गयी थी बल्कि राज्य के द्वारा इनके ऊपर अनेक प्रतिबन्ध लगाये गये थे इनकी धार्मिक स्वं सामाजिक स्वतंत्रताएँ न के बराबर थी इनका कार्य तीनों वर्णों की सेवा का था उस पर इनका विशेषाधिकार था इनके कार्य को तीन प्रमुख वर्ण इनके कार्यों को नहीं करता था।

cUny[k.M e pUnydkyhu 'knk dh tkfr;k %

बुन्देलखण्ड में चन्देलकालीन समाज में शूद्र अनेक जातियों में विभाजित था। निम्न कर्मों के आधार पर इनकी जातियों का विभाजन हुआ। समाज में खानाबदोश जातियों का उल्लेख किया गया है जो शूद्रों के समकक्ष ही थी उनका जीवन स्तर शूद्रों से भी निम्न था। इनमें प्रमुख रूप से भेद, चाण्डाल, सन्दालियाँ का उल्लेख प्रमुख रूप से है।

ऐ सभी समाज अपने आपको स्थापित करने के लिए संघर्षशील थे। समाज इनकी कोई प्रतिष्ठा न थी। भेद और चाण्डाल को बड़ी पतित दृष्टि से देखा जाता

था[11] समाज के निकृष्टतम कामों को इनके द्वारा किया जाता था इनको पूर्वज खाना बदोश जीवन यापन करते थे और इनकी कोई दिनचर्या और जीवन स्तर नहीं होता था इनके सम्बंध में अनेक विद्वानों के मत है श्री सी.वी.वैध का विचार है कि इष्द खुर्दहा द्वारा उल्लिखित 'सन्दालिया' चाण्डाल ही थे इस प्रकार से लेनवंडज का के वर्णन से प्रतीत होता है कि वे अनेक खाना बदोश जातियों के पूर्वज थे।[12]

l inHk %

1. चन्देलकालीन बुन्देलखण्ड का इतिहास, प्रकाशक–हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, पृ.सं.179.
2. चन्देलकालीन बुन्देलखण्ड का इतिहास, प्रकाशक–हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, पृ.सं.179.
3. राष्ट्रकूट्स एण्ड देयर टाइम्स, पृ.334.
4. सचान भाग 2, पृ.13.
5. भवति च वेदोच्चारणे चिह्वाच्छेदो धारणे भेद इति–वेदान्त सूत्र के प्रथम अध्याय के तीसरे पद के 38वें शूत्र पर शंकराचार्य की टीका
6. चन्देलकालीन बुन्देलखण्ड का इतिहास, प्रकाशक–हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, पृ.सं.179.
7. काणे, हिस्ट्री ऑफ धर्मशास्त्र भाग 3, अध्याय 22, पृ.780.
8. चन्देलकालीन बुन्देलखण्ड का इतिहास, प्रकाशक हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, पृ.181
9. बौद्धयन धर्मसूत्र 1,2,4.
10. चन्देलकालीन बुन्देलखण्ड का इतिहास, प्रकाशक–हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, पृ.सं.179.
11. हि.मे.दू. भाग–1, पृ.121, पृ. 50–51.
12. हि.मे.दू. भाग–1, पृ.121, पृ. 50–51.

bfrgkl dh nf'V esa egksck

c'tHkw"k.k f}osnh[1]

महोबा की प्राचीनता प्रागौतिहासिक है यहां की पर्वत –श्रृंखलाओं , वनों ,प्रपातों और जल स्रोतों से आकृश्ट होकर आदिम मानव भौलाश्रयों में भारण लिया। विन्ध्य परिवार की श्रृखलाओं के विचित्र और मनोरम पर्वतों, झीलो, नदी नालो, वनों तथा विभिन्न प्रकार के भूखंडो को संजोये अपनी नैसर्गिक प्राकृतिक छटा से यह भूभाग आकर्शण का केन्द्र प्राचीन काल से ही बना चला आ रहा है।[1] कांलिजर का ि ाव मंदिर इसका का उत्कृश्ट उदाहरण है। महोबा अपने प्राचीन इतिहास के साथ ही जाना जाता है। त्रेता एवं द्वापर युग में इस नगर का अस्तित्व रहा है त्रेता में भगवान राम सीता एवं भाई लक्ष्मण के साथ जब दक्षिण दि ाा की ओर प्रस्थान किया था तब महोबा के गोरखगिरि पर्वत पर विराजमान रहे थे।[2]

महोबा का प्रथम साहित्यिक परिचय वाल्मीकि कृत रामायण से प्राप्त होता है। जिसका रचनाकाल चतुर्थ भाताब्दी ईसा पूर्व से चतुर्थ भाताब्दी ई0 के मध्य माना जाता है। महोबा की ऐतिहासिकता , रमणीकता, पवित्रता तथा आध्यात्मिकता के कारण ही मुनि श्रृंगी का आश्रम एवं श्री राम को वानवास काल में यहा निवास करने का विवरण मिलता हैं।[3] रामायण में उल्लिखित स्थलों एवं महाभारत में वार्णित आश्रमों के अव ोश आज भी बहुत थोडे परिवर्तनों के साथ आज भी विद्यमान है। रामायण एवं महाभारत के अनुसार महोबा औशधियों एवं प्राकृतिक संपदा तथा वन्य प्राणियों से सुसम्पन्न क्षेत्र था।

महोबा राज्य का वर्णन तुलसी कृत रामचरित मानस में भी किया गया है। जो इस प्रकार हैः–

'' श्रृंगी रिशिह बसिश्ठ बुलावा पुत्र काम सुभ्जग्य करावा।
भगति सहित मुनि आहुति दीन्हे –प्रगटे अगिन चरूकर लीन्हें।।''[4]

1- 'kks/k Nk= bfrgkl] e0xk0fp0xk0fo0fo0fp=dwV] lruk] e0iz0

विभिन्न पुराणों में इस क्षेत्र के कई नाम प्राप्त होते है। भविश्य पुराण में एक प्रसंग से ज्ञात होता है कि इसके मध्यवर्ती भाग का नाम पद्मावती भी प्राप्त होता है।

'' चैद्यनैशधयोः पूर्वे विध्यक्षेत्राच्च पि चमे।
रेवायमुनयोर्मध्ये युद्धदे ा इतीर्यत।।''[5]

मध्य दे ा की सीमा प्राचीन साहित्य में बडी व्यापक थी। यमुना का सम्पूर्ण दक्षिणी भाग उसमें सन्निहित था। विशणुधर्मोतरम में यह युद्ध दे ा के नाम से प्रसिद्ध था। बैदिक साहित्य में कालंजर को तपस्या स्थान कहा गया है। विन्धय पर्वत की श्रृखलाओं एवं केन,यमुना का स्वच्छ जल का प्रवाह मंद था। ऐसा लगता था मानों पृथ्वी रूपी नायिका के गले में मोतियों की माला पडी हों। इसी प्रकार महोबा का वर्णन अग्निपुराण, भागवत पुराण ,रामायण, आल्हा–खण्ड महाभारत आदि में भी इसका उल्लेख प्राप्त होता है। विशणु पुराण में मौर्य भाासन के 130 वर्शो का यहां साक्ष्य प्राप्त होता है:–

'' उद्धरिश्यति कौटिल्य सभा द्वाद ाीम,सुतान्।
मुक्त्वा महीं वर्श भालो मौर्यान गमिश्यति।।
इत्येते दं ा मौर्यास्तु ये मोक्ष्यनिंत वसुन्धराम।
सप्त त्री ाच्छतं पूर्ण तेभ्यः भाुभ्डाग गमिश्यति।। ''[6]

महोबा राज्य के भाग पर भाुड्ग व ा का कब्जा हुआ जिसे विशणु पुराण तथा मत्स्य पुराण में इस प्रकार दिया है–ः

तेशामन्ते पृथिवीं दस भाुडगमोक्ष्यन्ति।
पुण्यमित्रस्सेना पतिस्स्वामिनं हत्वा राज्यं करिश्यति।। विशणुपुराण
तुभ्यः भाुड्गमि यति।
पुश्यमिन्नस्तु सेनानी रूद्रधृत्य स वृहदथाल
कारयिश्यीत वे राज्यं ाट् त्रि ांति समानृपः।। मत्स्यपुराण।

महोबा का क्रमिक राजनीतिक इतिहास उपलब्ध नही है। इसका कारण समीपवर्ती राज्यो की प्रसिद्ध थी। महोबा नगर के नाम समय –समयपर बदलते रहे पहले इसका नाम केकयपुर ,केकयनगर ,रतनपुर ,पाटनपुर था चन्देलो के राजत्व काल में इस नगर को महोत्सवनगर कहने लगे। जैन ग्रन्थो में इसका नाम महोबक महाबली लिखा पाया जाता है चन्दबरदाई ने इसका नाम महोत्सव लिखा है। बाद मे धीरे –धीरे महोबा प्रसिद्ध हो गया।

महोबा का क्रमिक इतिहास चन्देलो के राज्य से प्राप्त होता हैं। उसके पहले महोबा किसी न किसी राज्य का भूभाग मात्र रहा होगा। चन्देलों ने महोबा में

300 वर्शो तक राज्य किया एवं महोबा को अपनी राजधानी बनाया जिसके कारण ही महोबा की ख्याति हो सकी। चन्देलकालीन कीरतसागर, मदनसागर, विजयसागर, रहलियातालाब , बडी चन्द्रिका , सकरी सन्या मन्दिर चौकिया एवं गढ तथा मंदिर कालिजर, चित्रकूट इलाहाबाद के गढवा, खजुराहों ,नगौद , झासी आदि जगहों में भग्नावेश आज भी विद्यमान है जो उस काल की भाक्तिपीठ है।

13वीं से 15वी भाताब्दी तक मुस्लिम अक्रमणकारियों ने समय समय पर अक्रमण कर इस क्षेत्र को न केवल लूटा वरन् ऐतिहासिक मन्दिरों स्मारको व मठों मे प्रतिशठापित मुर्तियों व विलक्षण कला कृतियों का एक एक कर जो विध्वंस किया वैसी पि वकता और बर्वरता का वि व में उदाहरण नही मिलता है। बुन्देलखण्ड में कलिंजर का किला सभी बाद ाहों के आकर्शण का केन्द्र रहा है इसे प्राप्त करने के लिए सभी ने प्रयत्न किया। इसके लिये हिन्दू एवं मुसलमान राजाओं मे अनेक लड़ाईयॉ हुईं।

मध्यकाल में चन्देलों – चौहानों ने यदि अपना वैमनस्य मिटाकर सगंठन को अक्षुण्ण रखे होते तो भारतीय राजनीति में यह मोड़ क्यो देखने को मिलता जिसका दूरगामी परिणाम हमें 1947 में दे ा विभाजित कर भुगतना पडा। चन्देल – चौहान संग्राम में दोनो की ही महान सैन्य क्षति हुई जिसका लाभ मुहम्मद गौरी और कुतुबुददीन ऐबक ने उठाया परिणाम स्वरूप भारत की दोनो महान भाक्तियों का छिन्न भिन्न होना और सदा के लिये आक्रमणकारियों को प्रवे ा द्वार खुला हुआ मिला । आपसी फुट का लाभ उठाकर ही मुहम्मद गौरी ने पृथ्वीराज को हराया और कुतुबुदीन ऐबक ने 1202 ई0 में कालिंजंर पर आक्रमण कर दिया।[7] महोबा राज्य का अन्त कर दिया अब महोबा राज्य न होकर दूसरे राज्यों का एक भाग मात्र रह गया।

मुगल सम्राट अकबर के काल में रामचन्द्र ने 1569 ई0 को अकवर की अधीनता स्वीकर कर सम्पूर्ण राजकोश की चाबी भी अकबर को सौप दिया।[8] फलतः औरगजेब के भाासन काल 1707 तक यह क्षेत्र मुगलों के अधिकार में रहा। प्रसिद्ध हिन्दी कवि रहीम , जो मुगल भाासन में सेना पति भी थे, बाद ाह जहांगीर 1607 ई0 द्वारा समस्त सम्पत्ति तथा जागीर से हीन कर दिये जाने पर छद्यवे ा में महोबा के क्षेत्र में आकर निवास किया था।

बुन्देलों के राज्य में महोबा पर छत्रसाल का राज्य था। उन्होने मुगल सेनापति अव्दुल हमीद को हराकर इस क्षेत्र पर अधिकार कर लिया तथा पन्ना को अपनी राज्यधानी बनाया। प्रणामी सम्प्रदाय के बीतकों के अनुसार छत्रसाल तथा महामति प्राणनाथ की भेंट 1683 ई0 में मऊ के निकट एक जगंल में हुई थी।[9] प्राणनाथ को छत्रसाल ने अपना गुरू माना। राजनीतिक रूप से बुंदेलखण्ड में

उनकी स्थिति को सुदृढ बनाने के लिए प्राणनाथ ने 1683 ई0 में उनका राज्याभिशेंक छत्रसाल के पक्ष में जनसंपर्क का कार्य भी किया। उन्होने अपनी बुन्देलखण्ड यात्रा में छत्रसाल के विजयों का मार्ग प्र ास्त किया और उद्‌बोधन से उनके सैनिकों का उत्साहबर्धन किया।

छत्रसाल की मृत्यु के बाद बुन्देलखण्ड राज्य फिर से भागों में बट गया। एक भाग हिरदे ाह, दूसरा भाग जगतराय और तीसरा पे ावा को मिला। हिरदे ाह को पन्ना ,मऊ, गढ़ाकोटा, कालिंजर , ाहगढ और उसके आसपास का क्षेत्र जगतराय को जैतपुर, अजयगढ़ ,जरखारी , बिजावर, सरोला, भूरागढ़ आैर बांदा मिला। बाजीराव को कलपी, हटा, हृदयनगर, जालौन ,गुरसाय, झॉसी, गुना, गढ़कोटा और सागर को क्षेत्र मिला। समय के साथ साथ महोबा जिस प्रकार विभाजित होता गया उसी प्रकार बुन्देलखण्ड भी विभाजित हो गया और साथ ही महोबा राज्य न होकर अलग –अलग जागीरों में विभाजित हो गया। बुन्देलखण्ड में कमि नरी का निर्माण सन् 1820 ई0 में हुआ। सन् 1835 ई0 में जालौन , हमीरपुर, बॉदा के जिलों को उत्तर प्रदे ा और सागर के जिले को मध्यप्रदे ा में मिला दिया गया जिसकी देख रेख आगरा से होती थी। सन् 1839 में दमोह जिले को मिलाकर एक कमि नरी बना दी गई जिसकी देखरेख झॉसी से होती थी। सन् 1947 ई0 में दे ा के आजादी के बाद महोबा हमीरपुर जिला का एक तहसील मात्र थी सन् 1995 ई0 में मुख्यमन्त्री मा0 मुलायम सिंह यादव हमीरपुर जिले के कुछ भाग कोअलग करके एक नया जिला गठित कर दिया। वर्तमान में महोबा चित्रकूट धाम मण्डल बांदा का एक जनपद है जो अपनी कला कृतियों के लिए प्रसिद्ध स्थान माना जाता है। महोबा सन् 831 ई0 मे महोबा दुर्ग का ि ालान्यास चन्द्रदेव वर्म्मन द्वारा किया गया।[10] महोबा जनपद में कजली महोत्सव का आयोजन प्रत्येक वर्श जुलाई माह में किया जाता है।

महोबा की लोगप्रियता यहां की कलात्मक भौली है एवं यहां पर स्थिति दुर्ग एवं सागर है जो अपनी महत्वपर्ण भूमिका निभा रहे है। इनमें कीतर सागर, मदन सागर ,महोबा दुर्ग, राहिल्य सागर प्रमुख है। महोबा में मनाये जाने वाले त्यौहारों का भी वहां की सामाजिक जीवन में महत्वपर्ण योगदान है। वर्तमान में भी कुछ व्याक्तियों द्वारा यहां की कलाकृतियों एवं पराम्पराओ को अक्षुण्ण रखने का प्रयत्न किया जा रहा है। जिनमें पं0 वि वनाथ भार्मा ,बासुदेव चौरसिया ,प0 चन्द्र ोखर बैद्य और विवेक कुमार चौरसिया, आल्हा भोाध संस्थान प्रमुख है।

lUnHkZ %&

1 चन्देल और उनका राजत्व काल लेखक के ाव प्रसाद मिश्र पृ0सं0 5।

2 बुन्देलखण्ड का सांक्षिप्त इतिहास गोरे लाल तिवारी वि0पृ0 72–75।

3 चन्देल कालीन महोबा और जनपद हमीरपुर के पुराव ोश वासुदेव चौरसिया पृ0स0 1।
4 चन्देल कालीन महोबा और जनपद हमीरपुर के पुराव ोश वासुदेव चौरसिया पृ0स0 99।
5 भाविश्य पुराण।
6 इन्दिरा गांधी राश्ट्रीय कला केन्द्र।
7 बुन्देलखण्ड का सांक्षिप्त इतिहास गोरे लाल तिवारी वि0पृ0 63।
8 चन्देल कालीन महोबा और जनपद हमीरपुर के पुराव ोश वासुदेव चौरसिया प्रथम संस्करण 1994 पृ0स0 13।
9 जनश्रुति।
10 बुन्देलखण्ड के दुर्ग डा0 का ी प्रसाद त्रिपाठी, समय प्रकासन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2005, पृ0सं0 155।
11 विश्णुपुराण।
12 मत्स्यपुराण।

Hkkjrh; fuokZpu vk;ksx % Hkwfedk vkSj vf/kdkj

vk'kqrks'k dqekj[1]

भारतीय गणतंत्र विस्तार क्षेत्र और संसाधनों की दृश्टि से वि व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक व्यवस्था है। निवोचकों के दृश्टि से भी सार्वभौमिक वयस्क मतधिकार पर आधारित यह वि व की सबसे बड़ी सहभसगिता पूर्ण राजनीतिक व्यवस्था है। लोकतंत्र का व्यवहारिक पक्ष चुनावी राजनीति है। भारतीय संविधान निर्माताओं ने इस महति भूमिका के लिए निर्वाचन आयोग की कल्पना की जिसे संवैधानिक दर्जा प्रदान किया गया। लोकतंत्र की वास्तविक भाक्ति भारत की जनता है लेकिन लोकतांत्रिक भाासन को मूर्त रूप देने की भूमिका और भाक्ति निर्वाचन आयोग के पास है। इस आयोग अपना कार्य संपादित करते हुय साठ वर्श पूरे हो गये है और यह इस अवसर पर अपनी हीरक जयंती बड़े उत्साह के साथ मनाकर तथा 25 जनवरी को 'मतदाता दिवस' घोशित करके अपनी सफलता का परिचय दे दिया है।

भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था में निर्वाचन आयोग अपनी बहुअयामी भूमिका का निर्वहन करके जिस मंजिल पर अपनी प्रतिश्ठा कायम किया है। 1993 से पहले की तुलना में आज यह तीन सदस्यीय आयोग अधिक स ाक्त हुआ है। फिर भी चुनाव के दिनों को छोड़कर अब भी इसकी भूमिका हाथी के दिखने वाले दांत जैसी है। कारण यह कि इस आयोग के पास बहुत सारे कार्यकारी अधिकारी नहीं है। इसको लेकर दे ा में 10–15 वर्शों से बहस चल रही है। इससे यह बात उभरकर आयी है कि जब तक स्वच्छ, निश्पक्ष और पारद र्ी चुनाव कराने के लिए निर्वाचन आयोग को कार्यकारी विधायी भाक्तियों तथा वैधानिक हथियारों से लैस नहीं किया जाता और कैग एवं न्यायपालिका की तरह अपने स्टाफ के चयन व कार्य संचालन के लिए अलग से बजट नहीं दिया जाता, आयोग जनापेक्षित

1- 'kks/k Nk=] jktuhfr foKku foHkkx] nh0n0m0xks0fo0fo0] xksj[kiqj

लोकतांत्रीय भूमिका को सही तरीका से नहीं निभा सकता। प्र न यह भी है कि स्वस्थ, स्वच्छ और जन के लिए अधिकर कल्याणकारी कैसे हो ? इसलिए कि हमारे विधायी तन्त्र पर अपराधी चरित्र के व्यक्तियों का कब्जा होता जा रहा है जिन के सोच में न जनहित है न राश्ट्रहित। इस परिकल्पना को ध्यान में रखकर निर्वाचन आयोग को साफ–सुथरा व स क्त बनाने में इसकी भूमिका और अधिकार को और अधिक कैसे सुव्यवस्थित किया जाय यह एक विचारणीय विशय है।

लोकतांत्रिक भाासन में भाासन का मुख्य आधार मतदान होता है। मतदान न केवल जनप्रतिनिधित्व का निर्धारण करता है अपितु जनता द्वारा जनता की सरकार का चयन भी। भारत के संविधान निर्माताओं ने नागरिकों के इस संवैधानिक अधिकारों को पूर्णता सुरक्षित रखने के लिए संविधान में निर्वाचन पर आधारित सरकार की परिकल्पना की है।[1]

वर्तमान भारतीय संसदीय लोकतंत्र वि व के अन्य प्रतिनिधियात्मक लोकतंत्रों के समान है। इसका तात्पर्य भाासन का संचालन करने वाला जनता के द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि होते है। इस प्रतिनिधियों को चुनने की सामान्य प्रक्रिया चुनाव या मतदान है। चुनाव ही लोकतंत्र का मूलाधार है। स्वच्छ एवं स्वतंत्र चुनाव ही भाासक को महत्वपूर्ण बनाते है तथा आव यक हो तो उन्हीं के द्वारा वे बदले भी जाते है जनता को अपनी इच्छानुसार प्रतिनिधियों को चुनाव करने की स्वतंत्रता होती है जिसके माध्यम से लोग अपनी राजनीतिक पसंद द ाते है और नागरिक के रूप में अधिकारों का प्रयोग मतदान के रूप में व्यक्त करते है।

इस प्रकार निर्वाचन को सार्थक एवं प्रतिनिधियात्मक बनाने के लिए मताधिकार की व्यवस्था की जाती है। यदपि चुनाव का महत्व एवं सार्थकता वि व स्तर पर स्वीकृत है तथापि इस विशय पर विवाद है कि मतदान का अधिकार किसे प्राप्त हो ? इस मताधिकार से जुड़ी भार्ते समय–समय पर और विभिन्न दे ों में बदलती रही है। उदारण के लिए ब्रिटेन में सर्वप्रथम यह अधिकार धनादेयों को प्रदान किया गया। 1918 तक यह अधिकार सभी पुरूशों तथा कुछ महिलाओं तक सीमित था। सभी महिलाओं को यह अधिकार 1928 में प्राप्त हुआ। आज सभी लोकतांत्रिक राज्यों में यह अधिकार वयस्क नागरिकों को जाति, धर्म, लिंग सम्प्रदाय तथा अन्य किसी भेदभाव के बिना प्राप्त है जो सार्वभौमिक व्यस्क मताधिकार के नाम से जाना जाता है।[2]

अब तक यह सत्य है कि समय–समय पर गठित समितियों एवं उनके द्वारा जारी आद ा आचार संहिता तथा निर्वाचन से संबंधित वादों में की गयी टिप्पणियों और दिये गए निर्णयों के बावजूद निर्वाचन आयोग भारतीय लोकतंत्र में

व्याप्त कुरितियों पर पूर्ण रूप से अंकु ा पाने में सफल नहीं रहा है यह आ चर्य की बात है कि भारतीय लोकतंत्र में मतदान व्यवहार का अध्ययन एवं निर्वाचन आयोग की भूमिका और अधिकार के उपर भौक्षणिक दृश्टि से अध्ययन करने का कोई गम्भीर प्रयास अद्यतन नहीं किया गया है।3

अभी तक भारत में लोकसभा के 16 आम चुनाव सम्पन्न हुए हैं और आयोग के चुनौतीपूर्ण कार्य को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि निर्वाचन क्षेत्रों में परिसीमन से लेकर निर्वाचन अधिनिर्णय तक के कार्य को चुनाव आयोग ने सामन्यतया कार्यकु ालता, निश्पक्षता और ईमानदारी के साथ सम्पन्न किया है। आयोग ने एक समय गढ़वाल में दुबारा मतदान के आदे ा दिये और 1989 के लोकसभा चुनाव के दौरान 1235 केन्द्रों पर पनर्मतदान सम्पन्न कराया। 10वीं लोकसभा के निर्वाचन के समय आयोग ने एक समय बिहार सरकार को भयभीत कर दिया। बिहार से ऐसी रिपोर्ट मिली थी कि चुनाव में व्यापक हिंसा और मतदान बूथों पर कब्जा होगा। बिहार सरकार ने एक लाख होमगार्डों को इस आ वासन के साथ चुनाव बूथों पर नियुक्त किया कि चुनावों के बाद उनकी नौकरी पक्की दर दी जायेगी। आयोग ने बिहार सरकार को निर्दे ा दिया कि होम गार्डों को चुनावी ड्यूटी पर नियुक्त न किया जाय। इसी प्रकार निर्वाचन आयोग ने राज्य सरकारों को निर्दे ा दिया था कि 52 मार्च, 1991 के बाद चुनावी प्रक्रिया से सम्बन्धित किसी भी अधिकारी का स्थानान्तरण न किया जाये। जिन राज्य सरकारों ने ऐसा किया उन्हें आयोग ने स्थानान्तरण रद्द करने के निर्दे ा दिये। बिहार के पटना लोकसभा क्षेत्र में मतदान के दौरान 16 फरवरी, 1998 को बड़े पैमाने पर हुई धांधली और हिंसा की ि ाकायतों की जांच के बाद चुनाव आयोग ने पूरे पटना क्षेत्र का चुनाव रद्द कर दिया। आयोग ने मतदान के दौरान धांधली रोकने के असफल रहने के लिए पटना के जिला मजिस्ट्रेट एवं निर्वाचन अधिकारी, क्षेत्र के पुलिस उपमहानिरीक्षक, वरिश्ठ पुलिस अधीक्षक, पटना नगर के प्रभारी पुलिस अधीक्षक को तत्काल प्रभाव से स्थानान्तरित करने के भी निर्दे ा दिए।4 1996 के लोकसभा चुनावों में भी पटना क्षेत्र में गड़बड़ी की ि ाकायतें हुई थी चुनाव आयोग ने इस चुनाव को भी रद्द कर दिया था। चुनाव आयोग की सिफारि ों के आधार पर राश्ट्रपति के0 आर0 नारायणन ने जनप्रतिनिधित्व अधिनियम के तहत अधिसूचना जारी कर ि ावसेना प्रमुख बाल ठारे को 11 दिसम्बर 1995 से छः वर्श की अवधि अर्थात् 10 दिसम्बर 2001 तक अयोग्य घोशित कर दिया। इस कारण धारा (11) अ के अन्तर्गत ि ावसेना प्रमुख सचिव किसी भी चुनाव में अपने मताधिकार का प्रयोग करने से वंचित हो गए।5

नवम्बर 2002 में चुनाव आयोग ने वि व हिन्द परिशद की 17 नवम्बर से प्रस्तावित गोधरा से अहमदाबाद तक की पाद ाही यात्रा निकालने पर पाबन्दी लगाने के निर्दे ा दिए। गोधरा और गोधरा बाद दंगों की पृश्ठभूमि में होने वाले गुजरात विधानसभा चुनावों के लिए असाधारण सावधानी बरतते हुए आयोग ने विहिप की यात्रा रोकने, बड़े पैमाने पर सुरक्षा बल तैनात करने, विस्थापितों की खोज खबर लेकर उन्हें मतदान की सुविधा मुहैया कराने, अफसरों को बदलने और पक्षपात टालने के लिए आधार निर्वाचन स्टाफ बाहर से लाने जैसे हर सम्भव उपाय किए।

1999 लोकसभा चुनाव की बेला पर निर्वाचन आयोग की भूमिका के सम्बन्ध में इण्डिया टूडे ने लिखा है : ''इस आयोग ने अपने रोज–रोज के निर्दे ों से 13वीं लोकसभा के बेजान चुनावों में जान फूंक दी है। नई दूरसंचार नीति के खिलाफ आदे ा देने से लेकर इलेक्ट्रानिक मीडिया पर विज्ञापन देने से रोक लगाना हो या करगिल पर चुनावी बहस को लेकर नाक–भौं सिकोड़ना या फिर चुनाव प्रचार के समय प्रतिबन्ध लगाना, निर्वाचन आयोग निश्पक्ष चुनाव कराने के अपने अभियान में नए–नए प्रतिमान खड़ा करने के लिए एकदम मुस्तैद है।''[6] आयोग ने 13वीं चुनावों के प्रचार अभियान में रक्षा मंत्री जॉर्ज फर्नांडीस को करगिल युद्ध पर बने एक सरकारी वृत्त को न दिखाने की चेतावनी दी। प्रधानमंत्री वाजपेयी के साथ विमान पर मीडिया वालों के जाने पर रोक लगाई। 1996 के आम चुनावों के दौरान आचार संहिता के पालन की वजह से दिल्ली किराया कानून लागू नहीं किया जा सका। जनवरी 1998 में आचार संहिता के कारण टाटा एयरलाइन्स को विदे ी निवे ा प्रोत्साहन बोर्ड की अनुमति रूक गई। जनवरी 2000 में निर्वाचन आयोग के बिहार सरकार को यह कहते हुए राज्य का वर्श 2000–01 का बजट पे ा न करने के निर्देश दिए कि बजट पे ा करना आद ा आचार संहिता का उल्लंघन है। आयोग के निर्दे ा पर राबड़ी सरकार राज्यपाल के अभिभाशण में प्रमुख नीतिगत घोशणाएं नहीं करने पर सहमत हो गई। नवम्बर 2004 में निर्वाचन आयोग ने अक्टूबर में सम्पन्न उत्तर प्रदे ा के मैनपुरी लोकसभा उपचुनाव को जांच के बाद रद्द कर दिया।

निर्वाचन आयोग के वि ोश सलाहकार के0जे0 राव ने बिहार विधानसभा चुनाव (अक्टूबर–नवम्बर, 2005) में 'सुपर कॉप' की तरह चुनाव प्रक्रिया की कड़ी निगरानी करके करि मा कर दिखाया। पूर्व मुख्य निर्वाचन आयुक्त महेन्द्र सिंह गिल के अनुसार ''निवार्चन आयेग को सख्त होना ही पड़ेगा क्योंकि क्षेत्रीय धार्मिक और जातिगत मुद्दे ज्यादा जटिल और मुखर हो उठे है।''[7]

चुनाव आयोग में 16वीं लोकसभा 2014 के चुनाव में अपने संवैधानिक दायित्व से यह स्पश्ट कर दिया है कि यह वास्तव में भारतीय लोकतंत्र का आधार यश्टि है। स्वच्छ एवं सुदृढ़ भारत के निर्माण के लिए आने वाले समय में इसकी सार्थका और प्रासंगिकता और बढ़ जाएगी।

निि चत ही स्वच्छ व निश्पक्ष चुनाव और स्वस्थ लोकतंत्र के लिए यह महत्वपूर्ण मुद्दा है इसलिए आयोग ने इसे प्राथमिकता में रखा है। दरअसल साधारण से अपराध में भी जेल में निरूद्ध होने पर एक व्यक्ति चुनाव में मतदान नहीं कर सकता उसे आवाजाही की आजादी नहीं दी जाती। अपने परिवार के साथ रहने, अपने कार्य व्यवस्था को आगे बढ़ाने तथा वाक और अभिव्यक्ति की आजादी जैसे बुनियादी अधिकारों से उसे वंचित रखा जाता है लेकिन संगीन अपराध में भी बन्द व्यक्ति चुनाव लड़ सकता है। यह विडम्पनापूर्ण है इस असंगति को खत्म करने की जरूरत है। अपराधी चाजे जिस प्रवृति का हो। सभी संगीन अपराधियों के प्रति एक ही नजरिया रखने की जरूरत है कि उनसे राजनीतिक तथा व्यवस्था और अंततः हमारी लोकतांत्रिक प्रणाली प्रभावित हो रही है। इसलिए उन्हें चुनाव लड़ने से रोका जाना चाहिए। ऐसा तभी संभव है जब दृढ़ इच्छा भाक्ति द्वारा संविधान और कानून में परिवर्तन करके राश्ट्रीय हित के लिए साकरात्मक कदम उठाया जाए।

lUnHk &

1— त्रिवेदी आर.सी. एवं राय एम.पी.— 'भारतीय सरकार एवं राजनीति' कालेज बुक डिपो नई दिल्ली, 1997 पृ. 10

2— कौि ाक सु ीला, 'भारतीय भाासन और राजनीति' हि0मा0कि0नि0नई दिल्ली, 1984।

3— कोठारी रजनी, 'पोलिटिक्स इन इण्डिया', 1972

4— क यप सुभाश सी. : हमारा संविधान नईदिल्ली, ने ानल बुक ट्रस्ट इण्डिया।

5— सोम.जी. ए.एच. : वोटिंग विहेवियर इन एन इण्डियन विपेज, 1959

6— इंडिया टुडे, सितम्बर 8, 1999 पृ. 26—28

7— वही

Hkkjr esa pquko lq/kkj dh vko';drk

/kesZUnz f}osnh[1]

भारत वि व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक दे ा है। लोकतंत्र का सफल संचालन स्वतंत्र एवं निश्पक्ष चुनाव पर आधारितहै। ''वयस्क मताधिकार पर आधारित स्वतंत्र एवं निश्पक्ष चुनाव किसी भी लोकतांत्रिक प्रक्रिया का आधार है, क्योंकि एक नि चत समय अन्तराल के उपरान्त जनता अपने लोकप्रिय मत द्वारा भाासकों के माध्यम से सत्ता में अपनी सहभागिता का निर्वाह करती है और निर्वाचक भाक्ति के माध्यम से उत्तरदायित्व का निर्धारण करती है।''[1]

संविधान निर्माताओं ने सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार द्वारा आम जनता में जो आस्था व्यक्त की थी, उसपर मतदाता प्रायः खरे उतरे हैं। धन के दूशित प्रयोग, बढ़ती हिंसा, अत्यधिक खर्चीचे चुनाव, मतदान केन्द्रों पर कब्जा, चुनावों में उम्मीदवारों का अधिक्य, स्वतंत्र एवं निश्पक्ष चुनाव कराने वाली सरकारी म ीनरी के निश्पक्षता पर संदेह, राजनीतिक दलों द्वारा आचार संहिता का उल्लंघन, सत्तारूढ़ दलों द्वारा चुनाव म ीनरी का दुरूपयोग तथा महिलाओं और अल्पसंख्यकों के अपर्याप्त प्रतिनिधित्व से चुनावी प्रक्रिया दूशित हो चुकी है। आज सबसे बड़ी समस्या यह है कि लोकतंत्र को स ाक्त करने के लिए चुनावी प्रक्रिया में लोगों की बढ़ती उदासीनता को रोकने तथा चुनाव को सार्थक बनाने के लिए चुनावों में सुधार की नितान्त आव यकता है।

चुनाव आयोग की सभी अनु ांसाओं में चुनाव सुधार के प्रस्ताव भाामिल रहे हैं। वास्तव में प्रथम आम चुनाव के बाद चुनाव सुधार की आव यकता वाद–विवाद का विशय रहा है। फलस्वरूप चुनाव प्रसार समय की माँग है। भारत में निर्वाचन सुधारों के सन्दर्भ में सभी पहलूओं का अध्ययन करना सामयिक और प्रासंगिक है।

1- 'kk/k Nk=] jktuhfr'kkL=- foHkkx] MhMh;w xksj[kiqj fo'ofo|ky;

''संसद ने स्वतंत्र एवं निश्पक्ष चुनाव सुनि चत कराने हेतु लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम 1950 और 1951 बनाएं है तथा परिसीमन आयोग अधिनियम, 1962, 1972 बनाए है और इनसे निर्वाचन का ढंग विहित किया है तथा निर्वाचन से सम्बन्धित निर्वाचन क्षेत्रों की रचना और उनका परिसीमन किया है।'' इस कानून ने चुनाव आयोग को व्यापक संस्था के रूप में विकसित किया है। संसद के 14 आम चुनावों एवं राज्य विधान सभाओं के तीन सौ निर्वाचनों ने इस व्यवस्था में अन्तर्निहित गुण एवं दोशों को उजागर किया है। चुनाव व्यवस्था में तमाम त्रुटियाँ विद्यमान है। यद्यपि आं िक परिवर्तन किया गया है तथापि चुनाव प्रक्रिया में आज भी तमाम विसंगितयॉ एवं अनेक कमियॉ प्रका । में आयी है। इनमें सुधार हेतु समय–समय पर विपक्षी दल, विधि वि ोशज्ञों, संविधान वि ोशज्ञों, न्यायविदों, पत्रकारों तथा आम जनता ने भी व्यापक सुझाव प्रस्तुत किया है। चुनाव सुधार हेतु तमाम समितियों तथा आयोगों का गठन किया गया। जिन्होंने अपनी अनु ंसाओं के माध्यम से चुनाव आयोग एवं सरकार को अवगत कराया। निर्वाचन व्यवस्था में व्यापक कमियों में कुछ महत्वपूर्ण इस प्रकार है–

निर्वाचन व्यवस्था में बड़े पैमाने पर धन बाहुबल एवं राजनीतिक भ्रश्टाचार का बोलबाला बढ़ा। 1967 के बाद लोकसभा तथा राज्य विधान सभाओं के चुनाव में धन का बड़े पैमाने पर खतरनाक दुरूपयोग बढ़ा है। दे । में लोकतांत्रिक व्यवस्था के अस्तित्व पर सवालिया नि ाान है अपराध के राजनीतिकरण एवं राजनीतिक के अपराधीरकण से चुनाव प्रक्रिया कलंकित हुयी है। अपराधी पृश्ठभूमि के उम्मींदवार हथियारों के बल पर चुनाव प्रक्रिया को प्रभावित करते हुए चुनाव लड़ रहे हैं और जीत भी रहे हैं। बडे पैमाने पर इस तरह के उम्मींदवार पंजीकृत राजनीतिक दलों के टिकट पर या निर्दलीय उम्मींदवार के रूप चुनाव लड़ रहे है। जब तक की सम्पूर्ण संवैधानिक व्यवस्था को परिवर्तित न किया जाए। उन्हें रोक पाना असम्भव लगता है। वर्तमान निर्वाचन प्रणाली बहुमत द्वारा निर्वाचन सुनि चत नहीं करती जिसे कि विजयी उम्मीदवार सम्बन्धित निर्वाचन क्षेत्र के बहुमत का प्रतिनिधित्व करे। उसे मात्र अपने प्रतिद्वन्दी उम्मीदवारों से कुछ ही मत अधिक प्राप्त होता है। यद्यपि उसे प्राप्त मत बहुमत से सभी कम है।

वर्तमान निर्वाचन प्रक्रिया में निर्वाचन आयोग अपने सम्पूर्ण कार्य संचालन हेतु एवं राज्यों के तंत्र पर आश्रित है जो कि एक कमी की ओर इंगित करता है। धन, बल से अधिक बाहुबल निर्वाचन व्यवस्था को प्रदूशित किया है। मतदान स्थलों पर कब्जा और गैर–कानूनी मतदान भारत लोकतंत्र के सिर पर कलंक है। सरकारी म ीनरी का चुनाव के समय दुरूपयोग एक आम ि ाकायत रही हैं।

इसके साथ ही साथ निर्वाचित उम्मींदवारों द्वारा निश्ठा बदलकर दलबदल करना सम्पूर्ण चुनाव प्रक्रिया के साथ मजाक है। यद्यपि इसे रोकने हेतु दलबदल निरोधी अधिनियम बनाया गया है कि लेकिन इसमें अन्तर्निहित कमजोरियों के वजह से यह निःप्रभावित रहा है।

60 के द ाक से ही दे ा में निर्वाचन सुधार की आव यकता पर जोर दिया जा रहा था। स्वतंत्रता के बाद से सम्पूर्ण निर्वाचन प्रक्रिया को एक दल द्वारा निर्वाद्ध रूप से प्रभावित किया जाना एवं अन्य दलों की नाम मात्र की उपस्थिति भारत में प्रतिनिध्यात्मक लोकतंत्र के हित में नहीं रहा जिससे कि बहुमत को प्रतिनिधित्व दिया जा सके।[2]

चुनाव सुधार हेतु बहुत सारे प्रयास होते रहे हैं। पहली बार चुनाव कानून में सं ोधन एवं चुनाव सुधार के सभी क्षेत्रों से जुड़े प्र नों का परीक्षण हेतु एक संयुक्त संसदीय समिति का गठन 1970 में किया गया किन्तु दिसम्बर 1970 में लोकसभा के विघटन के साथ ही इस समिति का अन्त हो गया। 1971 में जब नई लोक सभा और नई सरकार अस्तित्व में आयी तो जुलाई 1971 में श्री जगन्नाथ राव की अध्यक्षता में एक 21 सदस्यीय समिति का गठन किया गया। तत्प चात् इस समिति ने चुनाव सुधार के मुद्दे पर कई वर्शों के अथक प्रयास के प चात् संसद को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत किया। दो प्रतियों में प्रस्तुत सुझाव में बहुत बहुमूल्य सुझाव थे।[3]

1974 में जय प्रका ा नरायण ने 'सिटिजन्स फॉर डेमोक्रेसी' नामक संगठन की ओर से चुनाव सुधार पर अध्ययन हेतु महाराश्ट्र उच्च न्यायालय के भूतपूर्व न्यायाधी ा और प्रसिद्ध रेडिकल ह्यूमनिस्ट श्री वी0एम0 तारकुण्डे के अध्यक्षता में एक छः सदस्यीय समिति का गठन किया। इस समिति के सदस्य इस प्रकार थे– वी0एम0 तारकुण्डे, एम0आर0 मयानी, पी0जी0 मावलंकर, ए0जे0 नुरानी, आर0सी0 देसाई और ए0पी0 डब्ल्यू डेक्सट थे। समिति ने अपनी अनु ांसा 9 फरवरी 1975 को प्रस्तुत किया जो इस प्रकार –

1– मताधिकार 21 वर्श के बजाय 18 वर्श की आयु में ही दे दिया जाए।
2– आय के स्रोतों का उल्लेख तथा आम व्यय का पूरा हिसाब लिखना समस्त राजनीतिक दलों के लिए अनिवार्य कर दिया जाए और निर्वाचन आयोग इसकी जॉच कराये। उम्मींदवारों के चुनाव खर्च के
3– जमानत की रकम लोकसभा के उम्मीदवारों के लिए 500 सौ स बढ़ाकर 2,000 रूपये और विधान सभाओं के उम्मींदवारों के लिए 200 से बढ़ाकर 1,000 रूपये कर दी जाए।

4– प्रत्येक उम्मीदवार को सरकार की ओर से छपे हुए मतदान कार्ड निः ुल्क दिये जाये तथा प्रत्येक मतदाता के नाम का कार्ड बिना टिकट लगाये डाक से भेजने की छूट दी जाए। इसके अलावा प्रत्येक उम्मींदवारको छूट हो कि वह अपने निर्वाचन क्षेत्र के प्रत्येक मतदाता के नाम 50 ग्राम तक प्रचार सामग्री डाक से निः ुल्क भेज सके। निर्वाचन क्षेत्र के मतदाताओं की सूचियों की 12 प्रतियाँ प्रत्येक उम्मींदवार को सरकार की ओर से निः ुल्क दी जाए।

5– जो लोग राजनीतिक दलों को वर्श में 1,000 रूपये दान दे, उन्हें राि ा पर आयकर की छूट दी जाय तथा कम्पनियों पर यह प्रतिबन्ध जारी रखा जाए कि वे राजनीतिक दलों को दान नहीं दे सकती। कम्पनियों द्वारा विज्ञापनों के रूप में राजनीतिक दल को दी जाने वाली सहायता पर भी पाबन्दी लगायी जाय।

6– लोकसभा अथवा विधान सभा के विघटन अथवा नये चुनावों की घोशण के बाद से सरकार काम–चलाऊ सरकार की भाँति कार्य करें। वह न नयी नीतियों का घोशणा करे, न उसे लागू करे, न नयी परियोजनाएँ चालू करें, उन उसका वादा करें, नयी ऋण या भत्ते दे, न वेतन वृद्धि की घोशणा करें तथा ऐसे सरकारी समारोह न आयोजित करें जिनमें राज्यमंत्री, उपमंत्री, संसदीय सचिव भाग लें।

7– चुनाव के दौरान मंत्रिमण्डल के सदस्य सरकारी खर्च पर मात्रा न करें सरकारी सवारी विमान प्रयोग में न लाये, उनकी सभाओं के लिए सरकारी मंच न बनाये और उनके दौरों के लिए सरकारी कर्मचारी तैनात न करें।

8– आका ावाणी के सन्दर्भ में चन्द्र समिति के रिपोर्ट पर अमल किया जाए तथा आका ावाणी को निगम का रूप दिया जाए जिस तरह से ब्रिटेन में बी0बी0सी0 पर राजनीतिक दलों को पिछले चुनावों में प्राप्त मतों के अनुपात में प्रचार का समय दिया जाता है, उसी प्रकार भारत में भी उन्हें रेडियो और टेलीविजन पर समय दिया जाए।

9– राज्यों में निर्वाचन आयोग स्थापित किये जाय, केन्द्रीय निर्वाचन आयोग में एक के बजाय तीन निर्वाचन सदस्य हो तथा उनकी नियुक्ति राश्ट्रपति केवल प्रधानमंत्री के पराम र्ा पर नहीं, अपितु तीन व्यक्तियों की एक समिति की सिफारि ा पर करें। इस समिति में प्रधानमंत्री, भारत का मुख्य नयायाधी ा तथा लोकसभा के प्रतिपक्ष का नेता भाामिल हो।

10– निर्वाचन आयोग की सहायता के लिए केन्द्र तथा राज्यों में निर्वाचन परिशदें बनाई जाये, जो उसे सलाह दे। इन परिशदों में विभिन्न राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि हों। इनके अलावा मतदाता परिशदें भी बनाई जाए जो निर्वाचन के

समय होने वाली बुराईयों पर निगाह रखें तथा निर्वाचकों की निश्पक्षता की रक्षा करें।'

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का प्रस्ताव में निर्वाचन प्रणाली में सं ाोधन कर अनुपातिक प्रतिनिधित्व के अन्तर्गत चुनाव प्रणाली लागू की जाय, तथा इसे तीन सदस्यीय बनाया जाए और उसका चयन संसद अपने दो तिहाई बहुमत द्वारा करें तथा उनमें से कोई भी सदस्य प्र ाासनिक सेवाओं का सेवानिवृत कर्मचारी न हो।

जनसंघ ने भी चुनाव प्रचार सुधार हेतु अनुपातिक प्रतिनिधित्व के अन्तर्गत सूची प्रणाली का समर्थन किया।

5 अगस्त 1975 को जल्दबाजी में एक ही दिन एक चुनाव विधि (सं ाोधन अधिनियम) पास किया गया तथा उसके दूसरे दिन राज्य सभा ने उस पर अपनी सहमति प्रदान कर दी और इसके तुरन्त बाद दे ा में आपात्काल की घोशणा हो गई। जो कुछ भी चुनाव कानून में सं ाोधन हुआ उसके दुरूपयोग बिना किसी सुधार के आगे जारी रहा।

1977 के आम चुनाव के प चात् जनता पार्टी सत्ता में आयी और पहली बार राश्ट्रीय और राज्य स्तर की दलों को दूरद र्ान और आका ावाणी पर चुनाव सन्देह प्रसारण करने का अवसर राज्य विधान सभाओं के चुनाव में मिला। आपात्काल के दौरान हुए सत्ता का दुरूपयोग को समाप्त करने हेतु 54वें संविधान सं ाोधन विधेयक लाया गया। इसके साथ ही साथ जनता पार्टी सरकार ने चुनाव प्रचार सुधार हेतु एक मंत्रिमण्डल समिति का गठन किया गया। उस मंत्रिमण्डलीय समिति का अध्ययक्ष तत्कालीन गृहमंत्री चौधरी चरण सिंह थे। तत्कालीन मुख्य निर्वाचन आयुक्त श्री एस0एल0 भाकधर ने बढ़ते चुनाव खर्च एवं मतदान केन्द्रों पर कब्जा से सम्बन्धित मुद्दों पर महत्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत किया।[4]

जनता पार्टी की सरकार अभी चुनाव सुधार हेतु पहल करने की वाली थी इसके पूर्व वह सत्ताविहीन हो गई। 1980 में जब श्रीमती इन्दिरा गाँधी की सरकार सत्तारूढ़ हुई तो श्री एस0एल0 भाकधर और श्री आर0के0 त्रिवेदी ने विपक्षी दलों के साथ विचार विम र्ा करके चुनाव सुधार हेतु तमाम अनु ांसाओं में प्रस्तुत किया।[5]

निम्नलिखित चुनाव सुधारों के सन्दर्भ में चुनाव आयोग ने अपनी अनु ांसा प्रस्तुत किया –

1– मतदान केन्द्रों के समीप चलाये जा रहे कैम्प को बन्द कर दिया जाए।

2– वाहनों के प्रयोग को नियंत्रित किया जाए।

3– 50 प्रति ात निर्वाचन क्षेत्रों में मतदान स्थलों में वृद्धि किया जाए।

4– प्रत्येक वर्श में जनवरी माह से मतदाता सूचियों को अद्यतन किया जाए।

5– मतदान को प्रभावित करने से रोकने के लिए सम्पूर्ण चुनाव को एक दिन में कराया जाए।

6– सिक्किम, नागालैण्ड और मणिपुर में भी फोटो पहचान पत्र लागू किया जाए।

7– दिल्ली और केरल में इलेक्ट्रानिक वोटिंग म ीन का प्रयोग किया जाए।

8– सभी राजनीतिक दलों के लिए आद नि आचार संहिता लागू किया जाए।[6]

जब 1984 में श्री राजीव गाँधी की सरकार सत्ता में आयी तो पुनः चुनाव सुधार का प्र न उठाया गया। इस दि ाा में सबसे निर्णायक कदम जनवरी 1985 में सरकार द्वारा दल–बदल अधिनियम का पारित किया जाना था।

चुनाव सुधार के सन्दर्भ में 1990 में सभी राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों से विचार विम र्ा के प चात् संयुक्त मोर्चा वाली श्री वि वनाथ प्रताप सिंह की सरकार ने एक अन्य समिति का गठन किया। संसद सदस्य और वि ोशज्ञों की बहुलता वाली इस समिति के अध्यक्ष तत्कालीन कानूनमंत्री श्री दिने ा गोस्वामी थे। समिति ने 1990 में अपने अथक प्रयास और त्वरित कार्य से चुनाव सुधार में सुझाव हेतु अनु ांसा किया जिसे दिने ा गोस्वामी समिति के नाम से जाना जाता है। इनका सुझाव निम्नलिखित है।–

1– चुनाव सुधार तीन सदस्यीय निकाय होना चाहिए।

2– मुख्य निर्वाचन आयुक्त और अन्य निर्वाचन आयुक्तों का कार्यकाल 5 वर्श या 65 वर्श की आयु तक जो भी बाद में होना चाहिए। और किसी भी हाल में 65 वर्श की आयु या 10 वर्श से अधिक समयावधि तक उन्हें पद पर नहीं बने रहना चाहिए।

3– मुख्य निर्वाचन आयुक्त की नियुक्ति भारत के मुख्य न्यायाधी ा और विपक्ष के नेता के साथ विचार विम र्ा करके की जानी चाहिए।

4– मुख्य निर्वाचन आयुक्त और अन्य निर्वाचन आयुक्तों को न केवल सरकार के अन्तर्गत इसे नियुक्ति बल्कि राजयपाल के पद सहित इसे किसी अन्य पद के लिए अयोग्य घोशित किया जाना चाहिए।

5– वर्श 1981 की जनगणना के आधार पर नया परिसीमन करना। अनुसूचित जातियों के लिए आरक्षित सीटों में क्रमावर्तन करना।

6– बहुद्दे ाीय फोटों पहचान पत्र प्रदान करना।

7– किसी भी व्यक्ति को दो से अधिक निर्वाचन क्षेत्रों पर चुनाव लड़ने का अनुमति न देना।

8– अगम्भीर उम्मींदवारों को हतोत्साहित करना। स्वतंत्र उम्मीदवारों को जमानत रा ि ा को बढ़ाया जाए।

8–क डाले गए कुल मतों के 1/4 से कम मत प्राप्त करने पर जमानत जब्त करना।

9– आद ा आचार संहिता के महत्वपूर्ण प्रावधानों के लिए संविधिक समर्थन देना।

10– भविश्य में होने वाले सभी चुनावों में इलेक्ट्रानिक वोटिंग म ीन का प्रयोग करना।

11– मतदान केन्द्रों पर कब्जा करने और मतदाताओं को प्रभावित करने और डराने/ धमकाने को समापत करने के लिए विधायी उपाय करना चाहिए।

12– मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों को एक नि चत सीमा तक राज्य की ओर से धनरा ा मिलनी चाहिए।

13– मतदान के दिन मोटर गाड़ियाँ चलाना, अग्येन ास्त्र लेकर चलना, भाराब के विक्री पर रोक लगाना चाहिए।

14– दल बदल कानून के अन्तर्गत अयोग्यता, केवल स्वेच्छता से त्याग पत्र देने और वि वास प्रस्ताव, धन विधेयक अथवा राश्ट्रपति के धन्यवाद प्रस्ताव के मामले में दल संचेतक (पार्टी विह्पि) के विरूद्ध मतदान करने या अनुपस्थित रहने को ही माना जाना चाहिए। राश्ट्रपति या राज्यपाल को निर्वाचन आयोग के राय जानने के प चात् ही अयोग्यता के मामलें में निर्णय लेना चाहिए।

15– वर्तमान चुनाव प्रणाली में परिवर्तन के प्र न पर आगे और विचार करने के लिए एक वि ोशज्ञ समिति का गठन किया जाना चाहिए।

16– चुनाव सम्बन्धी मुद्दों की जॉच करने के लिए संसद के एक स्थायी समिति का गठन।

17– आयोग का व्यय स्वीकृत माने जाने की व्यवस्था जारी रहनी चाहिए।

18– मतदाता सूची को तैयार करने, अद्यतन करने आदि सम्बन्धी सरकारी डियूटी का उल्लंघन करने पर दण्ड का व्यवस्था होनी चाहिए।

19– मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों के सभी उम्मीदवारों को मतपत्र में बाकी उम्मीदवारों से ऊपर रखना।

20– आयोग के पर्यवेक्षकों को कानूनी हैसियत प्रदान करना और उन्हें कुछ हालातों में मतगणना रोकने का अधिकार दिया जाए।

21– रिटनिंग अधिकारी के रिपोर्ट के बिना पूरे निर्वाचन क्षेत्र या उसके किसी भी भाग को मतदान के मतदान को रद्द करना और पुनः मतदान करने का आदे ा का अधिकार देना।

22– मतदान केन्द्र पर कब्जा करने के अपराध का निस्तारण, इसे संज्ञेय बनाना तथा सरकारी कर्मचारियों हेतु इसे और कठोर बनाना।
23– रिक्ति होने के छः महीने के अवधि के अन्दर उपचुनाव होना चाहिए।
24– किसी स्वतंत्र उम्मींदवार के मृत्यु के अवस्था में चुनाव रद्द न करना।
25– चुनाव सभाओं में व्यवधान उत्पन्न करने पर सजा को बढ़ाया जाना।
26– मतदान के समाति से 48 घंटे पहले चुनाव के सम्बन्ध में जुलुस तथा आम बैठकों के मनाही।
27– किसी भी मतदान केन्द्र पर मतदाताओं के निः ुल्क ले जाने हेतु वाहन के अवैध रूप से किराये पर लेने अथवा प्राप्त करने हेतु दण्ड को बढ़ाया जाए।
28– प्राधिकृत व्यक्ति के अतिरिक्त किसी अन्य व्यक्ति के लिए भास्त्र लेकर मतदान केन्द्र के नजदीक प्रतिबन्ध।
29– लोक प्रतिनिधित्व, 1951 की धारा 135 में सं ोधन।
30– मतदान के दिन किसी औद्योगिक उपक्रम अथवा संस्थान के कर्मचारियों को वेतन के साथ अवका ा मिलना चाहिए।
31– मतदान के दिन मतदान क्षेत्र के अन्दर किसी भी होटल, भोजनालय आदि में भाराब अथवा अन्य न ीले पदार्थ बेचने, प्रदान करने, अथवा वितरित करने की मनाही होनी चाहिए।
32– राश्ट्रीय मान अधिनियम 1971 की धारा 2 और 3 के अन्तर्गत दोशी पाये जाने पर, दोशी पाये जाने के तारिख से छः वर्श के समयावधि के लिए अयोग्य करार दिया जाना चाहिए।
33– चुनाव व्यय की सीमा के सम्बन्ध में 1974 से पहले की स्थिति बहाल की जानी चाहिए।'

इसी सन्दर्भ में हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि चुनाव सुधारों के माध्यम से हमें अपनी वर्तमान चुनाव व्यवस्था के फटे कम्बल में यत्र–तत्र पैबंद लगाकर भी उसके दोशों को ढक सकते हैं किन्तु यदि संविधान में बताये गये वि ाश्ट निदे ाक तत्वों जैसे दे ा की सम्पदा को कुछ गिने चुने परिवारों में केन्द्रित से रोककर गरीबी का यथासाध्य उन्मूलन करना, निरक्षरता निवारण आदि की निरन्तर अवहेलना की गई तो फिर भाासन की प्रणाली में भी परिवर्तन करने की बात उठ सकती है और वह भी चुनाव सुधार का एक व्यापक और दूरगामी पहलू होगा।

I UnHk%

1. गोपाल कृश्ण : ''इलेक्ट्रोल पार्टी ापे ान एण्ड पोलिटिकल इन्टिग्रे ान'' रजनी कोठारी कान्टेक्स ऑफ इलेक ान चेंज इन इण्डिया, 196, नई दिल्ली एकेडमिक बुक, 1969, पृ0 67.
2. रवि राय, इलेक्ट्राल रिफार्म्स, नीड ऑफ दी आवर पोलिटिक्स इण्डिया, वा0III, 4 अक्टूबर 1998, पृ0 7
3. डॉ0 रेड्डी एण्ड सुन्दर राम, ''डेमोक्रेसी एण्ड इण्डियन इलेक्ट्रोल सिस्टम, नीड फॉर रिर्फाम्स, उप्पल पब्लिके ांग हाउस, नई दिल्ली, 1992, पृ0 15–16
4. हिसाब की जॉच करायी जाए। राजनीतिक दलों द्वारा उम्मींदवारों पर किया जाने वाला खर्च उम्मींदवारों के हिसाब में जोड़ा जाय तथा चुनाव खर्च की वर्तमान सीमा को दुगुना कर दिया जाये।
5. 1974 में गठित तारकुण्डे समिति की अनुसं ाएँ।
6. एस0एल0 भाकधर : ''इलेक्ट्रोल रिफार्म्स, जौमल ऑफ कस्ट्रीच्यूनल एण्ड पार्लियामेन्टरी स्टडीज, वा0 1–2, जनवरी–जून 1984, पृ0 1–11
7. एस0एल0 भाकधर, ''इलेक्ट्राल रिफार्म्स जोनल ऑफ कॉस्टीच्यूनल एण्ड पार्लियामेन्टरी स्टडीज, जनवरी–जून, 1984, 93.
8. एन0एस0 गहलोत, इलेक ान एण्ड इलेक्ट्राल एडमिनिस्ट्रे ान इन इण्डिया, नई दिल्ली, दीप एण्ड दीप पब्लिके ान, 1992, पृ0 223.
9. 1990 में गठित दिने ा गोस्वामी की सिफारि ों।

xkeh.k efgykvksa dh lkekftd&vkfFkZd fLFkfr

iue feJk[1]

मानव समुदाय पुरुष एवं महिला दोनों से बना होता है। अगर समाज में दोनों की ही प्रस्थिति समान होती, तो महिलाओं के कल्याण का प्रश्न ही नहीं उठता। जिन देशों में महिलाओं को पुरुषों की तरह समान अधिकार तथा सुख–सुविधाएँ प्राप्त हैं और ये आर्थिक, राजनैतिक और सामाजिक क्षेत्रों में सक्रिय रुप से भाग लेती हैं, वहां महिलाओं के कल्याण की बात बिरले ही उठाते हैं। भारत जैसे कुछ देशों में महिलाओं को पुरुषों की तुलना में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा शैक्षिक अशक्तताओं का सामना करना पड़ता है। उन्हें ऐसे कई सुविधाएँ और अधिकार नहीं मिलते, जो पुरुषों को मिलते आये हैं। कभी–कभी उनकी स्थिति इतनी दयनीय होती है कि उनके हितों की रक्षा के लिए विशेष प्रयासों की आवश्यकता पड़ती है। कई श्रेणियों की महिलाएँ अपने प्रयासों द्वारा भी अपनी स्थिति में सुधार लाने में असमर्थ रहती हैं।[1]

महिला समाज का लगभग आधा हिस्सा है। महिलाओं के बिना घर, परिवार, समाज या देश की कल्पना भी नहीं किया जा सकता। बच्चों की देखभाल, घर–परिवार को सम्भालना, पति के काम में हाथ बंटाना, धार्मिक क्रिया–कलापों के द्वारा धर्म की रक्षा करना आदि अनेक काम हैं जो महिलाओं के बिना सम्भव नहीं है। महिला की मेहनत, लगन, त्याग, तपस्या एवं समर्पण से ही पुरुष का व्यक्तित्व चमकता है, बच्चे का भाग्य बनता है।

नेपोलियन बोनापार्ट[2] ने भी कहा है ''बच्चे का भाग्य माँ ही बनाती है।'' भारतीय समाज में नारी को आज भी वह स्थान प्राप्त नहीं हुआ है जो उसे बहुत पहले मिल जाना चाहिए था। नारी पूरी सिद्दत के साथ विपरीत परिस्थितियों में भी अपनी पहचान बनाने के लिए संघर्षरत हैं।

1- 'kks/k Nk=k] lekt'kkL= foHkkx] egkRek xka/kh fp=dwV xzkeksn; fo'ofo|ky;] fp=dwV

सामाजिक संरचना में नारी की सहभागिता पुरुष के समान ही आवश्यक है। सामाजिक जीवन में सामाजिक स्थिति की प्रकार्यात्मक भूमिका होती है। समाज में व्यक्ति की सामाजिक भूमिका प्रायः उसकी सामाजिक–आर्थित स्थिति से संचालित होती है। व्यक्ति की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन होने से उसकी भूमिका में भी परिवर्तन की सम्भावना बढ़ जाती है। अतः महिला कर्मिकों के सन्दर्भ में भी सामाजिक, आर्थिक पृष्ठिभूमि उनकी मनोवृत्तियों, महत्वाकांक्षाओं जीवन के प्रगति की दिशाओं के निर्धारण में महत्वपूर्ण है। इसी सन्दर्भ में पारसन्स [3] ने भी सामाजिक, सांस्कृतिक एवं व्यक्तित्व व्यवस्थाओं के स्तरों की विवेचना की है। भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता में नारी का स्थान और प्रस्थिति का एक संश्लिष्ट स्वरुप प्रस्तुत करने में अनेक कठिनाइयाँ हैं क्योंकि लिखित अभिलेख धार्मिक प्रकृति के हैं जो देवी, देवताओं, राजाओं, ऋषियों एवं अन्य अधिभौतिक व्यक्तियों की क्रिया–कलापों एवं विलक्षणताओं से भरा है।

भारतीय इतिहास का काल विस्तार दो हजार वर्षों में नारी का उद्‌भव और विकास, उत्थान और पतन, आकांक्षा और उपलब्धि, सिद्धान्त एवं व्यवहार अनगिनत उद्‌दीपकों से प्रभाविक होता रहा। स्त्री–पुरुषों की प्रस्थिति एवं अधिकारों में प्रायः अन्तर्विरोध बना रहा। पुरुष एवं स्त्री समाज निर्माण में परस्पर पूरक हैं परन्तु समाज को संचालित करने में एक पूरी तरह सक्रिय हैं और दूसरा पूरी तरह सक्रिय नहीं रहती हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक पृष्ठिभूमि से सम्बन्धित तथ्यों का विश्लेषण किया गया है, क्योंकि सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि का प्रभाव मानव जीवन की सम्पूर्ण रुपरेखा पर पड़ता है। व्यक्ति का सामाजिक अस्तित्व ही उसकी चेतना को निर्धारित करती है। आर्थिक कठिनाइयों में ही बहुत सी स्त्रियाँ व्यवसाय या नौकरी करती हैं, जिससे उनका परिवार आर्थिक कठिनाइयों से मुक्त रहे, लेकिन आज के समाज में स्त्रियाँ न केवल लाभ की दृष्टि से नौकरी करती हैं बल्कि अपनी प्रतिभा का सदुपयोग, समाज में प्रतिष्ठा, स्वतन्त्र रहने हेतु तथा स्वावलम्बी बनने के उद्‌देश्य से भी नौकरी करना चाहती हैं।

समाज के प्रत्येक सदस्य का उसकी सामाजिक–आर्थिक प्रस्थिति से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। भारतीय ग्रामीण समाज में प्राचीन काल से लेकर 18वीं शताब्दी तक सामाजिक–आर्थिक पूर्णतः परम्परागत व्यवस्था की सम्पोषक रहीं है किन्तु ब्रिटिश शासन, ईसाई मिशनों और अंग्रेजी शिक्षा के कारण इसमें महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। ब्रिटिश व्यवस्था के कारण भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति में वृहद परिवर्तन हुआ है।

20वीं शताब्दी के पूर्वाद्ध में तीव्र औद्योगीकरण और तद्जनित प्रभाव के कारण भारतीय समाज के परम्परागत व्यावसायिक और आर्थिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ है। परिणामतः महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक प्रस्थितियाँ प्रगति प्राप्त की हैं।

v/;;u {k=&

प्रस्तुत अध्ययन के लिए पूर्वी उत्तर प्रदेश के सुलतानपुर जनपद के कादीपुर तहसील के चार विकास खण्डों कादीपुर, अखण्डनगर, दोस्तपुर और करौंदी का चयन उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि से किया गया है।

v/;;u d mnns';&

प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं :–

1. महिलाओं की जातीय प्रस्थिति का अध्ययन करना।
2. महिलाओं की शैक्षिक प्रस्थिति का अध्ययन करना।
3. ग्रामीण महिलाओं की आय एवं उसके पति के आय में समानता का अध्ययन करना।
4. ग्रामीण महिलाओं के परिवार में स्थिति का अध्ययन करना।

ikFkfed rF;k d ladyu dh ifof/k&

प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक तथ्यों के संकलन केलिए साक्षात्मकार अनुसूची का प्रयोग किया गया है।

fun'k&

प्रस्तुत अध्ययन के लिए चुने गये चार विकास खण्डों से 300 ग्रामीण महिलाओं का चयन साधारण निदर्शन विधि से किया गया है।

lkj.kh;u&

प्रस्तुत अध्ययन में प्रायः साधारण सारणियाँ बनाई गयी हैं परन्तु आवश्यकतानुसार कन्टेन्जेन्सी सारणियाँ भी बनायी गयी है।

rF;k dk fo'ys"k.k ,o O;k[;k

lkj.kh l[;k&1

mÙkjnkf=;k dh tkrh; ifLFkfr

Ø0 l0	Tkfr	vkofÙk	ifr'kr
1	ब्राह्मण	130	43.34
2	क्षत्रिय	75	25.00
3	वैश्य	50	16.66
4	शूद्र	45	15.00
	योग	300	100.00

प्रस्तुत सारिणी सं0 1 से स्पष्ट होता है कि अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदात्रियों में सर्वाधिक 43.34 प्रतिशत् ब्राह्मण जाति के प्राप्त हुए। 25.00 प्रतिशत् क्षत्रिय जाति के मिले, 16.00 प्रतिशत् वैश्य जाति के मिल जबकि 15.00 प्रतिशत् शूद्र जाति के प्राप्त हुए।

उपर्युक्त सारणी के विश्लेषण से स्पष्ट है कि ऐसे उत्तरदात्रियों की संख्या सर्वाधिक है जो ब्राह्मण जाति से सम्बन्धित है जबकि इसके बाद क्रमशः क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र जाति की उत्तरदात्रियों की संख्या है।

lkj.kh la[;k&2

mÙkjnkf=;k dh 'kSf{kd iSfLFkfr

Ø0 l0	Hkkf{kd fLFkfr	vko`fÙk	izfr'kr
1	माध्यमिक स्तर	50	16.67
2	स्नातक	40	13.33
3	स्नातकोत्तर	155	51.67
4	प्रोफेशनल कोर्स	55	18.33
5	अन्य	00	0.00
	योग	300	100.00

प्रस्तुत सारणी संख्या 2 के माध्यमसे उत्तरदात्रियों की शैक्षिक योग्यता को प्रदर्शित किया गया है। कुल 300 उत्तरदात्रियों में से16.67 प्रतिशत् माध्यमिक स्तर, 18.33 प्रतिशत् स्नातक, 51.67 प्रतिशत् स्नातकोत्तर स्तर के, 18.33 प्रतिशत् प्रोफेशनल स्तर की उत्तरदात्रियाँ प्राप्त हुयी।

उपर्युक्त सारिणी के विश्लेषण से स्पष्ट है कि ऐसे उत्तरदात्रियों की संख्या सर्वाधिक है जो स्नातकोत्तर स्तर की हैं।

lkj.kh la[;k&3

mÙkjnkf=;k ,oa muds ifr ds vk; esa lekurk fLFkfr dk fooj.k

Ø0 l0	ifjorh	vko`fÙk	izfr'kr
1	हाँ	10	3.34
2	नहीं	290	96.66
3	अस्पष्ट	00	0.00
	योग	300	100.00

प्रस्तुत सारणी संख्या 3 के माध्यम से कुल 300 उत्तरदात्रियों में से 3.34 प्रतिशत् का कहना है कि दोनों के आय में समानता है जबकि 96.66 प्रतिशत् उत्तरदात्रियों का कहना है कि दोनों के आय में समानता नहीं है।

सारणी विश्लेषण से स्पष्ट है कि उत्तरदात्रियों की संख्या अधिक है, जिनकी आय उनके पति के बराबर नहीं है।

lkj.kh la[;k&4

ifjokj esa fL=;ksa dh fLFkfr

Ø0la0	ifjorZ	vko`fÙk	izfr'kr
1	अच्छी	200	66.67
2	सामान्य	100	33.33
3	खराब	00	0.00
4	अन्य	00	0.00
	योग	300	100.00

सारणी संख्या 4 के आँकड़ों के अवलोकन से यह परिलक्षित होता है कि सम्पूर्ण निदर्श का आधे से अधिक 66.67 प्रतिशत् उत्तरदात्रियों का कहना है कि उनका परिवार में अच्छी स्थिति है, जबकि 33.33 प्रतिशत् उत्तरदात्रियों का कहना है कि परिवार में उनकी स्थिति सामान्य है।

अतः स्पष्ट है कि समग्र निदर्श का आधे से अधिक उत्तरदात्रियों का परिवार में स्थिति अच्छी है, जिसके आलोक में यह कहा जा सकता है कि आज के वर्तमान समय में स्त्रियों को भी परिवार में एक अच्छी प्रस्थिति प्राप्त हो रही है और परिवार के सदस्य एक सम्मानित सदस्य मानकर स्त्रियों का सहयोग भी कर रहे हैं।

fu"d"kZ

प्रस्तुत अध्ययन पर संक्षेप में दृष्टि डालते हुए हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि आज भी हमारे भारतीय ग्रामीण महिलाओं की स्थिति सन्तोषजनक नहीं है। यह बात कतई इन्कार नहीं किया जा सकता कि ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र में प्रगति नहीं हुई है बल्कि राजनीति के क्षेत्र में भी अभूतपूर्व प्रगति हुई है।

lUnHkZ xzUFk

1. पाण्डेय बालेश्वर एवं डॉ0 भारती शुक्ला '2011ः समाजकार्य एक समग्र दृष्टि', उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, पृष्ठ सं0 361
2- शर्मा रमा एवं एम0के0 मिश्रा, 2010ः महिलाओं को कानूनी, धार्मिक एवं सामाजिक अधिकार, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ–111
3- दोषी एस0एल0ः आधुनिकता, उत्तर आधुनिकता एवं तब समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, रावत पब्लिकेशव, जयपुर 2005 पृष्ठ– 196

Qsjhokyksa dks dkuwuh ekU;rk

fot; 'kadj feJ[1]

izLrkouk%

मुम्बई और दिल्ली में लगभग ढाई–ढाई लाख फेरी वाले हैं। शहरी फेरीवालों के बारे में 2009 की राष्ट्रीय नीति के अनुसार शहर की आबादी का 2.5 प्रतिशत इस काम में लगा हुआ है। यह देश की जनसंख्या का काफी बड़ा भाग है और इनकी अनदेखी नहीं की जा सकती।

फेरीवालों से सम्बन्धित विधेयक लोकसभा में 6 सितम्बर 2013 को प्रस्तुत किया गया। इसे शहरी गरीबों के एक महत्वपूर्ण वर्ग के लिए बहुत महत्वपूर्ण माना गया। इस विधेयक को राज्यसभा के शरदकालीन सत्र में फिर पेश किये जाने की संभावना है। ये विधेयक कई संगठनों के लगातार प्रयत्नों का परिणाम है। इनमें स्वयं रोजगारी महिलाओं का संगठन (सेवा) और भारत में फेरीवालों के राष्ट्रीय संगठन (नासवी) प्रमुख हैं। ये संगठन दशकों पहले से सरकार पर फेरी लगाने वालों को कानूनी मान्यता देने के लिए दबाव डाल रहे थे। राष्ट्रीय सलाहकार परिषद ने भी उनका मामला हाथ में लिया और एक कानून का समौदा तैयार किया। नोडल मंत्रालय (आवास एवं शहरी गरीबी शमन–हूपा) इसके पक्ष में था लेकिन फेरी लगाने वालों का मामला स्थानीय निकायों के नियन्त्रण में आता है, अतः वे खासतौर से चौकन्ने थे। कारण यह कि राज्य सरकारें भी इन वर्गों के लिए कानून बना सकती हैं। तर्क यह दिया गया कि गली में फेरी लगाने का मामला शहरी विकास का मुद्दा नहीं माना जाना चाहिये और इसे जीविका के एक

1- 'kks/k Nk=] egkRek xka/kh fp=dwV xzkeksn; fo'ofo|ky;] fp=dwV

मुद्दे के रूप में देखा जाना चाहिए। केन्द्र सरकार महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (एमजीएनआरईजीए) पहले ही पास कर चुकी है भले ही उसका संचालन स्थानीय निकायों द्वारा किया जा रहा है। कहा गया कि गली में फेरी लगाने वालों का मामला इसी प्रकार का समझा जाना चाहिये। इसी आधार पर विधेयक का मसौदा तैयार किया गया। इस विधेयक को लोकसभी के अधिवेशन के आखिरी दिन सदन में पेश किया गया।

Qjh yxkus okys gh D;k%

पिछले कुछ दशकों के दौरान हम देख सकते हैं कि भारत के शहरों में गली में फेरी लगाने वालों की संख्या में काफी वृद्धि हुई है। मुम्बई और दिल्ली में लगभग ढाई–ढाई लाख फेरी वाले हैं। असलियत यह है कि शहरी फेरीवालों के बारे में 2009 की राष्ट्रीय नीति के अनुसार शहर की आबादी का 2.5 प्रतिशत इस काम में लगा हुआ है यह देश की जनसंख्या का काफी बड़ा भाग है और इनकी अनदेखी नहीं की जा सकती।

फेरीवालों का एक बड़ा भाग कम कौशल वाला है जो ग्रामीण क्षेत्रों में बड़े शहरों को या छोटे कस्बों से रोजगार की तलाश में आया है। इन लोगों को सड़कों पर फेरी लगाने की तब जरूरत पड़ी जब उन्हें रोजी–रोटी कमाने का कोई अन्य तरीका नहीं सूझा। हालांकि इस वर्ग की आमदनी कम है, लेकिन उन्हें पूंजी भी ज्यादा नहीं लगानी पड़ती और इनको विशेष कौशल सीखने अथवा प्रशिक्षण लेने की जरूरत भी नहीं पड़ती। इसीलिए इन लोगों को चाहे वे स्त्री हों या पुरूष, फेरी लगाना और सामान बेचना रोजी–रोटी कमाने का सबसे आसान जरिया लगता है।

शहरी आबादी का एक और वर्ग है जिसने फेरी लगाने का काम संभाला है। इन लोगों अथवा उनके पति/पत्नी पहले बेहतर कामों में औपचारिक क्षेत्र में लगे थे। इनमें से बहुत से लोग मुम्बई अथवा अहमदाबाद की कपड़ा मिलों में काम करते थे या कोलकाता की केसी कम्पनी में लगे हुए थे। इन शहरों के औपचारिक क्षेत्र के बहुत बड़ी संख्या में श्रमिकों को तब बेरोजगारी झेलनी पड़ी जब उनके उद्योग बन्द हो गए। इनमें से अनेक को अथवा उनकी पत्नियों को जीविका कमाने के लिए फेरीवाला बनना पड़ा।

अगर इस बात पर ध्यान दें, कि कई उद्योग भी इन लोगों पर अपने उत्पाद बेचने के लिए निर्भर करते हैं तो इस क्षेत्र में लगे फेरीवालों की संख्या और बढ़ जाती है। कपड़े और होजरी का सामान अधिकांशतः फेरीवालों द्वारा बेचा जाता है। इसी तरह से चमड़े और प्लास्टिक की चीजों की बिक्री ज्यादातर फेरीवालों द्वारा की जाती है। इन उद्योगों के जरिये अनेक लोगों को रोजगार मिलता है। ये

उद्योग खुद अपने उत्पादों को नहीं बेच पाते। इस तरह से फेरी वाले इन उद्योगों को संचालित करने में महत्वपूर्ण सेवा प्रदान करते हैं।

कभी–कभी समाज को इन फेरीवालों के जरिये सस्ती दरों पर पकी–पकाई अथवा कच्ची जिसे और खाने–पीने की चीजें तथा कपड़े बर्तन मिल जाते हैं। इससे शहरी गरीबों को फायदा होता है। इस प्रकार से हम देखते हैं कि फेरी वाले शहरी गरीबों के एक भाग को और शहरी गरीबों को लाभ पहुंचाते हैं लेकिन इन बातों को स्थानीय अधिकारी महत्व नहीं देते ओर वे फेरीवालों को अतिक्रमणकारी मानते हैं।

fo/k;d dh e[; fo'k"krk,¡ %

रेहड़ी, पटरी वालों की नगरीय समिति या टाऊन वेंडिंग कमिटि (टीवीसी) इस सम्बन्ध में सबसे महत्वपूर्ण संख्या है। यह नीतिगत मामलों में मुख्य बिन्दु रहेगी क्योंकि फेरीवालों को प्रमाण–पत्र जारी करने, फेरी लगाने के क्षेत्रों के बारे में फैसला करने और फेरीवालों से शुल्क/टैक्स वसूलने आदि का काम करती है। इसके अलावा कई अन्य कार्य भी करती है। इनमें से कुछ की चर्चा बाद में की जाएगी। स्थानीय निकाय का मुख्य कार्यकारी अधिकारी/म्युनिसिपन कमिश्नर इस समिति का अध्यक्ष होता है। गली में फेरी लगाने वालों के प्रतिनिधि कुल सदस्यों के 40 प्रतिशत होते हैं जबकि सिविल सोसाइटी के प्रतिनिधि (गैर सरकारी संगठन इौर सी0बी0ओ0) के प्रतिनिधि 10 प्रतिशत होते हैं। बाकी 50 प्रतिशत विभिन्न सरकारी हितधारकों जैसे पुलिस, ट्रैफिक पुलिस, नगर निगम अधिकारी आदि होते हैं। यहां पर मुख्य बात यह है कि टीवीसी में समुचित प्रतिनिधित्व मिलने से पटरी वाले अपनी बात मजबूती से रख सकेंगे। अभी तक उनके बारे में सारे फैसले स्थानीय अधिकारियों या राज्य सरकारों द्वारा किए जाते थे। अन्य कई मुद्दे भी इस व्यवसाय के लिए महत्वपूर्ण हैं।

टाउन बेंडिंग कमेटी (टीवीसी) का पहला प्रमुख कार्य यह है कि वह मौजूदा गली में फेरीवालों का एक सर्वेक्षण कराए। धारा 3 टीवीसी को यह सुनिश्चित करना होता है कि सभी फेरीवालों को फुटपाथ पर या इस काम के लिए चुनी गई किसी जगह पर ठीक स्थान मिल जाए। जब तक यह काम पूरा नहीं होता, तब तक उन्हें वहां से हटाया न जाए। टीवीसी इन फेरीवालों को प्रमाण–पत्र जारी करेगी और सर्वेक्षण के जरिये उन्हें मान्यता प्रदान करेगी (धारा–4) मौजूदा फेरीवालों को काम जारी रखने की अनुमति देने के लिए लाइसेंस जारी किए जाएंगे। यह काम उनका मौजूदा लाइसेंस खत्म होने से पहले किया जाएगा। बाद में उन्हें प्रमाण–पत्र दिए जाएंगे।

अगर कोई व्यक्ति सर्वेक्षण के बाद फेरीवालों में शामिल होता है तो टीवीसी अगर जगह उपलब्ध हुइे, तो उसे प्रमाण–पत्र देगी। यदि किसी क्षेत्र में फेरीवालों की संख्या क्षमता से ज्यादा बढ़ जाती है तो फेरीवालों को लॉटरी निकाल कर जगह दी जाएगी। इस प्रकार से जिन लोगों को जगह नहीं मिल पाती, उन्हें साथ लगे क्षेत्रों में जगह दी जाएगी।

इस विधेयक की धारा–5 में कहा गया है कि जिस व्यक्ति को प्रमाण–पत्र दिया जाएगा उसे भी फेरी लगाने का अधिकार होगा। लेकिन उसकी आयु कम से कम 14 वर्ष होनी चाहिए और गली में फेरी लगाने के अलावा उसकी आमदनी का कोई अन्य साधन नहीं होना चाहिए। जिस व्यक्ति को प्रमाण–पत्र दिया जाएगा वह उसे किसी अन्य को नहीं दे सकता लेकिन अगर वो व्यक्ति बीमार है या शारीरिक रूप से विकलांग हो गया है तो उसे अपने बच्चों अथवा पति/पत्नी को ये व्यापार सौंपने का अधिकार होगा। यह महत्वपूर्ण बिन्दु है क्योंकि इससे दूसरे लोगों को प्रमाण–पत्र बेचने से रोका जा सकेगा।

,d vkj egRoiw.kZ eqn~nk gS txg [kkyh djkuk vkj laifÙk tCr djuk%

यह गली में फेरी लगाने वालों के लिए सबसे डरावनी बात है। नगरपालिका के अधिकारी ट्रकों पर आते हैं और गैर–कानूनी फेरीवालों को उनके माल सहित पकड़ कर उनका माल जब्त कर लेते हैं। इस प्रकार से बहुत से फेरी वाले इन छापों के कारण कंगाल हो गए हैं। उन पर भारी जुर्माना लगाया जाता है और अनेक मामलों में यह माल की कीमत से ज्यादा होता है। उदाहरण के लिए मुम्बई में एक जब्त की गई हाथ ठेली को छुड़ाने के लिए 17000 रूप्ये वसूला जाता है। यह राशि ठेली और उस पर लदे माल की कीमत से ज्यादा होती है। अगर फेरीवाला इसे छुड़ा भी लेता है तो वह पाता है कि उसका सारा माल गुम हो चुका है।

इस विधेयक की धारा–5 में कहा गया है जगह खाली कराने का काम तब किया जाएगा जब कोई अन्य विकल्प न बचे। अगर किसी फेरी वाले को सही कारणों से हटाया जाता है तो उसे किसी अन्य मुहल्ले में जगह देनी पड़ेगी। यदि फेरीवाला वहां नहीं जाता तो उसे नोटिस जारी करके विनिर्दिष्ट अवधि के अन्दर जाने को कहा जाएगा। अगर वो फेरी वाला वहां नहीं जाता, तो स्थानीय अधिकारी उस पर 250 रूप्ये प्रतिदिन का जुर्माना लगा सकता है। यदि फेरीवाला इस पर भी नहीं मानता तो अधिकारी उसे जबरन हटा सकते हैं, लेकिन जगह से बेदखल करने और माल जब्त करने के बारे में स्पष्ट नियम बनाए गए हैं। यह बहुत महत्वपूर्ण प्रावधान है। जब भी पुलिस या अन्य अधिकारी किसी अपराधी के घर छापा मारते हैं तो जब्त किए गए माल का पंचनामा तैयार किया जाता है। अभी

तक फेरीवालों को यह अधिकार नहीं दिया गया था। सवाल यह है कि ये फेरी वाले क्या अपराधियों से गये बीते हैं?

इस विधेयक में जब्त सामानों के वापस पाने के तरीके के विवरण दिए गए हैं। अगर जब्त किया गया माल जल्दी खराब होने वाला (जैसे फल, सब्जियां, पका भोजन आदि) है तो ये माल फेरी वालों को उसी दिन वापस कर दिया जाएगा। अगर जब्त किया गया माल खराब न होने वाला हो (जैसे कपड़े, बर्तन आदि) तो उसे अधिकाधिक दो दिन में लौटाया जाएगा। स्थानीय अधिकारी जुर्माना लगा सकते हैं लेकिन जुर्माने की रकम जब्त किए गए माल की कीमत से ज्यादा नहीं होगी।

टीवीसी गलियों में फेरी लगाने वालों को मान्यता देने और विनियमित करने की सबसे ताकतवर संस्था है लेकिन जरूरत इस बात की है कि शिकायतें दूर की जाएं। विधेयक की धारा 20 के अनुसार हर शहर/कस्बे में शिकायत निवारण समिति होगी जिसका अध्यक्ष कोइ सेवानिवृत न्यायाधीश या जुडीशियल मजिस्ट्रेट होगा। अन्य दो सदस्य भी होंगे जो व्यावसायिक होंगे लेकिन स्थानीय निकाय अथवा सरकार के कर्मचारी नहीं होंगे। यह समिति उन मामलों की सुनवाई करेगी जो फेरी लगाने के प्रमाण पत्रों के बारे में आवेदनों से सम्बन्धित होंगे। यदि फेरी वाले फैसले से सहमत नहीं है, तो वह स्थानीय प्राधिकरण के पास जाएगा। इस विधेयक में साफ कहा गया है कि हर फेरी वाले की बात सुनी जाएगी और उसके बाद ही कोई फैसला किया जाएगा।

फेरी वालों को बढ़ावा देने लिए टीवीसी स्थानीय प्राधिकरण से सलाह–मशविरा करके हर पांच वर्ष बाद फेरी वालों के बारे में एक योजना तैयार करेगी। यह महत्वपूर्ण है कि इस योजना का इस्तेमाल ऐसा नहीं किया जाएगा कि फेरी वालों को नुकसान हो। नगर नियोजन की दृष्टि से यह बहुत महत्वपूर्ण है। सभी शहरों की विकास योजनाओं में हमें दिखाई देता है कि हर काम के लिए जैसे पार्कों, बगीचों, शिक्षा संस्थानों, अस्पतालों आदि के लिए जमीन चिन्हित की जाती है, लेकिन फेरी वालों को उसमें शामिल नहीं किया जाता। नतीजा यह होता है कि गलियों में फेरी लगाने वालों को अतिक्रमणकारी मान लिया जाता है।

जहां तक खाली कराने की बात है, हमें लगता है कि पुलिस को ज्यादा अधिकार मिले हैं। भारतीय पुलिस अधिनियम की धारा 34 अनुसार पुलिस किसी ऐसे व्यक्ति को हटा सकती है जो सार्वजनिक रूप से कोई माल बेच रहा हो। हर राज्य के पुलिस अधिनियम में यह प्रावधान शामिल है।

इसका मतलब यह है कि स्थानीय अधिकारी किसी पुलिस वाले को किसी सड़क पर इस धारा के अन्तर्गत हटाने का अधिकार देता है। इस विधेयक की

धारा— 27 में कहा गया है कि अगर कोई फेरी वाला प्रमाण—पत्र लेकर फेरी लगा रहा है और वह इसी चिन्हित क्षेत्र में फेरी लगाता है तो उसे कोई व्यक्ति या पुलिस कर्मचारी नहीं रोकेगा। इसका मतलब साफ है कि पहले की धारा—34 प्रभावी नहीं रही। इस विधेयक में यह भी कहा गया है कि जैसे ही यह कानून बन जाएगा, इस विषय पर पहले वाले सभी कानून और नियम जो फेरीवालों के बारे में होंगे, खत्म हो जाएंगे।

जब भी पुलिस या अन्य अधिकारी किसी अपराधी के घर छापा मारते हैं तो जब्त किए गए माल का पंचनामा तैयार किया जाता है। अभी तक फेरी वालों को यह अधिकार नहीं दिया गया था। सवाल यह है कि ये फेरी वाले क्या अपराधियों से गये बीते हैं?

फरीवालों के अधिकारों की रक्षा के अलावा इस विधेयक में इन लोगों के जीवन के विभिन्न पक्षों को बढ़ावा देने वाले प्रावधान भी हैं। इनमें वित्तीय समावेशन, सामाजिक सुरक्षा, बीमा और कल्याणकारी योजनाएं शामिल हैं। इस विधेयक के जरिये सरकारों को निर्देश दिए गए है कि वे क्षमता निर्माण कार्यक्रम बनाएं ताकि गलियों में फेरी लगाने वाले इस विधेयक के अन्तर्गत अपने अधिकारों और कर्तव्यों का ज्ञान प्राप्त कर सकें। टीवीसी को गलियों में होने के व्यापार के बारे में अनुसंधान कराना चाहिए और देश की अर्थव्यवस्था के इस अनौपचारिक क्षेत्र में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने चाहिए।

fu"d"k % vPN vkj cj

हमने इस लेख के जरिए विधेयक के बारे में विस्तार से स्पष्टीकरण देने की कोशिश नहीं की है। उदाहरण के लिए पहली अनुसूची में गली के फेरीवालों के बारे में योजना के विवरण दिए गए हैं और दूसरी अनुसूची में गलियों में फेरी लगाने वाले लोगों के बारे में राज्य सरकार को क्या करना चाहिये, यह बताया गया है। इस विधेयक के कई ऐसे पक्ष भी हैं जिनके विवरण नहीं दिए गए। हमने सिर्फ उन मुद्दों की चर्चा की है जिनके बारे में इस विधेयक में चर्चा हुई है।

कुछ बुरे पक्ष भी हैं। इस विधेयक के दायरे से रेलवे को बाहर रखा गया है। यह दुर्भाग्य की बात है क्योंकि लाइसेंस प्राप्त फेरीवाले भी रेल यात्राएं करते हैं। अधिकांश स्टेशनों पर चाय और नमकीन बेचने वालों को हटा कर उनकी जगह बड़ी कंपनियों को लाया गया है। खाने—पीने की उनकी चीजों के मूल्य फेरी वालों की तुलना में काफी ज्यादा है। इसी तरह से लम्बी दूरी की गाड़ियों पर जो भोजना परोसा जाता है वह खर्चीला हो गया है। मध्यवर्गीय यात्रियों के लिए भी यह खर्चीला है। लाइसेंस प्राप्त फेरी वाले कम दरों पर ये सुविधाएं जुटा सकते हैं।

गली में फेरी लगाने वालों से कहा जाता है कि वे अपने क्षेत्र को साफ रखें। उनके लिए सबसे मुश्किल बात यह है और यह खास तौर से महिला फेरी वालों पर लागू होती है कि उनके लिए कोई शौचालय नहीं है। भोजन बेचने वालों के लिए बहते पानी की जरूरत होती है जो भोजन पकाने और सफाई के काम आता है। इस विधेयक में इन बातों के लिए विशेष प्रावधान किए जाने चाहिए थे। इन पर जो खर्च आता वह उनसे वसूल किया जा सकता था। जो महिलाएं दिन भर फेरी लगाती रहती हैं उनके लिए शौचालय न होने का नतीजा बीमारियां होती हैं। इस लेखक ने मुम्बई के परेल इलाके में एक अनुसंधान किया था जिसमें पाया गया कि उस क्षेत्र में अधिकांश फेरी वाली महिलाएं पहले कपड़ा मिल के पूर्व कामगारों की पत्नियां या बेटियां हैं। पाया गया कि ये सभी महिलाएं मूत्र रोग अथवा पथरी से पीड़ित हैं। वे पानी भी कम पीती हैं। अतः इन महिलाओं के लिए शौचालय होने चाहियें। इस विधेयक में यह मुद्दा भी शामिल किया जाना चाहिये था।

fp=dV tuin e ek/;fed Lrj ij v/;;ujr fo|kfFk;k e ;kx f'k{kk d ifr nf"Vdk.k dk v/;;u

Mk0 ejyh/kj flg[1]

lkjk'k&

प्राचीन भारतीय ि ाक्षा में जीवन के लौकिक एवं पारलौकिक पक्षों में पर्याप्त समन्वय था। आज ि ाक्षा का अत्यधिक भौतिकीकरण मानवता एवं सम्पूर्ण सृश्टि के लिए घातक सिद्ध हो रहा है। इस समय भारत में ऐसी ि ाक्षा व्यवस्था की आव यकता है जो न केवल हमारी भौतिक आव यकताओं की पूर्ति करे, बल्कि साथ–साथ हमारी राश्ट्रीय एकता व अखण्डता को सुरक्षित रख सके। ि ाक्षा व्यवस्था ऐसी हो जो ि ाक्षित युवा समाज तैयार कर सके और निकट भविश्य की चुनौतियों का दृढ़ता से सामना कर सके। माध्यमिक स्तर की ि ाक्षा में सामान्यतया कि ोरावस्था में प्रवे ा कर रहे बालक एवं बालिकाएँ ही ि ाक्षा ग्रहण करती हैं। अतः माध्यमिक स्तर पर योग ि ाक्षा प्रदान करने के लिए पाठ्यक्रम में योग ि ाक्षा का प्रावधान किया जाए जिससे विद्यार्थियों में सर्वांगीण विकास हो सके। योग ि ाक्षा किसी के लिए संजीवनी से कम नहीं है। योग जहाँ संसार को संवारता है वहीं परलोक की यात्रा को भी सहज बनाया है। योग ि ाक्षा की उपादेयता वर्तमान सन्दर्भ में पूरे वि व में व्यापक रूप में विद्यमान है। माध्यमिक स्तर पर पढ़ने वाला विद्यार्थी कि ोरावस्था में प्रवे ा कर रहा होता है तथा कई तरह की समस्याओं से ग्रसित होता है। इसलिए इस अवस्था का अत्यन्त संघर्श, तनाव एवं तूफान की अवस्था कहा गया है। इसलिए योग की उपादेयता से प्रभावित होकर भाोधार्थी ने माध्यमिक स्तर पर योग ि ाक्षा की स्थिति एवं क्रियान्वयन पर कार्य करने का नि चय किया।

1- lgk;d vkpk;] t0vkj0,p0 fo'ofo|ky;] fp=dV m0i0

iLrkouk&

'योग' भाब्द भारतीय संस्कृति तथा द र्न की बहुमूल्य सम्पत्ति है। योग एक पूर्ण विज्ञान है, एक पूर्ण जीवन भौली है, एक पूर्ण चिकित्सा पद्धति है एवं एक पूर्ण अध्यात्म विद्या है। योग की लोकप्रियता का रहस्य यह है कि यह लिंग, जाति वर्ग, सम्प्रदाय, क्षेत्र एवं भाशा की संकीर्णताओं से कभी आबद्ध नहीं रहा है। साधक चिन्तक, वैरागी अभ्यासी, ब्रह्मचारी, गृहस्थ विद्यार्थी कोई भी इसका सानिध्य प्राप्त कर लाभान्वित हो सकता है। व्यक्ति के निर्माण और उत्थान के ही नहीं, बल्कि परिवार, समाज, राश्ट्र और वि व के चहुंमुखी विकास में भी यह उपयोगी सिद्ध हुआ है। आधुनिक मानव समाज जिस तनाव, अ ान्ति, आतंकवाद, अभाव एवं अज्ञान का ि ाकार है उसका समाधान केवल योग के पास है। योग मनुश्य को सकारात्मक चिन्तन के मार्ग पर लाने की एक अद्भुत विद्या है जिसे करोड़ों वर्शों पूर्व भारत के प्र ाासन के ऋशियों–मुनियों ने अविश्कृत किया था। महर्शि पतंजलि ने अश्टांग योग के रूप में इसे अनु ाासनबद्ध सम्पादन एवं निश्पादन किया। इसी अश्टांग योग का उपदे ा और अभ्यास स्वामी रामदेव जी महाराज अपने प्रवचन एवं योग प्रि ाक्षण में करते और कराते हैं। उनका निश्कर्श है कि स्वस्थ व्यक्ति और दुखी समाज का निर्माण केवल योग की भारण में जाकर ही हो सकता है। प्राचीन भारतीय धर्म, पुराण, इतिहास आदि के अवलोकन से ज्ञात होता है कि योग प्रणाली अथवा योग ि ाक्षा की परम्परा अविच्छिन्न रूप से चलती आयी है। हमारा दे ा अनादि काल से ि ाक्षा एवं संस्कृत का धरोहर रहा है। हमारे दे ा में एक से बढ़कर एक विचारक, चिन्तक, ि ाक्षाविद्, दा र्निक एवं समाज सुधारक आदि समय–समय पर अवतरित होते रहे हैं और अपनी ि ाक्षा प्रणाली के माध्यम से जनमानस को लाभान्वित करते रहे हैं।

'योग' भाब्द सर्वप्रथम ऋग्वेद में मिलता है। यहां योग भाब्द का अर्थ केवल जोड़ना है। उपनिशदों में योग, ध्यान, धारणा, प्रत्याहार कुण्डलिनी विविध मंत्र, जप–तप आदि का स्पश्ट और विस्तृत वर्णन मिलता है। महाभारत और श्रीमद्भागवत गीता में योग के विभिन्न अंगों का विवेचन एवं वि लेशण उपलब्ध है। यहाँ तक कि गीता के अट्ठारहवें अध्याय में अट्ठारह प्रकार के योगों का वर्णन किया गया है। भगवत पुराण में तो स्पश्ट रूप से अश्टांग योग की व्याख्या, महिमा तथा अनेक लब्धियों का विवेचन है। योग वि ाश्ठ के छः प्रकरणों में योग के विभिन्न सन्दर्भों की विस्तृत व्याख्या है। न्याय द र्न में भी योग को यथोचित स्थान मिला है। पतंजलि का योग द र्न तो योगराज ही है। जिसमें सम्यक रूप से योग साधना का सांगोपांग विवेचन हुआ है। भगवान बुद्ध प्राप्त होने से पहले छः वर्शों तक ध्यान द्वारा योगाभ्यास किया था। जैन साहित्य में भी योग की बहुत

चर्चा हुई है और उसका महत्व स्वीकार किया गया है। वास्तव में देखा जाय तो योग के क्रमबद्ध विवेचन का सूत्रपात आचार्य हरिभद्र ने किया है। उन्होंने योग की विस्तृत व्याख्या योग भातक, योगविन्द, योगदृश्टि समुच्चय, योगवि िका आदि ग्रन्थों में की है। इस प्रकार योग की परम्परा भारतीय संस्कृति में अविच्छिन्न रूप से प्रवाहित है और चिरकाल से भारतीय मनीशियों, सन्तों, विचारकों तथा महापुरुशों ने अपने जीवन एवं विचारों में योग को यथोचित स्थान दिया है।

सिंह विनय कुमार (2006) में अपने लघु ोध प्रबन्ध में योग ि ाक्षा तथ योग के सन्दर्भ में बाबा रामदेव जी के विचारों पर प्रका ा डाला है और पाया है कि योग ि ाक्षा से आत्मबल बढ़ता है एवं मस्तिश्क, भारीर सफलतापूर्वक कार्य करता है। जिसके कारण औशधि की आव यकता नहीं पड़ती है।

एल0 फ्लीसेक(2001) ने दो छात्र एवं दो छात्राओं को इग्लैण्ड के गोस्टेल ओक विद्यालय से चुना ये बच्चे विकलांग थे। इन बच्चों को विद्यालय के समय योग सिखाया गया जिससे यह देखा गया कि उनके ध्यान लगाने की क्षमता, सीखने की क्षमता, तनाव कम करने की क्षमता प्रभावित होती है।

स्वरूप मूर्ति व करेल नेप्सर (2000) ने अपने भाोधकार्य भीर्शक 'योग की विभिन्न क्रियाओं में भ्रामरी प्राणायाम, तनाव, अवसाद, क्रोध, चिन्ता, अनिद्रा आदि रोगों से छुटकारा दिलाता है।'' इसका प्रभाव ि ाल्प चिकित्सा में भी सार्थक रूप से पडता है तथा साथ ही साथ कोि ाकाओं व उत्तकों के निर्माण की गति को भी बढ़ाता है।

v/;;u dh vko';drk&

प्राचीन भारतीय ि ाक्षा में जीवन के लौकिक एवं पारलौकिक पक्षों में पर्याप्त समन्वय था। आज ि ाक्षा का अत्यधिक भौतिकीकरण मानवता एवं सम्पूर्ण सृश्टि के लिए घातक सिद्ध हो रहा है। इस समय भारत में ऐसी ि ाक्षा व्यवस्था की आव यकता है जो न केवल हमारी भौतिक आव यकताओं की पूर्ति करें, बल्कि साथ–साथ हमारी राश्ट्रीय एकता व अखण्डता को सुरक्षित रख सके। ि ाक्षा व्यवस्था ऐसी हो जो ि ाक्षित युवा समाज तैयार कर सके और निकट भविश्य की चुनौतियों का दृढ़ता से सामना कर सके। आज हम भौतिक विस्तार की ओर उन्मुख है। आव यकता इस बात की है कि मानवीय गरिमा को सच्चे अर्थों में प्रतिस्थापित किया जाए। आज हमारे दे ा का युवा वर्ग जीवन के वास्तविक उद्दे य को खोज नहीं पाया है। आज दे ा को नये नेतृत्व की आव यकता है। आज धर्म, वि वास, संस्कृति और ि ाक्षा के बीच तादात्म्य नहीं है, फलतः दे ा हिंसा, संकीर्णता, वर्गवाद, सम्प्रदायवाद, पिछड़ेपन और अलगाववाद का ि ाकार बना हुआ है। प्रस्तुत अध्ययन उक्त विविध क्षेत्रों में सामन्जस्य खोजने

में सहायक सिद्ध होगा। योग आत्मचिन्तन की विधि है। योग आत्मउपचार का दूसरा नाम है। योग के माध्यम से हमें भाारीरिक लाभ मिलने के साथ–साथ अध्यात्म लाभ भी मिलता है। इसलिए योग की ि ाक्षा को पाठ्यक्रम में भाामिल करना तथा उसका क्रियान्वयन करना अत्यन्ताव यक है।

mnns';&

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों में योग ि ाक्षा के प्रति बालक विद्यार्थियों के दृश्टिकोण का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों में योग ि ाक्षा के प्रति बालिका विद्यार्थियों के प्रति दृश्टिकोण का अध्ययन करना।

v/;;u dh ifjdYiuk&

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों में योग ि ाक्षा के प्रति दृश्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

ifjlheu&

प्रस्तुत भाोध अध्ययन हेतु चित्रकूट जनपद के कुल 5 विकास खण्डों के 10 वित्तीय एवं 10 वित्त–विहीन मान्यता प्राप्त उच्च माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया है।

U;kn'kZ

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु चित्रकूट जनपद के कुल 5 विकास खण्डों का चयन किया गया। तत्प चात चयनित प्रत्येक विकासखण्डों से दो–दो वित्तीय एवं वित्त–विहीन मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया। इस प्रकार 10 वित्तीय एवं 10 वित्त–विहीन मान्यता प्राप्त उच्च माध्यमिक विद्यालयों के 280 विद्यार्थियों को इस अध्ययन के न्याद ी के रूप में सम्मिलित किया गया।

'kks/k midj.k&

शोधकर्ता द्वारा विद्यार्थियों का योग ि ाक्षा के प्रति दृश्टिकोण का अध्ययन करने के लिए निर्धारण मापनी का निर्माण किया गया। यह निर्धारण मापनी अध्ययनकर्ता द्वारा स्वयं तैयार किया गया है एवं उसे पांच ि ाक्षाविदों के निर्दे ान एवं सहयोग से तैयार किया गया। सं ोधन के प चात निर्धारण मापनी में प्र नों की कुल संख्या 30 रखी गयी है। इस मापनी के प्र नों को पांच भागों में विभक्त किया गया है।

1. भौक्षिक पक्ष से सम्बन्धित प्र न।
2. मनो ारीरिक पक्ष से सम्बन्धित प्र न।

3. सामाजिक एवं आर्थिक दृश्टि से सम्बन्धित प्र   न।
4. नैतिक विकास एवं लोक कल्याण से सम्बन्धित प्र   न।
5. भाारीरिक स्वास्थ्य से सम्बन्धित प्र   न।

vkdM+k dk ,d=hdj.k&

चित्रकूट जनपद में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् योग शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन करने के लिए शोधकर्ता द्वारा चयनित वित्तीय एवं वित्त–विहीन मान्यता प्राप्त इण्टर कालेजों में जाकर वहां के प्राचार्यों से अनुमति प्राप्त कर कक्षा 9वीं एवं 10वीं में अध्ययनरत् विद्यार्थियों को निर्धारण मापनी का वितरण किया गया तथा उन्हें पूर्ण करने के लिए उचित समय दिया गया एवं छात्र–छात्राओं द्वारा पूर्ण करने के पश्चात् उसे एकत्रित किया गया।

lkf[;dh; fof/k&

संकलित आंकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक–विचलन एवं टी–मूल्य का प्रयोग किया गया।

rkfydk

विद्यार्थियों में योग शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण के अध्ययन के प्राप्तांकों के मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मूल्य

दृष्टिकोण	विद्यालय के प्रकार	योग	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	टी–मूल्य
शैक्षिक पक्ष	वित्तीय मान्यता प्राप्त	140	3.22	1.74	2.56	0.0042
	वित्त–विहीन मान्यता प्राप्त	140	3.09	1.100		
मनोशारीरिक पक्ष सम्बन्धित	वित्तीय मान्यता प्राप्त	140	3.93	1.24	0.12	1.85
	वित्त–विहीन मान्यता प्राप्त	140	2.67	1.46		
सामाजिक एवं आर्थिक पक्ष सम्बन्धित	वित्तीय मान्यता प्राप्त	140	3.28	1.19	1.62	0.270
	वित्त–विहीन मान्यता प्राप्त	140	2.31	0.92		
नैतिक एवं लोक कल्याण सम्बन्धित	वित्तीय मान्यता प्राप्त	140	2.73	0.98	0.096	8.21
	वित्त–विहीन मान्यता प्राप्त	140	3.97	1.25		
शारीरिक स्वास्थ्य सम्बन्धित	वित्तीय मान्यता प्राप्त	140	3.60	1.22	0.107	2.68
	वित्त–विहीन मान्यता प्राप्त	140	2.58	1.27		

सार्थकता स्तर पर शीर्षक 0.01($P>0.01$) पर मान 2.58 है।

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि वित्तीय एवं वित्त–विहीन मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के मनो शारीरिक पक्ष सम्बन्धित, नैतिक एवं लोक कल्याण के टी–मूल्य (क्रमशः 1.85, 8.21, 2068) मुक्तांश 560 एवं 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक हैं। इसलिए वित्तीय मान्यता प्राप्त एवं वित्त–विहीन मान्यता प्राप्त एवं प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों के मनोशारीरिक, नैतिक एवं लोक–कल्याण तथा शारीरिक स्वास्थ्य सम्बन्धित दृष्टिकोण में सार्थक अन्तर है। अतः शून्य परिकल्पना माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मनोशारीरिक नैतिक एवं लोक कल्याण और शारीरिक स्वास्थ्य सम्बन्धित दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। जो स्वीकृत किया जाता है। तालिका से यह भी स्पष्ट होता है कि वित्तीय मान्यता प्राप्त शैक्षिक, मनोशारीरिक, सामाजिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य सम्बन्धित दृष्टिकोण का मध्यमान क्रमशः 3.22, 3.93, 3.28, 3.60 है जो वित्त–विहीन मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों से अधिक है। अतः निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि वित्तीय मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में सार्थक रूप से अधिक है जबकि नैतिक एवं लोक कल्याण सम्बन्धित दृष्टिकोण सार्थक रूप से अधिक है।

पुनः उपरोक्त तालिका के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि वित्तीय एवं वित्त–विहीन मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के तुलनात्मक अध्ययन में शैक्षिक पक्ष, मनोशारीरिक पक्ष, सामाजिक एवं आर्थिक पक्ष, जीवन मूल्यों के टी–मूल्य (0.0042, 1.85, 0.270) सार्थक अन्तर नहीं है। अतः वित्तीय एवं वित्त विहीन मान्यता प्राप्त विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक मनोशारीरिक एवं सामाजिक आर्थिक पक्ष से सम्बन्धित दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकार है।

fu"d"k&

वित्तीय एवं वित्त–विहीन मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के योग शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण के अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि वित्तीय मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के दृष्टिकोण में मनोशारीरिक नैतिक एवं लोक कल्याण एवं शारीरिक स्वास्थ्य सम्बन्धित दृष्टिकोण सार्थक रूप से अधिक है, जबकि वित्त–विहीन मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में शैक्षिक, सामाजिक एवं आर्थिक पक्ष के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक, सामाजिक एवं आर्थिक पक्ष से सम्बन्घित दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं था।

l UnHk xUFk lph

1. शर्मा, डा0 आर0ए0– शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक मूलधार, आर0लाल0 बुक डिपो, मेरठ– 250001।

2. गुप्ता, प्रोफेसर, एस0पी0– भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएँ, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।

3. पाण्डेय, डा0 रामसकल(2008)– उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा–7।

4. सिंह, लाल साहब(नवीन संस्करण)– मापन–मूल्यांकन एवं साँख्यिकी, साहित्य प्रकाशन, आगरा–3।

5. कोल, लोकेश(2007)– शैक्षिक अनुसंधान की कार्य–प्रणाली, विकास, पब्लिक हाउस प्रा0लि0, नोएडा।

CHALLENGES OF HIGHER EDUCATION IN RURAL AREAS

Dr.AmitaTripathi[1] & Bhavishya Mathur[2]

ABSTRACT

The number of illiterate adults is India is 287 million.Mahatma Gandhi observed that India is not to be found in its few cities but in thousands of its villages. This is equally true today as it was during Mahatma's lifetime. It is in rural India that overall literacy and specifically literacy of women and their empowerment is particularly crucial for the transformation of India. The challenge of rapid development of India's villages can be accomplished only with the education, empowerment, and their full and equal participation in society. The main Challenge of Higher Education in Rural areas is to get people living in these areas in mainstream of nation. It throws light on various causes that muddle the 'Higher Education in rural'. These affairs clearly try to show challenges faced in present education. Core values are discussed in detail. The paper discusses how the educational system, especially sectors that cater to the rural.

1. Dr.AmitaTripathi, In-charge, Dept of Psychology- J R H University, chitrakoot UP
2. Bhavishya Mathur, Asst. Professor Dept of Management - J R H University, chitrakoot UP

Education can play a vital role in strengthening emotional integration .It is felt that education should not aim at imparting knowledge rather develop all aspects of students personality. It plays an instrumental role in shaping the destiny of individual and future of mankind.

Recognizing the role of education as an effective instrument for bringing about change in attitude and aspirations of people the Central and State governments have invested resources to strengthen the educational programmes and make these accessible to deprived and backward sections of Indian society.

Most of the people in rural areas are deprived of Higher Education and Progress because of poverty and lack of educational facilities. Taking into sight of family situations and educational durability, mental flourishing, and overall personality also affects deeply at making them confident, self-reliant and enlightening. For those youth, the objectives of Higher Education are tempered with. Besides, it aims at the intellectual growth, development of capabilities and adaptability of change in youth that may change them into fulfillment and people of good society.

It, imparts with transforming as an integrated and organic part in projecting new values and the societal change. The importance of Higher secondary stage of education as terminal stage for a large number of student population and also as a feeder stage to professional education cannot be underscored.

Higher Education in India today is in unique state it has to face challenge to maintain fare balance between indirect demand for better quality and direct demand for expansion.

This gap may widen unless quality required ingredients are covered. This appears at higher educational level i.e. Under Graduate, Postgraduate, or Research Level. So there has to be adequate focus on the systemic parameters-input, process and output. Here the following, which are pointed out are indicative:

- Stimulate the academic environmental for promotion of quality of teaching-learning and research in universities.
- Encourage self-evaluation, accountability, and innovations in universities/institutions in rural area.
- Teachers of rural villages and towns receive low income so there is a possibility that teachers give less attention to children.
- Most of them do not have proper infrastructure. Therefore, they do not get most of the facilities such as computer education, sports education and extra-curricular activities.
- There are no proper transport facilities so children do not like to travel miles to come to universities.
- **National development in Rural India:** The benefit of national development in rural are closely linked with national development.

"I believe education is the alchemy that can bring India its next golden age,"

"The success we achieve in educating our people will determine how fast India joins the ranks of leading nations of the world," - President Pranab Mukherjee , Jan 9, 2014

There is universal appreciation of fact that education provides the competencies that are required in different spheres of human activity ranging from administration to agriculture, business, industry, health , communication and extending to arts and culture.

Early the Society was governing the society. However that picture doesn't remain. Now the economy is overarching, both the state and society. The private and corporate sector has more of commercial motive. And education in rural area is presently attempting largely in that direction. It is a general picture that investment is being estimated in terms of material profit than all round development. Consequently, there arise problems of quality and its perception, scaling and differentiation in and its execution of educational institute that releases its output.

- **<u>Investment in Rural India:</u>**

Higher education is both: consumption good and an investment input. It acts as good of immediate consumption as well as consumer durable and it is investment in sense that it creates employability and leads to better earnings for its recipient.

Alfred Marshall stated Higher Education as National Investment. With Proper education, achievement o f economic and social development can be facilitated. The human resource would have a multiplier effect on utilization of other resources. That is why the concept of education as an Investment in developing countries is increasing.

- **<u>Fostering Global Competencies among Students:</u>**

To develop skills of students at global level and their counterparts in globalization of economic activities have to do positive role. Consequently, it requires accepting standards in higher education are essential , to establish collaborations with industries, agencies, bodies and foster relationship between the "world of skilled work" and the "world of competent learning".

- **<u>Inculcating a Value System among Students</u>**:

To inculcate the desirable value systems amongst the students, which is of cultural and other diversities, are essential to imbibe on students the appropriate values that are appropriate with social, cultural, economic and environmental realities, at the local, national and universal levels. .

- **<u>Funding pattern:</u>** A global review clearly shows that in most countries of the world education is almost exclusively financed by government. In India education being on concurrent list expenditure is shared by central and state government.

The total budget allocated for education in 2013-14 is Rs 65,869 crore. On a positive note budget for Higher Education is allocated Rs 16,210 crore in 2013-14 against Rs 15,458 in 2012-13.

On contrary IIT's will get 2,220 crore in 2013-14, experts suggest most of the funds will go to the eight new IIT's.

- **Quest for Excellence:**

One should drive to develop themselves into centers of excellence. Excellence is that what imbibed into and contribute for better development either of individual or institutional the system. Consequently, rural institutions are to introspect in that adaptation and reconsider the governance and to use the avail natural and human resources for academic purpose.

- **Science and technology :**

Another challenge to development is to integrate technology in a manner that it supports

Development without displacement. Higher education institutions need to be generating knowledge in all walks of life and with the help of technology, relate knowledge to the needs of the society. Knowledge generation in the age of information revolution requires a new kind of institutional re-engineering in governance, teaching learning process, evaluation practices that could address the learners' need much more effectively. During the 12th FYP the institutions

Need to focus on knowledge generation from learners' perspective and with a view to addressing the needs of the society.

In rural areas there is lack of facilities e.g. standard laboratories, equipments, skilled professional. Fulfilling these needs is greater challenge.

- **Social Development :**

National Policy on Education 1986, visualizes Education to be process of empowerment through the development of Knowledge, skills and values.

"The university system also has a great responsibility to society as a whole. All universities and colleges should develop close relationships of mutual service and support with local communities, and all students and teachers must be involved in such programs as integral part of their education." University Grants Commission, 1987

It is through education and culture that different peoples begin to understand each other and develop closer relationships."

- **Administration, Accountability and Governance :**

The last few months have witnessed intense activity in the education sector, with a flurry of new legislation. Apart from the Right to Education Act, guaranteeing primary education to all children there is a great deal happening at the tertiary or university level. . In addition, proposed and new laws will permit the entry — with certain conditions — of foreign educational institutions, and will create educational tribunals (at national and state levels) and an accreditation body. Clearly, higher education is in for radical change.

Clearly, higher education is in for radical change.

Almost as significant as the bill creating the National Commission for Higher Education and Research (NCHER, which will replace UGC and AICTE) is the process through which it has evolved. Building on the recommendations of the National Knowledge Commission and the Yash Pal committee, a draft was prepared by a task force — comprising mainly of eminent academicians — constituted by the government.

- **<u>The Changing Role of Teaching in higher education:</u>**

The importance of role of teacher as a catalyst of change has become more crucial today than ever before. In the context of rapidly changing global knowledge and skills, it is imperative that the teachers update uses of new technologies and tools in classroom situation. Lifelong education is key factor of success in world where information is power and knowledge, a dominant factor.

- **<u>Vocationalisation :</u>** Vocationalisation is an important trend in high education for rural development. It is complex issue because it has to be implemented at various levels. Certain crash courses of two to six months or two to four days have to be started for benefit of people living in rural area. Courses such as :

Forestry
Health Sector
Home Science education
Adult education
Agriculture
Soil and Water conversation
Disaster Management

The basic aim is to produce the skilled and knowledgeable man power with present trends and requirements for development.

- **<u>Quality assurance</u>** :

The focus in the entire gamut of higher education is also being centered on quality, which is overriding concern in contemporary times. A consequence of this failure is to meet challenges in deterioration in standards, which is serious threat to developing country. The
Core factors that are crucial in rural area are :

quality of teaching
quality of courses
quality of accessibility in resources
language
Innovation

Suggestions :

Theoretical foundations for curriculum models typically reflect a mix of philosophical and psychological thought about educational aims. This mix includes value statement about basic purpose of education in concert with assumptions about students learning and development. Thus "should’s” and "ought to’s" about education to promote good life are focal. Curriculum planning should begin with analysis of students developmental characteristics (needs, interest, modes of thinking).

- Expression, self development is to be nurtured.
- Number of rural universities to be increased at demographical level. The urgent necessity of providing higher education to rural area is obvious. Apart from serving villages, the experience gained in working of rural universities is likely to be useful in affecting certain necessary reforms in our existing universities, thereby enabling them to serve national need effectively.
- Product of rural institutions acts as a disadvantage as they should have as much validity in matter of public appointment.
- The principle of equality was implemented in institutions started by educated women of the province encouraged girls from socially depressed sections to come forward to avail the opportunities of higher learning.
- Universities should Conduct crash courses(two to six months or two to four days) for farmers of general nature in different fields of agriculture such as cattle feeding , composed making , resowing treatment of seed , crop protection etc have proved to be of great value.
- Programmes of health education and services to be organized on cooperative lines.
- Universities in rural area should be examples of self help, democratic community living cooperative labour and intelligent handling of economic activity .education should centre round cottage industry and should be well equipped to farms , craft workshops etc.
- To provide free standard education to rural children.
- Supporting children for higher education.
- Guiding and Supporting Research scholars in Educational Development.
- Implementing new teaching methodologies and Assessment system.
- Promoting all schools to stress free environment.

Conclusion:

In brief, it is a root matter that the education in rural area is expected to promote from academic point of view in terms of the physical, logical, economic, social mobility and do in all aspirations'..... Education means human good (Different waves of thinking Human Good). Therefore, universities especially in rural- based are to apprehend the objectives of compatible education for society. But a bold question arises how to develop that academic educational quality with socio-cultural, economic, political dimension,. How to amend their reserved and individual attitude that affects overall quality of the rural areas? It is the genuine burden in rural institutes of all over the world. There are trainings, workshops, conferences, etc. in that regard but not yet got the fruitful result. The rural/urban divide is not the only manifestation of unequal access to education. Religion, disability and ethnic background all play a part in education prospects.

References

- Education Key to India's next golden age. President Pranab Mukherjee Jan 9, 2014 (The Economic Times Mon, Jan 27,2014).
- Alfred Marshall, Principles of Economics, New Age Economics, Classical edition , New Age Publishers, New age.
- http://www.soschildrensvillages.in

Role and Need of GSCASH to Prevent the Violence against Women/ Girls

Dr Vipin Kumar Pandey[1]

In the age of Globalization the educational scenario has been entirely changed. Everything which reflects anywhere is the result of same particular movement. When conscious was spread among the people, they came fore to bring change in the system. So the task of conscious building should seriously be executed every corner of the country. Much responsibility go upon students community in this reference. Through the various organizations numerous varied issues may be raised showing its horrible faces to the people. Therefore role and need of GSCASH (Gender Sensitization Committee Against Sexual Harassment) is increased in the view of its special contribution is conscio- building to uproot the deep roofed problems GSCASH is student's organization with some specific destination. Students can raise their voices against the harassment of any type inside or outside the campus. This is the specific motto of students' organization or unions. By large when we look at it, they are generally cut off from the rest of the society living at the universities, campus, where their primary concerns in that sense are their studies not anything else. As a student, you can be avant-gardening the social change, which is required, even today we are not living in the safe world. However girls or women may make progress but they are not getting safe atmosphere for themselves. Many ways they are molested and exploited time to time. Even walls of school, college and university are not free from the exploitation. They are victims who are forced not to utter a single word under the influence of the powerful forces and patriarchal rules. In saying we very boldly say, women are not fragile but they are strong and competent. But reality shows us vary picture. Many girls pursuing various courses at the universities don't open their mouth despite being molested and exploited. Consequently many are pushed to get involved in the productive process. So, these who contribute directly and indirectly in the GDP of the country are not well cared. Safe atmosphere they fail to receive everywhere to make progress in accordance to their caliber and potential. In such circumstances something should be erected to

1. Associate Professor, DSMNR University, Lucknow, UP

protect them. Hence, the role of the GSCASH becomes efficacious. If its function is executed seriously with the firm dedication, it will bring outcome more than satisfaction.

Before delineating anything regarding students' movement one significant primary thing should be speculated that is to prevent the sexual violence of girls. Girls' student belong to tribal communities are treated very ruthlessly. They are considered to be used not to raise their voices. This sort of sexual violence is an important issue to students and it should be student's movement issues. Moving on to violence on women within the urban setup, rapes are happening in Delhi. Girls sent to universities or colleges to pursue the course to make their future are ruined. Sometime they are emotionally blackmailed by threatening to make them naked producing MMS and video clips. Due to made video clips they are insulted in open market and among their friends' circle. Having being blackmailed they choose the option of suicide to end this terrible play. How far they can tolerate this mental and physical harassment. It is generally seen percentage of the girls students pursuing in the educational institutes is sometime more than 50% yet very few or none are seen in students election as participants. In this situation the establishment of GSCASH is very necessary to bring changes preventing the many difficulties and hardships.

There is common dictum that 'life is not bed of roses'. But life is becoming really difficult outside day by day. India is known as a under developed country. So it is facing many problems like social, political, economical etc. In many states even today whole power lies in the Panchayat. Panchayat decides ways and lots of the girls without speculating fair and unfair about them. Such state is Haryana where 'khap' (Panchayat) declared the girls responsible to the growth of the Rape case. For the solution Khap concluded the early marriage (at the age of 12-14) will be the best preventive of the Rape-case. Such how far will be just. Why girls are made responsible for the incidents happen with them. Such types of whimsical decisions are usually imposed upon the people, and girls. Consequently ferocious responses can be seen and realized. Such types of problems can be handled by the president of the GSCASH. Thus their effords can bring many numerous hidden cases to the lime light. It is a shame on India Where even after independence women/ girls are facing such problem and unable to enjoy their lives and not free to make decision themselves about their careers. Although it cannot be denied Indian women have carved their own identity and searched a new horizon for their struggle but such women/girls are on fingers only. Hence for the people left out conscious building is must so that they can develop their guts to prevent the violence done by others with them. Here, role of students' movement can be fruitful to great extent. Because they have power to change scenario, once they decide only to do something. If they are alert, can make other too. Need is to be motivated only.

When we pick up the educational issues it can be said educational funds are continuously being cut off and consequently the student's facilities are going down. Even the condition of the libraries are unsatisfactory, and are starved of books, their makes are contractulized. In various educational campuses there are massive fee hikes. While no fee for education for SC and SST is. But being ignorant with the rules they pay for that. In this way many discrepancies at the campus can be seen. In short any student's movements at any campus should raise consciousness, built that link with the people movement outside and also build a movement within the campuses, linking these campus movements to outside's. Bold and defiant students should be promoted in all possible way with the aim to lift the position of poor and unconscious people at the campus and in the society. So that these left out people can be deprived from doing contribution in the progress of the country.
The students through their movements or campaigns among the people can spread consciousness regarding many fatal disease like what are causes of those like HIV-AIDS ,how it transforms, how to prevent etc. This takes place because of patriarchy, since women are girls do not feel like rejecting their husbands or boyfriends. Consequently they get fatal diseases from them. Through campaign workshop and training, poster, song, play too much knowledge on various issues like HIV-AIDS, Dowry-Death, Child abuse sexual violence or harassment etc. can be imported solely. As it is fact theoretical works go separately from the field works. Obviously fieldworks can get more and more in the comparison of the theoretical works.
In the present paper attempt is made to emphasize at both role and need of students movement in form of GSCASH at the university's campus to handle the various issues especially feminine. At many blaces revolt should be executed having built the conscious among the people. More need is realized as even administrations at campuses are not much sensitive towards such concerns. Everyday same incidents happen, people may gather to see or find out the matter not to give solution. So with the help of NGO too the student can take strong step against the problems. They can train the trainee on various issues related to patriarchy, gender, women's movement, feminine, sustainable development etc. at the campus. Outside the campus they can work seriously to handle with various grim issues pervaded in the society. Dowry death is one of the major problems. Against this problem out left people should be awarded. Without making them alert we cannot make progress in the world of globalization. Because marginalized should be brought to centre.
Mainstream political parties in our country look at women as either they have to be used as glamour dolls who can contest from the platform and they get votes from them. they don't need to speak, they don't need to raise issues, or they are just out of it totally, and I think that's the scene with most of the campuses in this country. To take up the women's issues especially at the university or campus establishment of GSCASH should be. As this organization can bring healthy outcome with healthy motives, should be established at Universities.

GSCASH was founded after lot of struggle. There was a judgment that came up. The "Vishakha" judgment the Supreme Court stated that women in work places, and education, and institutes should be guarded from sexual violence and harassment. So to look in such serious issues establishment of autonomous body is worth to be appreciated. Reason is sexual violence is not recognizable because it is taken as normal; that somebody beats up this girlfriend or this wife; if marital rape is not recognized, all those things cannot be challenged in any court of law. There is a wide range of issues that cover women's domain of violence and must come into the mainstream of the political discourse.

Therefore, after above long discourse on GSCASH it is concluded that presently make the work places, institutes, colleges, universities women friendly establishment of GSCASH and other solution giving grievances should be formed. When these organization and cells with the powers will be in function, surely to great extent mostly problems will be entertained, and giving solution will prevent crime and violence. Need is, aforesaid organizations and cell should be executed honestly, result will be before you.

iqLrd leh{kk

Hkkjrh; dyk ,oa iqjkrRo
ys[kd% Mk0 t; ukjk;.k ik.Ms;

भारतीय कला एवं पुरातत्व पुस्तक प्रमाणिक पब्लिकेशन, इलाहाबाद द्वारा प्रथम आवृत्ति 1989 में प्रकाशित।

leh{kdrk
Mk- egsUnz dqekj mik/;k;] lgk;d vkpk;Z
txnxq# jkeHknzkpk;Z fodykax fo'ofo|ky;] fp=dwV] m0iz0

भारतीय कला एवं पुरातत्व नामक पुस्तक कुल 272 पृष्ठों एवं 12 अध्यायों में विभक्त है। प्रस्तुत पुस्तक को इतिहासविद् लेखक ने भारतीय कला के साथ पुरातत्व को संयुक्त कर इतिहास जिज्ञाषुओं की ज्ञान पिपासा को परिशान्त करने के साथ ही ऐतिहासिक अध्ययन की धारा को एक नई दिशा प्रदान की है। इतिहासविद् लेखक ने लिखा है कि कला मानव जीवन की सौन्दर्यानुभूति के आदर्शों को प्रकट करती है। भारतीय कला का विकास कई रूपों में हुआ है जिसका एक पक्ष शास्त्रीय परम्पराओं से अनुपारिणत है। यदि हम अपनी प्राचीन परम्परा को पहचान सकें और अपनी विरासत के प्रति ईमानदार रह सकें तो इसी में भारतीय कला के अध्ययन की सार्थकता है। विद्वान लेखक ने 12 अध्यायों वाले पुस्तक में प्रथम से सातवें अध्याय में भारतीय कला के विविध पक्षों को उद्घाटित किया है। प्रथम अध्याय में कला का अर्थ, भारतीय कला की विशेषताएं, द्वितीय अध्याय में सिन्धु सभ्यता की कला के अन्तर्गत वास्तुकला, मूर्तिकला, मुहरें, मनके, मृद्भाण्ड आदि का उल्लेख किया गया है। तृतीय अध्याय में मौर्यकला की राजनीतिक पृष्ठभूमि, वास्तुकला, मूर्तिकला मनके, मृद्भाण्ड आदि प्रकाश डाला गया है। चौथे अध्याय में बौद्धकला के अन्तर्गत स्तूप, स्तूप के अंग, प्रमुख स्तूपों–भरहुत, बोधगया, सांची, अमरावती, नागार्जुनीकोण्ड, चैत्यगृह तथा बुद्ध की प्रतिमाओं का उल्लेख किया गया है। पांचवे अध्याय में गुप्त कला के अन्तर्गत वास्तुकला, तक्षणकला तथा चित्रकला (अजन्ता एवं बांध की चित्रकला) का वर्णन किया गया है। छठें अध्याय में भारतीय चित्रकला के अन्तर्गत प्रागैतिहासिक, शिला चित्रकला, ताम्र–पाषाणिक–शिला–चित्रकला, आद्य ऐतिहासिक काल की चित्रकला, ऐतिहासिक काल की चित्रकला तथा अजन्ता की चित्रकला का कालक्रम, निर्माण तकनीक, रंग, शैल, विषय वस्तु, महत्व आदि पर प्रकाश डाला

गया है। सातवें अध्याय में भारतीय मंदिर की परिकल्पना, प्रमुख अंग, मन्दिर निर्माण की शैलियों का उल्लेख है। आठवें अध्याय से बारहवें अध्याय में पुरातत्व की विविध तथ्यों का उल्लेख किया गया है। जिनमें से आठवें अध्याय पुरातत्व का परिचय में पुरातत्व की परिभाषा, पुरातत्व के अध्ययन की विधियां, पुरातत्व का मानविकी एवं प्राकृतिक विज्ञानों से सम्बन्ध का उल्लेख है। नवें अध्याय में भारतीय प्रागैतिहासिक संस्कृतियाँ, दसवें अध्याय में सिन्धु सभ्यता के नामकरण, खोज, विस्तार, उद्‌भव एवं विशेषताओं का उल्लेख है। ग्यारहवें अध्याय में भारत में लोहे की प्राचीनता को रेखांकित करने के लिए साहित्यिक एवं पुरातात्विक प्रमाणों को आधार बनाया गया है। अंतिम यानी बारहवें अध्याय में उत्खनित पुरास्थलों – कायथा, नेवासा, हस्तिनापुर, अतरंजीखेड़ा, कौशाम्बी, तक्षशिला तथा अरिकामेडु आदि के ऐतिहासिक महत्व पर प्रकाश डाला गया है।

इस प्रकार इतिहाविद् लेखक ने पुस्तक में कला एवं पुरातत्व दोनों के अनेक पक्षों को गागर में सागर की भांति प्रस्तुत करने में कुशलता का परिचय दिया है। पुस्तक के प्रत्येक पृष्ठ पर लेखक की शोधपूर्ण तथा इतिहासपरक विश्लेषणात्मक प्रतिभा की स्पष्ट छाप दिखलाई पड़ती है। शैली सरस तथा भाषा सरल एवं प्रवाहपूर्ण है।

दूसरी ओर विद्वान लेखक ने पुरातत्व वाले अंश में उत्खनन की विधियों का उल्लेख नहीं किया हैं उत्खनन की विधियों से परिचित कराये बिना उत्खनित स्थलों के ऐतिहासिक महत्व को भलीभांति समझना कठिन प्रतीत होता है। इतना ही नहीं पुरातत्व के क्षेत्र में तिथि निर्धारण की अनेक विधियों में से सर्वप्रचलित कार्बन–14 (14) विधि पर भी प्रकाश डाला गया है। मेरे समझ से पुरातत्व के अध्ययन में उपरोक्त तथ्यों को अवश्य ही सम्मिलित करना चाहिए था।

अन्ततः इतिहासविद् लेखक की यह कृति इतिहास जिज्ञाषुओं के बीच ससम्मान पठन–पाठन योग्य है। इस पुस्तक के माध्यम से कला–पुरातत्व की गहराईयों को स्पर्श किया जा सकेगा। ऐसी कृति के लिए विद्वान लेखक बधाई के पात्र हैं।

Transmission properties of symmetrical Fibonacci superlattices

J. P. Pandey[1]

Abstract

We have studied the propagation of light-waves in the 1-D symmetric Fibonacci quasiperiodic photonic multilayers. The symmetric internal structure can greatly enhance the transmission intensity in 1-D quasiperiodic systems. Here, we find some difference from those found for the case of symmetric Fibonacci multilayers with both positive refractive index materials. The transmission spectrum shows a unique mirror symmetrical profile around the various frequencies and the structure is transparent (the transmission coefficient is closely equal to 1.0) for the many frequencies in the range of frequency 0.5-1.7 GHz and 2.5-3.6 Hz for negative index materials. We see that this transmission spectrum has scaling property with respect to the generation number of the Fibonacci sequence within a symmetrical interval and this structure shows only a slight variation in the spectrum with the change in the angle of incidence.

Knowledge on the propagation of waves in completely ordered and disordered structures is now rapidly improving; little is known about the behavior of waves in the huge intermediate regime between total order and disorder. This intermediate regime is valid in quasiperiodic structures. When the periodicity of the photonic crystal structure is broken, then the wave propagation is not described by Bloch states. The opposite extreme of a periodic system is a fully random structure. The propagating waves undergo a multiple scattering process and are subjected to unexpected interference effects in the random systems [1]. Multiple waves scattering in disordered materials shows many similarities with the propagation of electrons in semiconductors [2].

The amusing photonic band gap properties (PBGs) of photonic quasicrystals (PQs) with aperiodic structures analogous to those of periodic photonic crystals have attracted many interests during the last thirty years. The diversity of the PBGs of

1. M.L.K. (PG) College, Balrampur (UP)

PQs is magnetic both theoretically and experimentally for potential applications in novel optical and optoelectronic devices. Among various PQs, the properties of one-dimensional PQs could be simulated more precisely. One-dimensional PQs including Fibonacci [3] and Thue Morse (TM) [4] sequences have been constructed experimentally. They have attracted great attention because from the technical point of view, they are more realistic.

The aperiodic photonic structures cannot be reduced to a single cell that can be repeated several times. The periodic structures are formed by repeating a unit cell several times but a random structure follows no particular rule. A third category of structure exists that is composed of quasiperiodic structures. Photonic quasiperiodic structures are deterministically generated dielectric structures with nonperiodic refractive index modulation. Quasi-periodic photonic crystals are quite different from periodic photonic crystals in many aspects [5-7].

Photonic Quasicrystals (PQs) can be generated by stacking together layers of different dielectric materials according to a simple deterministic generation rule [30]. PQs are considered as suitable models to describe the transition from the perfect periodic structure to the random structure [8-10]. Few examples of the one dimensional quasiperiodic structures are Fibonacci sequence [11-12], Thue-Morse structure [13], Cantor layer *etc*. Fibonacci sequence (FS) is a well known quasi-periodic structure and is of particular interest [14-15]. The transmission spectrum of a Fibonacci system also contains forbidden frequency regions called pseudo-bandgaps similar to the band gaps of a photonic crystal [16-18].

Since the discovery of the quasi-crystalline phase in 1984, Fibonacci lattice is the well-known one-dimensional (1-D) quasiperiodic structure. Its electronic and vibrational properties have been well-studied. Light through a structure in Fibonacci sequence had also been studied in past decade, and recently the resonant states at the band edge of a photonic structure in Fibonacci sequence are studied experimentally [19]. The photonic wave functions in a layered Fibonacci photonic structure are also critical. Similar to the electronic spectra or the vibrational spectra for 1-D Fibonacci structure, the photonic spectra for a layered Fibonacci structure are also self-similar Cantor-set, thus also contain forbidden frequency regions similar to the band gaps of a photonic crystal [20], which may serve as the alternative of band gaps of photonic crystal in practice.

In a quasiperiodic system, two or more incommensurate periods are superimposed, so that it is neither aperiodic nor a random system and therefore can be considered as intermediate the two [21]. Quasiperiodic structures are nonperiodic structures that are constructed by a simple deterministic generation rule. In other words, due to a long-range order a quasiperiodic system can form forbidden frequency regions called pseudo band gaps similar to the bandgaps of a photonic crystal and simultaneously possess localized states as in disordered media [22]. Among the various quasiperiodic structures, the Fibonacci binary quasiperiodic

structure has been the subject of extensive efforts in the last two decades. The Fibonacci multilayer structure is the well-known 1-D quasiperiodic structure. Wave through a structure in the Fibonacci sequence had also been studied in past decade, and recently the resonant states at the band edge of a photonic structure in the Fibonacci sequence are studied experimentally [21]. Our understanding of wave transport in the Fibonacci quasiperiodic structures have considerably improved by the studies of various aspects of wave propagation in the Fibonacci quasiperiodic structures [22-29].

In this paper, we have investigated the transmission spectra of a light beam normally incident from a transparent medium into a photonic structure composed of Air/DNG multilayers arranged in a quasiperiodical symmetrical Fibonacci fashion.

Mathematical calculations for the transmission spectra of SFS

Quasiperiodic fibonacci sequences are multilayer structures consisting of two different materials as building blocks. Here, we represent the two materials as A and B where A represents the material with positive refractive index and B represent the material with negative refractive index. The number of layers in a structure depends on the order of the Fibonacci sequence. Fibonacci sequence can be generated by the recursive relation,

$S_{j+1} = \{S_{j-1}, S_j\}$, $j \geq 1$ with $S_0 = B$ and $S_1 = A$, where S_j is the j^{th} generation of the Fibonacci structure. A and B are material with refractive index n_A and n_B and thicknesses d_A and d_B respectively. The number of layers in a sequence is given by F_j, where F_j is a Fibonacci number obtained from the recursive law $F_{j+1} = F_j + F_{j-1}$, with $F_0 = F_1 = 1$. For $j \geq 2$, the systems S_j are known as quasiperiodic.

Here, we intend to investigate the transmission spectra of 1-D symmetrical Fibonacci multilayer structures constituted by the multilayers of DPS and DNG materials. The negative index materials are dispersive i.e. ε and μ are frequency dependent. These materials have different expressions of ε and μ accordingly. For DNG material, we suppose that ε and μ can be expressed as in ……………..(1)

$$\varepsilon(\omega) := 1 + \frac{(5\cdot 10^9)^2}{(0.9\cdot 10^9)^2 - \left(\frac{\omega}{2\cdot\pi}\right)^2} + \frac{(10\cdot 10^9)^2}{(11.5\cdot 10^9)^2 - \left(\frac{\omega}{2\cdot\pi}\right)^2} \qquad \mu(\omega) := 1 + \frac{(3\cdot 10^9)^2}{(0.902\cdot 10^9)^2 - \left(\frac{\omega}{2\cdot\pi}\right)^2}$$

……………………(1) where ω is frequency in GHz.

Similarly, we can take ε and μ for DPS material as,

ε=1, μ=1…..... (2)

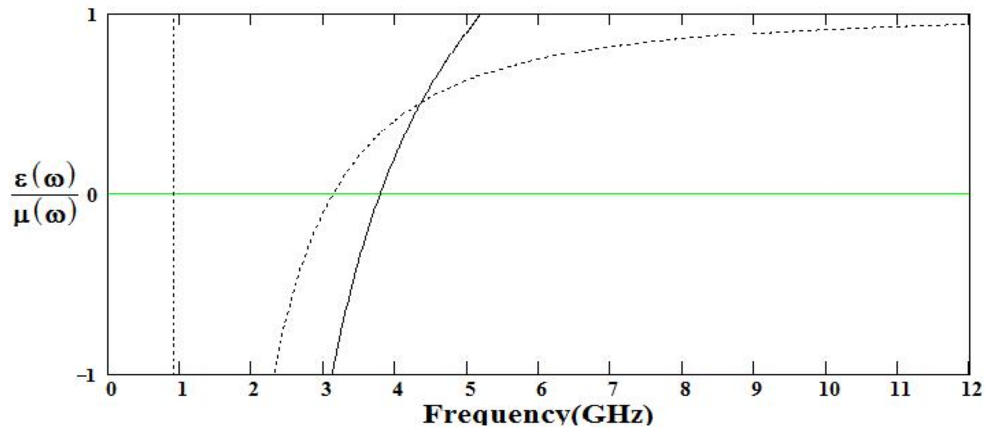

Figure 1. The permittivity ε (solid line) and the permeability μ (dashed line) of the DNG material as a function of frequency.

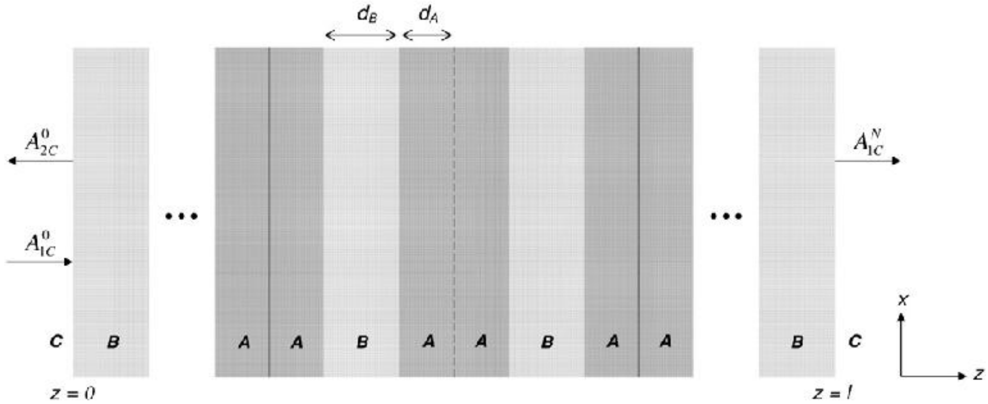

Fig. 2 Geometrical arrangement of the symmetrical Fibonacci quasiperiodic sequence

Quasiperiodic structures are composed from the superposition of two (or more) building blocks that are arranged in a desired manner. The symmetrical Fibonacci multilayer photonic structure can be viewed as a superposition of two Fibonacci superlattices with mirror reflection at the center (see Fig. 2). The Nth generation of the sequence S_N can be defined in terms of the two corresponding Fibonacci sequences $S^L{}_N$ and $S^R{}_N$ (with reverse orderings), where the indexes *L* and *R* mean left and right side respectively, in relation to the center of the structure. Therefore, $S_N = S^L{}_N S^R{}_N$, where $S^L{}_N$ and $S^R{}_N$ have the recursive relations $S^L{}_N = S_{N-2} S_{N-1}$ and $S^R{}_N = S_{N-1} S_{N-2}$ for $N \geq 2$, with the initial conditions $S_0 = B$ and $S_1 = A$. This yields the general recursive relation for the symmetrical Fibonacci sequence as following $S_N = S_{N-2} S_{N-1} S_{N-1} S_{N-2}$.

We use simple transfer matrix method to study the quasiperiodic symmetrical Fibonacci structures [30-33]. The transfer matrix for Fibonacci system S_N can be written as $M_N = M_{N-2} M_{N-1}$, $N \geq 2$, with $M_0 = M_B$ and $M_1 = M_A$.

The transfer matrices for the single layer A and B are given by

$$M_A = \begin{bmatrix} \cos\delta_A & -\frac{i}{q_A}\sin\delta_A \\ -iq_A \sin\delta_A & \cos\delta_A \end{bmatrix} \quad \text{and} \quad M_B = \begin{bmatrix} \cos\delta_B & -\frac{i}{q_B}\sin\delta_B \\ -iq_B \sin\delta_B & \cos\delta_B \end{bmatrix}$$

where $\delta_A = \frac{2\pi}{\lambda} n_A d_A \cos\theta_A$ and $\delta_B = \frac{2\pi}{\lambda} n_B d_B \cos\theta_B$ are the layer phase thicknesses. θ_A and θ_B are the angle of refractions in layers A and B respectively which are determined by the Snell's law and λ is the wavelength of incident wave. Parameters q_A and q_B are given by, $q_A = n_A \cos\theta_A$ and $q_B = n_B \cos\theta_B$ for TE polarization and $q_A = \frac{\cos\theta_A}{n_A}$ and $q_B = \frac{\cos\theta_B}{n_B}$ for TM polarization. Thus the transfer matrices M_j are $M_2 = M_B M_A$, $M_3 = M_A M_B M_A$ and $M_4 = M_B M_A M_A M_B M_A$ for S_2, S_3 and S_4 respectively. Let us consider an *N*-period finite structure whose basic cell is the symmetrical Fibonacci structure S_j where $S_j = S_{j-2} S_{j-1} S_{j-1} S_{j-2}$. The transfer matrix for the symmetrical Fibonacci sequence S_j is as following- $M_j = M_{j-2} M_{j-1} M_{j-1} M_{j-2}$ for $j \geq 2$.

The overall transfer matrix *M* of the system of the N layers is obtained to be

$$M = \left(M_j\right)^N = \begin{bmatrix} M_{11} & M_{12} \\ M_{21} & M_{22} \end{bmatrix}$$

The reflection coefficient is given by

$$r = \frac{(M_{11} + q_t M_{12})q_i - (M_{21} + q_t M_{22})}{(M_{11} + q_t M_{12})q_i + (M_{21} + q_t M_{22})}$$

where $q_{i,t} = n_{i,t} \cos\theta_{i,t}$ for TE wave and $q_{i,t} = \frac{\cos\theta_{i,t}}{n_{i,t}}$ for TM wave, where *i* and *t* represent incident medium and substrate respectively. The reflectance and transmittance is given by $R = |r|^2$ and T=1-R

RESULTS AND DISCUSSION

We have chosen medium A as positive index material which is air having refractive index $n_A = 1.00$ while medium *B* is a negative index material whose Ɛ and μ are given by equation (1). Here, we have chosen the thickness of positive and negative index layers as 8 mm and 4mm respectively.

For normal incidence, $\theta_A = \theta_B = 0$ and $\delta A = -\delta B$. Here, the negative phase shift for medium *B* means that the light waves propagate in a direction opposite to the energy flux i.e. one plane light wave, whose electromagnetic field is proportional to $\exp(-i\delta B)$, propagates in the $-z$-direction, while the Poynting vector propagates in the $+z$-direction. Therefore, inside medium *B*, the effect of the negative refraction index is to change the forward waves $\exp(i\delta B)$ into backward waves $\exp(-i\delta B)$ and vice-versa. This effect keeps the same configuration for the incident and reflected electromagnetic wave at the interface *AB*, but the electromagnetic wave at layer *B* has now a sign change in the exponentials when compared to the electromagnetic wave at layer *A*.

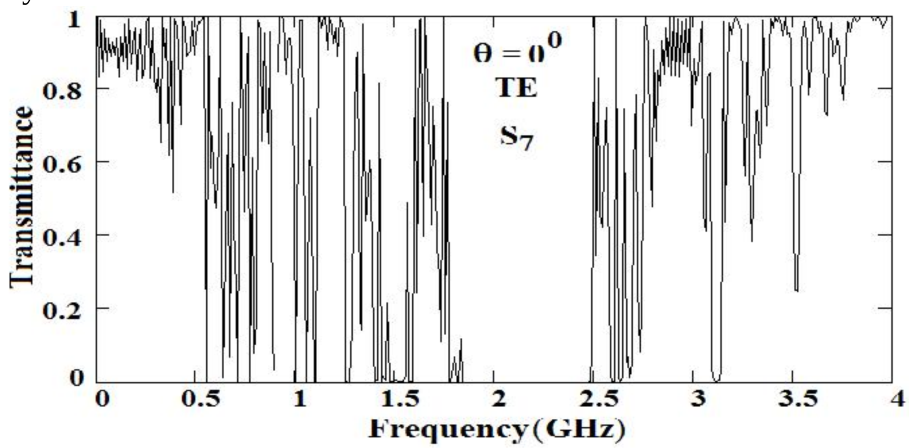

(a)

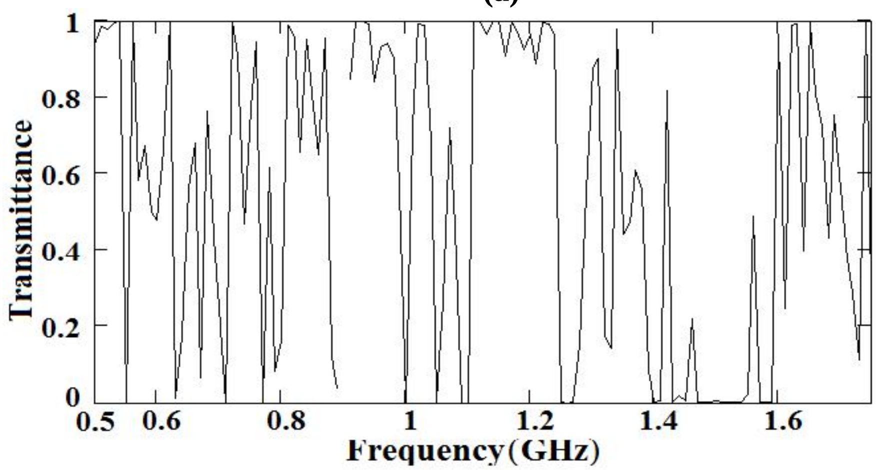

(b)

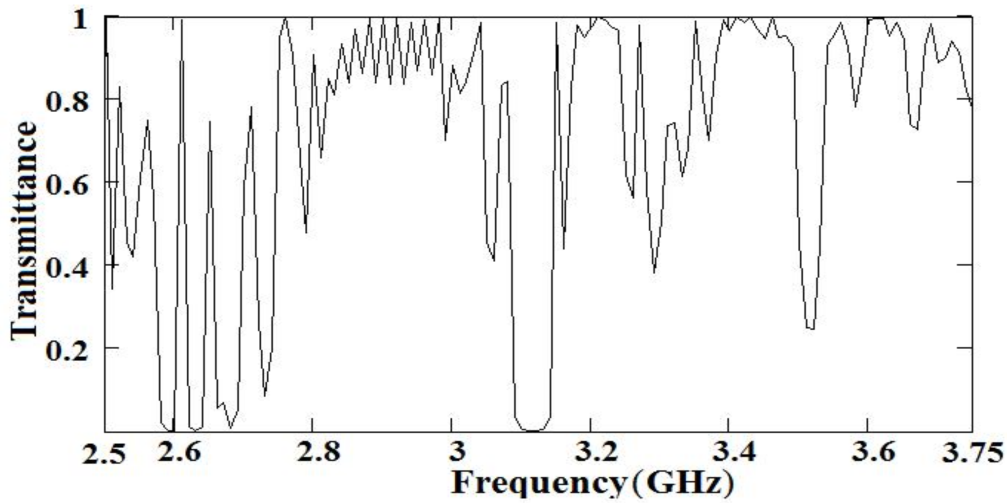

(c)

Figure 3 (a)-(c): Transmission spectrum of the 7th quasiperiodic symmetrical Fibonacci sequence for TE polarization at normal incidence.

The optical transmission spectrum for the 7th-generation (21 layers) of the quasiperiodic Fibonacci sequence with mirror symmetry is shown as a function of the frequency in Fig. 3 (a)-(c). This spectrum presents a unique mirror symmetrical profile around the central peak frequency which is of course the midgap frequency of the periodic multilayer. Besides, the structure is transparent (the transmission coefficient is closely equal to 1.0) for the many frequencies in the range of frequency 0.5-1.7 GHz and 2.5-3.6 Hz. The transmission spectrum is distributed symmetrically at ω = 0.7, 0.9, 1.18, 1.5, 2.6, 2.9, 3.3 and 3.52 GHz respectively.

The condition of transparentness implies that the layers *A* and *B* are equivalent from a wave point of view. The photonic band gaps can be better characterized by considering the narrow frequency range $0.5 \leq \omega \leq 1.7$ and $2.5 \leq \omega \leq 3.75$ GHz for the optical transmission spectrum as it is depicted in Figs. 3 (b) and 3(c).

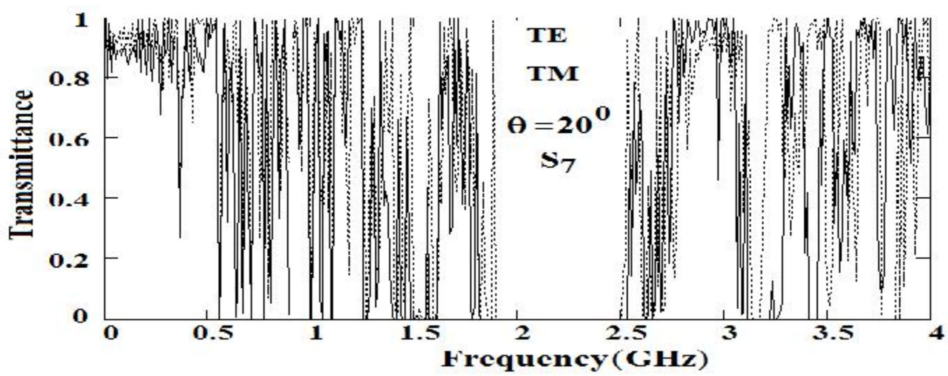

Figure 4: Transmission spectrum of the 7th quasiperiodic symmetrical Fibonacci sequence for TE and TM polarization at the 20^0 angle of incidence.

It can be seen from the above figure that the transmission spectrum shows resemblance for both TE and TM polarizations of this periodic structure.

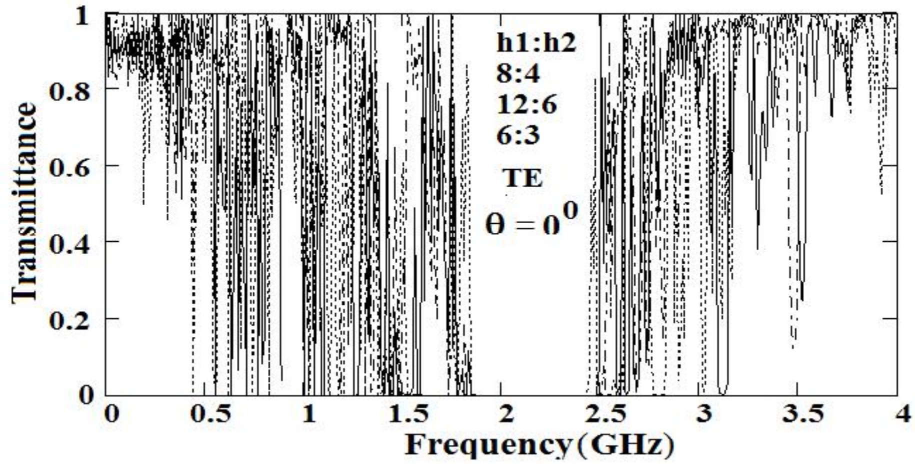

Figure 5: Transmission spectrum of the 7th quasiperiodic symmetrical Fibonacci sequence for TE polarization at the 0^0 angle of incidence for three different thickness ratios as 8:4, 12:06 and 6:3 respectively.

From the above figures 5 and 6, we see that this transmission spectrum has scaling property with respect to the generation number of the Fibonacci sequence within a symmetrical interval. It is clear from the above figures that when we change the thickness of the two layers as 8:4 mm, 12:6 mm and 6:3 mm, we find that the nature of curve is identical for both TE and TM polarizations. Once again, the transmission spectrum presents a unique mirror symmetrical profile around the various frequencies. When we increase the generation number of the Fibonacci sequence, we find an increase density of peaks producing a dark continuum at the edges of the figure.

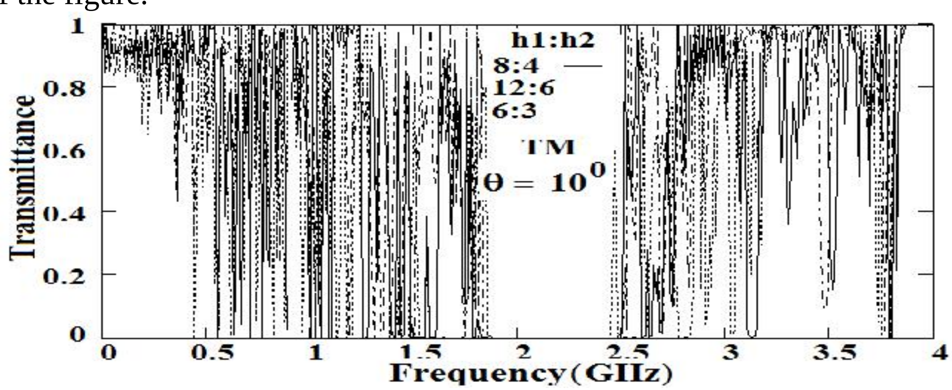

Figure 6: Transmission spectrum of the 7^{th} quasiperiodic symmetrical Fibonacci sequence for TM polarization at the 10^0 angle of incidence for three different thickness ratios as 8:4, 12:06 and 6:3 respectively.

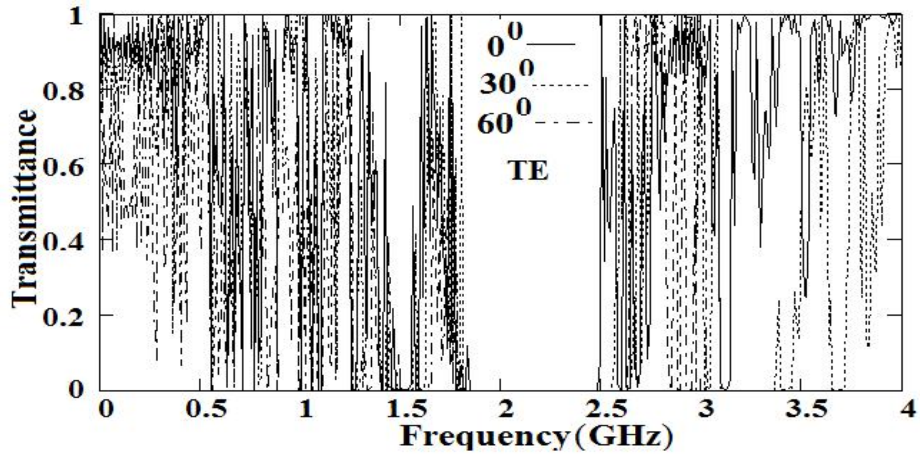

Figure 7: Transmission spectrum of the 7^{th} quasiperiodic symmetrical Fibonacci sequence for TE polarization at the three different angles of incidence 0^0, 30^0 and 60^0 for the thickness ratio of 8:4 mm.

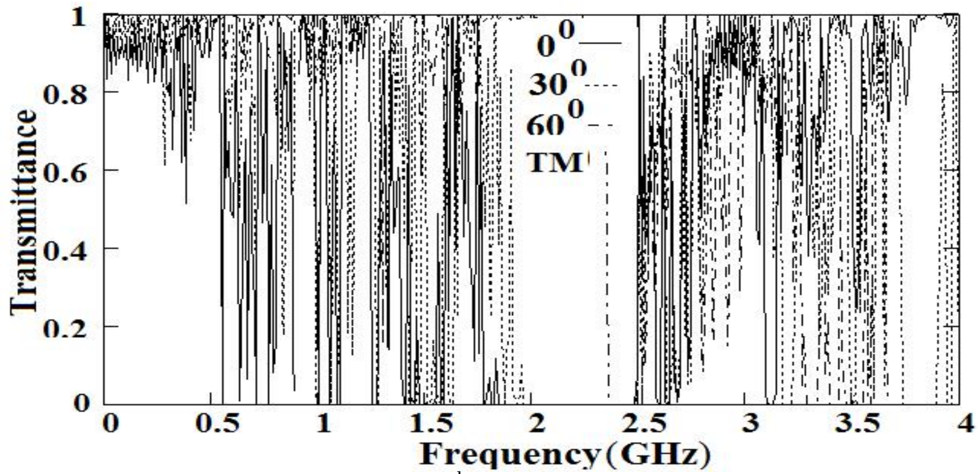

Figure 8: Transmission spectrum of the 7^{th} quasiperiodic symmetrical Fibonacci sequence for TM polarization at the three different angles of incidence 0^0, 30^0 and 60^0 for the thickness ratio of 8:4 mm.

Also, it is clear from the above figures that when we change the angles of incidence as 0^0, 30^0 and 60^0 for the thickness ratio of 8:4 mm, the symmetrical nature of the graph is almost identical.

In conclusion, we have studied the propagation of light-waves in the 1-D symmetric Fibonacci quasiperiodic photonic multilayers. It is shown that the symmetric internal structure can greatly enhance the transmission intensity in one-dimensional quasiperiodic systems. Here, we find some difference from those found

for the case of symmetric Fibonacci multilayers with both positive refractive index materials. For negative index materials, the transmission peaks are different in the form and in the intensity, mainly for low values of the number of generation of the Fibonacci's sequence. The transmission spectrum shows a unique mirror symmetrical profile around the various frequencies and the structure is transparent (the transmission coefficient is closely equal to 1.0) for the many frequencies in the range of frequency 0.5-1.7 GHz and 2.5-3.6 Hz. We see that this transmission spectrum has scaling property with respect to the generation number of the Fibonacci sequence within a symmetrical interval and this structure shows only a slight variation in the spectrum with the change in the angle of incidence.

REFERENCES

1. P. Sheng, *Introduction to Wave Scattering, Localization and Mesoscopic Phenomena*, Academic Press, New York, 1995.
2. Merlin, R., K. Bajema, R. Clarke, F. Y. Juang, and P. K. Bhattacharya, "Quasiperiodic GaAs-AlAs heterostructures," *Phys.Rev. Lett.,* Vol. **55**, 1768, 1985.
3. R. W. Peng, Y. M. Liu, X. Q. Huang, F. Qiu, M. Wang, A. Hu, S. S. Jiang, D. Feng, L. Z. Ouyang, and J. Zou, "Dimerlike positional correlation and resonant transmission of electromagnetic waves in aperiodic dielectric multilayers", *Phys. Rev. B* **69**, 165109, 2004.
4. L.D. Negro, M. Stolfi, Y. Yi, J. Michel, X. Duan, L.C. Kimberling, J. LeBlanc and J. Haavisto, "Photon band gap properties and omnidirectional reflectance in Si/SiO_2 Thue-Morse quasicrystals, *Appl. Phys. Lett.* **84**, 5186-5188, 2004.
5. T. Fujiwara and T. Ogawa, "*Quasicrystals*", (Springer-Verlag, Berlin, 1990).
6. A. Della Villa, S. Enoch, G. Tayeb, V. Pierro, V. Galdi, and F. Capolino, "Band Gap Formation and Multiple Scattering in Photonic Quasicrystals with a Penrose-Type Lattice" *Phys. Rev. Lett.* **94,** 183903/1-4, 2005.
7. Y. Wang, S. Jian, S. Han, S. Feng, Z. Geng, B. Cheng and D. Zhang, "Photonic band gap engineering of quasiperiodic photonic crystals", *J. Appl. Phys.* **97**, 106112/1-3, 2005.
8. P. Han, and H. Z. Wang, "Effect of invariant transformation in one-dimensional randomly-perturbed photonic crystal," *Chin. Phys. Lett.* **20**, 1520-1523, 2003.
9. T. Ogawa and R. Collins, "Chains, flowers, rings and peanuts: graphical geodesic lines and their application to penrose tiling," *Quasicrystals, Springer Series in Solid-State Sciences* **93,** Editors: T. Fujiwara, T. Ogawa, **(**Springer Verlag, Berlin, Heidelberg, 1990).
10. D. N. Chigrin, A. V. Laverinko, D. A. Yarotsky, and S. V. Gaponenko, "All-dielectric one-dimensional periodic structures for total omnidirectional

reflection and spontaneous emission control," *J. Lightwave Technol.* **17**, 2018 -2024, 1999.

11. R. Merlin, K. Bajema, R. Clarke, F. Y. Juang, and P. K. Bhattacharya, "Quasiperiodic GaAs-AlAs heterostructures," *Phys. Rev. Lett.* **55**, 1768 - 1770, 1985.
12. M. Kohmoto, B. Sutherland, and K. Iguchi, "Localization of optics: quasiperiodic media," *Phys. Rev. Lett.* **58**, 2436-2438, 1987.
13. N.-H. Liu, "Propagation of light waves in Thru-Morse dielectric multilayers", *Phys. Rev. B.* **55,** 3543-3547, 1997.
14. F. Nori, and J. P. Rodriguez, "Acoustic and electronic properties of one-dimensional quasicrystals," *Phys. Rev. B.* **34**, 2207-2211, 1986.
15. L. Dal Negro, C. J. Oton, Z. Gaburro, L. Pavesi, P. Johnson, A. Lagendijk, M. Righini, L. Colocci, and D. Wiersma, "Light transport through the band-edge states of Fibonacci Quasicrystals," *Phys. Rev. Lett.* **90**, 55501, 2003.
16. J. Todd, R. Merlin, R. Clarke, K. M. Mohanty and J. D. Axe, "Synchrotron X-Ray Study of a Fibonacci Superlattice", *Phys. Rev. Lett.* **57,** 1157 -1160, 1986.
17. Z. Cheng, R. Savit and R. Merlin, "Structure and electronic properties of Thue-Morse lattices", *Phys. Rev. B* **37,** 4375-4382, 1988.
18. R. B. Capaz, B. Koiller, and S. L. A. de Queiroz, "Gap states and localization properties of 1-D Fibonacci quasicrystals," *Phys. Rev. B* **42**, 6402-6407, 1990.
19. L. Dal Negro, C.J. Oton, Z. Gaburro, L. Pavesi, P. Johnson, A.Lagendijk, R. Righini, M. Colocci, D.S. Wiersma, *Phys. Rev. Lett*. **90**, 055501, 2003.
20. G. Gumbs, M.K. Ali, *Phys. Rev. Lett*. **60** 1081, 1988.
21. Sheng, P., *Scattering and Localization of Classical Waves in Random Media*, World Scientific, Singapore, 1990.
22. Dal Negro, L., C. J. Oton, Z. Gaburro, L. Pavesi, P. Johnson, A. Lagendijk, R. Righini, M. Colocci, and D. S. Wiersma, "Light transport through the band-edge states of Fibonacci quasicrystals," *Phys. Rev. Lett.*, Vol. **90**, 055501, 2003.
23. Gumbs, G. and M. K. Ali, "Dynamical maps, cantor spectra, and localization for Fibonacci and related quasiperiodic lattices," *Phys. Rev. Lett.*, Vol. **60**, 1081, 1988.
24. Fujiwara, T., M. Kohmoto, and T. Tokihiro, "Multifractal wave functions on a Fibonacci lattice," *Phys. Rev. B*, Vol. **40**, 7413, 1989.
25. Cojocaru, E., "Omnidirectional reflection from finite periodic and Fibonacci quasi-periodic multilayers of alternating isotropic and birefringent thin films," *Appl. Opt.*, Vol. **41**, 747, 2002.
26. H. Rahimi, A. Namdar, S. Roshan Entezar and H. Tajalli, "Photonic transmission spectra in one-dimensional Fibonacci multilayer structures

containing single negative metamaterials" *Progress In Electromagnetics Research*, PIER **102**, 15-30, 2010.
27. Liwei Zhang, Kai Fang, Guiqiang Du, Haitao Jiang, Junfang Zhao, "Transmission properties of Fibonacci quasi-periodic one-dimensional photonic crystals containing indefinite metamaterial" *Optics Communications* **284**, 703–706, 2011.
28. X.Q. Huang, S.S. Jiang, R.W. Peng, A. Hu, *Phys. Rev. B* **63**, 245104, 2001.
29. R.W. Peng, X.Q. Huang, F. Qiu, M. Wang, A. Hu, S.S. Jiang, *Appl. Phys. Lett.* **80**, 3063, 2002.
30. P. Yeh, *Optical Waves in Layered Media*, New York: John Wiley & Sons, 1988.
31. M. Born, and E. Wolf, *Principles of Optics*, Cambridge: Cambridge University Press, 1998.
32. F.F. de Medeiros, E.L. Albuquerque, M.S. Vasconcelos, *J. Phys.: Condens. Matter* **18**, 8737, 2006.
33. M.S. Vasconcelos, P.W. Mauriz, F.F. de Medeiros, E.L. Albuquerque, *Phys. Rev. B* **76**, 165117, 2007.

QSAR Based Study Of Oxindole Derivatives Against HIV Using Quantum Chemical Descriptors

Mohiuddin Ansari[1]

Introduction:

A significant rising interest in the design of metal compounds as drugs and diagnostic agents is currently observed in the area of scientific inquiry appropriately termed medicinal inorganic chemistry[1]. Investigations in this area focus mostly on the speciation of metal species in biological media, based on possible interactions of these metal ions with diverse biomolecules, in an effort to contribute to future development of new therapeutics or diagnostic agents[2-4]. A wide range of metal complexes are already in clinical use[5], and encourage further studies for new metallodrugs, such as metal-mediated antibiotics, antibacterial, antiviral, antiparasitic, radiosensitizing agents, and anticancer compounds[6]. However, their mechanisms of action are often still unknown. Recently, more than a thousand potential anticancer metal compounds, from the National Cancer Institute (NCI) tumor-screening database, were analyzed based on putative mechanisms of action, and classified into four broad classes, according to their preference for binding to sulfhydryl groups, chelation, generation of reactive oxygen species, and production of lipophilic ions[7]. 5-hydroxytryptamine7 (5-HT_7) receptor, the member of serotonin subfamily of G-protein coupled receptors, has implications in many CNS functions and disorders, like schizophrenia, depression, epilepsy, migraine and control of circadian hythm. Thus, renders it as a novel drug target to cure such ailments. Only a few compounds have been reported, in recent years, as antagonists, selective agonists, nonselective agonists and partial agonists at the 5-HT_7 receptor. However, the use of some of the potent compounds was limited due to strong side effects such

1. Deptt. Of Chemistry M. L. K. (P.G.) College Balrampur (U P)

as blood pressure and heart rate changes or poor experimental metabolic stability. The representative chemical species showing metabolic stability and electivity at 5-HT_7 receptor include tetrahydrobenzindoles, (2-methoxyphenyl) piperazinyls, DR4365, DR4446 and DR4485. A synthetic study, with the aim to obtain compounds having strong 5-HT_7 receptor affinity and good selectivity over other receptors, was performed by Volk *et al*. The structure-activity relationship (SAR) studies on the aforesaid series of 1,3-dihydro-2*H*-indol-2-one (oxindole) were mainly concerned with the limited alteration of substituents at oxindole benzene ring, nitrogen atom, spacer and at different positions of the phenyl ring attached to the piperazine and provided no rationale to reduce the trial-and-error factors. Hence, a quantitative SAR (QSAR) study on aforesaid analogues is carried out here so as to provide the rationale for drug design and explore the possible mechanism of their action.

The general structure of reported (phenylpiperazinyl-alkyl)oxindole analogues is shown in Figure 1.

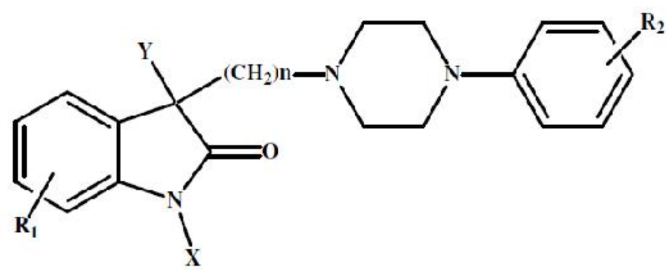

Figure-1: General structure of (phenylpiperazinyl-alkyl)oxindole

The biological effects and the appropriate quantifying parameters of substituents, present at different positions of the parent structure, are compiled in Table-1. The biological effects, reported as Ki, represents the radioligand binding of [3H]LSD (NEN) on cloned human serotonin serotonin receptor subtype 7 (H_5-HT_7) produced in CHO cells. In present study, for a given compound, it is expressed as pKi on a molar basis. Both the Fujita-Ban and the Hansch types of analyses were carried out on these compounds to derive a QSAR employing the method of multiple regression analysis (MRA). The Fujita-Ban analysis based on an additivity principle is a nonparametric approach and requires, relatively, a larger data-set. In addition, the approach also requires certain group to occur two or more times at a given varying position in a molecule.

Methodology:

The computer aided techniques, such as AM1**,** PM3[8] **a**re employed to evaluate the electronic properties of anti HIV oxindolei derivatives and with the help of quantitative values, MLR equations will be developed for finding the QSAR models, which have high predictive power.PM3 is very valuable and important parameterization. Hence I have used PM3 method for calculation of anti-HIV oxindole derivatives. The thirty four derivatives of oxindole are on parent skeleton [A. For QSAR study we have been used following descriptors:

1. Molecular weight (M_W)
2. Heat of formation (H_f^{0})
3. Total energy (**E_T**)
4. HOMO value (εHOMO**)**
5. LUMO value (εLUMO)
6. Electronegativity (χ)
7. Absolute hardness (η)

For QSAR prediction, the 3D modeling and geometery optimization of all the compounds have been done with the help of PCModel software using PM3 hamiltonian[7]. The MOPAC calculations have been performed with WINMOPAC 7.21 software, by applying keywords PM3 Charge=0 Gnorm=0.1, Bonds, Geo-OK, Vectors density. In DFT, the electronegativity, commonly known to a chemist, is define as the negative of a partial derivative of energy E of an atomic or molecular system with respect to the number of electrons N with a constant external potential ν(r) [9]

«Z-¡Z - E¢b¢kF¬ErF **Eq.(1)**

In accordance with the earlier work of Iczkowski and Margrave**,**[10] it should be stated that when assuming a quadratic relationship between E and N and in a finite difference approximation, Eq. 1 may be rewritten as

¡ZJ«ZJEfbHb^FO **Eq. (2)**

where IE and EA are the vertical ionization energy and electron affinity, respectively, thereby recovering the electronegativity definition of Mulliken[11] Moreover, a theoretical justification was provided for Sandersons principle of electronegativity equalization, which states that when two or more atoms come together to form a molecule, their electronegativities become adjusted to the same intermediate value [12-14] The absolutehardnessηis define as

¦=(IP-EA) / 2 **Eq. (3)**

where IP and EA are the ionization potential and electron affinity respectively, of the chemical species. According to the Koopman's theorem, the IP is simply the eigen value of the HOMO with change of sign and the EA is the eigen value of the LUMO with change of sign hence the equations 2 and 3 can be written as

¡=(£LUMOH**£HOMO**F**/2** **Eq. (4)**

¦=(£LUMO J £HOMO F/2 **Eq. (5)**

The heat of formation is defined as:

$$aH_f^0=E_{elect.}+E_{nuc.}-E_{isol.}+E_{atom} \quad \textbf{Eq.(6)}$$

where$E_{elect.}$ is the electronic energy, $E_{nuc.}$ is the nuclear-nuclear repulsion energy, E_{isol} is the energy required to strip all the valence electrons of all the atoms in the system, and $E_{atom}$is the total heat of atomization of all the atoms in the system. The total electronic energy of the system is given by [15]

E_TZNOoEeHFF **Eq.**ETF

whereP is the density matrix and H is the one-electron matrix. F is fock matrix.

For regression analysis, we used project leader programme associated with CAChe pro software of Fujitsu. Various regression equation were developed for the prediction of activity. The values of descriptors have been calculated by the above equation.

Result and Discussion

AM1 based calculations of the above descriptors have been made on the compounds listed in Table-1 with the help of MOPAC and Cache Software and their relationship with the known activity has been studied. The values of the descriptors have been used to prepare the regression equations using MLR analysis and the predicted activities obtained from the regression equations have been compared with the known activities. The correlation coefficient and cross validation coefficients have been evaluated for the evaluation of the qualities of QSAR models. Values of the descriptors used in MLR analysis for the compounds under study are shown in the Table-2. With the help of MLR analysis, 90 regression equations using the various combinations of quantum chemical descriptors have been obtained. Regression equations in which cross-validation coefficient rCV^2 is negative and whatever be the value of regression coefficient r^2 has no predictive power. Regression equations in which cross-validation coefficient rCV^2 is greater than 0.2 and regression coefficient r^2 is less than 0.5 has low predictive power. Regression equations in which cross-validation coefficient rCV^2 is greater than 0.2 and regression coefficient r^2 is greater than 0.5 has good predictive power. Predicted activity of a regression equation depends on the value of regression coefficient r^2. The predictive power of regression equation increases as the value of regression coefficient r^2 increases. The maximum value of the regression coefficient r^2 may be 1 which indicates 100% predictive power. Percentage of the predictive power is 100 times of the value of regression coefficient r^2. Some MLR equations, also called regression equations, have been arranged in the decreasing order of the predictive power (Table-3). The regression equation in which the value of regression coefficient (r^2) is highest and the value of cross-validation coefficient (rCV^2) is greater than 0.2 is said to have maximum predictive power.

Best QSAR models of oxindole derivatives using quantum chemical descriptors:

The regression equations for PA59, PA62, PA64, PA78, PA80 and PA82 form the best QSAR model i.e. with the help of this regression equation the activity of any unknown compound can be best predicted with the help of the values of the descriptors used in these equations. The predicted activities are given by the equations-

1. PA59=0.0015029*MW-0.45006*εHOMO+0.434863*εLUMO-0.0419809*β-3.93614
   rCV^2=0.912139 r^2=0.926172
2. PA62=0.0015029*MW-0.884923*εHOMO-0.869726*μ-0.0419809*β-3.93614 rCV^2=0.912139 r^2=0.926172
3. PA64=0.0015029*MW-0.0151967*εHOMO+0.869726*η-0.0419809*β-3.93614 rCV^2=0.912139 r^2=0.926172
4. PA78=0.0015029*MW+0.884923*εLUMO+0.90012*μ-0.0419809*β-3.93614 rCV^2=0.912139 r^2=0.926172
5. PA80=0.0015029*MW-0.0151967*εLUMO+0.90012*η-0.0419809*β-3.93614 rCV^2=0.912139 r^2=0.926172
6. PA82=0.0015029*MW+0.0151967*μ+0.884923*η-0.0419809*β-3.93614 rCV^2=0.912139 r^2=0.926172

Quantum chemical descriptors used in the above QSAR models are as under-

PA59 = Molecular Weight, HOMO Energy, LUMO Energy, Total Energy
PA62 = Molecular Weight, HOMO Energy, Chemical Potential, Total Energy
PA64 = Molecular Weight, HOMO Energy, Absolute Hardness, Total Energy
PA78 = Molecular Weight, LUMO Energy, Chemical Potential, Total Energy
PA80 = Molecular Weight, LUMO Energy, Absolute Hardness, Total Energy
PA82 = Molecular Weight, Chemical Potential, Absolute Hardness, Total Energy

Thus above descriptors form the best QSAR model and with the help of these values of descriptors the activity of any compound (whose activity is unknown) can be obtained by substituting the values of the descriptors in the above equation. The graph between the actual activities obtained experimentally and the predicted activities PA62 of the compounds under study is shown in the Graph-1.

Second best QSAR models of oxindole derivatives using quantum chemical descriptors:

The regression equations for PA53 forms the best QSAR model i.e. with the help of this regression equation the activity of any unknown compound can be best predicted with the help of the values of the descriptors used in this equation. The predicted activities are given by the equation-

PA53=0.00154016*MW+0.879526*η-0.0419747*β-3.8613
rCV^2=0.913747

$r^2=0.926164$

Descriptors used in this QSAR model are molecular weight, absolute hardness and total energy. The values of regression and cross-validation coefficients are 0.926164 and 0.913747 respectively. These values indicate the predictive power of this QSAR model is good. Graph between the actual activities of the derivatives of oxindole and the activities predicted by the QSAR model PA53 is shown in Graph-2.

QSAR model using total energy as single descriptor:

QSAR model developed using total energy alone has very good predictive power and regression equation is given by

$PA89=-0.0443567*\beta+0.0894246$

$rCV^2=0.908677$ $r^2=0.913306$

Graph between the actual activities of the derivatives of oxindole and the activities predicted by the QSAR model PA89 is shown in Graph-3.

QSAR model using dipole moment as single descriptor:

QSAR model developed using dipole moment alone has good predictive power and regression equation is given by

$PA90=1.53244*\alpha+3.63813$

$rCV^2=0.461825$ $r^2=0.60064$

Graph between the actual activities of the derivatives of oxindole and the activities predicted by the QSAR model PA90 is shown in Graph-4.

Conclusion:

Best combination of descriptors to predict the activities of oxindole derivatives are in the following combinations.

a. Molecular Weight, HOMO Energy, LUMO Energy, Total Energy
b. Molecular Weight, HOMO Energy, Chemical Potential, Total Energy
c. Molecular Weight, HOMO Energy, Absolute Hardness, Total Energy
d. Molecular Weight, LUMO Energy, Chemical Potential, Total Energy
e. Molecular Weight, LUMO Energy, Absolute Hardness, Total Energy
f. Molecular Weight, Chemical Potential, Absolute Hardness, Total Energy

QSAR model developed using these descriptors has 0.926172 regression coefficient and 0.912139 cross-validation coefficient indicating very good predictive power. The descriptors total energy and dipole moment are separately capable to provide the QSAR models having good predictive power. QSAR model PA66 in which the descriptors are molecular weight, total Energy, HOMO Energy and dipole moment is the best QSAR model. In this QSAR model the regression coefficient is 0.984092 and cross-validation coefficient is 0.966624, which indicate very good predictive power of this QSAR model.

$PD66=-0.000138327*MW-0.271687*\varepsilon HOMO-0.0265814*\beta+0.244139*\alpha$
$+0.248531$

$rCV^2=0.966624$

r^2=0.984092

It is clear that the total energy and dipole moment play important roles in the prediction of activity of compounds because in most of good QSAR models, the descriptors total energy and dipole moment are common.

Table-1 : Structures, QSAR parameters and 5-HT7 binding affinities of (Phenylpiperazinylalkyl) oxindole analogues.

Compound	R_1	X	Y	n	R_1	pKi(M) Observed
C1	H	H	Et	4	3´-Cl	9.39
C2	H	H	Et	5	3´-Cl	8.84
C3	H	H	Et	4	4´-Cl	9.42
C4	H	H	Et	5	4´-Cl	8.91
C5	H	H	Et	4	H	8.68
C6	H	Me	Et	4	H	7.48
C7	H	H	Et	4	2´-OMe	8.27
C8	H	Bu	Et	4	2´-OMe	8.18
C9	5-F	H	Et	4	3´-Cl	8.68
C10	5-F	H	H	4	3´-Cl	8.71
C11	5-F	H	Et	4	4´-F	8.82
C12	5-F	H	H	4	4´-F	8.47
C13	H	H	i-Bu	4	3´-Cl	8.75
C14	H	H	H	4	3´-Cl	9.31
C15	H	H	H	4	4´-Cl	8.16
C16	5-F	H	H	4	H	7.36
C17	H	H	Et	4	3´-OMe	8.59
C18	H	H	Et	4	4´-OMe	7.60
C19	H	H	Et	4	2´-Cl	8.29
C20	H	H	Et	4	4´-F	9.37
C21	H	H	Et	4	3´,4´-di-Cl	9.20
C22	H	H	Et	4	3´-Cl,4´-F	9.22
C23	H	H	Et	4	3´-Cl,4´-Me	9.18
C24	5-Cl	H	Et	4	3´-Cl	8.08
C25	6-F	H	Et	4	3´-Cl	9.17

Compound	R_1	X	Y	n	R_1	pKi(M) Observed
C26	5-Cl,6-F	H	Et	4	3´-Cl	8.04
C27	5-F,7-Cl	H	Et	4	3´-Cl	8.32
C28	5,7-di-Cl	H	Et	4	3´-Cl	8.02
C29	5-F	H	Et	4	4´-Cl	8.55
C30	5-Cl	H	Et	4	4´-Cl	8.43
C31	6-F	H	Et	4	4´-Cl	9.10
C32	5-Cl,6-F	H	Et	4	4´-Cl	8.16
C33	5-F,7-Cl	H	Et	4	4´-Cl	8.22
C34	5,7-di-Cl	H	Et	4	4´-Cl	7.99

Table-2: Values of the descriptors used in MLR analysis for the compounds

Compound	Molecular Weight	HOMO Energy (eV)	LUMO Energy (eV)	Chemical Potential	Absolute Hardness	Total Energy (Hartree)	Dipole Moment (debye)	Activity
C1	411.974	-8.610	0.060	4.275	4.335	-203.674	3.506	9.390
C2	426.000	-8.430	0.073	4.179	4.251	-196.451	3.301	8.840
C3	411.974	-8.720	0.079	4.320	4.399	-209.341	3.518	9.420
C4	426.000	-8.548	0.085	4.231	4.317	-198.007	3.327	8.910
C5	377.528	-8.539	0.083	4.228	4.311	-199.896	3.241	8.680
C6	391.555	-8.533	0.126	4.204	4.330	-166.228	2.793	7.480
C7	407.555	-8.544	0.090	4.227	4.317	-183.784	3.088	8.270
C8	486.451	-8.559	-0.757	4.658	3.901	-186.784	3.055	8.180
C9	446.419	-8.631	-0.159	4.395	4.236	-192.896	3.241	8.680
C10	490.870	-8.634	-0.202	4.418	4.216	-193.562	3.252	8.710
C11	429.964	-8.761	-0.143	4.452	4.309	-199.007	3.294	8.820
C12	401.910	-8.775	-0.169	4.472	4.303	-188.229	3.163	8.470
C13	440.027	-8.611	0.067	4.272	4.339	-199.451	3.267	8.750
C14	383.920	-8.611	0.043	4.284	4.327	-206.896	3.476	9.310
C15	383.920	-8.723	0.044	4.340	4.384	-181.340	3.047	8.160
C16	383.920	-8.566	-0.156	4.361	4.205	-166.561	2.748	7.360
C17	407.555	-8.283	0.108	4.088	4.195	-196.896	3.208	8.590
C18	407.555	-8.537	0.105	4.216	4.321	-168.895	2.838	7.600

Compound	Molecular Weight	HOMO Energy (eV)	LUMO Energy (eV)	Chemical Potential	Absolute Hardness	Total Energy (Hartree)	Dipole Moment (debye)	Activity
C19	411.974	-8.723	0.065	4.329	4.394	-184.229	3.096	8.290
C20	395.519	-8.743	0.062	4.341	4.403	-201.230	3.499	9.370
C21	446.419	-8.751	-0.095	4.423	4.328	-204.452	3.435	9.200
C22	429.964	-8.781	-0.113	4.447	4.334	-201.896	3.443	9.220
C23	426.000	-8.572	0.071	4.250	4.321	-204.007	3.428	9.180
C24	446.419	-8.633	-0.249	4.441	4.192	-171.562	3.017	8.080
C25	429.964	-8.640	-0.210	4.425	4.215	-203.785	3.424	9.170
C26	464.409	-8.658	-0.509	4.584	4.074	-178.673	3.002	8.040
C27	464.409	-8.657	-0.448	4.552	4.104	-181.895	3.107	8.320
C28	480.864	-8.652	-0.441	4.547	4.105	-178.228	2.995	8.020
C29	429.964	-8.748	-0.244	4.496	4.252	-197.007	3.593	8.550
C30	446.419	-8.744	-0.248	4.496	4.248	-187.340	3.448	8.430
C31	429.964	-8.752	-0.210	4.481	4.271	-201.229	3.398	9.100
C32	464.409	-8.770	-0.508	4.639	4.131	-189.340	3.347	8.160
C33	464.409	-8.769	-0.448	4.608	4.161	-188.673	3.369	8.220
C34	480.864	-8.763	-0.441	4.602	4.161	-179.562	2.184	7.990

Graph-1: Graph between the actual activities of the derivatives of oxindole and the activities predicted by the QSAR model PA62

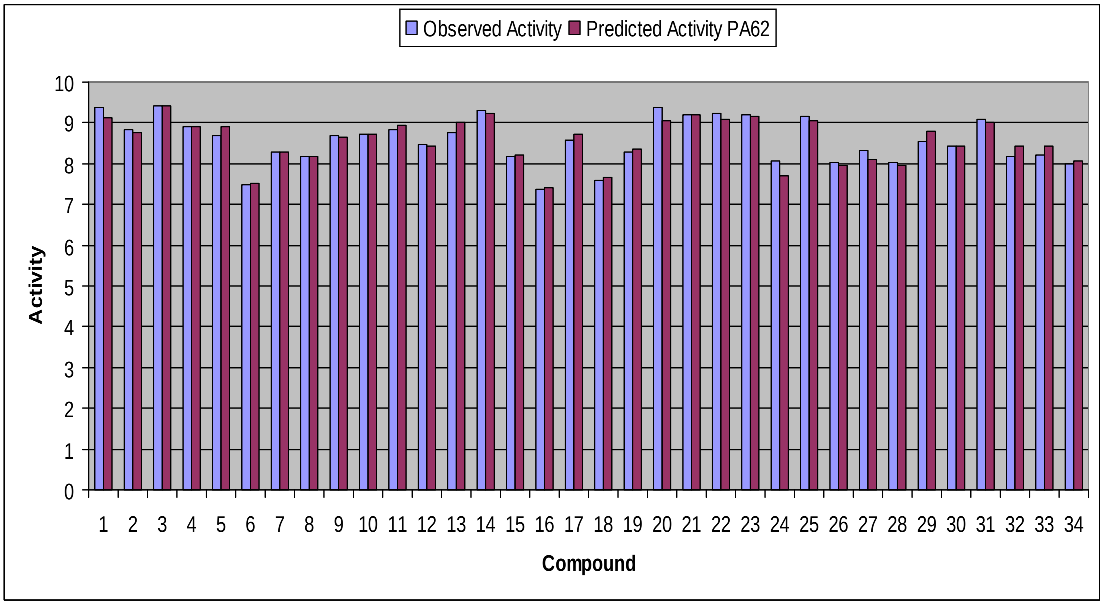

Table-3: Predicted activities in the decreasing order of predicted power

S. No.	Predicted Activity	Cross-validation coefficient rCV^2	Regression coefficient r^2
1	PA59	0.912139	0.926172
2	PA62	0.912139	0.926172
3	PA64	0.912139	0.926172
4	PA78	0.912139	0.926172
5	PA80	0.912139	0.926172
6	PA82	0.912139	0.926172
7	PA53	0.913747	0.926164
8	PA72	0.878803	0.924211
9	PA75	0.878803	0.924211
10	PA76	0.878803	0.924211
11	PA29	0.910437	0.923568
12	PA32	0.910437	0.923568
13	PA34	0.910437	0.923568
14	PA38	0.910437	0.923568

Graph-2: Graph between the actual activities of the derivatives of oxindole and the activities predicted by the QSAR model PA53

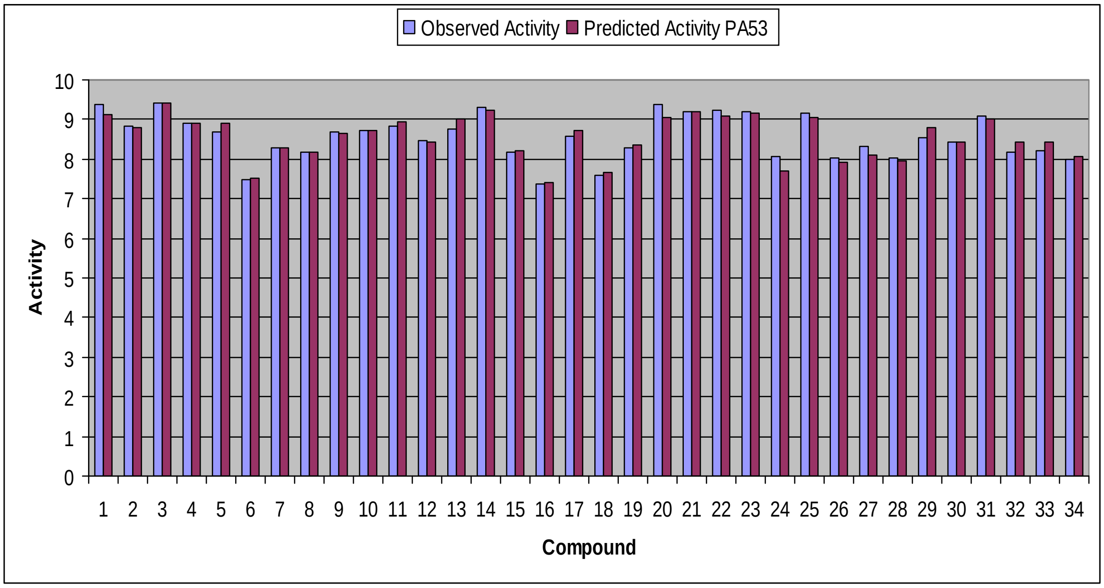

Graph-3: Graph between the actual activities of the derivatives of oxindole and the activities predicted by the QSAR model PA89

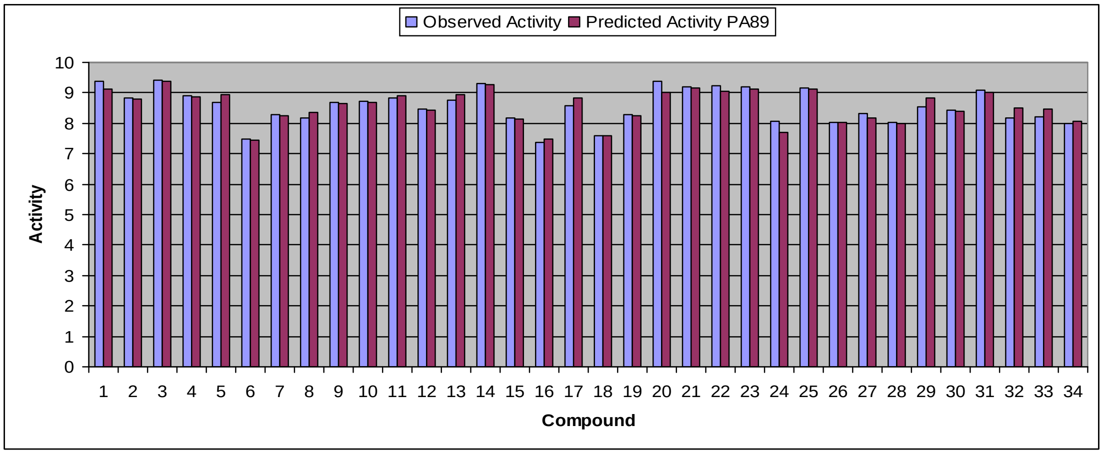

Graph-4: Graph between the actual activities of the derivatives of oxindole and the activities predicted by the QSAR model PA90

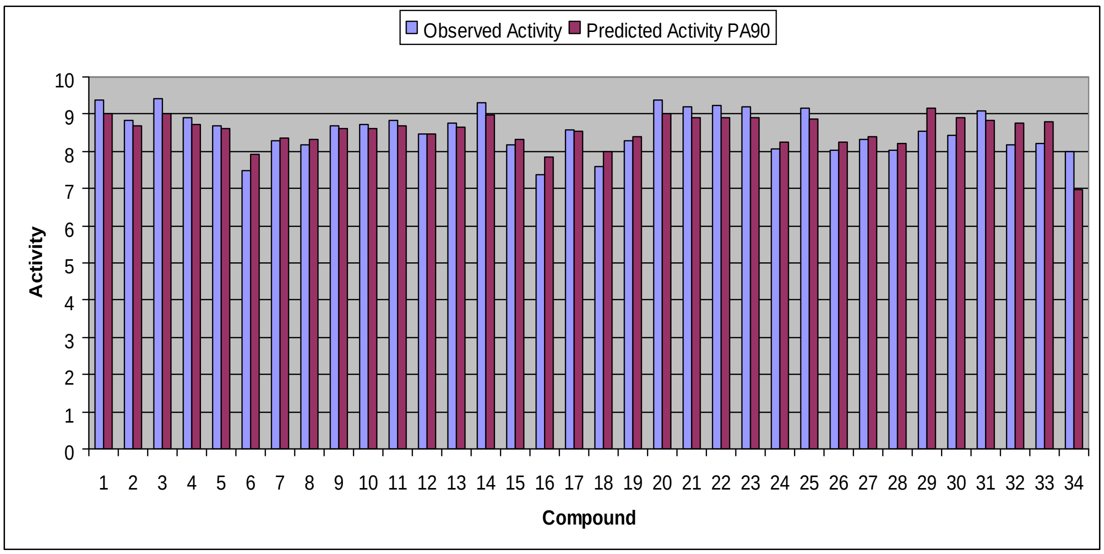

References:

1. *Parr, R. G.; Yang, W. Density-Functional Theory of Atoms and Molecules; Oxford University Press: New York,* ***1989****.*
2. *Dreizler, R. M.; Gross, E. K. U. Density Functional Theory;Springer: Berlin,* ***1990****.*

3. *Perdew, J. P.; Kurth, S. In A Primer in Density Functional Theory, Fiolhais, C.; Nogueira, F.; Marques, M. A. L. Eds.; Springer: Berlin, **2003**; p. 1.*
4. *Koch, W.; Holthausen, M. C. A Chemist's Guide to Density Functional Theory; Wiley-VCH: New York, **2000**.*
5. *Pearson, R. G. Chemical Hardness: Applications from Molecules to Solids; Wiley-VCH: Oxford, **1997**.*
6. *Chermette, H. J. Comput. Chem. **1999**, 20, 129.*
7. *Geerlings, P.; De Proft, F.; Langenaeker, W. Chem. Rev. **2003**, 103, 1793.*
8. *Parr, R. G.; Donnelly, R. A.; Levy. M.; Palke, W. E. J. Chem. Phys. **1978**, 68, 3801.*
9. *9. Iczkowski, R. P. ; Margrave, J. L. J. Am. Chem. Soc. **1961**, 83, 3547.*
10. *10.Mulliken, R. S. J. Chem. Phys. **1934**, 2, 782.*
11. *Sanderson, R. T. Science **1995**, 121, 207.*
12. *Sanderson, R. T. Chemical Bonds and Bond Energy; **1976**Academic Press: New York,.*
13. *Sanderson, R. T. Polar Covalence; Academic Press: **1983**New York,.*
14. *Parr, R. G. ; Pearson, R. G. J. Am. Chem. Soc. **1983**,105, 7512.*
15. *Clare, B. W. Aust. J. Chem. **1995**,48, 1385.*

f’k’kq f’k{kk esa ekUVsljh i)fr dh mikns;rk

MkW0 t; flag[1] ,oa T;ksfr feJk[2]

lkjka’k

इन्द्रिय यथार्थवाद की समर्थक और शिक्षा के वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक एवं विकासवादी सिद्धान्तों के महत्व को मान्यता प्रदान करने वाली डॉ0 मेरिया मान्टेसरी ने पिछड़े बालकों की शिक्षा के लिए एक विशिष्ट शिक्षण पद्धति को जन्म दिया जो मान्टेसरी पद्धति के नाम से प्रख्यात हुई। मान्टेसरी विद्यालयों में 3 वर्ष से 6 वर्ष तक के शिशु शिक्षा ग्रहण करते है। डॉ0 मान्टेसरी ने शिक्षा उद्देश्यों में शिशु शिक्षा को ही प्रधानता दी है और उन्होंने अपनी शिक्षण विधियों में कर्मेन्द्रियों की शिक्षा, ज्ञानेन्द्रियों की शिक्षा व पढ़ने लिखने का गणित की शिक्षा को विशेष महत्व दिया है। मान्टेसरी पद्धति पुरूष शिक्षक की अपेक्षा स्त्री शिक्षिका को अधिक महत्व देती है क्योंकि स्त्री शिक्षिकाओं में प्रेम, स्नेह व सहानुभूति पुरूष शिक्षक की अपेक्षा अधिक होती है। बाल मन को समझने में अधिक समर्थ होती है। मान्टेसरी पद्धति विशेषतया शिशुओं के मनोविज्ञान पर आधारित है। इस पद्धति में शिशुओं की रूचियों को ध्यान में रखकर विभिन्न उपकरणो व क्रियाओं के माध्यम से शिक्षा देने व सीखने के अवसर प्रदान किये है।

मान्टेसरी पद्धति सिर्फ शिक्षण पद्धति ही नहीं है न यह शिक्षा जगत का एक क्रान्तिकारी विचार है, न वैज्ञानिक जगत का नूतन सत्य, न आर्थिक समस्याओं का एकान्तिक समाधान या जवाब है, न ही वर्तमान राजनीतिक उलझन का रामबाण इलाज। यह तो एक दृष्टि है एक नया प्रकाश है। यह पद्धति शिशुओं का सर्वांगीण विकास करती है और साथ ही साथ उनमें व्यावसायिक दक्षता एवं सामाजिक कुशलता का विकास कर उनका भावी जीवन सुखमय बनाने का प्रयास करती है।

1- f’k{kk egkfo|ky;] jhok] ¼e0iz0½

2- HkkxoUrh ,tqds’ku lsUVj] fMxh dkyst] eU/kuk] dkuiqj ¼m0iz0½

Hkfedk

इन्द्रिय यथार्थवाद की समर्थक और शिक्षा के वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक एवं विकासवादी सिद्धान्तों के महत्व को मान्यता प्रदान करने वाली, डॉ0 मेरिया माण्टेसरी का जन्म सन् 1870 में इटली के अन्कोना प्रदेश के शियारैवेल नगर में हुआ था। उन्होंने 1894 में रोम विश्वविद्यालय से डाक्टरी की परीक्षा पास करने के पश्चात् उसी विश्वविद्यालय में उन्हें पिछड़े हुए तथा मन्द बुद्धि बालकों की शिक्षा का भार सौंपा गया। उन्होंने अपने इस कर्तव्य को बड़े ही सफलतापूर्वक ढंग से निभाया और पिछड़े बालकों की शिक्षा से सम्बन्धित अनेक अन्वेषण भी किये।

डा0 मान्टेसरी ने पिछड़े बालकों की शिक्षा के लिए एक विशिष्ट शिक्षण पद्धति को जन्म दिया जो मान्टेसरी पद्धति के नाम से प्रख्यात हुई। अपनी पद्धति को श्रेष्ठ बनाने के लिए उन्होंने प्रयोगात्मक मनोविज्ञान का भी अध्ययन किया। पिछड़े बालकों के साथ–साथ उन्होंने इस पद्धति को साधारण बुद्धि वाले शिशुओं पर भी प्रयोग किया और उन्हें इस कार्य में अधिक सफलता मिली। उन्होंने अपनी पद्धति के माध्यम से सामान्य एवं मन्द दोनों ही प्रकार की बुद्धि के बालकों को शिक्षित करना प्रारम्भ किया। डा0 मेरिया ने अपना सम्पूर्ण जीवन शिशुओं की शिक्षा में व्यतीत कर दिया और उन्होंने 3 वर्ष से 6 वर्ष के बच्चों की शिक्षा पर अधिकाधिक ध्यान दिया। डा0 मान्टेसरी कई बाल गृहों की अध्यक्षा भी रहीं।

शिक्षा के क्षेत्र में अपने परीक्षणों का सकारात्मक परिणाम देखकर वह इतनी उत्साहित हुई कि उन्होंने सम्पूर्ण विश्व को इस नवीन पद्धति के प्रचार–प्रसार के लिए भ्रमण करना प्रारम्भ कर दिया। सन् 1952 में इस महान शिक्षा विशारद ने अपने शरीर का त्याग कर दिया।

आज मान्टेसरी पद्धति यूरोप, अमेरिका, चीन, फिलीपीन, आस्ट्रेलिया, अफ्रीका तथा अन्य देशों में तेजी से फैल रही है। इसका कारण यह है कि इसके सिद्धान्त मानव विकास की स्वभाविक आवश्यकता तथा क्रम पर निर्मित है। आज विश्व में जिस प्रकार की शिक्षा शिशुओं के लिए आवश्यक है इस मान्टेसरी पद्धति के माध्यम से उसे उपलब्ध करायी जा सकती है।

ek.Vsljh dh nk'kZfud fopkj /kkjk ,oa f'k{kk n'kZu
f'k{kk dk vFkZ

डॉ0 मेरिया ने शिक्षा सम्बन्धी अपने विचारों को वास्तविक प्रयोगों तथा स्वनिरीक्षण के आधार पर निर्धारित किये हैं। माण्टेसरी के विचारानुसार – शिक्षा एक गतिशील प्रक्रिया है जो बालक के जीवन के कार्य–कलापों से परिचित कराती है, उसके व्यक्तित्व का सम्यक विकास करती है और इस विकास का मानव जाति के विकास से सामंजस्य स्थापित करती है।

माण्टेसरी ने अपना कोई दर्शन नहीं दिया है और न ही उन्होंने कोई दार्शनिक विचार प्रस्तुत किए हैं। उन्होंने शिशुओं से सम्बन्धित जो विचार प्रस्तुत किए हैं उन्हीं से उनकी दार्शनिक विचारधारा का पता चलता है।

माण्टेसरी कैथोलिक धर्मावलम्बी थी और आत्मा–परमात्मा व शिशु की शुद्ध आत्मा में विश्वास रखती थी, इस लिए कुछ विद्वान उन्हें आध्यात्मिक यथार्थवादी मानते है। कुछ विद्वान उन्हें ज्ञानेन्द्रियों यथार्थवाद का समर्थक मानते हैं क्योंकि वह विज्ञान को मानती है वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग करती है। इन्द्रिय प्रशिक्षण को शिक्षा का आधार मानती है, विकासवाद में विश्वास रखती है और वस्तु जगत को यथार्थ मानती है। कुछ उन्हें प्रकृतिवादी समझते हैं क्योंकि वह शिशुओं के स्वतन्त्र विकास पर बल देती है। मानवतावादी एवं मानव कल्याण तथा सेवा में अगाध श्रद्धा रखने के कारण कुछ विद्वान उन्हें मानवतावादी भी मानते है इस प्रकार यह आध्यात्मवादी तथा भौतिकवादी दर्शनों के मानवतावादी विचारों की अनुयायी थी।

f'k{kk ds mn~ns';

माण्टेसरी में स्वयं को केवल शिशु शिक्षा के उद्देश्यों तक ही सीमित रखा उनकी दृष्टि से शिक्षा के उद्देश्य निम्न होने चाहिए :–

1. जन्मजात शक्तियों का स्वाभाविक विकास।
2. जीवन के लिए तैयार करना।
3. व्यावहारिक कुशलता का विकास।
4. इन्द्रियों का प्रशिक्षण व विकास।
5. शिशुओं का नैतिक विकास करना, उन्हें शक्ति और सेवा का पाठ पढ़ाना।

ikB~;Øe

डॉ0 माण्टेसरी ने किया प्रधान पाठ्यक्रम पर विशेष बल दिया। उन्होंने पाठ्यक्रम में विभिन्न प्रकार के क्रियात्मक व रचनात्मक खेल, प्रकृति निरीक्षण एवं अध्ययन, लिखना, पढ़ना व गणित, संगीत, नृत्य, चित्रण, सामान्य विज्ञान आदि विषयों को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। उन्होंने पाठ्यक्रम को अलग–अलग विषयों के रूप में नहीं वरन् एकीकृत विषय के रूप में माना साहित्य, कला, इतिहास, सामाजिक मुद्दे, राजनैतिक विज्ञान, अर्थशास्त्र विज्ञान व तकनीकी का अध्ययन सभी को एक दूसरे के पूरक बताया है। और पहली से पांचवी तक के शिशुओं के लिए अलग–अलग कार्यों का वितरण किया।

fo|ky; dk Lo:i

डॉ0 माण्टेसरी ने अपने स्कूल का नाम 'चिल्ड्रेन हाउस' रखा। भारत में इसको माण्टेसरी विद्यालय के नाम से भी जाना जाता है। वर्तमान समय की

सर्वोत्कृष्ट शिशु–पाठशालाओं में मॉण्टेसरी स्कूल का सुनिश्चित स्थान हैं। शिशु–विद्यालय के स्वरूप के विषय में अपने अडिग विश्वास को व्यक्त करते हुए डॉ0 मेरिया माण्टेसरी ने कहा कि यह विद्यालय, अबोध बालकों के मस्तिष्क में ज्ञान ठूँसने वाला कारखाना न होकर घर के समान प्रिय एवं सुखद स्थान होना चाहिए।

माण्टेसरी विद्यालय में 3 वर्ष से 6 वर्ष तक के बालक शिक्षा ग्रहण करते है। इसमें अनेक कमरे होते है। भवन का प्रमुख कमरा अध्ययन कक्ष है। छोटे कमरे जैसे–कॉमन रूम, अल्पाहार गृह, विश्राम गृह, हस्तकार्य कक्ष, व्यायामशाला, शौचालय और बच्चों का स्नान–कक्ष इत्यादि मुख्य कमरे से जुड़े होते हैं। बच्चों के खेलने के लिए बड़ा मैदान होता है। बच्चों के बैठने के लिए छोटी–छोटी कुर्सियों तथा मेजें होती है। जिन पर बालक बैठकर कभी–कभी खेल भी खेलते है। मैदान में कुछ कम्बल बिछा दिये जाते हैं जिन पर बालक खेलते हैं। विद्यालय में सभी सामान बच्चों की आवश्यकता के अनुरूप होती है। कमरों में विभिन्न प्रकार के सोफा और अल्मारियॉ भी होती है। बच्चे अपनी पाठ्य–सामग्री अल्मारियों में रखते है। दीवारों में छोटे काले तख्ते जुड़े रहते है। जिनपद बच्चे अपनी आवश्यकतानुसार चित्र भी बनाते है या चिपकाते है। बच्चों को खिलौने, फूल, चित्र और उन्तर्लेख की सामग्री प्रदान की जाती है। भोजन गृह में मेज–कुर्सियों, चम्मच, जलपात्र आदि सामग्री होती है।

बच्चों के बैठक के कमरे में भी उनकी अलमारी होती है, जहॉ वे स्नान के लिए अपना साबुन और तौलिया रखते है। वहॉ एक छोटी सी फुलवाड़ी भी होती है जिसकी देखभाल स्वयं बच्चे ही करते है। बच्चों की ऊँचाई नापने के लिए पेड़ोमीटर तथा वजन तौलने के लिए वेट मशीन की भी सुविधा विद्यालय में होती है। विद्यालय में तीन प्रकार के अभ्यासों की समुचित व्यवस्था है।

1. व्यावहारिक जीवन में प्रशिक्षण
2. राष्ट्रीय प्रशिक्षण
3. भाषाएँ और गणित शिक्षण के लिए अभ्यास।

माण्टेसरी ने बच्चों को स्वतन्त्रता पूर्ण शिक्षा देने के साथ ही साथ उनमें अनुशासन का भी ध्यान रखा। उनका मानना था कि माण्टेसरी विद्यालयों में बालकों को ऐसा वातावरण प्रदान किया जाए कि वे कुछ भी करने के लिए पूर्णरूप से स्वतन्त्र होते हुए भी वही करें जो आन्तरिक अनुशासन की मांग हो। उन्होंने बच्चों में स्वअनुशासन व आत्म नियंत्रण की भावना विकसित की जिससे माण्टेसरी विद्यालयों में अनुशासनहीनता की समस्या उत्पन्न न है।

v/;kid o fo|kFkh dk LFkku

डॉ0 माण्टेसरी ने सर्वप्रथम शिक्षक शब्द को हटाकर उस स्थानपर संचालिका या निर्देशिका शब्द का प्रयोग किया उनका विचार है कि उसका पहला कर्तव्य शिक्षा न होकर संचालन करना है। उन्होंने पुरूष शिक्षक से स्त्री शिक्षिकाओं को अधिक महत्व दिया उनका मानना था कि स्त्री शिक्षिकाओं में प्रेम, स्नेह, व सहानुभूति पूरूष शिक्षक से अधिक होती है वे बालकों के कोमल ह्रदय को जान सकती है। वे शिक्षकों में माली का रूप देखना चाहती थी जो पौधों की तरह बच्चों की प्राकृतिक वृद्धि, धैर्य, प्रेम, और मानवता के गुण अवश्य विद्यमान हों। क्रोध को वे बहुत बड़ा पाप मानती थी जो बच्चों को समझने में बाधक है।

ekUVsljh i)fr dk eY;kadu

गुण एवं दोषों के माध्यम से मान्टेसरी पद्धति का मूल्यांकन करना संभव है :–

x.k

1. डॉ0 मान्टेसरी की पद्धति वैज्ञानिक है वे अनुभव और निरीक्षण पर बल देती है।
2. उपकरणों के माध्यम से शिक्षा देने का उनका विचार सराहनीय है क्योंकि छोटे बच्चों को वस्तुओं के प्रयोग में आनन्द मिलता है और उन्हें सरलता से सीखने में भी मदद मिलती है।
3. डॉ0 मान्टेसरी ने सामूहिक शिक्षण की अपेक्षा व्यक्तिगत शिक्षण पर आधिक बल दिया है।
4. उन्होंने ज्ञानेन्द्रियों की शिक्षा पर अधिक जोर दिया है। इससे बालकों के मस्तिष्क का विकास संभव है।
5. डॉ0 मान्टेसरी ने अनुशासन पुरस्कार एवं दण्ड का विरोध किया है उन्होंने एवं अनुशासन का महत्व दिया है।
6. मान्टेसरी पद्धति में लिखने व सीखने को विशेष महत्व दिया गया है।
7. यह पद्धति बालकों को वातावरण के साथ समायोजित होने के सक्षम बनाती है।
8. मान्टेसरी पद्धति सामाजिक मूल्यों से परिपूर्ण है क्योंकि बालक सहयोगात्मक रूप से सभी कार्य करते है।

nk"k

1. स्टर्न महोदय का कहना है कि शैक्षिक उपकरणों से बालकों में बुद्धि का एकांगी विकास होता है।
2. स्पैंगर महोय के अनुसार – मान्टेसरी पद्धति में काल्पनिक खेलों की उपेक्षा की गयी है। बालकों की असन्तुष्ट मूल प्रवृत्तियों का रेचन इन्हीं काल्पनिक

खेलों से होता है। इस रेचन के अभाव में भावना ग्रन्थियों के बनने का भय होता है।

3. मान्टेसरी पद्धति पहले लिखना सिखाती है यह प्रश्न भी विवादास्पद है। यह पद्धति जिस विधि से लिखना सिखाती है वह वैज्ञानिक होते हुए भी मनोवैज्ञानिक नहीं कहीं जा सकती है। वर्ण तथा अक्षर से न चलकर वाक्य से चलना गेस्टाल्स मनौवैज्ञानिक के अनुसार उपयुक्त है।
4. हेसन का कहना है कि मान्टेसरी पद्धति में खेल के वास्तविक सिद्धान्त का अभाव है। खेल, खेल के लिए हो, तभी वह खेल होगा, अन्यथा कार्य हो जायेगा।
5. यह पद्धति समय अधिक लेती है।
6. इस पद्धति में केवल एक ही ज्ञानेन्द्रिय की एक बार शिक्षा दी जाती है।
7. यह पद्धति अधिक खर्चीली है और गरीब समाज में कठिनता से लागू हो पाती है।
8. इस पद्धति में बालकों से कुछ ऐसे कार्य कराये जाते है जो उसकी अवस्था के अनुकूल नहीं कहे जा सकते। जैसे भोजन परोसना, बर्तन धोना आदि।
9. मान्टेसरी पद्धति में साहित्य तथा कविता को कोई स्थान नहीं दिया गया है जबकि छोटे बच्चे कविता, ड्रामा तथा इस प्रकार की साहित्यिक गतिविधियों में अधिक रूचि लेते हैं।

उपर्युक्त दोषों के बावजूद भी माण्टेसरी पद्धति की शिक्षा जगत में अवहेलना नहीं की जा सकती है। इस शिक्षण पद्धति की वर्तमान में भी उतनी ही उपादेयता है, जितनी उस समय थी। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि उन्होंने आधुनिक शिक्षा जगत को एक नवीन शिक्षण पद्धति प्रदान की है।

डॉ0 माण्टेसरी ने विशेष रूप से किन्डरगार्डन पद्धति को परिष्कृत करके पूर्व–प्राथमिक स्तर पर शिशुओं के लिए अधिक लाभकारी पद्धति का निर्माण किया है। यह प्रणाली विशेषतया शिशुओं के मनोविज्ञान पर आधारित है। इस पद्धति में शिशुओं की रूचियों को ध्यान में रखकर विभिन्न उपकरणों व क्रियाओं के माध्यम से शिक्षा प्रदान करने के व सीखने के अवसर प्रदान किये है। यह पद्धति बच्चों को स्वयं करके व स्वयं के अनुभव के द्वारा सीखने के अवसर देती है तथा दैनिक जीवन की क्रियाओं से शिशुओं को परिचित कराते हुए उन्हें शिक्षा प्रदान करती है, उनका सर्वांगीण विकास करती है। और साथ ही साथ उनमें व्यावसायिक दक्षता

एवं सामाजिक कुशलता का विकास कर उनका भावी जीवन सुखी व सम्पन्न बनाने का प्रयास करती है।

मान्टेसरी के कार्यों की सराहना करते हुए शिक्षाविद् होम्स का कथन है:–

''डॉ0 मान्टेसरी का कार्य अद्वितीय अनोखा और गौरवपूर्ण है। हमारे पास शिक्षा प्रणाली का कोई ऐसा अन्य उदाहरण नहीं है, जो कम से कम अपनी क्रमबद्ध पूर्णतः और अपने व्यावहारिक प्रयोग में मौलिक हो और जिसका निर्माण तथा उद्घाटन एक स्त्री के मस्तिष्क और हाथ से किया गया हो।

lUnHk xUFk lph

1. डॉ0 पाण्डेय रामशकल, विश्व के श्रेष्ठ शिक्षाशास्त्री, संस्करण बारहवॉ, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
2. त्यागी जी0एस0डी0, शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक सुधार, संस्करण सप्तम 2010, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा।
3. भारतीय आधुनिक शिक्षा वर्ष – 32 अंक–3 जनवरी 2012
4. अग्रवाल जे0सी0, उदीयमान भारतीय समाज में अध्यापक, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा
5. डॉ0 पाण्डेय, रामशकल, उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा